زمونږ صحت او آخرت  
ته تاواني توکي

**د خوراك او څښاك د ځينو شيانو، نشه يي توكو، ځينو بهرنيو**

**مصنوعاتو، د سينګار د شيانو، درملني، روغتيا ساتني**

**او داسي نورو په هكله د هر خاص او عام لپاره**

**ګټور كتاب**

لیکونکی:

عبدالمالک «همت»

|  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| **د کتاب نوم:** | زمونږ صحت او آخرت ته تاواني توکي | | | |
| **د کتاب فارسي نوم:** | چیزهای مضر بر صحت و آخرت مان | | | |
| **لیکونکی:** | عبدالمالک «همت» | | | |
| **موضوع:** | موعظې او حکمتونه | | | |
| **د چاپ شمير:** | لومړي (دیجیتال) | | | |
| **د چاپ تاریخ:** | سلواغه 1395 هـ ش – جمادي الأول 1438 هـ ق | | | |
| **سرچینه:** |  | | | |
| **دا کتاب د عقیدې د کتابخانې سایت نه داونلود شوی دی.**  **www.aqeedeh.com/pa** | | | |  |
| **برښنا لیک:** | **book@aqeedeh.com** | | | |
| **د موحدینو ګروپ ویب پاڼو** | | | | |
| www.mowahedin.com  www.videofarsi.com  www.zekr.tv  www.mowahed.com | |  | www.aqeedeh.com  www.islamtxt.com  www.shabnam.cc  www.sadaislam.com | |
| **په عقيدې سايت کې ددغه کتاب خپرول، دهغه د ټولو محتواوو سره دسايت د همغږۍ په معنا نه ده.** | | | | |
| contact@mowahedin.com | | | | |

بسم الله الرحمن الرحیم

ليکلړ

[ليکلړ ‌أ](#_Toc457806550)

[د دوهم چاپ سریزه 1](#_Toc457806551)

[سریزه 2](#_Toc457806552)

[د حرامو شيانو له خوړلو څخه د پرهېز يوه اند پاروونكې كيسه 5](#_Toc457806553)

[شراب د انسانيت ډېر بد دښمن (شر آب) 9](#_Toc457806554)

[(الف) د هضم پر نظام باندي د شرابو اغېزه: 11](#_Toc457806555)

[(ب) دويني د دوران پرنظام باندي د شرابو اغېزه: 13](#_Toc457806556)

[(ج) پرعصبي نظام باندي د شرابو اغېزه: 15](#_Toc457806557)

[(د) پرټولنيزو روحياتو باندي د شرابو اغېزه: 16](#_Toc457806558)

[بنګي، چرس، ترياك، هېروئين او داسي نور 18](#_Toc457806559)

[بنګي او چرس: 18](#_Toc457806560)

[د چرسو تاريخ: 18](#_Toc457806561)

[بنګي: 19](#_Toc457806562)

[چرس او روغتيايي ضررونه يې: 19](#_Toc457806563)

[خشخاش، كوكنار، ترياك، هېروئين او نور: 20](#_Toc457806564)

[د ترياكو تاريخ: 20](#_Toc457806565)

[د ترياكو روغتيايي ضررونه: 22](#_Toc457806566)

[مورفين: 23](#_Toc457806567)

[هېروئين: 23](#_Toc457806568)

[د پورتنيو توكو په هكله شرعي او فقهي احكام: 24](#_Toc457806569)

[د قرآن كريم احكام: 24](#_Toc457806570)

[د رسول ج سپېڅلي لارښووني: 25](#_Toc457806571)

[د فقهي د ځينو متونو او د هغو د شرحو او حاشيو خبري: 27](#_Toc457806572)

[د فقهي د نورو مطولو كتابونو څرګندوني: 27](#_Toc457806573)

[څرګندونه: 30](#_Toc457806574)

[د تمباکو ضررونه او حراموالى 32](#_Toc457806575)

[د تمباكو روغتيايي ضررونه: 33](#_Toc457806576)

[د تمباكو نوم: 35](#_Toc457806577)

[د تمبكو تاريخ: 36](#_Toc457806578)

[د تمبكو د استعمال پر خلاف اقدامات: 38](#_Toc457806579)

[د تمبكو په اړه طبي څېړني: 43](#_Toc457806580)

[د تمبكو د استعمال ډولونه: 47](#_Toc457806581)

[1- د خولې د نسوارو په ډول: 47](#_Toc457806582)

[2- د چلم څكولو په ډول: 47](#_Toc457806583)

[3- د سګرېټو څكولو په ډول: 47](#_Toc457806584)

[4- د تمباكو ژوولو په ډول: 48](#_Toc457806585)

[5- د پزي د نسوارو په ډول: 48](#_Toc457806586)

[تمباكو د اسلام له نظره: 48](#_Toc457806587)

[د تمبكو د حرمت په هكله د اسلامي عالمانو څرګندوني: 52](#_Toc457806588)

[د تمبكو په هكله وروستۍ خبري: 61](#_Toc457806589)

[د قهوې او چايو زهر جني جوشاندې 64](#_Toc457806590)

[د قهوې تاريخ: 64](#_Toc457806591)

[د چايو تاريخ: 66](#_Toc457806592)

[د قهوې او چايو ګټي اوضررونه: 67](#_Toc457806593)

[دقهوې او چايو د چيښلو له امله د كوچني نقصان: 72](#_Toc457806594)

[بوره يا سپين زهر 73](#_Toc457806595)

[غنم، اوړه او ډوډۍ 77](#_Toc457806596)

[د غنمو اصلاح سوي تخمونه: 78](#_Toc457806597)

[په غنمو او اوړو هم ډول ډول مواد وهي: 79](#_Toc457806598)

[ترميده اوړه: 82](#_Toc457806599)

[د اوړو خميره: 82](#_Toc457806600)

[سره مرچک يا سره زهر 84](#_Toc457806601)

[پاپړ 86](#_Toc457806602)

[د کټوي دارو (مسالې) ګټي اوتاوا نونه يې 86](#_Toc457806603)

[د امريكايي او صهيونيستي مصنوعاتو تحريم 88](#_Toc457806604)

[د سركوزي غوښي ولي حرامي دي؟ 92](#_Toc457806605)

[هغه شيان چي د سركوزي وازګي پكښي استعمال سوي دي 95](#_Toc457806606)

[كفار او د سركوزي غوښي: 95](#_Toc457806607)

[د خوراك او چيښاك په شيانو كي د سركوزي د غوړزګيو كارول: 96](#_Toc457806608)

[په پاكستان كي هم په ځينو شيانو كي د سركوزي غوړ ګډوي 99](#_Toc457806609)

[د سينګار په شيانو كي جعلكاري: 100](#_Toc457806610)

[د غاښو په كريمو نوكي جعلكاري: 101](#_Toc457806611)

[د ښځو په لب سرينونو كي جعلكاري: 101](#_Toc457806612)

[د سينګار په سامانونو كي د ماشومانو د هډوكو كارول: 101](#_Toc457806613)

[په شيندونكو عطرونو (Perfume Spray) كي شراب ګډوي: 101](#_Toc457806614)

[په كلونيا كي هم الكحل او يو بل ډول نجسه ماده ګډه ده: 103](#_Toc457806615)

[سينګار، سينګار ځاى او د سينګار شيان 105](#_Toc457806616)

[سينګار په کور کي د مېړه لپاره دى نه د باندي د خلکو لپاره: 106](#_Toc457806617)

[سينګار ځاي (آرايشګاه) او شرعي احکام: 107](#_Toc457806618)

[په بې حيا آرايشګرو ځان سينګارول: 109](#_Toc457806619)

[په نارينه سينګار کوونکو ځان جوړول حرام کار دى: 109](#_Toc457806620)

[سينګار ځايونه او نوي ساينسي څېړني: 110](#_Toc457806621)

[سينګار ځايونه له ډول ډول خطرونو ډک دي (برتانوي څېړنه): 111](#_Toc457806622)

[سينګار ځاى او د سرطان ناروغي: 111](#_Toc457806623)

[د سينګار د سامانونو ناوړي اغېزې 112](#_Toc457806624)

[لب سرين او نوي ساينسي څېړني 114](#_Toc457806625)

[روڼ اندې او په معنوي پسول ښكلې ښځه سينګار ته اړتيا نه لري 116](#_Toc457806626)

[د سينګار د شيانو استعمال له شرعي او اقتصادي پلوه 118](#_Toc457806627)

[د ښځو د ورېښتانو او ځينو نوروپه هکله ځيني احکام 123](#_Toc457806628)

[د ورېښتانو رنګول: 123](#_Toc457806629)

[د ښځو لخوا د مصنوعي ورېښتانو استعمالول: 124](#_Toc457806630)

[د ښځي د ورېښتانو خريل: 125](#_Toc457806631)

[د ښځي د ورېښتانو لنډول: 125](#_Toc457806632)

[د ښځي د سر د ورېښتانو توني کول: 130](#_Toc457806633)

[له تورو ورېښتانو څخه د سپينو ورېښتانو ايسته کول: 131](#_Toc457806634)

[د ښځي د سر د ورېښتانو په ډول ډول ډېزانونو جوړول: 132](#_Toc457806635)

[د ورېښتانو د ودي او زياتوب لپاره د هغو څوکي پرې کول: 132](#_Toc457806636)

[د ښځي سر عورت دى: 132](#_Toc457806637)

[د ورځو جوړول او د مخ او لاسونو او پنډيو ورېښتان ايسته کول: 133](#_Toc457806638)

[شنه خالونه د بدن پر بېلو بېلو ځايونو وهل: 133](#_Toc457806639)

[د غاښونو کوچني کول او داسي جوړول چي سره جلا جلا سي: 135](#_Toc457806640)

[غاښونو ته د سرو يا سپينو زرو پوښ ورکول: 136](#_Toc457806641)

[د نوكانو اوږدول او رنګول: 138](#_Toc457806642)

[د ښځو لخوا عطرونه وهل: 139](#_Toc457806643)

[له امريكا او نورو كفري هيوادونو څخه راوړل سوي غوښي 141](#_Toc457806644)

[د بهر نيو په اصطلاح ذبح سوو چرګانو د غوښو په هكله څه نوري خبري 144](#_Toc457806645)

[د ګامېښو او غويو د غوښو روغتيايي تاوانونه 146](#_Toc457806646)

[غوښى له روغتيا يي پلوه: 146](#_Toc457806647)

[د غوا او ګاميښي غوښي: 147](#_Toc457806648)

[له بهرنيو هيوادونو څخه د غوايي راوړل سوي غوښي: 148](#_Toc457806649)

[كوکاکولا، پيپسي، فانټا او دغسي نور مشروبات (خواږه زهر) 152](#_Toc457806650)

[كوكا كولا: 152](#_Toc457806651)

[پيپسي كولا: 154](#_Toc457806652)

[د كوكاكولا او پيپسي كېمياوي مواد: 157](#_Toc457806653)

[د كوكاكولا، پيپسي او داسي نورو روغتيايي تاوانونه: 160](#_Toc457806654)

[سوډا واټر او لېمونيډ: 163](#_Toc457806655)

[د كوكاكولا او داسي نورو پر ځاى بايد څه شي وچيښو؟ 163](#_Toc457806656)

[د كوكاكولا او پيپسي په هكله ځيني عجيبي تجربې 164](#_Toc457806657)

[معدني اوبه (منرل واټر Mineral Water) 166](#_Toc457806658)

[د شربتو د پوډرو پوړۍ 169](#_Toc457806659)

[شيدې، د قوطيو شيدې، وچي شيدې او د مور شيدې 171](#_Toc457806660)

[د قوطيو مايع شيدې: 172](#_Toc457806661)

[د نيسټلي د شيدو په قوطۍ كي شرموښكۍ؟! 173](#_Toc457806662)

[وچي شيدې او د سركوزي غوړزګي: 174](#_Toc457806663)

[د مور شيدې كه د دبليانو او نورو وچي شيدې؟ 176](#_Toc457806664)

[غوړي 181](#_Toc457806665)

[دغوړو روغتيايي ضررونه: 182](#_Toc457806666)

[د پلاسټيکي کڅوړو استعمال زموږ روغتيا او چاپېريال د ګواښ سره مخامخ کړى دى 184](#_Toc457806667)

[درملنه 186](#_Toc457806668)

[په نړۍ او زموږ په هيواد كي د درملني لنډ تاريخ: 186](#_Toc457806669)

[اسلام او درملنه: 188](#_Toc457806670)

[د ناروغيو د درملني په هكله د اسلام لارښووني: 193](#_Toc457806671)

[په ساري ناروغيو له اخته كسانو څخه ګوښه اوسېدل: 194](#_Toc457806672)

[د ناروغۍ روحاني درملنه او دعاوي: 197](#_Toc457806673)

[كه څه ناروغي درپېښه سي په غذا يې درملنه وكړئ: 199](#_Toc457806674)

[تر څو كېداى سي په طبيعي او نباتي بوټو او درملو درملنه وكړئ: 200](#_Toc457806675)

[د كېمياوي او طبيعي درملو په هكله د ډاكټرانو نظريې: ‏ 201](#_Toc457806676)

[د كېمياوي درملو د ناسمو كارولو په هكله څرګندوني: 202](#_Toc457806677)

[درمل بايد د ډاكټر په مشوره او بشپړ وخوړل سي: 208](#_Toc457806678)

[په هغو درملو چي الكحل او داسي نور ګډ وي درملنه څنګه ده؟ 210](#_Toc457806679)

[د قرآن كريم لارښووني: 212](#_Toc457806680)

[د احاديثو لارښووني: 214](#_Toc457806681)

[د محدثينو اقوال: 215](#_Toc457806682)

[د فقهي احكام: 216](#_Toc457806683)

[سپرټ او ټنكچر: 219](#_Toc457806684)

[ځيني شرعي حكمونه: 220](#_Toc457806685)

[نيم پيازه او بې سنده ډاكټران: 221](#_Toc457806686)

[پاكستاني زښت ګران او هندي بې اغېزي درمل: 224](#_Toc457806687)

[د لوېديزو هيوادونو د درملو د تحريم په هكله فتوا: 225](#_Toc457806688)

[د نارينه ډاكټرانو لخوا د ښځو درملنه 226](#_Toc457806689)

[د نارينه ډاكټرانو لخوا د ښځو د درملني په هكله شرعي احكام: 227](#_Toc457806690)

[د حرامو شيانو تجارت 231](#_Toc457806691)

[د مخدراتو د سوادا ګرۍ په هكله د يوه معتبر كتاب څرګندوني: 234](#_Toc457806692)

[د چرسو او ترياكو د كښت حراموالى: 236](#_Toc457806693)

[د ځان، كور او چاپېريال خواپاكي 238](#_Toc457806694)

[د ځان پرېولل: 240](#_Toc457806695)

[د عطرو وهل: 241](#_Toc457806696)

[د ځان او څېرې سمون او سمبالښت ته پاملرنه: 242](#_Toc457806697)

[د كاليو پاك ساتل او د كواړي پرېولل: 245](#_Toc457806698)

[د غاښو ساتنه: 246](#_Toc457806699)

[د مسواك وهل: 247](#_Toc457806700)

[مسواك كه پلاسټيكي برس؟ 248](#_Toc457806701)

[د غاښونو د پاكولو توكي: 249](#_Toc457806702)

[د كور پاك ساتل: 250](#_Toc457806703)

[د كور لوښي: 253](#_Toc457806704)

[د كور د لوښو پرېولل: 256](#_Toc457806705)

[د كورونو او د هغو د شاوخوا پاك ساتل: 256](#_Toc457806706)

[د كندهار د ښار وضع 259](#_Toc457806707)

[د كتاب د مراجعو فهرست 263](#_Toc457806708)

[د ليکوال لنډه پېژندنه 268](#_Toc457806709)

**ډالۍ:**

زما ننګيالي ولس ته چي يوځل روسانو سخت وكړاوه، خو بالاخره يې هغوى سخت مات كړل او د غرور له نيلي يې د تل لپاره را كښته كړل. اوس يې بيا امريكايان او نور بېګناه زوروي، حو دوى يې هم د سختو ستونزو سره مخامخ كړي دي او هغه ورځ ډېره نژدې ده چي دا مځكه او آسمان به ټول دا آيت زمزمه كوي چي:

﴿وَقُلۡ جَآءَ ٱلۡحَقُّ وَزَهَقَ ٱلۡبَٰطِلُۚ إِنَّ ٱلۡبَٰطِلَ كَانَ زَهُوقٗا ٨١﴾ [الإسراء: 81].

د دوهم چاپ سریزه

الحمد لله رب العالمين والصلاة والسلام على النبي الهادي الأمين، نبينا محمد وعلى آله وأصحابه أجمعين، وبعد:

حقيقت دادى چي دا کتاب لومړى ځل په ډېر خراب کيفيت چاپ سوى وو. نه يې وقايه سمه وه، نه يې د متن کاغذ او نه يې د چاپ څرنګوالى.

يو ليکوال د کتاب پر ليکولو باندي څونه خواري کاږي، خو نور يې دې خواريو ته څونه کم ارزښت ورکوي؟

په هر صورت کتاب بيا هم د مطالعې د مينه والو لخوا ډېر خوښ کړى سو او د هغه زياتي خبري ډېرو خلکو ګټوري او خوندوري وبللې او په ډېرو مجلسونو کي ډېر بحثونه پر وسول. اوس چي د کتاب ټوکونه په بازار کي خلاص سوي دي، خپرندوى يې بيا خپرېدوته د هغه د چمتو کېدو غوښتنه راڅخه وکړه او ژمنه يې وکړه چي دا ځل به کتاب په ښه کيفيت خپروي. ما هم پر کتاب باندي بيا کتنه وکړه او په ډېره خواري او تپاک سره مي سموني پکښي راوستې او ډېري اړيني زياتوني مي پکښي وکړې. خداىأ دي وکړي چي داوار دا کتاب په ښه بڼه له چاپه راووزي او د توذېع او د ډېرو لوستونکو تر لاسونو د رسېدو کار ته يې هم پاملرنه وسي، والسلام.

عبدالمالک «همت»

د ده افغانانو نوآباد، کابل د ١٣٩٠ل. کـال د سلواغې اووه ويشتمه.

(اې لويه څښتنه! موږ په خپل ځانګړي رحمت سره سر لوړي

كړه، زموږ كارونه را سم كړه!)

سریزه

حامداً ومصلياً ومسلماً وبعد:

لكه څنګه چي پوهيږو د نړۍ مادي پالو پانګوالو، عېسويانو، يهودو، هنودو او د دوى ټيټو ګوډاګيانو د دوى د سراښ مادي او طاغوتي ماهيت او شيطاني لوړتيا غوښتنو او ځان غوښتنو پر بنسټ د مادي ګټو د تر لاسه كولو لپاره د مسلمانانو او د نړۍ د بې وزلو ولسونو د هيوادونو د لاندي كولو، د هغو د مادي او معنوي شتمنيو د لوټولو يا وجاړولو او د هغو د مريي كولو او اېلولو (مطيع کولو) او په نهايت كي پر ټوله نړۍ د خپلي شومي واكمنۍ د ټينګولو او دغو اهدافو ته د آسانه رسېدلو په خاطر د مسلمانانو د معتقداتو د تخريبولو او دښمنۍپاللوپه موخه د هغو په وړاندي ډول ډول پټـي او ښكاره دُسي، مكرونه او ظالمانه تېري، بريدونه او ورانوونكي جنګونه په لار اچولي دي. د دې توطئو او دښمنيو د هر اړخ په هكله بېلو بېلو څېړنو او پر هغو باندي بېلو بېلو كتابونو ليكلو ته اړتياده. خو موږ دلته پر يوه موضوع باندي بحث كوو چي هغه د دغو انسان او اسلام دښمنو عناصرو د ځينو سترو ملټـي نېشنل كمپنيو هغه خوراكي توكي او ځيني مصنوعات په زياته هغه الكحلي او غير الكحلي مشروبات دي چي زموږ هيواد او نورو اسلامي ملكونو ته يې صادروي.

موږ به په دې لنډ كتابګوټي كي په ګوته او جوته كړو چي د دغو بهرنيو كفري، مادي پالو، مغرضو، ښكېلاك ګرو او تېري كوونكو هيوادونو دغه خوراكي مواد له آره (له اصله) ګنډهېر او زهريات دي، نور مصنوعات يې زموږ روغتيا ته تر زهرو ډېر مضر او غير الكحلي مشروبات يې هم تر الكحلو بدتر او كه سم ووايو خواږه زهر دي چي هم زموږ اقتصاد او صحت او هم مو اسلاميت او آخرت ته ستر تاوان رسوي.

د دې تر څنګ به موږ د ځينو نورو روغتيايي مسايلو او هغو توكو په هكله هم څه څرګندوني وكړو چي استعمال يې له روغتيايي يا شرعي پلوه ښه نه دى. هيله ده په دې هكله ستاسو ژوره پاملرنه راواړولاى سو او زموږ د دښمنانو په ډول ډول چلونو او د هغو په بېلو بېلو اړخونو باندي د دقيق پوهېدو تر څنګ له هغو چارو ډډه وكړو چي زموږ روغتيا او هغې دنيا ته تاوان پېښوي. خداىأ دي وكړي چي دا وړوكى كتاب ستاسي د خوښي او منلو وړ وګرځي او د شاعر د دې قول مصداق نه سي چي وايي:

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| لقد اسمعت لو ناديت حياً |  | ولكن لا حياة لمن تنادٰى |

يعني كه دي يوه ژوندي ته دا خبري كړي واى هرو مرو به دي په اورېدلي واى. خو هغه چا ته چي ته خبري كوې ژوندى نه دى.

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| كاشكي تا كړلاى خبري و ژوندو ته |  | خو ته ګډيې دزړه درد وايې ومړوته |

خو زه باور لرم چي داسي به نه كيږي، بلكي د شاعر د دې قول مصداق به سي:

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| دبيان انداز كه څه هم ډېر شوخ نه‌دى |  | ګوندي بياهم داستا زړه لږ درخبر كړي |

وړ خو داده چي په دې كتاب كي چي كومو منكراتو او ناوړو او نادودو ته نغوته (اشاره) سوې ده د هغو د مخنيوي لپاره عوام او خواص ټول هر يو په خپل خپل وار، خپل وس او وسايل په كار واچوي او دې ارزښتناكي نبوي لارښووني ته عملي جامه واغوندي چي فرمايي:

«مَنْ رَأَى مِنْكُمْ مُنْكَرًا فَلْيُغَيِّرْهُ بِيَدِهِ فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِلِسَانِهِ فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهِ وَذَلِكَ أَضْعَفُ الْإِيمَانِ» (مسلم، كتاب الايمان ۷۸حديث).

يعني له تاسي څخه چي هر څوك ناوړه چاره وويني په لاس (د مټه په زور) دي بدلون ورته وركړي. كه دا نه سي كولاى په ژبه (وينا، وعظ او تبليغ) دى بدلون وركړي او كه دا هم نه سي كولاى نو په زړه كي دي بد ځني يوسي، او دا د ايمان ډېره ضعيفه ثمره ده.

لوى څښتن مو دي له بديو، منكراتو او منهياتو وساتي، د هغو پر له منځه وړلو دي توفيق راكړي او د هغه قوم په شان مو دي نه كوي چي قرآن يې يادونه د نوح÷ په ژبه په دې الفاظو كړې ده:

﴿جَعَلُوٓاْ أَصَٰبِعَهُمۡ فِيٓ ءَاذَانِهِمۡ وَٱسۡتَغۡشَوۡاْ ثِيَابَهُمۡ وَأَصَرُّواْ وَٱسۡتَكۡبَرُواْ ٱسۡتِكۡبَارٗا ٧﴾ [النوح: 7].

يعني: «هغو په غوږونو كي ګوتي كښېښوولې او په كاليو سره يې مخونه پټ كړل او پر خپلو كړو يې ټينګار وكړ او ډېر تكبر يې وكړ». والسلام

عبدالمالك «همت»

همت ټاټوبى، كندهار

د ١٣٨٥ل.كال د لېندۍ پنځمه

د ١٤٢٧س.كال د ميانۍپنځمه

د حرامو شيانو له خوړلو څخه د پرهېز يوه اند پاروونكې كيسه

په معتبرو كتابونو كي راوړي چي د حضرت ابوبكر صديقس د خلافت په وختو كي د هغه مريي يوځل هغه ته څه خواړه وړاندي كړل او هغه د پخواني دود په خلاف بېله پوښتني وخوړل خو د دې خوړو د خوړلو سره يې طبيعت څه ناكراره غوندي سو. نو يې له مريي څخه وپوښتل چي: «دا څنګه خواړه وه» مريي ورته وويل چي ما د جاهليت په زمانه كي د كهانت كار (غيب ويل او اټكلي خبري كومي چي په اسلام كي منع او حرامي دي) كاوه، خو دغه كار مي ښه نه وو زده او يو څوك مي تېرايستى. نن مي هغه وليد او زما د دغه كار په بدل كي يې دغه خواړه راكړه او ما تاسي ته دركړه. د دې خبري په اورېدو سره ابوبكر صديق سخت پرېشانه سو او سمدستي يې په ستوني ګوتي ننه ايستلې او هغه خواړه يې قى كړل. څنګه چي يې ښه ډاډ نه وو حاصل سوى بيايې د هغو د قيولو كوشش وكړ او څوني چي يې په وسه وه هغو ني يې قى كړل. ان چي دونه قيونه يې ووهل چي بېخي يې حالت بدلون وموند. خلك وارخطا سول چي نه چي له دې امله سا ور نه كړي. نو يې ورته عرض كړه چي: اى د رسول الله ج خليفه نور د قى وهلو كوشش مه كوه. نور له دې خوړو څخه ستا په نس كي څه نه دي پاته. بيا حضرت ابوبكرس وفرمايل: «زه بېرېږم چي د دغو خوړو كوم څه مي په نس كي نه وي پاته». بيا يې وژړل او ويې ويل: «اى لويه څښتنه ز ما خو چي څه په وس وه هغه مي وكړه. كه اوس هم زما په نس كي د دې خوړو كوم څه پاته وي اى لويه څښتنه تر را تېر سې».

الله اكبر! وګورئ چي كهانت هم صديق اكبر نه وو كړى او دغه ګټه هم د هغه نه وه، بلكي دا ټول كار د هغه د مريي وو، خو د هغه تقوا او احتياط تر دې كچي وو چي داسي څه يې چي شبهه پكښېكي وه هم په ګېډه كي نه پرېښوول. دا يو مثال وو چي موږ ستاسو د ايماني پياوړتيا د راويښولو او اند پارولو لپاره راوړ. د نورو ټولوصحابه وو، اهل بيتو او رشتيانيو مسلمانانو تقوا هم دغسي وه. د دوى د تقوا او سپېڅلتيا په هكله پخپله قرآن كريم شهادت وركړى دى.

د رسول مقبول ج ارشاد دى: «‏أَيُّهَا النَّاسُ!‏ ‏إِنَّ اللَّهَ طَيِّبٌ لَا يَقْبَلُ إِلَّا طَيِّبًا وَإِنَّ اللَّهَ أَمَرَ الْمُؤْمِنِينَ بِمَا أَمَرَ بِهِ الْمُرْسَلِينَ. فَقَالَ: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلرُّسُلُ كُلُواْ مِنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَٱعۡمَلُواْ صَٰلِحًاۖ إِنِّي بِمَا تَعۡمَلُونَ عَلِيمٞ ٥١﴾ [المؤمنون: 51] وَقَالَ: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُلُواْ مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقۡنَٰكُمۡ﴾ [البقرة: 172] ثُمَّ ذَكَرَ الرَّجُلَ يُطِيلُ السَّفَرَ ‏ ‏أَشْعَثَ ‏ ‏أَغْبَرَ يَمُدُّ يَدَيْهِ إِلَى السَّمَاءِ يَا رَبِّ يَا رَبِّ وَمَطْعَمُهُ حَرَامٌ وَمَشْرَبُهُ حَرَامٌ وَمَلْبَسُهُ حَرَامٌ وَغُذِيَ بِالْحَرَامِ فَأَنَّى يُسْتَجَابُ لِذَلِكَ؟» (مسلم، كتاب الزكاة، باب قبول الصدقـة ۱۰۱۵ حديث).

ژباړه: اى خلكو! لوى څښتن پاك دى بېله پاكۍ (حلالو) بل څه نه قبلوي. او لوى څښتن مومنانو ته په هغو امر كړى دى چي پېغمبرانو ته يې كړى دى. او ويې فرمايل: اى پېغمبرانو! پاك (حلال) شيان وخورئ او نېك عمل ترسره كړئ. تاسي چي هر څه كوئ زه ښه په پوهېږم. او ويې ويل: اى مومنانو كه تاسي په رشتيا د لوى څښتن بنده ګي كوونكي ياست نو كوم پاك شيان چي موږ دركړي دي هغه وخورئ. بيا رسول ج هغه څوك ياد كړ چي ډېر اوږد مزل يې كړى وي او د سفر د كړاوونو له امله يې سر ببر او په دوړو ككړ وي او د دعا لاسونه د آسمان پر لوري پورته كړي او لويه خدايه! لويه خدايه! وايي. په داسي حال كي چي خورا ك او چيښاك يې حرام، كالي يې حرام او پوست او وينه يې له حرامو څخه وي، نو د داسي چا دعا به څنګه قبوله سي؟

دغه راز فرمايي: «‏يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يُبَالِي ‏ ‏الْمَرْءُ مَا أَخَذَ مِنْهُ أَمِنَ الْحَلَالِ أَمْ مِنْ الْحَرَامِ» (بخاري، كتاب البيوع، باب من لم يبال، ۲۰۵۹حديث).

ژباړه: داسي وخت به پر خلكو راسي چي سړى به پروا نه كوي چي څه شي يې اخيستي او خوړلي دي. آيا حلال يې اخيستي او خوړلي دي كه حرام. يعني د حرامو او حلالو په منځ كي به توپير نه كوي او څه چي يې په مخه ورځي خوري به يې. دغه راز د رسول ج حديث دى: «‏الْحَلَالُ بَيِّنٌ وَالْحَرَامُ بَيِّنٌ وَبَيْنَهُمَا مُشَتبَّهَاتٌ لَا يَعْلَمُهَا كَثِيرٌ مِنْ النَّاسِ فَمَنْ اتَّقَى الْمُشَبَّهَاتِ ‏ ‏اسْتَبْرَأَ ‏‏لِدِينِهِ وَعِرْضِهِ وَمَنْ وَقَعَ فِي ‏الشُّبُهَاتِ وقعَ في الحَرامِ‏ ‏كَرَاعٍ يَرْعَى حَوْلَ ‏ ‏الْحِمَى ‏ ‏يُوشِكُ أَنْ ‏ ‏يُوَاقِعَهُ ‏ ‏أَلَا وَإِنَّ لِكُلِّ مَلِكٍ ‏حِمًى ‏ ‏أَلَا إِنَّ ‏ ‏حِمَى ‏ ‏اللَّهِ فِي أَرْضِهِ ‏ ‏مَحَارِمُهُ ‏ ‏أَلَا وَإِنَّ فِي الْجَسَدِ ‏ ‏مُضْغَةً ‏‏إِذَا صَلَحَتْ صَلَحَ الْجَسَدُ كُلُّهُ وَإِذَا فَسَدَتْ فَسَدَ الْجَسَدُ كُلُّهُ أَلَا وَهِيَ الْقَلْبُ» (متفق عليه، مشكوٰة، كتاب البيوع، باب الكسب، ۲۷۶۲ حديث).

ژباړه: حلال او حرام دواړه څرګند دي. خو د دې دواړو په منځ كي داسي شيان دي چي يو بل ته ورته دي او د حلال بللو او حرام بللو په هكله يې اشتباه كيږي. دغه شيان ډېر وګړي نه پېژني. نو چا چي له دغسي شبه ناكو شيانو څخه ډډه او پرهېز وكړ خپل دين او عزت يې وساتى او ويې ژغورى. او څوك چي په شبهاتو اخته سو، هغه په حرامو كي ولوېدى، د هغه مثال د هغه چوپان دى چي د ممنوعه (قورغ) څړځاى پر شاوخوا څاروي پيايي او نژدې وي او احتمال ولري چي دغه قورغ څړځاى ته ورننوزي. پوه سئ چي هر پاچا ته قورغ څړځاى وي او د خداى قورغ څړځاى په مځكه كي د هغه محارم دي.

پوه سئ چي په بدن كي د غوښي يوه ټوټه ده. كله چي دغه ټوټه په معاصيو، شهوتونو او شبهو كي له لوېدو څخه سپېڅلې سي او سلامته پاته سي ټول بدن به ورسره روغ او سپېڅلى سي. او كه دغه ټوټه فاسده سي ټول بدن به ورسره فاسد سي.پوه سئ چي دغه ټوټه زړه دى.

په دې اړه كتابونه وايي چي د مشتبه شيانو او چارو څخه د ځان ساتني نوم تورع دى او دا تورع (پرهېز، احتراز او ډډه كول) انسان پر صحيح طريقه روزي. د رسول ج صحيح حديث دي: «لَا يَبْلُغُ الْعَبْدُ أَنْ يَكُونَ مِنْ الْمُتَّقِينَ حَتَّى يَدَعَ مَا لَا بَأْسَ بِهِ حَذَرًا لِمَا بِهِ الْبَأْسُ». (ترمذي، كتاب صفة القيامة، ۲۴۵۱ حديث، ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الورع والتقوى، ۴۲۱۵ حديث). يعني: يو بنده تر هغو پرهېزګاره كېدلاى نه سي څو هغه شيان چي پروا ونه لري، له دې بيري چي پروا به ولري، پرې نه ږدي.

دغه راز په يوه صحيح حديث كي راغلي دي چي حضرت حسن بن عليب وايي: «حَفِظْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَعْ مَا يَرِيبُكَ إِلَى مَا لَا يَرِيبُكَ» (مسند احمد۱/ ۲۰۰ مخ، ترمذي، كتاب صفة القيامة، ۲۵۱۸ حديث، نسائي كتاب الاشربه، باب الحث على ترك الشبهات، ۵۷۱۱ حديث). يعني: ما له رسول ج څخه دا خبره په ياد كړې ده چي كوم شى چي تا به شك كي اچوي هغه پرېږده او هغه څه غوره كړه چي په شك كي دي نه اچوي.

بل حديث دى: قال رسول الله ج «إِنَّهُ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ لَحْمٌ نَبَتَ مِنْ سُحْتٍ النَّارُ أَوْلَى بِهِ» (مشكوٰة، كتاب البيوع، ۲۷۷۲حديث).

ژباړه: رسول ج ويلي دي: هغه غوښي چي له حرامو خوړو څخه يې وده كړې وي جنت ته نه ننوزي. او هري غوښي چي په حرامو وده كړې وي اور يې وړ دى.

د رسول ج له احاديثو څخه مو پورته څو حديثونه له دې امله نقل كړل چي پوهانو ته صرف يوه اشاره غوندي سي.

اوس دي نو هغه خلك چي پر حلاله او حرامه يې نه دي، بلكي ان د كفارو په ملګرتيا او پلوي خپل مسلمان وروڼه وژني، دوى ورته ګوري او امريكايانو او اروپايانو غوندي زبرځواك سره كفار په مډرنو او پر مختللو كمپيوټري الوتكو او وسلو مسلمانان بمباردوي، بې ګناه ښځي، ماشومان او بوډاګان په ډله ييزه توګه كشتاروي او غوښي يې پاش پاش كوي، كورونه او كښتونه يې ور وجاړوي، په سپينو پښتنو ښځو او كورونو كي تلاښۍ كوي او يا دوى پخپله غلاوي كوي، د خپلو افغانانو ماشومان او عزيزان تښتوي، د مسلمانانو مالونه او حقوق خوري او تلفوي، سود او حرام خوري، جعلي شيان له بهره راوړي يا يې خپله جوړوي يا د نورو سره د دغسي شيانو په را ايستلو او خرڅولو كي كومك كوي، د مسلمانانو د غوښو او وينو په بيه له بهره را غلي پيسې په خپلو جېبو چيخي، اختلاس او بډو ته يې ملاوي تړلي دي، يا د خپل ولس او خلكو سره د پردو كافرو او بې دينو غليمانو په پلوي او ګټه ټګي، خيانت او غداري كوي پخپله دي فكر وكړي چي دوى څه كوي آيا خپل قبرونه خپلو ځانو ته د جنت بڼونه جوړوي كه د دوږخ كندي؟

شراب د انسانيت ډېر بد دښمن (شر آب)

څنګه چي په شرابو كي زښت زيات اخلاقي، بدني او ټولنيز ضررونه سته نو د هغو چيښل د اسلامي شريعت له نظره په ډېر مغلظ حرمت حرام، له ډېرو خبيثو كبايرو او شديدو جرايمو څخه بلل سوي دي.

قال الله تعالى: ﴿۞يَسۡ‍َٔلُونَكَ عَنِ ٱلۡخَمۡرِ وَٱلۡمَيۡسِرِۖ قُلۡ فِيهِمَآ إِثۡمٞ كَبِيرٞ وَمَنَٰفِعُ لِلنَّاسِ وَإِثۡمُهُمَآ أَكۡبَرُ مِن نَّفۡعِهِمَاۗ﴾ [البقرة: 219].

ژباره: «پوشگتنه كوي له تا خگخه (اى محمده) چي دشرابو او قمار خگه حكم دى؟ ورته ووايه په دواؤو كي لويه كگناه ده. او د خلكو لپاره خگه كگتگـي هم پكشگيگ سته، خو كگناه ييگ تركگتگي أيگره زياته ده».

بايد تر ټولو دمخه يادونه وكړو چي په دغه مبارك آيت كي له ګټي څخه مراد د وجود روغتيا او ګټه نه ده، بلكي د هغو له چيښلو څخه ظاهري خوند مراد دى. يا هغه مادي ګټي ځني مراد دي چي د شرابو د تجارت له لاري يې په لاس راوړي.

شراب يو نشه راوړونكې مايع ماده ده چي د ډول ډول اجزاوو له پلوه بېل بېل ډولونه لري، لكه چي په ځينو كتابونو كي يې د شرابو د مختلفو اقسامو شمېر تر شپږو سوو پوري ليكلى دى.

د جوړښت له لحاظه د شرابو عمده ډولونه درې دي:

1. «بير» چي ستر جز يې اُربشي او نور دي.
2. «واين» چي انګور او داسي نور يې ستر جُزوي.
3. «سپرت» دا د پورتنيو دوو ډولونو څخه را باسي يا يې مقطر كوي چي د الكحلو د ډېرښت له امله تېز وي.

اصلي خبره داده چي شراب ډېر ناولى چيښاك دى. ځينو پوهانو شرابو ته په «شرآب» ويلي دي. رشتيا چي دا يې ډېر ښه نوم ورته ايښى دى. شرابي نه د دين کېداى سي نه د دنيا. شرابي نه دين دوسته وي او نه وطندوسته، بلکي يوازي او يوازي شراب دوسته وي. نه غيرت پکښي پاته وي نه حيا.

د شرابو عملي کېدل د دې او هغې دنيا خواري ده او روغتيا ته تر زهرو کم نه دي. اينه، ګېډه، سږي، کولمې او دماغ ټول خرابوي او د عقل ځواک ته ډېره بده صدمه رسوي. دغه راز د ستر ګو ليد لږوي، د پښو رېږدېده رامنځته کوي، نبض مختلوي او کله يې تر دې اندازې رسوي چي خبره تر مرګه ورسيږي.

د شرابو دعملي په معده کي يو ډول سوَىْ پيداسي. د اينې پاړسوب، ژړى، هېره، د سر ګرځېده او درد، ابليج، لېونتوب، ماليخوليا او نوري دماغي او عصبي ناروغۍ هم ورته پيداکيږي. پوهو ډاکټرانو پتېيلې ده چي د شرابو اغېزې يوازي پر شرابي نه لوېږي، بلکي د هغه اولاد ته هم سرايت کوي. د شرابي مور او پلار اولاد کمزورى، او بې زړه وي او کېداى سي چي د اعصابو په ضعف او نورو ډول ډول ناروغيو هم اخته سي.

د نؤة د روغتيا نامتو ماهرپروفيسر هرش HIRSCH پرديگ موضوع باندي په خپل ليكلي كتاب كي وايي: «متمدني امريكا پنحگلس كا له پرله پسيگ هلي حگلي وكؤيگ چي پرشرابو باندي بنديز پلى كؤي، اما پلى ييگ نه كؤلاى سو، خو اسلام خگوارلس پيگؤة دمخه په برياليتوب سره پرشرابو بنديزعملي كؤ او تر اوسه ييگ پلى كؤى دى».

په قراّن كريم كي پرشرابو باندي بنديز په درو سورتونو كي راغلى دى؛ د البقريگ په همدغه پورتني اّيت كي؛ د نساء دسوريگ په (13) اّيت كي او دالمائده دسوريگ په (90) او (91) اّيتونوكي.

اوس به د شرابو د كيمياوي اجزاوو په اؤه لإ خگه معلومات وؤاندي كؤو، بيا به پرروغتيا باندي دشرابو د نورو زياتو زهرجنو اغيگزو په هكله بشپؤه رنگا واچوو:

د كيميا پوهني (CHEMISTRY) له مخي موإ ته دامعلومه ده چي الكحل (شراب) د ويلي كولو يا حلولو لپاره يو حگواكمن محلول دى. په تيره بيا دغوؤزكگة لپاره. خو په غذايي اصطلاحاتو كي دا حلوونكي نه، بلكي تگوكر تگوكر كوونكى شى دى. له ديگ امله شراب دانساني جسم لپاره يو نقصان رسوونكيگ كيمياوي ماده ده، چي دانسان اينه سمدستي تگوكر تگوكر كوي. او لكه خگنكگه چي زياتره د هغو حگيني شوقيان ادعا كوي، هغه هيخگ كوم غذايي ارزشگت نه لري. خو كله چي شراب د جسم دننه ته رسيإي، نو د نورو هرأول خوؤو برعكس د بدن جُز كگرحگي يا هضميإي (METABOLIZD) كيإي. چي يوازي دغه ظاهري كگتگه ييگ په اّيت كريمه كي ويل سويگ ده.

(الف) د هضم پر نظام باندي د شرابو اغېزه:

لكه چي پوهيإوغاشگونه، خوله، ستونى، سره غاؤه او كرنكه أيگر مشكل كار تر سره كوي او پر هغو باندي أيگر حساس استر

((MUCOUSMEMBRANCE

غوؤيگدلى دى. دشرابو خوؤلو له امله پردغه حساس استر باندي أيگره بده اغيگزه پريگوزي او دسوي (سوزش) باعث كگرحگي. چي په پايله كي د بدن په دغو غؤو كي دضعف رامنحگته كيگدل پيليإي او پاى په سرطان بدليإي. له ديگ امله دى چي كومي اداريگ چي دسرطان له ناروغة سره په مبارزه بوختي دي له 1980ع. كال خگخه را په ديگخوا دشرابو پرضد اوإدمهالي او سنجول سوي اقدامات كوي.

دا هم تگولو ته معلومه ده چي دشرابو له امله دمعديگ أيگري خطرناكي ناروغة لكه GASTRITIS) پيداكيإي. دا حگكه چي دشرابو له خوؤلو خگخه په وينو كي موجود لائيپأ (LIPID) كوم چي يو خاص أول غوؤزكگي ده، ويليإي. دغه لائيپأ يوأول ساتونكى استرمهيا كوي چي تيزابيت يعني هائيأروكلورك اسيأ بيا پرمعده باندي نقصان رسوونكيگ اغيگزه نه شگندي. كه خگه هم همدا اوس په بشپؤه توكگه نه ده ثابته سويگ چي شراب لكه چي دستوني اوسريگ غاؤي دسرطان باعث كگرحگي، همدغسي دمعديگ دسرطان باعث هم كگرحگگي كه حگنكگه؟ خو ورحگ په ورحگ دا اند پياوؤى كيإي چي دمعديگ په سرطان كي هم شراب اغيگز لري.

شراب أيگره بده اغيگزه پر اثنى عشري يا دوولس كگوتي كولمو (DUODENUM) باندي كوي. دغه حگاى د أيگرو نازكوكيمياوي اثراتو د واقع كيگدومنونكى دى. شراب د دغه حگاى هغه خاصيت اغيگزمن كوي چي د حگانكگؤو هضم كوونكو لعابو د خارجولو په صلاحيت پوري اؤه لري او د هغه پر كيمياوي حساسيت اغيگزه شگندي. شراب د هاضميگ د دغي أيگري مهمي لاري تر خرابولو وروسته له اينيگ خگخه د رامنحگته كيگدونكي هاضم لعاب (BILE) پر راوتلو هم اغيگزه اچوي.

دغه راز دشرابيانو د دوولس كگوتي كولميگ او تريخي پوست تل ناروغه وي يا زياتره سم كار نه كوي. چي دغه حالت هر شرابي دمعديگ د كگيس (باد) او بد هضمۍ په بوخله اخته كوي. دمعديگ دغه تكاليف پر نورو كولمو هم اغيگزه كوي، لكه چي د هضم د نظام كوم چي كمپيوتگر غوندي كار كوي، شگه ترتيب او يو له بله مرسته هم كگأوأوي. يو روغ انساني جسم هر هغه شى هضم كوي چي اؤتيا ورته لري. چي دا د هضم نظام ته د حگانكگؤولارشگوونو په وركولو سره ترسره كيإي. خو تر أيگره حده او په مستقله توكگه دشرابخورو په اؤه دغه كنتگرول له منحگه حگي او د هضمولو عمل بيگله كوم كنتگرول او خگه توپيره روان وي. چي بده پايله ييگ د أيگر چاغشگت په بنگه خگركگنديإي. دا له ديگ امله چي دغه أيگر هضمول ترديگ زيات بل خگه نه سي كولاى، بيگله ديگ چي د جسم د وؤو حجرومنحگ (INTERSTICES) دغوؤزكگيو ذخيره كول پيل كؤي. په حقيقت كي دغوؤزكگيو دغه أيگره اندازه د زړه په اعصابو پوري نشگلي او په ديگ أول زؤه په أول أول خطرناكو ناروغيو اخته كيإي.

دشرابو أيگره بده اغيگزه پر اينه لويإي. دانسان اينه هغه حساس لابراتواردى چي دشرابو هره يوه كوچنه ذره د زهرو غوندي محسوسوي. پراينه باندي دشرابو اغيگزه دوه أوله وي:

1. دشرابو خوؤلو په صورت كي د جسم وؤيگ حجريگ دالكحلو د ختمولو په چاره په بشپؤه توكگه لكگيا كيإي، چي په ديگ توكگه هغه خپل نور كارونه پريگإدي.
2. د اينيگ كيمياوي عمل چي يو په بل پسيگ پرمخ حگي، حساسيإي، چي د شرابو د بيگ كنتگروله اغيگزيگ له امله وران وجاؤ سي. د ديگ پايله داسي چي اينه يو كار په پلاوو پلاوو تكراروي او له ديگ أول زيات، پرله پسيگ او بيگ اؤتيا محنت او مشقت خگخه اينه كمزوريگ سي.

دغه اثرات اينه د خطرناكو پايلو سره مخامخ كوي. په دغو اثراتو كي أيگر مشهوره ييگ داينيگ سره نشگليگده اوتنكگيگده دي. چي دا د ديگ ژوندى ثبوت دى چي داينې وراني او خرابي بشپؤه سويگ ده. له أيگرو خطرناكو ممكناتو خگخه دا هم كيگداى سي چي دشرابو خوؤل يو په بل پسيگ داينيگ تگول افعال وجاؤ كؤي.

له ديگ افعالو خگخه يو دادى چي اينه هغه اجزا پيداكوي چي له هغو خگخه د وينو عمليه رامنحگته كيإي. نو خگنكگه چي دشرابو له خوؤلو خگخه اينه دغه اجزا نه سي پيداكولاى اوياييگ په توليد كي أيگره لإتيا راحگي، له ديگ امله تگول عملي شرابيان د جسم دننه كمزوري وي. كه خگه هم د دوي خگيگريگ د وينو د ركگونو دغتگيگدو يا پراخيگدو له امله حگواكمني ايسي. خو د دوي د هأوكو مغز پوچ سوى وي. يعني په حقيقت كي د وينو د توليد عمل بيگخي ختم سوى وى يا خو أيگر كم سوى وى. پرديگ سربيره داينيگ هغه حگواكمنتيا چي له هغيگ خگخه د جسماني ساتني غؤي لكه أول أول كگلوبين په تيره امينو كگلوبين په شرابيانو كي تر خطرناكه بريده كميإي. چي پايله ييگ داسي چي په دغو وكگؤو كي د ناروغيو په وؤاندي دمدافعيگ حگواك لإسي.

شراب كله كله دايني د فعل د ناببره دريگدو لامل هم كيإي. په ديگ صورت كي شرابي د بيگسد تيا په حال كي مري. د اينيگ په اؤه يوه بيگلكگه هم داسي نه ده ليدل سويگ چي پر هغيگ دي دشرابو د تاواني اغيگزو ثبوت په لاس رانه سي. البته په ديگ هكله خبري أيگري جدي دي، خو زه ييگ ترديگ زياتي نه سم خگركگندولاى.

(ب) دويني د دوران پرنظام باندي د شرابو اغېزه:

د ويني پردوران باندي دشرابو اغيگزه دوه أوله وي. يو پراينه باندي د اغيگزي په ذريعه بالواسطه وي. بل د زؤه پر تنسته باندي د بيگله واسطيگ اغيگزي په ذريعه په اينه كي (كومه چي په وينو كي دغوؤزكگيو په ويلي كولو كي ترتگولو أيگر مهم عمل ترسره كوي)، ضعف او خرابي پيدا كوي. چي په پايله كي ييگ د وينو ليگإدوونكي وؤيگ عصبي رشتيگ سختيإي او د ويني د فشار تكليف حگني پيدا كيإي. له بله پلوه دشرابو د تيزه له امله د سوحگني له عمل خگخه د وينو د بهيگدو په مخصوصه لار كي ناسمتيا راحگي، چي د هغيگ له امله د زؤه دربى رامنحگته كيإي. پرديگ سربيره د شرابو له امله په زؤه كي دغوؤزكگيو ذريگ تگوليإي او په ديگ أول پرعصبي نظام باندي د بدي اغيگزيگ په ذريعه د زؤه په كار كولو كي كگأوأي پيدا كيإي. دا جوته سويگ ده چي عملي شرابي بالاخريا د اينيگ په فعاليت كي د كگأوأة له امله يا د زؤه د دريگدو له امله خپل ژوند له لاسه وركوي. يو سؤى چي د زؤه په تكليف اخته وي هغه ته دشرابو ديوه خگاخگكي خوؤل د ديگ معنا لري چي د خپل ژوند يا خپل حگان د كوم غؤي د خرابيگدو خگه پروانه لري.

د شرابو حگيني عمليان په ديگ اند دي چي په لإ او مناسبه اندازه شراب چيشگل د زؤه تشنج يا درد اراموي. چي دا په وار د واره كي دشرابو كگتگه بلل كيإي، خو دا خبره له ساينسي او طبي نظره كوم اصل نه لري.

د شرابو له استعمال خگخه دانسان پشگتوركگو ته كوم چي د ويني د دوران وروستى حگاى باله سي، هم أيگر ستر تاوان رسيإي. دا حگكه چي پشگتوركگي د أيگر حساس كيمياوي جوهر (VALENCE) ديو حگاى كيگدو په حگاى كي د چانگوونكو كاروركوي. خو شراب دغه نازك عمل هم كگأوأوي. دايو منلى حقيقت دى چي هغه شراب چي د الكحلو اندازه ييگ لإ وي، پشگتوركگو ته لازيات تاوان رسوي. لكه چي د هغو وكگؤو پشگتوركگي چي زيات بير (BEER) خوري زياتره خراب وي.

د (LYMPHATIC) يعني د جسم د هغو وؤو وؤو ركگونونظام چي بيگ رنكگه خوَليگ حگني وزي په انساني جسم كي زشگت زيات ارزشگت لري. د دغه نظام د ويني ركگونو ته دشرابو له لاسه نه رغيگدونكى تاوان رسإي. حگكه چي غوؤزكگي لرونكى وده وركوونكى مركب (لائيپأ) په دغه نظام كي أيگر ستر حگاى لري، خو دشرابو تاوان رسوونكى اغيگز دغه حيرانوونكى ساتندوى نظام كگرد سره پوپنا كوي.

كه لوى خگشگتنأ لكه چي دقراّن كريم په بيگلو بيگلو اّيتونو كي ييگ ويلي دي د خپلو پيگرزوينو له مخي له نورو لارو دانساني ژوندانه ساتنه نه كولاى، نوموإ به په أيگره خگركگند تياسره ليدلاى چي شراب خگونه ضررناكه دي.

(ج) پرعصبي نظام باندي د شرابو اغېزه:

شراب دعصبي رشتو په هغونريو پردوننوزي، كومي چي د وده وركوونكو غوؤزكگيو غوندي مركب يعني لائيپأ په حفاظت كي وي. چي په ديگ توكگه   
د دغه نظام په بريگشگنايي رابطو (ELECTRICAL COMMUNICATION) كي خلل اچوي. دغه خراب اغيگز په دوو بيگلو بيگلو ذريعو خگركگنديإي. د هغه لومؤى اغيگز د نشيگ د ناببره حمليگ په توكگه وي. خو د هغه أيگر پايشگتى اغيگز أيگر خطرناكه وي. شراب ورحگ په ورحگ عصبي نظام ته داسي تاوان رسوي، چي خگو أوله ناروغة حگني پيدا كيإي. كه خگه هم په پيل كي دشرابو اغيگزه معمولي يا نا خگركگنده وي، خو بيا هم د هغو پايشگتي خرابي اغيگزيگ له هماغه پيله خگخه رامنحگته كيإي. نو د هغوكسانو دا خبري چي وايي: «ما شراب نه نشه كوي، حگكه نو بده اغيگزه هم نه راباندي كوي». خوشي دماشومانو خبري او حگان غولول دي.

د شرابو بدي اغيگزيگ په حگواني كي په تيگره په كوچني والي كي بيگخي زياتي وي. په عامه توكگه تگاكلي ناروغة لكه پرتي ويل، له وهم او بيري خگخه ريگإديگده، (PLYNEURTIS) او د (KORSAKOF SYNDROME) مجموعي علايم دشرابو داغيگزو له امله وي. دشرابو ستر اغيگز دعصبي نظام پرمراكزو باندي تر ديگ كچي رسيإي چي درملنه ييگ ناشونيگ سي. د نومونو او الفاظو هيگريگدل (AMNESIA) او دلاسونو ريگإديگدل د دغي عصبي ناروغه نخشگي دي

خگنكگه چي شراب غوؤزكگي ويلي كوي، نو په جسم كي په جوؤوونكو حجرو ننوزي او أيگر بد نقصان ور رسوي. د ديگ عام فهمه مثالونه د نوي توكم د ذهانت په لإ والى او ناقصه وده كي په كگوته كيإي. أيگرو ژورو خگيگؤنو او سروي كگانو دا حقيقت په أاكگه كؤى دى چي د ماشومانو د ذهن كوتگه والى له ديگ امله وو چي مور اوپلارييگ أيگراو د زياتي فيصده لرونكي شراب خوؤل. دا هم جوته سويگ ده چي شراب دشگحگي تخم (OVUM) او د حيات د تخم حجري گ (EGG CELL) ته أيگر زيات تاوان رسوي. چي د ديگ په پايله كي دشرابي ميندو ماشومان زياتره په موروثي توكگه د دماغي يا قلبي صدمو شگكار كيإي. البته دشرابي پلار له لوري دغسي پيگشگي په سل كي تر درو اوؤي.

(د) پرټولنيزو روحياتو باندي د شرابو اغېزه:

په پلاوو پلاوو جوته سويگ ده چي شراب د تگولني او تگولنيزو اؤيكو پر تگينكگشگت باندي أيگره ناوؤه اغيگزه كوي. موإ د دغو اغيگزو د خگو بيگلكگو يادونه كوو:

1. شرابيان د دوى د أيگري ژر او سملاسي غوسيگ له امله، دوى په تگولنه كي په بيگ شميگرو شخؤو او جنكگ جكگؤو اخته كوي.
2. د طلاق بيگ شميگري پيگشگي د تگولني بنستگونه كمزوري كوي، چي په پايله كي ييگ دمجرمانه اندونو او ذ هنيتونو درلودونكوماشومانو د أيگريگدلو له امله، تگول ولس په أيگره خطرناكه توكگه متاثر كيإي. د طلاقونو پرله پسيگ زياتوب د شراب خوره له امله وي.
3. د أول أول هنرونو او كارونو پر هنرمندانو، كاركگرانو او مزدورانو باندي د شراب خوؤلو له امله تل تگنبلى او كهالى زوركؤى وي، چي د دوى پر كار او مهارت او د دوى د كار د محصولاتو پركيفيت باندي أيگره بده اغيگزه شگندي. خگر كگنده ده چي نهايتاً ييگ تاوان تگولني ته رسيإي.
4. د شرابو له امله په انسانانوكي يو پربل پيگرزوينه او زؤه سوى له منحگه حگي چي پايله ييگ دا كيإي چي د ولسي او تگولنيز يووالي اند او تفكراو د تگولني د كگتگو پرضد توكوسره د جهاد او جكگؤيگ ولوله په بشپؤه توكگه ختميإي او له منحگه حگي.

پورته خگلور أوله ربؤو لويگديز تگولنپوهان دونه أيگر په فكر كي اچولي دي چي د خپلو حكومتونو پام ييگ په وارو وارو هغو ته اؤولى دى او خگركگنده كؤيگ ييگ ده چي كه دشرابو خوؤل همدغسي پرمخ ولاؤ سي په دغو هيوادونوكي به دملتپالني ولوليگ كگردسره له منحگه ولاؤي سي.

قراّن حكيم هغه مهال د ديگ ربؤي نوغه وايست، چي په هيخگ يوه تگولنه او هيخگ يوه پوه او فيلسوف كي دا همت نه وو. اوس هم دشراب خوره ربؤه دغير اسلامي تگولنو بنستگونه له بيگخه سستوي، خو د لوى خگشگتن په حكم او پيگرزوينه زموإ معاشره له ديگ بوخلي خگخه خوندي پاته ده. نو لوى خگشگتنأ لره دي حمد وي.

بنګي، چرس، ترياك، هېروئين او داسي نور

دلته به لومړى د دغو توكو د څرګندېدو او د هغو د روغتيايي ضررونو په هكله څرګندوني و كړو او ورپسې به د هغو په هكله شرعي او فقهي احكام بيان كړو:

بنګي او چرس:

بنګي او چرس په ډول ډول نومونو يادوي. شاهدانه د بنګو يا چرسو بوټي ته وايي. شهدانج د همدغه شاهدانې معرب (عربي سوې) بڼه ده. بنج هم د بنګو معرب دى. قنب د كنب معرب دى چي كنف هم ورته وايي. دا د همدغي شاهدانې تخم (بنګو) يا پاڼو ته وايي. د ردالمحتار په ۵/ ۴۰۴ مخ كي ليكي چي بنج (بنګي) د هغه نبات نوم دى چي په عربي شيكران ور ته وايي. خو ښايي دا تېروتنه وي، ځكه شيكران يا شوكران يو بېل نبات دى، خو په هغه كي هم شديده سمي ماده سته. وګورئ فرهنګ عميد او د لغاتو نور كتابونه. په هرصورت د بنګو د بوټي د ګل لرونكو ښاخونو له سرونو څخه بنګي او د چرسو پاڼي اخلي. د حشيش كلمه هم د دغه بوټي د ګل لرونكو ښاخلو پر سرونو او له هغو څخه په لاس راوړل سووپاڼو (چرسو) باندي اطلاقيږي. حشيش په انګريزي كي هم hashish ليكي، خو په دغه ژبه چرسو ته hemp وايي.

د چرسو تاريخ:

كله چي په مسلمانانو كي ډول ډول بدۍ او نارواوي رامنځته سوې او خلك په زياتو ګنهونو اخته سول نو لوى څښتنأ پر هغو باندي داسي دښمنان را پيدا كړل لكه چنګېزيان او دغه منحوس بوټى. لومړى دغه بوټى په منځني ختيځ كي څرګند سوى دى. شيخ عبدالحق محدث دهلوي/ د اشعة اللمعات په ۳/ ۲۹۸ مخ كي وايي چي: «د ۵۵۰ سپوږميز كال په شاوخوا كي كله چي حيدر نومى يو سړى له خپلو ملګرو څخه و تښتېد، په يوه بېديا كي يې وليدل چي د يوه بوټي بلګونه بېله باده ښورېدل. په زړه كي يې وويل چي په دغه بوټي كي يو سِر سته. نو يې څو بلګونه له هغه څخه وشكول، كله چي يې وخوړل نشه يې كړ. بيا يې خپلو ملګرو ته هم ور كړل. ځيني بيا وايي چي دغه بوټۍ لومړى د احمد سارحي قلندري په نامه يوه سړي وموند». د شيخ عبدالحق په دغه ليكنه كي د دغه بوټي د ځاى په هكله څرګندونه نه ده سوې. خو د دغي ليكني له وروستيو كرښو څخه اټكل كيږي چي ښايي دغه ځاى به مصر وو. اوس دغه بوټى په منځني ختيځ، نيپال او نورو آسيايي هيوادونو او د لاتيني امريكا په هيوادونو كي ډېر كرل كيږي.

بنګي:

بنګي لكه چي پوهيږو د چرسو د بوټي دانې دي كومي چي د سمي موادو د درلودو له امله مخدري او نشه كوونكي دي. دغه دانې د تنباكوغوندي د چلم پر سرخانه يا پيب (Pipe) ږدي او څكوي يې. له دغو بنګو څخه يو ډول مايع مواد هم جوړوي چي «بنګاوه» يا «بنګاب» ورته وايي او د هغو په نشه روږد خلك يې چيښي. د بنګو له يو ډول موادو څخه په طبابت كي هم كار اخلي. بنګي وچي، خنکي او قابضي دي. اشتها خلاصوي، ژر هضميږي. د احتلام ځواک له منځه وړي. خوړل يې روغتيا ته ډېر ضرر رسوي. په تېره پر مغزو ډېر بد اغېز ښندي. د بنګو خوړل د سترګو ځواک هم کمزورى کوي.

چرس او روغتيايي ضررونه يې:

څنګه چي چرس او داسي نور نشه يي توکي يو ډول زهري مواد لري نو د انسان روغتيا ته پر ضرر رسولو سر بېره د انساني ټولنو سالميت ته هم کلک تهديد متوجه کوي. له بده مرغه زموږ هيواد نن مهال د دې خطرناکو توکو د توليد او استعمال ځاى ګرځېدلى دى. له دې امله دى چي په چرسو او نورو زموږ ډېر وګړي ان زموږ ځيني ډاکټران او د امنيت ساتندويان لا اخته سوي دي.

په موږ کي دا خبره يو متل ګرځېدلې ده چي وايي: «چرسي زوى نه زوى». رشتيا هم د چرسو عملي ډېر ډارن او بې زړه وي. نشه يي نه د جنګ او جهاد په ميدان کي څه اتلولي ښوولا ى سي او نه د هيواد په لار کي تر ځان تېرېدلا ى سي.

د چرسو او نورو نشه يي توکو استعمال خوب او بې سدتياراوړي او زړه، دماغ، معده، ځګر او نور رئيسه غړي پوپنا کوي. د چرسو عملي تل له ښې اشتها څخه بې برخي وي. دماغي ځواک يې ګډوډ وي، څېره يې مړاوې او ژړه وي، ډنګر وي، سترګويې توري الغې وهلي وي او عقل يې کار نه ورکوي.

چرسي او نشه يي تل سست او ټنبل وي، کار ته يې زړه نه کيږي او يوازي او سېدل يې ډېر خوښ وي.

خشخاش، كوكنار، ترياك، هېروئين او نور:

د خشخاشو نباتاتي نوم ګلاشيم (Glaucium) دى. همدغه ګلاشيم هم د دغي كورني يو غړى دى. دغه بوټى د يوه متر په شاوخوا كي اوږده، نرۍ ساقه او اوږده بلګونه لري. د خشخاشو ګلان سره او سپين وي. د دغه بوټي د ګلانوپه رژېدو سره د هغه د ساقې په سر كي يو ډول ګردۍ غوټۍ رامنځته كيږي چي دې ته كوكنار (ډوډۍ يا کوکړې) وايي. د كوكنارو په منځ كي ميده تخم ته خشخاش وايي.

د كوكنارو له پوست څخه په نېښ وهلو سره سپينه شيره راوزي. دغه شيره بيا په هوا کي نيمي وچي ژاولي غوندي سي او رنګ يې هم بور (نسواري) واوړي. چي دغو ته ترياك يا افيون يا افيم وايي. افيون د يوناني كلمې اپيون يا اپيوم څخه اخيستل سوى لفظ دى.

د ترياكو تاريخ:

په انسايكلوپيډيا بريټانيكا كي وايي: د كوكنارو اصلي ځاى هغه مځكه ده چي اوس په تركيه پوري اړه لري او يوناني طبيبانو په لومړۍ عېسوي پېړۍ كي د درملو په توګه ګټه ځني اخيستل. بيا دغه بوټى د بين النهرين او يونان څخه ورو ورو د ختيځ پر لور خپور سو. داسي ښكاري چي په لرغونو مهالونو كي هنديانو او چينايانو دغه بوټۍ نه پېژندى. په لرغونو آسيايي ټولنو كي د ترياكو د كرلو دود او عادت هم د درملو په توګه د استعمالولو لپاره نه وو عام سوى.

چينايان د دغه توكي سره د اوومي زېږديزي پېړۍ په شاوخوا كي بلد سول. بيا د ترياكو څكول په اوولسمه پېړۍ كي له جاوا څخه چين ته ور وپېژندل سول او دغه دود هلته په خورا چټكۍ سره خپور سو. ورپسې خبره تر دې ورسېدل چي انګرېزانو د هند ترياك چين ته صادرول او دا د دوى دتجارت ستر توكى وو. په ۱۸۳۹ع.كال د چين حكومت ترياك منع كړل او نژدې شل زره صندخه ترياك يې چي د انګرېزانو په تجارتخانو كي پراته وه ضبط كړل او له منځه يې يووړل. انګرېزانو د چين د كانتن ښار كلابند كړ او بيا يې د چين سره هغه جګړې ته ور ودانګل چي د ترياكو په جګړه ونومول سول. دغه جنګ يو كال دوام وكړ. په پايله كي چينايان سولي ته اړ سول (۱۸۴۲د اګسټ ۲۹). د هانګ كانګ كوچنى ټاپو يې انګرېزانو ته وركړ او پنځه نور بندرونه يې هم د انګرېزانو د سوداګرۍ پر مخ پرانيستل. په دې ترځ كي امريكا او فرانسې هم له چين څخه امتيازونه تر لاسه كړل او د كاتوليك عېسوي مذهب د مبلغينو له كار او تبليغ څخه د ملاتړ امتياز يې هم په رسمي توګه په لاس راوړ.

په چيني ټولنه كي د ترياكو عمل د يوې ستونزي په توګه پاته سو څو چي په ۱۹۴۹ع.كال هلته كمونيستي اوښتون رامنځته سو او د دغه عمل جرړي يې له بېخه وايستې.

د ترياكو څكول لومړى په شمالي امريكا كي او بيا په اروپاكي هله پيل سول چي د هندي تمبكو څكول په پايپ كي پيل سول. ځينو كسانو به ترياك د تمبكو سره ګډول او څكول او ورو ورو دغه ډول څكول د ترياكو د كارولو غوره دود وګرځېد.

په لوېديځ كي د دردونو د آراموونكي درمل په توګه د ترياكو په پراخه پيمانه كارول په اتلسمه پېړۍ كي رامنځته سول. دغه مهال په ډېروpatent درملو، په يو ډول ټينچرو (له ترياكو او الكولو څخه په جوړو سوو ټينچرو) او په ځينو نورو مسكنو درملو كي ترياك ستر توكى وو. دغه درمل بېخي په آزاده توګه كارول كېدل او په دې هكله څه قانوني او روغتيايي بنديز نه وو.

وروسته چي د ترياكو كر په هند، تركيه او چين كي زيات سو او كله كله نورو هيوادونو ته هم لېږدول كېدل له ترياكو څخه د هېروئينو جوړول رامنځته سول او په سر ترسره نړۍ كي يې په مليونونو وګړي په استعمال روږد سول.

خو څنګه چي وروسته د دې مادې سخت وژونګي ضررونه په ډاګه سول. نو د شلمي پېړۍ په دوهمه نيمايي كي د نړۍ په ډېرو هيوادونو كي د هغو استعمال او كار وبار منع سو. خو د دې سره سره اوس هم ترياك او هېروئين په ډېرو هيوادونو لكه برما، افغانستان، لاووس، پاكستان او نورو كي توليديږي او د مخدروموادو د مافيايي بانډونو لخوا كوم چي زيات غړي يې امريكايان او اروپايان دي په خورا پراخه پيمانه نورو هيوادونو ته صادريږي. د دغو مخدرو موادو د غير قانوني كاروبار پيسې د ځينو اروپايي هيوادونو په بانكونو او نورو كي لاندي باندي كيږي.

د اړوندوسر چينو او خبري رسنيو له خولې ويل سوي دي چي په ۲۰۰۶ع. كال يوازي له افغانستان څخه د درو مليارډو ډالروپه ارزښت مخدر مواد اروپاته صادر سوي دي چي اويا فيصده ګټه يې لويو اروپايي كار وباريانو او دېرش فيصده يې د افغانستان بزګرو او نورو ته رسېدلې ده.

د ترياكو روغتيايي ضررونه:

لكه چي وويل سول ترياك څو پېړۍ د دردونو اصلي آراموونكي ګڼل كېدل او په درملو ګډېدل. اوس هم د خشخاشو، كوكنارو او ترياكو څخه د درملو په توګه او په درمل جوړولو كي كار اخلي.

د خشخاشو د پوستکى خورک خوب راوړي، دردونه تسکينوي او قبض پيدا کوي. خوترياك چي خلك يې د نشې په ډول استعمالوي د انسان روغتيا ته ډېر مضر توكي دي. بدن ډنګروي، اشتها بندوي. ترياک د دماغ او رئيسه اعضاوو (د بدن د بنسټيزوغړو لکه زړه، دماغ، اينې اونورو) اوعصبي نظام (نروس سيسټم، Nervous System) لوى دښمنان دي. د انزال د ځنډېدو سره مرسته کوي، خو وروسته انسان کمزورى کوي. که څوک ترياک، يا شراب يا بنګي يو څو موده وخوري، د بدن حجرات يې مړه کيږي او بدن يې لکه د وني تشه تنه غوندي کيږي. څنګه چي ترياک خوب ډېروي له دې امله ځيني ميندي د دې لپاره چي د ماشوم له ژړا څخه فارغي سي يا خپل کار په بيغمۍ سره وکړي، نو کوچني ته لږ ترياک ورکړي، چى هغه آرام بيده سي. خو د دې څخه د کوچني زړه، معده، ځګر او دماغ ټول کمزوري کيږي او ماشوم په ناروغي اخته کيږي.

لكه چي پوهيږو د ترياكو له شيرې څخه كومه چي له تازه كوكنارو او د هغو له تازه خشخاشو څخه راوزي مورفين ) ج (morphine، هيروئين (Heroin)، كوډئين، (Codeine) پاپاورين (Papaverine) او نور استخراجوي.

مورفين:

يو ډول مخدر او درد آراموونكي زهري مواد (د ترياكو جوهر، ترخه الكوئيډ) دي چي په درملو كي استعماليږي. مورفين د لومړي ځل لپاره د ۱۸۰۴ع.كال په شاوخوا كي د يوه جرمني درمل جوړوونكي F.W.A. Sertürner لخوا له ترياكو څخه وايستل سول.

هېروئين:

يو نشه لرونكي سفوف يا پوډر دي چي د مورفينو له مشتقاتو (ترياكو) څخه د كېمياوي عمليې په پايله كي په لاس راځي او بېخي ډېر خطرناك مواد باله سي. د دغو زهرجنو موادو استعمال د انسان پر بدن او مغزو داسي ناوړي اغېزي ښندي چي د ترياكو پر ناروغيو سربېره يې په نورو داسي ناروغيو اخته كوي چي د ډېر عمر ناروغ غوندي تل بې سده پروت وي يا بېخي لېونى ځني جوړ سي.

دغه وژونكي مواد د لومړي ځل لپاره په 1898ع.كال د جرمني د باير كمپنۍ لخوا له مورفينو څخه كشف سول. هيروئين په لومړيو وختونو كي د مخدرو او آراموونكو موادو په توګه استعمالېدل.

د پورتنيو توكو په هكله شرعي او فقهي احكام:

لومړى به وګورو چي په دې اړه قرآن كريم څه فرمايي. بيا به وګورو چي د رسول الله ج له لارښوونو څخه څه استنباطيږي. بيا به د فقهي د ځينو (مختصرو) متونو او د هغو د شرحو او حاشيو خبري راوړو. او بيا به وګورو چي د فقهي نور كتابونه په تېره مطول كتابونه په دې هكله څه وايي:

د قرآن كريم احكام:

دلته تر ټولو د مخه بايد ووايو چي پر انسانانو باندي د حل او حرمت حق د لوى څښتنأ دى. خو هر څه چي لوى څښتن پر مسلمانانو حرام كړي دي، پر دوى باندي د قهر او هغو ته د جزا وركولو لپاره نه دي، بلكي لوى څښتن پر خپلو بنده ګانو باندي د لورېيني او پېرزويني په خاطر هر هغه څه چي د دوى په ګټه، پاك او بې ضرره دي حلال كړي او هر هغه څه چي ضرري او ناپاكه دي هغه يې ورته حرام كړي دي. دلته ستاسي توجه لاندي آيتونو او د هغو ژباړو ته را اړوو:

لوى څښتن فرمايي:

﴿يَسۡ‍َٔلُونَكَ مَاذَآ أُحِلَّ لَهُمۡۖ قُلۡ أُحِلَّ لَكُمُ ٱلطَّيِّبَٰتُ﴾ [المائدة: 4].

ژباړه: «خلك له تا څخه پوښتنه كوي چي هغو ته څه شي حلال كړىسوي دي ورته ووايه چي تاسي ته پاك شيان حلال كړل سوي دي».

﴿وَيُحِلُّ لَهُمُ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيۡهِمُ ٱلۡخَبَٰٓئِثَ﴾ [الأعراف: 157].

ژباړه: «هغه امي پېغمبر پاك شيان حلالوي او ناپاكه حراموي».

(د دې آيتونو په استناد پوهان وايي: هر هغه څه چي روغتياته ګټه رسوي هغه پاك او طيب دي او هر هغه څه چي ضرر ورته رسوي شراب وي كه چرس يا ترياك يا نوري نشه كوونكي ګولۍ يا نور څه وي هغه ناپاك او خبيث دي).

بل ځاى فرمايي:

﴿وَلَا تُلۡقُواْ بِأَيۡدِيكُمۡ إِلَى ٱلتَّهۡلُكَةِ﴾ [البقرة: 195].

«تاسي په خپلو لاسونو خپل ځانونه په هلاكت كي مه اچوئ».

بل آيت مبارك دى:

﴿وَلَا تَقۡتُلُوٓاْ أَنفُسَكُمۡۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ بِكُمۡ رَحِيمٗا ٢٩﴾ [النساء: 29].

يعني «خپل ځانونه مه وژنئ. باور ولرئ چي لوى څښتن پر تاسي مهربانه دى». د دې آيت په استناد عالمان وايي: مسلمان ته روا نه ده چي له داسي خورك يا چيښاك څخه استفاده وكړي چي سمدستي او يا يې په تدريج هلاك كړي او يا ورته مضر او موذي تمام سي. (وګورئ منهيات در اسلام۴۷۲مخ).

بل ځاى فرمايي:

﴿وَلَا تُبَذِّرۡ تَبۡذِيرًا ٢٦ إِنَّ ٱلۡمُبَذِّرِينَ كَانُوٓاْ إِخۡوَٰنَ ٱلشَّيَٰطِينِۖ وَكَانَ ٱلشَّيۡطَٰنُ لِرَبِّهِۦ كَفُورٗا ٢٧﴾ [الإسراء: 26-27].

ژباړه: «بې‌ځايه لګښت (اسراف) مه كوئ، بې ځايه لګښت كوونكي د شيطانانو وروڼه دي او شيطان د خپل څښتن نا شكره دى».

په دغو ناولو توكو روږد كسان د هغو پر رانيولو زښتي زياتي پيسې د هغو خرڅوونكو او قاچاقبرانو ته وركوي. چي دا په دغه آيت كي له ويل سوي اسرافه څخه پرته بل څه كېداى سي؟

د رسول ج سپېڅلي لارښووني:

رسول ج فرمايي:

«كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ». (مسلم، كتاب الاشربة، باب بيان انه كل مسكر خمر و انه كل خمر حرام ۷۰ ــ (۱۷۳۳) حديث).

د پورتني حديث معنا داده چي هر نشه كوونكى شى حرام دى.

دغه راز د رسول ج بل حديث دى:

«كُلُّ مُسْكِرٍ خَمْرٌ وكُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ» په بل حديث كي داسي راغلي دي:

«كُلُّ مُسْكِرٍ خَمْرٌ وكُلُّ خَمْرٍ حَرَامٌ». (مسلم، كتاب الاشربة). يعني هر نشه كوونكى شى خمر (شراب) باله سي او هر نشه كوونكى يا هر خمر حرام دي.

بل حديث دى: «نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ كُلِّ مُسْكِرٍ وَمُفَتِّرٍ». (رواه ابوداود في الاشربة. قال الحافظ الزين العراقي: اِسناده صحيح وصححه السيوطي في الجامع الصغير). يعني رسول ج له هر نشه كوونكي او كمزوري كوونكي شي څخه منع فرمايلې ده.

بل حديث دى: «لَا ضَرَرَ وَلَا ضِرَارَ». (مسند امام احمد او سنن ابن ماجه). يعني نه خپل ځان ته ضرر رسول جايز دي نه بل چا ته.

د چرسو ترياكو او داسي نورو استعمال هم بدني ضررونه لري او هم مالي.

د الزواجر په ۱/ ۳۰۵ مخ كي وايي چي دغه حديث د چرسو، ترياكو او داسي نورو شيانو په تحريم كي اصل او بنسټ دى. او مفتر هر هغه شي ته وايي چي فتور، ضعف، سستي، كهالي او كمزوري راولي. او دغه شيان ټول مسكر (نشه كوونكي)، مخدر (د اعصابو سستي او تشنج راوړونكي) او مفتر (د بدن د غړو كمزوري كوونكي) دي. په دغه كتاب كي يې د چرسو او نورو مخدراتو د ديني او روغتيايي ضررونو په هكله ډېر مفصل بحث كړى او د چرسو (۱۲۰) ديني او دنيوي اضرار يې بيان كړي دي او چرس يې تر شرابو ډېر بد ګڼلي دي. وايي چي ابليس تر بل هر څه زيات د چرسو په څكولو خوشاله كيږي. ځكه چي دايې خسيسو نفوسو ته ښايسته ايسولي او هغو هم روا ګڼلي او څكوي يې.

د بخاري په «كتاب الاشربه، باب ما جاء في ان الخمر ما خامر العقل» كي د حضرت عمرس خطبه راوړل سوې ده. په دغه خطبه كي هغه فرمايي: «الْخَمْرُ مَا خَامَرَ الْعَقْلَ». «خمر هغه دي چي عقل غايب، ګډوډ او زايل كړي او له خپله اصلي حالته بدلون ورته وركړي».

امام ابن حجر/ د فتح الباري په ۱۰/ ۶۰ مخ كي د دغو ټكو د څرګندولو په ترځ كي مفصل بحث كړى دى چي لنډيز يې دادى: حضرت عمرس په دې هكله د شرعي تعريف داسي بيان كړى دى چي كوم خمر چي د شرعي په ژبه حرام بلل سوي دي هغه دي چي عقل ګډوډ او له خپله حالته بدل كړي. نور احاديث هم سته چي هر مسكر او عقل ګډوډوونكى شى، له انګورو په لاس راغلى وي يا له بل شي څخه خمر باله سي.

حضرت ملا علي قاري د مرقاة په ۷/ ۲۲۶ او ورپسې مخونو كي او شيخ عبدالحق محدث دهلوي د اشعة اللمعات په ۳/ ۲۹۰ او ورپسې مخونو كي وايي چي هر هغه څه چي مسكر (نشه كوونكي) وي او عقل ګډوډوي له انګورو وي ياله بل شي څخه خمر باله سي او حرام دي.

په دې ډول شراب، چرس، ترياك، او داسي نور ټول مخدرات كوم چي عقل ګډوډوي خمر او حرام باله سي.

د فقهي د ځينو متونو او د هغو د شرحو او حاشيو خبري:

د هدايې د كتاب الحدود په باب حد الشرب كي يې د بنګو استعمال مباح بللى دى او كه څوك د هغو له خوړلو څخه نشه سي د حد د جاري كېدو موجب يې نه بولي.

په عنايه كي وايي چي: «په هدايه كي چي يې د بنګو د اباحت په هكله ويلي دي دا د عامو كتابونو موافق خبره ده. خو د امام محبوبي په جامع الصغير كي يې د بنګو نشه حرامه بللې ده، او پخپله بنګي يې حرامي نه دي بللي».

د بحرالرائق د كتاب الحدود، باب حد الشرب په ۵/ ۴۶ مخ كي هم وايي چي: «بنګي پر صحيح مذهب مطلقاً حلالي دي».

خو د بحر الرائق په حاشيه منحة الخالق كي ليكي: «څه چي په تنوير الابصار كتاب كي ويل سوي دي د دې خلاف دي. په هغه كي وايي: د بنګو، چرسو او ترياكو استعمال حرام دى. خو حراموالى يې د شرابو غوندي نه دى. ورپسې وايي: بنګي دوه ډوله دي كومي چي عقل زايلوي هغه حرامي دي او پر دې فتوا ده. او بل ډول يې مباح دي. دغه ډول يې كه څه هم عقل مختلوي خو زايلوي يې نه». (د بحر د ۵/ ۴۶ مخ لمن ليك).

د فقهي د نورو مطولو كتابونو څرګندوني:

دا خو د فقهي د ځينو (مختصرو) متونو او د هغو د شرحو او حاشيو خبري وې. اوس به وګورو چي د فقهي نور كتابونه په تېره مطول كتابونه په دې هكله څه وايي:

په درالمختار كي وايي: «د بنګو، چرسو او ترياكو خوړل حرام دي. ځكه چي دا شيان د سړي عقل فاسدوي او د خداى له ذكر او لمانځه يې را ګرځوي. او څوك چي بنګي او چرس حلال بولي هغه زنديق او مبتدع دى. بلكي ځينو ويلي دي چي په دې خبره كافر كيږي او مرګ يې روا كيږي». (وګورئ ردالمحتار۵/ ۴۰۴، ۴۰۵مخونه).

د ردالمحتار په همدغو مخونو كي وايي:

«دا چي په هدايه او نورو كي يې د بنګو استعمال مباح بللى دى، موخه يې د درملني لپاره د هغو لږ استعمال دى. په غاية البيان كي د شرح شيخ الاسلام په حواله وايي چي: د درملني لپاره د سقمونيا (Scammony) يو ډول د سريښو غوندي درمل چي د سختو جلابو لپاره يې استعمالوي. او بنګو لږ استعمال مباح دى او د ډېرو استعمال يې چي څوك وژني او يا يې عقل له منځه وړي حرام دى او حراموالى يې هم د هغو د مضر والي له امله دى. ابن حجر د ځينو علماوو له خولې ويلي دي چي د چرسو په استعمال كي يوسل وشل ديني او دنيوي ضررونه سته. دا چي څلورو امامانو په دې هكله څه نه دي ويلي دا له دې امله وو چي د هغو په وختو كي چرس نه وه. چرس د چنګېزيانو په وختو كي د شپږمي سپوږميزي پېړۍ په وروستيو او د اوومي پېړي په لومړيو كي پيدا سول».

د الفقه على مذاهب الاربعة په ۲/ ۸مخ كي وايي: «هر هغه څه چي بدن او عقل ته ضرر رسوي لكه ترياك، چرس او كوكايين (Cocaine) يوه نشه كوونكې او بې حسه كوونكې دوا (او د مضرو او مسموموونكو ټولو شيانو استعمال په شديد حرمت سره حرام دى».

د حلال و حرام در اسلام په ۱۰۴ مخ كي ليكي: «مخدر مواد لكه چرس، ترياك، هيروئين او نور حرام دي». په نوموړي كتاب كي يې د دې موادو ډول ډول ضررونه په تفصيل سره بيان كړي دي او د هغو او د شرابو فرق يې نه دى كړى. ان تر شرابو يې بد تر ګڼلي دي.

پورته خبروته ورته خبري يې په فتاوٰى عزيزي ۲/ ۱۲۰ مخ كي هم كړي دي.

دغه راز يې په الزواجر عن اقتراف الكبائر كتاب كي له ۱/ ۳۰۵ تر ۳۱۰ مخونو پوري د بنګو، چرسو، ترياكو او داسي نورو د حرمت او زياتو روغتيايي ضررونو په هكله د اسلامي عالمانو او نامتو طبيبانو د ويناوو او نظريو په استناد په تفصيل سره څرګندوني كړي دي. د دې توكو د استعمال له بديو څخه يې يوه دا ليكلې ده چي له استعمالوونكي څخه يې د مړيني پر مهال د شهادتينو ويل هېريږي. لوى څښتن مودي آل او اولاد ځني وساتي.

په پاى كي بايد ووايو چي په دې هكله ستر اوسمهالي اسلامي پوه او فقيه علامه عبدالرحمن الجزيري د كتاب الفقه على المذاهب الاربعة په ۵/ ۲۸مخ كي د يوه ډېر اوږده بحث په ترځ كي د بيرو، چرسو او نورو مخدراتو د حراموالي په هكله ډېري مدللي څرګندوني كړي دي چي موږ يې دلته لنډيز د ګرانو لوستونكو د لا زياتي استفادې لپاره وړاندي كوو:

ځيني فاسقان فكر كوي چي د بيرو چيښل روا دي، ځكه چي دا د اوربشو اوبه دي. او څنګه چي چرس او نور مخدر مشروبات د رسول ج په وختو كي نه وه او د هغو د تحريم په هكله كوم نص (آيت) هم نه دى راغلى نو د هغو استعمالول حلال دى. په داسي حال كي چي ټولو اسلامي عالمانو د چرسو، ترياكو او نورو پر حراموالي اجماع كړې ده. په دې هكله د مصر د مفتي فتوا هم صادره سوې ده. او د مجلة الازهر د ۱۳۶۰سپوږميز كال د برات (شعبان) په ګڼه كي خپره سوې ده. د دغو موادو د استعمال په حراموالي كي هيڅ شك نسته ځكه چي دا د سترو ضررونو او زياتو مفاسدو لامل ګرځي. عقل فاسدوي او بدن د ډول ډول ناروغيو سره مخ كوي. نو هيڅ ممكنه نه ده چي شريعت دي د هغواستعمال اجازه وركړي. ځينو حنفي علماوو ويلي دي: «څوك چي چرس حلال بولي هغه زنديق او مبتدع دى». دغه راز څوك چي نور داسي مخدرات كوم چي ضرر يې تر چرسولاهم زيات دى حلال بولي هغه هم زنديق او مبتدع دى.

همدغه ټولي لوړي يادي سوي بدۍ او ضررونه په ترياكو كي هم سته، بلكي د ترياكو ضررونه نور هم زيات دي او نور نوي مخدرات هم دغسي دي. څوك چي له دغو مخدراتو څخه كوم شى حلال بولي له هغو كسانو څخه دى چي پر لوى څښتن افترا كوي او يا پر لوى څښتن هغه څه وايي چي په خبر نه دي. زموږ پاك اسلامي شريعت څنګه داسي شى حلالوي چي اسلامي ټولني او د مسلمانانو بدن، عقل، دين، اخلاقو او مزاج ته يې مادي، روغتيايي او نور ډول ډول ضررونه د شرابو په نسبت زيات رسيږي؟ د دې شيانو د حلال والي خبري يا داسلام په هكله جاهل كوي يا يې زنديق او مبتدع كوي.

د اسلام دښمنان موږ د چرسو او نورو په نشو د دې لپاره اخته كوي چي زموږ ځوانان ضعيف سي، شته يې خرڅ سي، له مړاني ولوېږي، شهامت يې له منځه ولاړ سي او عقلونه يې فاسد سي، څو د پر مختللو ولسونو سره په سيالي او مبارزه كي وروسته پاته سي او غليمان پر مسلط او هيواد يې د هغو تر ښكېلاك لاندي راسي. لكه چي اسرايل د عربو د هلاك لپاره په هغو كي چرس او ترياك ترويجوي. (دا وې د الفقه على المذاهب الأربعة څرګندوني چي په لنډه توګه وړاندي سولې).

(د يادولو وړ ده چي اوس امريكايان، اروپايان او د دوى ګوډاګيان په ظاهره د ترياكو او هېروئينو د كرلو او دودولو پړه پر افغانانو او نورو اچوي، خو له اصله دوى په ډول ډول چلونو د مسلمانانو او نورو بې وزلو ولسونو دين او صحت ته مضر توكي لكه شراب، چرس، هېروئين، سګرېټ او نور په دوى كي دودوى او له دې دركه په مليارډونو ګټي هم تر لاسه كوي).

په دې هكله زما هيله له درنو او حق پالو مسلمانانو څخه داده چي موږ مسلمانانو بايد د پورته صريحو او مستندو حكمونو او دلايلو په مقابل كي د ځينو كتابونو او كسانوپه غير مستندو څرګندونو ناسم استدلال ونه كړو، بلكي د حقايقو له ليدو، تقوا او زښت زيات احتياطه كار واخلو.

څرګندونه:

تاسو پوهېږئ چي زموږ دولتي چارواكي د شرابو، چرسو، هېروئينو او داسي نورو ټولوپه ديني او روغتيايي تاوانونو ډېر ښه پوهيږي او د كفري دولتونو چارواكي كه يې په ديني تاوانو پسي نه ګرځي، روغتيايي تاوانونه خو يې ښـه ورمعلوم دي. خو څنګه چي په چرسو زموږ په هيواد كي ډېر خلك روږد دي او پر شرابو هم زياتره د كفري او اسلامي هيوادونو ډېر عياش او فحاش چارواكي او شتمن او بې بندوباره خلك خوند اخلي، نو نه زموږ د دولت چارواكي په دې هكله دونه سر ګرځوي، نه د كفري هيوادونو چارواكي. خو څنګه چي د ترياكو او هيروئينو په اړه د كفري هيوادونو د سراښو طاغوتي مادي پالو ځواكونو لېوالتيا ــ د دوى او د نړيوالو قاچاق وړونکو د ګټو په پام کي نيولو سره زياته ده، نو كفري هيوادونه او د هغو لاسپوڅي زياتره تبليغات يوازي د ترياكو او هيروئينو پر ضد كوي. البته دا د دې لپاره نه كوي چي ګواكي هغوى د خپلو خلكو يا د نورو د روغتيا غم اخيستي دي، بلكي دا ټول د دې لپاره دي چي د دوى مادي ګټي په خوندي او شومي موخي په تر سره سي. كه نه كه په رشتيا د هغو سره د خپلو خلكو او بشريت څه پروا واى نو خپل خلك به يې په عراق او افغانستان كي په مسلمانانو نه وژلاى او په عراق، فلسطين، افغانستان او نورو ځايونو كي به يې د مسلمانانو پر وژلو او د هغو د هيوادونو پر ورانولو دا دونه ستر لګښتونه نه كولاى.

د تمباکو ضررونه او حراموالى

موږ بايد ډېر خوښ واوسو او شكر وباسو چي د اسلام د مقدس دين پيروان يو. اسلام چي د نړۍ وروستى دين دى په هغه كي انسانانو ته د متوازن، معتدل، ښه او ښكلي، هوسا او بسيا ژوندانه هراړخيزي لاري چاري بيان سوي دي. له دې امله دغه مبارك دين موږ ټولو ته يو ستر نعمت دى چي بايد قدريې وكړو او په ژوندانه كي د هغه لارښووني په بشپړه توګه عملي كړو.

د دې سپېڅلي دين بله ښېګڼه داده چي خپل منونكي لوړ همتي، زياركښ، چسپانده، پياوړي او تكړه، روغ رمټ او په كار بوخت خوښوي او هغوى له داسي چارو را ګرځوي چي له امله يې ټنبل، مړژواندي، لټان، بې واكه او بې ځواكه، ناپوه او غافله واوسي.

له بده مرغه د دې مقدس دين د دښمنانو؛ طاغوتي مادي ځواكونو، نصاراوو، يهودو، هنودو او د دوى ډول ډول بې شعورو، بې اصولو، ټيټتيا خوښو او د خپلواكۍ او د خپل فرهنګ په خوند ناخبرو ګوډاګيانو او لاسپوڅو د توطئو، دسيسو او بې همتيو له امله مسلمانان او د نړۍ نور ډېر بې وزلي ولسونه او پرګنې په ډول ډول بخولو او خواريو اخته دي. له يوې خوا انسان د مهال په غوښتنه د ماشين غوندي په كارونو لګيا او ستړى ستومانه دى. له بلي خوا په ډول ډول مضرو او نشيي توكو داسي اخته دى چي ان د ډېرو په ديني او روغتيايي اضرارو هم نه دى خبر.

له دغو توكو څخه زيات يې څنګه چي له پخوا څخه موجودوه، لكه شراب، د سركوزي غوښي اونور اسلام په قطعي توګه حرام ګڼلي دي. ځيني چي په راوروسته وختونو كي پيدا سوي دي، لكه بنګي، چرس، ترياك او نور اسلامي عالمانو د هغو د روغتيايي او داسي نورو ضررونو له امله د اسلام د اصولو له مخي حرام بللي دي. ځيني چي په را وروسته كي پيدا سوي لكه تمباكو او له هغو څخه جوړ سوي توكي تر هغو چي روغتيايي اضرار يې ښه نه وه څرګند ځينو عالمانو د هغو د حلال والي فتواوي وركړي دي. خو وروسته چي د هغو ډول ډول ضررونه په ډاګه سول نو ډېرو اسلامي عالمانو د هغو د حرمت په هكله فتواوي وركړې.

له بده مرغه زموږ په ګران هيواد كي تمباكو د چلم، سګرېټو او نسوارو په توګه بېخي ډېر استعماليږي، چي ډېر خلك يې په ضررونو او حرمت نه دي خبر. نو موږ وپتېيل چي په دې كتاب كي د تمبكو او د هغو د روغتيايي تاوانونو په هكله څه ډېره رڼا واچوو؛ لومړى د تمبكو او د هغو د روغتيايي ضررونو په هكله څه معلومات وليكو او بيا د هغو د حراموالي په هكله د اسلامي عالمانو د فتواوو او څرګندونو په هكله معلومات وړاندي كړو:

د تمباكو روغتيايي ضررونه:

څنګه چي د تمباكو په هكله څېړني سوي دي په دې بوټي كي يې (۲۵۰) زهرجن مواد موندلي دي. چي له دې امله روغتيا ته له ډېرو مضرو او مرګونو توكو څخه شمېرل كيږي. د تمبكو له زهرو څخه ډېر خطرناكه يې نيكوټين (Nicotine) دي چي د هغو ډېره بده اغېزه د زړه د دربي او د ويني د لوړ فشار په بڼه څرګنديږي.پر دې سر بېره څو نوري ناروغۍ لكه د سږو سرطان، د زړه او د نس خوږ، د ستوني، كولمو او پښتورګو ناروغۍ هم ځني پيدا كيږي چي له امله يې هر كال په مليونونو وګړي د مړيني كومي ته ورلويږي. د يوې احصائيې له مخي يوازي په ۲۰۰۰ع.كال نژدې څلور مليونه وګړي د تمبكو د اغېزو له امله مړه سوي دي. په صحت بخش عادات كتاب كي ليكي:

«په دې كي هيڅ شك نسته چي راتلونكي تاريخ ليكونكي به زموږ د عمر او عادتونو د پوهېدو په هكله د دې خبري جواب ونه لري چي په شلمه پېړۍ كي خلكو ولي خپل ژوند پخپله پوپنا كاوه؟ كه دا ووايو چي تمباكو څكوونكي خپلو ځانونو ته پخپله سزاوركوي دا به بې ځايه خبره نه وي. څنګه چي د تمباكو څكوونكي خوله د هغه د لوګي (دود) له بده بويه څخه ډكيږي نو د هغه د غاښو د خرابۍ سبب هم ګرځي. دغه راز په تمبكو يو پوخ او ډېر روږد څكوونكى د خولې، سږو او ګېډي په بېلابېلو ناروغيو اخته كېدلاى سي. همدا شان طبي څېړنو جوته كړې ده چي له اتو تنو سګرېټ څكوونكو څخه يو د سږو د سرطان د اخته كېدو وړګرځي». (۱۲۸، ۱۲۹مخونه)

په زموږ خواړه او درمليز توكي كتاب كي ليكي:

«تنباکو ګرم او وچ دي. دا يو ډېرمضر بوټۍ دى. سږو، دماغ او اينې ته ډېر تاوان رسوي. د تنباکو له استعمال څخه خوله بدبوى کوي، خو پر هغه چا چي تنباکو څکوي پر هغه يې بدبوى نه لګيږي اما پر هغه چا چي تنباکو څکوونکي ته نژدې ناست وي، پر هغه ډېر بد لګيږي او دماغ يې ورخرابوي. د دې توكي استعمال بېله يو څو ناروغيو څخه په هيڅ حالت کي ښه نه دى. روغتيا پوهان په دې عقيده دي چي د سګرېټ څکوونکي تر نورو ډېر د سږو د سرطان په ناروغۍ اخته کيږي.

د تمباکو څکولو او سګرېټ جوړولو پرضد د نړۍ په ګوټ ګوټ کي د اعتراض ږغونه پورته سوي دي. خو له بده مرغه د سګرېټ جوړولو کمپنۍ ترمادي ګټو او سګرېټ څکوونکي د هغو تر څکولو نه سي تېرېدلاى. چي په دې ډول له يوې خوا انسانان د خپل خواږه ژوند ـ د خداى تعالى له دې ستر نعمت سره ــ بې پروايي کوي او له بله پلوه د دې پر ځاى چي د وږو او بې وزلو لاس ونيسي د ورځي په ميلونونو ډالر سوځي چي دا ډېر د فکر او حيرت ځاى دى». (۸۰، ۸۱ مخونه)

دغه راز په «صحت بخش عادات» نومي كتاب كي ليكي:

«د سګرېټو څكولو تاوان يوازي د هغه څكوونكي ته نه رسيږي، بلكي په سګرېټو عادي وګړي خپل شاوخوا هم ككړوي. د سګرېټو دود ته نژدې خلك هم ناروغه كيږي. د نوو څېړنو سره سم د سګرېټو دود د سګرېټ څكوونكي په پرتله هغه ته نژدې ناست يا ولاړ چا لپاره ډېر تاواني دى. پر هغو كسانو چي سګرېټ يې نه دي څكولي او د زړه په نارو غي يا سرطان اخته دي د څېړنو په پايله كي څرګنده سوې ده چي دغسي خلكو تر يوه مهاله پوري د سګرېټ څكوونكو سره ناسته ولاړه درلوده او په غير ارادي توګه او په بې خبري كي يې د سګرېټو وژونكى او په زهرو لړلى لوګى خپلو سږو ته دننه كړى دى. د مختلفو طبي رپوټونو څخه څرګنده سوې ده چي د سږو له هرو درو ناروغانو څخه يو ناروغ هغه دى چي پخپله يې سګرېټ نه دي څكولي خو د سګرېټ څكوونكو سره يې ناسته ولاړه وه. د دغسي ناروغانو لپاره څېړونكو د «د دوهم لاس سګرېټ څكوونكي» (Second Hand Smokers) اصطلاح وضع كړې ده». (۱۳۰ مخ)

دغسي كسانو ته د (Passive Smoing) يعني د غير ارادي تمباكو څكونكو اصلاح هم كارول كيږي.

په «تمباكو اور اسلام» كتاب كي ليكي:

«له تمبكو څخه سږي، ستونى، خوله، كولمې، مثانې او نور د سرطان ښكار كيږي. زياتره د زړه ناروغۍ ځيني رامنځته كيږي. دغه راز د تمبكو له استعمال څخه ذهن كمزورى كيږي، اعصاب خرابيږي، د سترګو ليده او د اورېدو ځواك كميږي، سر پر له ګرځي، د هاضمې قوت ورانيږي او د مردانګۍ ځواك اغېزمن كيږي. يوازي د هند په نيمه وچه (هندوستان، پاكستان او بنګله دېش) كي د تمبكو له ژوولو څخه تر يو ميليون زيات وګړي د خولې او ستوني په سرطان اخته دي. د نارينه وو په پرتله ښځوته له تمبكو څخه ډېر تاوان رسيږي. د تمبكو له څكولو څخه د ښځي په مياشتنۍ ناروغۍ كي اخلال راځي او كه د ښځي كوچنى په نس وي له تمبكو څكولو څخه د كوچني د زړه حركت د معمول سره سم نه وي. دغه راز د تمباكو څكوونكي مور اولاد له ذهني پلوه معذور پيدا كيږي او كېداى سي چي تمباكو څكول د حمل د اسقاط لامل هم سي. په امريكا كي په ۱۹۹۳ع.كال پنځوسو زرو ښځو د تمبكو د څكولو له امله حمل اسقاط كړ. د يوه طبي رپوټ سره سم كه مور تمباكو څكوي د هغه اغېز به د هغې په څو پښتو كي څرګند وي». (۱۴۱، ۱۴۲مخونه)

د تمباكو نوم:

د تمباكو نباتاتي يا ساينسي نوم NICOTIANA TABACUM دى. د انسايكلوپيډيا بريټانيكا د يوه مقاله ليكونكي د ليكني له مخي د تمباكو عام نوم له هندو - امريكايي نامه (Tobacco) څخه اخيستل سوى دى. Tobacco هغه پايپ (Pipe) ته وايي چي د هغه په ذريعه د امريكا اصلي اوسېدونكو (سور پوستو هنديانو) د تمباكو بوټۍ په څكاوه.

د نوو څېړنو له مخي كرسټوفر كولمبس او د هغه بېړۍ چلوونكو ملګرو د ميكسيكو د خليج په Tobago ټاپو كي د دغه ځاى اوسېدونكي وليدل چي دغه بوټى يې استعمالاوه. په دې مناسبت يې د دغه ټاپو نوم په انګريزي Tobacco وباله او پر دغه بوټي يې هم دغه نوم كښېښاوه.

خو مولانا محمد حسين آزاد بياپه «آب حيات» كي وايي: «د تمباكو لفظ د سانسكرت د تامر ګټ له لفظ څخه جوړ سوى دى او په ان بهت چكتسا ساګر كي د تمباكو نوم«تامر كوټا» درج دى».

په هر صورت اوس په فرانسوي ژبه كي تمباكو په Tabac او په هسپانوي كي په Tabaco تلفظ كيږي. په عربي كي يې په تبغ، دخان، تمباك، تنباك، طباق، طابه، تتن ياتوتون پېژني. خو توتون له تركي ژبي څخه اخيستل سوي دى چي د تمباكو په معنا استعماليږي.

دغه راز په دغه بوټي كي د نيكوټين د مادې د نوموني په هكله وايي چي په ۱۸۲۸ع.كال د جرمني د هايډل برګ د پوهنتون دوو تنو ساينس پوهانو (Reiman) او (Bosselt) پر تمبكو څېړنه وكړه او په هغو كي يې زهري ماده وموندل. نو څنګه چي په پرتګال كي استوګن فرانسوى سفير (Jean Nicot) د تمبكو د څكولو د دودولو په هكله ډېره ونډه اخيستې وه، په تمبكو كي موجود زهر يې د ده نامه ته منسوب كړل او Nicotine يې وبلل.

د تمبكو تاريخ:

وايي چي د تمبكو د كښت اصلي ځاى امريكا، په تېره ميكسيكو ده. نامتو ډاكټر محمد علي البار ليكي چي د ميكسيكو اوسېدونكي دوه نيم زره كاله دمخه له تمبكو څخه خبر وه. لكه چي مشهوره ده په ۱۴۹۲ع.كال چي د ۸۹۸سپوږميز كال سره سمون خوري د امريكې موندونكي كرسټوفر كولمبس وليدل چي د امريكا اصلي اوسېدونكي چي ده د ريډ انډين (سورپوستو هندوانو) نوم وركړ تمباكو څكول([[1]](#footnote-1)). دغه مهال د اروپا، افريقا او آسيا خلك د دې بوټي سره بلد نه وه. د امريكا اوسېدونكو ګومان كاوه چي تمباكو د طبي ځانګړنو درلودونكى دى. په اروپا كي د دې بوټي د دودېدو اصلي لامل هم همدغه وو. وايي چي كولمبس او د هغه ملګرو د تمبكو څه بوټي هسپانيې ته وروړل. بيا د امريكا اصلي اوسېدونكو هغه پرتګال ته يووړل. په پرتګال كي د فرانسې سفير (Jean Nicot) هغه په هكله طبي تجربه وكړه. دغه مهال د فرانسې د ملكې CATHERINE DE MEDICEIS پر سر درد سو نو جان نيكوټ د تمباكو بوټۍ د هغې د درملني لپاره ورولېږى. بيايې د هغه تخم فرانسې ته ولېږى. په دې ډول هلته د تمبكو كرنه پيل سول او خلكو د هغو استعمال په بېلو بېلو لارو پيل كړ. بيا تمباكو د اروپانورو هيوادونو ته ورسېدل.

ځيني بيا وايي چي تمباكو د لومړي ځل لپاره د هسپانيې يوه ډاكټر هونډيز نومي اروپايانو ته وروپېژندل. دغه ډاكټر د هسپانيې پاچا دوهم فليپ ميكسيكو ته د څه اطلاعاتي او تحقيقاتي چارو د تر سره كولو لپاره لېږلى وو.

ځيني تاريخ ليكونكي وايي چي ټيچر نومى لومړى سړى وو چي تمباكو يې اروپايانو ته وروپېژندل. ويل كيږي چي دغه سړي تر كولمبس يوه پېړۍ دمخه په ۱۳۹۲ع.كال د هندوستان په لټه بېړۍ چلول او امريكا ته ورسېد.

بيا دغه زهر جن بوټـى له اروپا څخه د ۹۹۹ او ۱۰۲۰سپوږميزو (۱۵۹۰ع. او۱۶۱۱ع.) كلونو په شاو خوا كي تركيې، عربي ملكونو، افريقا، ايران، افغانستان، هند، جاپان، روس او د نړۍ نورو هيوادونو ته ورسېد. هند ته دغه بوټى لومړى يوه پرتګالي سوداګر او بيا د شرق الهند د كمپنۍ كاركوونكو وروړ.

اوس دغه بوټۍ تر ټولو زيات په چين، امريكا او هند كي كرل كيږي. د يوې احصائيې له مخي په ۱۹۶۲ع.كال ۳، ۴ميليونه هكټاره مځكه په تمبكو كرل سوې وه. او اوس د نړۍ اتيا فيصده تمباكو د سګرېټو په جوړولو كي استعماليږي.

د تمبكو د استعمال پر خلاف اقدامات:

د تمبكو د څرګندو ضررونو له امله د هغو د څكولو د منع كولو لپاره له هماغه پيله په دولتي او ولسي كچه د مسلمانانو او نامسلمانو لخوا جدي اقدامات تر سره سوي دي. تر ټولو لومړى د تركيې پاچا لومړي سلطان احمدبن سلطان محمد ثالث د تمبكو د منع كولو په هكله اقدام وكړ. وايي كله چي هغه ته د تمبكو ضررونه معلوم سول نو يې د هغو د خرڅولو د دكانونو د بندولو حكم وركړ. بيا څلورم سلطان مراد عثماني (د كعبې شريفي بيا رغوونكي) حكم وكړ چي د تمباكو څكوونكو دواړي شونډي دي پرې كيږي او څوك چي تمباكو د پزي د نسوارو په توګه استعمالوي پزه دې پرې سي. ورپسې څلورم سلطان محمد عثماني د تمبكو د څكوونكو د پانسۍ حكم وركړ.

د مصر والي محمد اليدكشي چي په ۱۷۴۳ع.كال هلته وټاكل سو د كورونو په دروازو كي، په دكانونو او پر عامو سړكونو باندي د تمبكو څكول منع كړل او امر يې وكړ چي پوليس دي په قاهره كي د ورځي درې واره ګرځي او چي دغسي كسان ونيسي سختي سزاوي دي وركوي.

د مكې مكرمې شريف مسعود بن سعود په ۱۱۴۶سپوږميز كال فرمان جاري كړ چي په بازارونو او قهوه خانو كي دي په عامه توګه تمباكو نه څكول كيږي.

د انګرېزانو په وړاندي د سوډان نامتو مجاهد محمد احمد المهدي تمباكو حرام وبلل او څوك چي به يې پر استعمالولو ونيول سو اتيا درې به يې واهه او يوه اوونۍ به يې بندي كاوه.

د هند مغولي واكمن جهانګير او د ايران واكمن شاه عباس هم په خپلو ملكونو كي پر تمبكو څكولو بنديزونه لګولي وه. ان وايي چي په ايران كي يې د تمبكو د څكوونكو په خولو كي ايشېدلي تېل اچول، چي له دې امله ډېر وګړي د مرګ شومه سول.

عېسوي واكمنانو هم د تمبكو استعمال منع كړى وو. مثلاً د برتانيې واكمن لومړي ژاك، سر والټر والي نومى كوم چي د تمبكو څكول يې په برتانيه كي دود كړي وه، ونيو او د مرګ سزا يې وركړه. په روسيه كي به يې د تمبكو څكوونكي په شلاخو وهل او د سزا په دود به يې خصيانول. ځيني وايي چي كه به يې دوهم وار د تمبكو پر څكولو څوك نيولى واى پزه يې ورپرې كول او كه به يې درېيم وار پر نيولى واى د مرګ سزا يې وركول.

دا خو ټولي پخوانۍ خبري وې. اوسمهال هم د تمبكو د استعمال د مخنيوي لپاره د ځينو لخوا رشتيانۍ او د ځينو لخوا سرسري او غولوونكي هلي ځلي كيږي.

د بحرين د حكومت د اسلامي شؤونو رياست په ۱۹۹۴ع.كال د تمبكو د حراموالي فتوا وركړې ده. كويټ بېخي د سګرېټو څكولو پر خلاف قانون نافذ كړى دى، چي له مخي يې په عامو ځايونو كي پر سګرېټو څكولو بنديز لګېدلى دى. د خليج په دغه وړوكي هيواد كي كه څوك لومړى ځل له دغه قانونه سرغړونه وكړي پنځوس ډالره جريمه كيږي. كه دوهم وار له دغه قانونه سروغړوي درې سوه ډالره يې جريمه كوي او پر درېيم ځل يې بندي كوي. دا له دې امله چي په كويټ كي په تېرو لسو كالو كي درې زره تنه د سګرېټ څكولو په پايله كي د ورپېښو سوو ناروغيو له امله مړه سوي دي.

د تمباكو څكولو سره د ماليزيا نامتو مسلمان سياست پوه او پخواني لومړي وزير ډاكټرمهاتيرمحمد د سخت مخالفت له امله هلته په موټرونو، روغتونونو او نورو ټولو دولتي دفترونو او ودانيو كي تمباكو څكول په ټينګه منع سوي دي.

د ايټاليا حكومت هم په دې اړه يو قانون نافذ كړى دى چي له مخي يې په روغتونونو، ښوونځيو، پوهنتونونو، سېنماوو، موزيمونو، هوټلونو، او نورو كي د تمباكو څكول منع سوي دي. هلته كه څوك د دغه نوي قانون څخه سر وغړوي دوه لكه لېرې جريمه كيږي او كه څوك دغه قانون په خپلو ادارو كي پلى نه كړي پنځوس لكه لېرې جريمه به وركوي. (پنځوس لكه لېرې د دوه ويشت زرو فرانكو سره برابري دي). د يادولو وړده چي تر اوسه په نړۍ كي د داسي ستري جريمې سارى نه دى ليدل سوى.

اوسمهال د تمبكو د څكولو په منع كولو كي تر ټولو زيات بريالى هيواد او په دې هكله د سخت قانون درلودونكى سينګاپور دى. هلته په بندو ځايونو كي د سګرېټ څكولو جريمه پنځه سوه سينګاپوري ډالره ده. ان كېداى سي چي د دغه قانون سر غړوونكي ته د مرګ سزا وركړل سي. د دغه هيواد ټولي ډله ييزي رسنۍ د تمباكو پر ضد تبليغ او خپروني كوي. له دې امله په دغه هيواد كي تر ټولو لږ سګرېټ څكول كيږي. خلك د سګرېټو په تاوانونو پوهېدلي دي او دغه قانون ته ډېر درناوى كوي. ويل كيږي چي ښايي په نژدې راتلونكې كي په سينګاپور كي د سګرېټ څكول ګردسره ختم سي.

په ځينو هيوادونو كي له ټلوېزيونونو څخه د تمبكو په اړه د اعلانونو خپرول بند سوي دي او ځيني اخبارونه او مجلې هم په دې اړه اعلانونه نه خپروي. په الوتكو كي هم د تمبكو څكوونكو چوكۍ د هغو كسانو له چوكيو بېلي وي چي تمباكو نه څكوي.

په ځينو نورو هيوادونو كي هم د تمباكو پر څكولو باندي په ډول ډول لارو چارو بنديزونه لګول سوي دي. اوسمهال هركال د روغتيا د نړيوالي ادارې لخوا د مى (۳۱) د تمبكو نه څكولو د ورځي په نامه لمانځل كيږي. دغه راز د ښځو يوې ډلي د تمبكو څكولو په خلاف د ښځو نړيواله ټولنه جوړه كړې ده، څو ښځي له تمبكو خرڅولو او څكولو څخه را وګرځوي. خو لكه چي ښكاري د روغتيا د نړيوالي ادارې او نورو طاغوتي مادي پالو ځواكونو او سازمانونو هلي ځلي رشتيانۍ نه، بلكي رياكارانه دي. له دې امله دى چي د دغو ځواكونو او سازمانونو دروغجنو او غولوونكو كارونو او تبليغاتو دوني اغېزې نه دي ښندلي او ډېر لږ خلك د دغو مضرو توكو په ناوړو اغېزو پوهېدلي او ور ځني منع سوي دي.

امريكا چي د مدنيت، آزادۍ، بشري حقوقو او داسي نورو ډېرو ښېګڼو په ادعاوو كي دروغجنه، بلكي د دغو چارو ضد جوته سوې ده، په دې هكله هم دروغجنه ده. دا لا څه چي د هېروئينو او نورو مخدره موادو مافيا او لويه سواداګري او ستره ګټه يې هم په همدغه امريكا اړه لري. اوس د همدغه هيواد په نوو ځوانانو كي د ډول ډول مخدره موادو استعمال او تمبكو څكول ورځ تر بلي مخ پر زياتېدو روان دي او دولت دې لوري ته هيڅ بنسټيزه توجه نه كوي.

دردوونكې لا داده چي زموږ دې بې وزلي او پردو ته اړ هيواد ته دونه ډېر او په دونو ډېرونومونو سګرېټ را ځي چي توبه كاږه. اوس مهال زموږ له ښاري څخه نيولې ترصحرايي پوري كوچنيانو هلكانو، ځوانانو، ز ړو او ښځو په دكانونو، هوټلونو، كورونو، دفترونو، موټرونو او داسي نورو كي ډول ډول سګرېټونه چپه او راسته په خولو كي نيولي وي او دودوي يې. د دغو سګرېټو پر دبليو باندي د هغو د صفتونو لپاره ډول ډول تبليغاتي جملې او كلمې ليكل سوي او د دې تر تر څنګ بيا په سيمه ييزو ژبو داسي كلمات هم چاپ سوي وي: «سگرت كشيدن جداً مضر صحت است». «التدخين سبب رئيسي للسرطان وامراض الرئة والقلب والشرائين». يعني تمباكو څكول د سرطان، او د سږو، زړه او رګونو د ناروغيو بنسټيز لامل باله سي. «خبردار: تمباكو نوشي كينسر اور دل كى بيماريون كا باعث هے». يعني خبر اوسئ چي: تمباكو څكول د سرطان او زړه د ناروغيو لامل باله سي.

“HEALTH WARNING: SMOKING IS A MAIN CAUSE OF LUNG CANCER, LUNG DISEASE AND OF HEART AND ARTERIES DISEASES”.

يعني روغتيايي خبرتيا: سګرېټ څكول د سږو د سرطان، د سږو د ناروغۍ او زړه او رګونو د ناروغيو لامل باله سي.

ښه نو چي دا د دولتونو مشران او دروغتيا وزيران او ډاكټران په دې پوهيږي چي تمباكو اوسګرېټ د نسانانو روغتيا ته دغونه ستر خطرونه او تاوانونه لري نو ولي يې د ترياكو او هېروئينو غوندي كښت، توليد او له يوه هيواده بل هيواد ته لېږل او پېر او پلور نه منع كوي؟

ښكاره خبره ده چي دغه مشران او د روغتيا وزيران يا په خپله د دې توكو د كمپنيو څښتنان، سوداګر يا عمليان دي يا يې د سوداګرو ملاتړي او ملګري دي. او دا خبري يې هسي چټي رنګسايي ده او بس. كه چيري دغه ښاغلي شراب، چرس، هېروئين، سګرېټ او نور ټول مخدره مواد په ټپه بند كړي نو له دې مدركه دا دونه ګټي به له كومه كړي؟ او چي خلك دا شيان استعمال نه كړي نو دا دوني ناروغۍ به له كومه سي؟ او د دوى دا دونه درمل به پر چا خرڅوي؟ او د درملو دا دونه ستر كار وبار او دا ستري ستري كارخانې خوبه تقريباً په ټپه ودريږي؟ دلته بايد يادونه وكړو چي دا توكي له كومه سول او اوس له كومه راځي او ضررونه يې چاته او ګټي يې چاته رسيږي؟ ضررونه يې په لويه كچه مسلمانانو او بيا د كفري هيوادونو بې وزلو ته او ګټي يې د پانګي او پانګوالۍ خرمستو واكمنو او سراښو او يې وجدانو سوداګرو ته. مرګ او لعنت دي وي د انسانيت پر دغسي انسان مخو، شيطان صفتو دښمنانو!

اوس چي په لوېديزو هيوادونو كي د سګرېټ څكولو په باب څه پوهه او شعور پيدا سوى دى، د سګرېټ جوړولو لوېديزو كمپنيو كوششونه په لار اچولي دي چي دريمه نړۍ د خپلو سګرېټو د لا ډېرو خرڅولوستر ماركېټ جوړ كړي

خو له بده مرغه زموږ په هيواد كي د تمبكو پر ضد تر اوسه نه كوم قانون پلى سوى او نه په دې اړه كوم اغېزمن تبليغات سوي دي. بلكي تر څه مهال دمخه پوري حكومتونو د نسوارو پلورل په ټېكه وركول او له دې دركه به يې له ټېكه كوونكو څخه محصولونه اخيستل. بده يې لا دا چي د پوهنوال عبدالنبي ستانكزي په نامه يوه ليكوال د «صنعتي بوټي» په نامه يو كتاب په دري ژبه ليكلى چي سيد نور الله ځل په پښتو ژباړلى او د اكبر د اطلاعاتي او نشراتي منابعو مركز (اريك) په ۱۳۸۰ لمريز كال خپور كړى دى. د دغه كتاب په يوه برخه كي يې د تقريباً اتو مخونو په تورولو سره تمباكو دصنعتي بوټى په نامه تبليغ كړى، هغه يې د اقتصادي؟! ارزښتونو لرونكى بوټي ګڼلى او زموږ د هيواد بزګران يې د هغه كرلو او دودولو ته هڅولي دي. دغه كتاب دغي موسسې د اريك د ګرځنده كتابتون له لاري د هيواد د بېلو بېلو سيمو خلكوته د مطالعې لپاره وړاندي كړى دى.

د تمبكو په اړه طبي څېړني:

دا اند چي تمباكو روغتيا ته ضررناكه دي دغونه لرغونى دى لكه خپله تمباكو. په ۱۶۰۴ع.كال د لومړي ځل لپاره د برتانيې پاچا لومړي جېمز په رسمي توګه اعلان وكړ چي تمباكو روغتيا ته مضر دي. چي البته دا د تمبكو د ضرر په هكله لومړۍ څرګندونه وه. د تمبكو پر ضد لومړى طبي رپوټ په ۱۸۵۹ع.كال چاپ سو. په دې رپوټ كي ويل سوي وه چي د فرانسې په يوه روغتون كي (۶۸) ناروغان چي د شونډانو، ستوني، او د خولې د نورو برخو په سرطان اخته وه، تمباكو يې استعمالول. له هغو څخه (۶۶) تنو ناروغانو د تمبكو څكولو لپاره د خټو كوچني پايپونه جوړ كړي وه. چي د دې رپوټ په خپرېدو سره دغه پايپونه له استعماله ولوېدل. خو بيا هم د تمبكو څكولو سره د خلكو لېوالتيا مخ پر زياتېدو وه. په تېره تر لومړۍ او دوهمي نړيوالي جګړې وروسته د سګرېټو څكول نور هم زيات عام سول او په ټوله نړۍ كي خپاره سول.

د روغتيا نړيوالي ادارې (W.H.O.) رپوټ وړاندي كړ چي په كومو هيوادونو كي چي د سګرېټ څكولو لعنت ډېر عام سوى دى هلته د سږو د سرطان له ناروغۍ څخه د مړو شمېر په خطرناكه توګه مخ پر زياتېدو روان دى.

په ۱۹۵۴ع.كال د امريكا د سرطان ټولني (American Cancer Society) او د برتانيې د روغتيايي څېړنو د ډلي (British Medical Research Council) د دروكالو پر شمېرو مشتمل يو رپوټ خپور كړ. په دې ريوټ كي ويل سوي دي چي په مړو كي د نورو په پرتله د سګرېټ څكوونكو شمېره زياته ده.

په ۱۹۶۲ع.كال د برتانيې د (Royal College of Physicians of London) په يوه لنډ خو هر اړخيز رپوټ كي د تمبكو او د هغو پر اړوندو ناروغيو بحث سوى او د سګرېټو څكول يې روغتيا ته ډېر مضر جوت كړي دي. د دې رپوټ له امله د برتانيې حكومت يو پروګرام په لار واچاوه څو خلكو ته د تمبكو د استعمال د لږولو په هكله لازمي ښووني وسي.

په ۱۹۶۳ع.كال د امريكا د سرطان ټولني يو بل رپوټ خپور كړ. په دې ريوټ كي ويل سوي دي چي د سګرېټ څكولو په عادت كي پرله پسې زياتوب راځي او له دې امله په خلكو كي د مړيني شمېره هم مخ پر زياتېدو ده. خو د دې ټولو رپوټو نو سره سره په امريكا كي د تمبكو څكولو په اړه څه د پام وړ كمښت رامنځته نه سو.

په ۱۹۶۴ع.كال دامريكا دعمومي جراحۍ ادارې (United States Surgeon General) لخوا يوې جوړي سوي كمېټې تر دوو كلنو څېړنو وروسته په خپل رپوټ كي څرګنده كړه چي په امريكايي نارينه وو كي له ۱۹۵۰ څخه تر ۱۹۶۰ع. پوري د سګرېټ څكولو له امله د سږو د سرطان د ناروغانو د مړيني شمېره اويا فيصده زياته سوې ده. دغي كمېټې سګرېټ څكول روغتيا ته تر خطرناكي پولي مضر وګڼل او له حكومت څخه يې د هغو د كنټرول غوښتنه وكړه. په دغه رپوټ كي دا هم ويل سوي دي چي د سږو سرطان، د زړه د رګونو او د ويني ناروغۍ، د سږو سوى او د ټوخي غوندي خطرناكي ناروغۍ د سګرېټو څكولو سره اړه لري. دغه راز په دغه رپوټ كي دا هم راغلي دي چي د شونډانو سرطان په پايپ څكولو اړه لري.

په ۱۹۶۴ع.كال د امريكا حكومت پر روغتيا باندي د سګرېټو د ناوړو اغېزو په هكله د زياتو معلوماتو د تر لاسه كولو او څېړنو لپاره ستر لګښتونه وكړل او په دغه كال د تمبكو شپږو سترو كمپنيو هم لس ميليونه ډالر د امريكا د درملو ټولني ته د څېړنو لپاره وركړل.

په ۱۹۶۵ع.كال په امريكا كي يو قانون نافذ سو چي د ۱۹۶۶ع.كال د لومړۍ ورځي څخه دي د سګرېټو پر ټولو قوطيو روغتيا ته د تمبكو د تاوان په هكله لېبل ونښلول سي.

د ۱۹۷۱ع.كال له جنورۍ څخه په تلوېزيون كي د سګرېټو په هكله اعلانونه منع سول او د امريكا د سرطان ټولني او د زړه د درملني ټولني په ټلوېزيون كي د تمبكو څكولو پر ضد ډېري ښې خپروني وكړې.

دغه ډول څېړني اوس هم يه ډېرو هيوادونو كي رواني دي او وخت په وخت د تمبكو د ضررونو په هكله خپل ريوټونه خبروي. خو له بده مرغه په سګرېټ څكولو كي څه كمى نه دى راغلى او له دې امله ناروغۍ او د هغو درمل هم پر له پسې زياتيږي.

د خپرو سوو شمېرو له مخي يوازي په ۱۹۹۱ع.كال كي په امريكا كي د تمبكو څكولو له امله د رامنځته سوو ناروغيو په پايله كي درې نيم لكه تنه مړه سوي دي.

چين د نړۍ يو داسي هيواد دى چي د تمبكو څكولو له امله د مړو شمېر يې د نورو په پرتله زښت زيات دى. د يوه رپوټ سره سم اوس په چين كي د تمبكو له استعمال څخه د ورځي دوه زره تنه سا وركوي. په هند كي هر كال زيات وكم اته لكه تنه د تمبكو د بېلو بېلو ناروغيو له امله مري. دسرطان ډاكټران وايي چي په هند كي د سرطان په مړو كي نيمى هغه كسان دي چي تمباكو يې څكول. او نوي ځوانان زياتره د تمباكو څكولو له امله د زړه په ناروغيو اخته كيږي. د يوه رپوټ سره سم په هغو كسانو كي چي عمرونه يې تر څلوېښتو كالو كم دي او د زړه د ناروغيو له امله مري۷۶ فيصده يې هغه ځوانان دي چي په تمبكو څكولو روږد وه.

په ۱۹۷۵ع.كال د روغتيا نړيوالي ادارې (W.H.O.) په خپل يوه رپوت كي وويل چي له سګرېټ څكولو څخه د مړو يا بدحالو وګړو شمېر تر هغو وګړو زيات دى چي د طاعون، كوي، نري رنځ، جذام (خوراړه)، لويي تبي (Typhoid) او نورو غوندي ناروغيو څخه مري. د دغي ادارې د نوي رپوټ سره سم په نړۍ كي هركال (۴۲) لكه وګړي د سګرېت څكولو له امله د مړيني ښكار كيږي. چي كېداى سي دغه شمېر تر ۲۰۳۰ كال پوري تر پنځلسو مليونو پوري ورسيږي. له دې امله دى چي د تمبكو څكولو د كنټرولو لپاره هر كال نړيواله غونډه كيږي او د مى (۳۱) د تمبكو د نه څكولو د ورځي (No Tobacco day) په توګه ټاكل سوې ده.

په ۱۹۸۷ع.كال د برتانيې يوې روغتيايي مجلې (LANCET) د دغه كال د فبرورۍ د (۴) نېټې په ګڼه كي په آسټراليا كي د تمبكو د كمپنيو د برخه والو له لوري يو ليك خپور كړ چي پكښي ليكل سوي وه: د ۲۵ كالو را په دې خوا موږ د سګرېټو د كمپنيو څښتنانو له عامو خلكو څخه د تمبكو د نقصانونو په هكله په بېلو بېلو وسايلو د پټولو كوښښونه كول خو اوس موږ اعتراف كوو چي موږ

د سګرېټو جوړولو په سبب په آسټراليا كي د كاله د درويشتو زرو تنو سا اخيستل. له ۱۹۶۲ع.كال څخه تر ۱۹۸۴ع.كال پوري موږ كمپنۍ والاوو څلور لكه اويا زره آسټراليايي او سېدونكي وژلي دي. اوس موږ دغه ستر مسؤوليت احساس كړ او په راتلونكې كي د دغسي شيانو د دودولو لپاره هلي ځلي نه كوو.

د ۲۰۰۱ع.كال د جولاى په لومړيو كي د امريكا د تمبكو يوې مشهوري كمپنۍ (PHILIP MORRIS) په يوه رپوټ كي په ډېره سپين سترګي سره اعتراف وكړ چي د تمبكو څكوونكي چي تر وخت د مخه مري په دې كي اقتصادي ګټه ده. دغي كمپنۍ د دلايلو او شواهدو په توګه څرګنده كړې ده چي د چك په جمهوريت كي چي تمباكو څكوونكي تر خپل وخت د مخه مړه سوي دي له دې دركه (۱۴۷) ميليونه ډالره سپمېدلي دي. يعني كه دغه خلك ژوندي پاته واى نو د هغو پر روغتيايي ساتنه به حكومت دغونه ستر لګښت كولاى. له دې رپوټ څخه د دغو بې حيا پاتګوالو موخه داوه چي حكومتونو ته څرګنده كړي چي له تمبكو څكولو څخه دوى ته اقتصادي ګټه رسيږي.

د يوه بل رپوټ سره سم د تمباكو څكولو له امله په نړۍ كي هر كال دېرش لكه تنه د مرګ ښكار كيږي.

د ROYAL COLLEGE OF PHYSIANS د ۱۹۷۷ع.كال د رپوټ سره سم كه په يوه سګرېټ كي موجود نېكوټين وايستل سي او يوه روغ سړي ته وركړل سي نو هغه به سمدستي ومري.

ايس آى ميكملن نومي ويلي دي چي يوازي يو سګرېټ ستاسي د ژوند اتلس دقيقې ضايع كوي او د لسو سګرېټو يوه قوطۍ ستاسي ژوند درې ساعته كموي.

د تمبكو دې سترو او بېروونكو ضررونو ته چي وګورو نو ويلاى سو چي د تمبكو كمپنۍ، د هغو سوداګر او دكانداران ټول د مرګ پلورونكي دي. ډاكټر ابراهيم الشامي د تمبكو څكول د مرګ د ملايكي عزرايل سره تشبيه كړي دي، لكه چي د خپل كتاب نوم يې «التدخين عزرائيل العصر الحديث» (سګرېټ څكول د نوي پېر عزرايل) ايښى دى.

د تمبكو د استعمال ډولونه:

1- د خولې د نسوارو په ډول:

زموږ د هيواد په ګوټ ګوټ كي د نسوارو سوداګر، كاروباريان، دكانداران او عام خلك ترخه تمباكو ميده كوي بيا يو مقدار اهاك په ګډوي او نسوار ځني جوړوي. دغه نسوار په بازارونو كي خرڅيږي او زياتره نالوستي او اطرافي خلك يې د نسوارو په دبليو او قوطيو كي اچوي او بيا يې د شپې او د ورځي څوواره په خوله كوي او څو شېبې وروسته يې توكي. په دې ډول د تمبكو او اهاكو زهرجن او ناوړه اثرات د خولې له لاري جذبيږي او د وينو په ذريعه ټول بدن ته انتقاليږي.

2- د چلم څكولو په ډول:

زموږ په هيواد او نورو ځينو ګاونډيو او عربي هيوادونو كي ډول ډول چلمونه جوړيږي. خلك د هغو په سرخانو كي تمباكو اچوي، د اور لګيت خاشه ورته وهي او لوګى يې د چلم د نل له لاري څكوي.

د روغتيا د نړيوالي ادارې يوه مشر مصري ډاكټر شريف عمر ويلي دي چي د چلم نقصانونه د سګرېټو په پرتله بېل دي خو د سګرېټو تر نقصانونو كم نه دي.

3- د سګرېټو څكولو په ډول:

تمباكو د سګرېټو څكولو په ډول په نړيواله كچه استعماليږي او دا طريقه ورځ په ورځ زياته دوديږي. د ځينو رپوټونو له مخي (۸۰) يا (۹۰) فيصده تمباكو د سګرېټ په توګه استعماليږي. څنګه چي د انسانانو ځينو خواخوږو د سګرېټو پر ضد تبليغات وكړل نو د سګرېټو پر خرڅلاو يې بده اغېزه وښندل. ځكه نو د سګرېټو كمپنۍ اړي سوې چي د خلكو د تېر ايستلو لپاره سګرېټو ته فلټرونه وركړي او وښيي چي په دې توګه د تمبكو د مضرو اغېزو مخه نيول كيږي. خو حقيقت دادى چي د تمبكو هغه اجزا چي د سرطان سبب كيږي تقريباً ټوله له فلټر څخه تېريږي او جسم ته ننوزي.

4- د تمباكو ژوولو په ډول:

د هند په نيمه وچه او جنوب ختيزه آسيا كي تمباكو د پانو سره ژويي. دا تر ټولو بده او صحت ته مضره طريقه ده. ځكه چي په دې توګه د تمبكو اثر په ډېره چټكتيا سره كولموته رسيږي او پر اعصابو هم ډېره بده اغېزه كوي. د پانو كېمياوي تجزيه چي يې كړې ده، هغه هم پر روغتيا ډېره بده اغېزه كوي او چي تمباكو ورسره يو ځاى سي ضرر يې نور هم زيات سي.

5- د پزي د نسوارو په ډول:

له تمبكو او ځينو نورو توكو څخه يو ډول پوډر جوړوي چي د پزي نسوار ورته وايي او ځيني خلك يې په پزه سوغكي. د تمبكو د استعمال دغه طريقه هم روغتيا ته بېخي ډېره مضره ده. ځكه چي د تمبكو زهري مواد د پزي له لاري جسم ته ننوزي.

دغه راز ځيني خلك تمباكو د سيګار او بېړۍ په بڼه او ځيني يې د پايپ په ذريعه استعمالوي چي دغه ټولي طريقې صحت ته ډېري مضري او د خولې د سرطان او نورو ناروغيو رامنځته كوونكي دي.

تمباكو د اسلام له نظره:

څنګه چي تمباكو او له هغه څخه جوړ سوي توكي په ډول ډول شكلونو بېخي ډېر استعمال سوي دي، نو د ډېرو تجربو او طبي څېړنو له مخي د انسان روغتيا ته په قطعي توګه مضر جوت سوي دي. پر دې سر بېره لكه چي پوهيږو سګرېټ د چرسو، هېروئينو او نورو مهلكو او نشه يي موادو د استعمال ذريعه هم ګرځي. ښايي د تمبكو د كمپنيو لخوا د هغو په مركباتو كي نور داسي شيان هم ګډيږي چي هغه هم حلال نه وي. د سګرېټو د كاغذ لوګى هم روغتيا ته ضرر رسوي. په دې هم پوهيږو چي انسانان خپله په مليارډونو پانګه چي بايد پر ښو او د خير پر لارو ولګيږي د تمبكو په استعمال سره په خپلو لاسونو سوځي. نو دا خو يو داسي توكى جوت سو چي د هغه خطر او ضرر انسانان او انساني ټولني د سترو ناورينونو سره مخامخ كوي.

دلته پوښتنه كېداى سي چي دا خطر چا او څله انسانانو ته متوجه كړى دى؟ جواب دادى چي د مسلمان او بې وزلي انسان طاغوتي، مادي پالو، انسان مخو، شيطان صفتو دښمنانو د مادي ګټو د تر لاسه كولو او د مسلمان او بې وزلي انسان د لا خوارولو، بې ځواكه كولو او له پښو اچولو لپاره او تر ډېره حده پخپله همدغه مسلمان او بې وزلي انسان د هغه د غفلت او بې پروايۍ له امله.

دا چي مسلمانان له دې امله د ستر هوډۍ، الوالعزمۍ، لوړ همتۍ، هوښيارۍ خواپاكۍ او سپېڅلي، پر مختللي او متمدن ژوندانه پر ځاى په ډول ډول غلاميو، غفـلتونو، اسرافونو، ټيټتياوو او خوار، اسكېرلي او بې خونده ژوند او نورو قسم قسم ناوړو چارو اخته دي دا خو يو داسي خبره ده چي هر مسلمان ته د اسلام له روح څخه د هغې ناوړتيا څرګنديږي.په دې مورد كي بېله دې چي د اسلام اصولو او اساساتو ته په كتو سره د تمبكو او نورو ډول ډول نشو د هرڅه ژر مخنيوي لپاره جدي ګامونه پورته سي بل څه ته ضرورت دى؟ له آره په دې هكله اوسمهال اسلامي فقهي بحثونو او دلايلو ته اړتيا نه ليدل كيږي. خو د دې لپاره چي په دې هكله مو په قطعي توګه د كج بحثيو مخه نيولې وي او د دې شيانو له استعمال څخه د غوڅي ډډي او د هغو د قطعي مخنيوي په خاطر مو وجدانونه را پارولي او را پاڅولي وي د قرآني آيتونو، نبوي احاديثو، او اسلامي عالمانو د څرګندونو په رڼا كي د تمبكو د حرمت په اړه څه څرګندوني كوو.والله ولي التوفيق.

بدن، ژوند او روغتيا د لوى څښتن عطيه ده. دا يو الٰهي نعمت، ستره پانګه او لوى امانت دى. د دې نعمتونو ساتنه او له ضررونو څخه ژغورنه ضروري چاره ده. له دې امله په خوړو كي غلطي او بې قاعده ګي يا د تاواني درملو استعمال مجرمانه عمل بلل سوى دى. په دې هكله زموږ ستر پېغمبر ج موږ له عقله كار اخيستلو ته وربولي، لكه چي فر مايي: «لكل شئ دعامة ودعامة المؤمن عقله». (رواه بغية الحارث) يعني هر شي ته ستون او تكيه ځاى وي او د مومن تكيه ځاى د هغه عقل دى. تر څو چي د انسان بدن روغ رمټ نه وي نه ديني چاري په ښه توګه تر سره كولاى سي نه دنيوي چاري. له دې امله دى چي رسول ج صحت د انسان د نېكمرغۍ يو مهم عنصر بللى دي. لكه چي فرمايي: «مَنْ أَصْبَحَ مِنْكُمْ آمِنًا فِي سِرْبِهِ مُعَافًى فِي جَسَدِهِ عِنْدَهُ قُوتُ يَوْمِهِ فَكَأَنَّمَا حِيزَتْ لَهُ الدُّنْيَا» (رواه الترمذي وابن ماجه). يعني له تاسي څخه چي څوك په داسي حال كي شپه سبا كړي چي د ځان بېره نه وي ورسره، صورت يې روغ رمټ وي او د همهغي ورځي خوراك ولري، ګواكي ټوله نړۍ د ده ده.

له دې امله د اسلام سپېڅلى دين يوازي د هغو شيانو د خوړلو او استعمالولو اجازه وركړې ده چي بدن تندرسته كوي او د روحاني ځواك په پرمختيا كي يې مرستندوى باله سي. او د هغو شيانو خوړل يې منع كړي دي چي جسم ته تاوان پېښوي او روحاني ځواك مړاوى كوي. د دې مصلحت پر بنسټ فقهاوو رحمهم الله شرعي ضابطه ټاكلې ده چي: «ويحرم ما يضر بالبدن والعقل» «هر هغه څه چي بدن او عقل ته تاوان رسوي حرام دي».

نو پر دې بنسټ د تمبكو د ضررونو په هكله د دولتي چارواكو او اسلامي عالمانو پټه خوله اوسېدل يا پخپله د هغو په دغه عمل اخته كېدل او مېلمنو او نورو ته يې وركول ښه كار نه ښكاري.

درسته ده چي په نبوي پېر او د اسلام په لومړيو وختونو كي اسلامي ټولنه د تمبكو سره بلده نه وه. له دې امله په احاديثو، د صحابه وو او تابعينو په آثارو او د مجتهدو امامانو په اقوالو كي د هغو د حراموالي يا حلالوالي په باره كي يادوني نسته، خو كله چي دغه بوټى د لسمي هجري پېړۍ په وروستيو كي په اسلامي ټولنه كي څرګند سو له هماغه مهاله اسلامي عالمانو د هغو د استعمال د منعي په هكله څرګندوني كړي دي؛ ځينو په دې هكله بېلي رسالې وليكلې يا يې د خپلو فقهي كتابونو د نشه يې توكو په بابونو كي د هغو په هكله شرعي حكمونه بيان كړي دي او دا لړۍ تر اوسه روانه ده.

دا چي ځينو عالمانو د تمبكو استعمال مباح بللى او د هغو د جواز فتواوي يې وركړي دي، دا د هغو عالمانو خبري دي چي د تمبكو مضر اثرات نه وه ورته څرګند سوي، بلكي په لومړيو مهالونو كي دغه توكى په ځينو مواردو كي د بدن پر ځينو باندنيو برخو باندي د درملو په توګه استعمالېدى. لكه چي د ځينو دردونو د تسكين لپاره پر پوست وهل كېدى. چي البته اوس د دې بوټي د زياتو ضررونو د څرګندېدو له امله د هغه ځيني ګټي د هغه د حرمت مانع كېدلاى نه سي. لكه چي د شرابو او قمار ځيني ګټي په قرآني نص جوتي دي خو قرآن د حلت او حرمت دا ضابطه وړاندي كړې چي: ﴿وَإِثۡمُهُمَآ أَكۡبَرُ مِن نَّفۡعِهِمَاۗ﴾ [البقرة: 219] «د شرابو او قمار ګناه د هغو تر ګټو ډېره لويه ده». له دې آيت څخه دا ډېر مهم اصل معلوميږي چي په هر شى كي چي هر څونه بد هم وي څه ناڅه ګټي هم سته. خو په كار ده چي د ګټو او تاوانونو پرتلنه وسي. كه يې نقصانونه او مفاسد زيات وه نو د لږو ګټو په خاطر هغه جايز نه ګڼل كيږي.

څنګه چي دغو عالمانو ته يوازي د تمبكو ناوړه بوى معلومېدى، له دې امله يې د هغه استعمال پر هوږه او پيازو د قياس له مخي مكروه باله. كه چيري هغو ته د تمبكو ضررونه د اوس په شان معلوم واى هيڅكله به يې د هغو د استعمال د جواز فتوا نه واى وركړې. نو اوس څنګه چي د تمبكو د خطرناكو ضررونو په هكله حقايق څرګند سوي، ښايي ديني عالمان د دې خطرناك بوټي اوسنيو او راتلونكو ضررونو ته متوجه سي او د هغو د تحريم په هكله متحد موقف غوره كړي. لكه چي د ۱۴۰۲ سپوږميز كال د درېمي خور له ۲۷تر ۳۰ پوري د مدينې منورې په اسلامي پوهنتون كي د نشه يي موادو پر ضد د اوولسو اسلامي هيوادونو د سترو عالمانو په ګډون يو نړيوال كنفرانس جوړ سو او ټولو په متفقه توګه د تمبكو د حرمت فتواوي تائيد كړې.

د تمبكو او له هغو څخه د جوړو سوو توكو پر حراموالي ټول هغه آيتونه او احاديث چي د چرسو او ترياكو په بحث كي راغلي دي دلالت كوي. په تېره څنګه چي تمباكو خبيث او صحت ته ډېر مضر توكي باله سي او انسان په تدريج سره هلاكوي او له بله پلوه د تمبكو څكول د پيسو سوځل او اسراف دى ځكه يې نو استعمال جيدو اسلامي عالمانو حرام بللى دى.

البته كېداى سي چي پوښتنه وسي چي د تمبكو د منعي او تحريم په هكله خو د لوى څښتن په كلام او د حضرت نبي ج په سنتو كي څرګند نص نسته. جواب دادى چي د قرآن كريم او نبوي سنت نصوص پر دوه ډوله دي: يو ډول يې عام دلايل دي، لكه هغه ضوابط او قواعد چي د قيامت تر ورځي پوري ډېر جزئيات تر هغو لاندي كيږي، بل ډول يې هغه دلايل دي چي د يوه ټاكلي شي په هكله دلالت كوي. د لومړي مثال هغه آيتونه او احاديث دي چي موږ د چرسو او ترياكو د حرمت په هكله ذكر كړل كوم چي په عامه توګه د تمبكو د څكولو پر تحريم هم دلالت كوي. دوهم مثال د لوى څښتن دا قول دى:

﴿حُرِّمَتۡ عَلَيۡكُمُ ٱلۡمَيۡتَةُ وَٱلدَّمُ وَلَحۡمُ ٱلۡخِنزِيرِ وَمَآ أُهِلَّ لِغَيۡرِ ٱللَّهِ بِهِۦ﴾ [المائدة: 3].

ژباړه: «پرتاسي مرداره، وينه، د سركوزي غوښه او هغه څاروي چي له لوى څښتن پرته د كوم بل چا په نوم ذبح سوي وي حرام كړاى سول».

په دې توګه د دغو دواړو ډولو نصوصو د دلالت په مقتضا د لوى څښتن بنده ګان ملزم دي.

د تمبكو د حرمت په هكله د اسلامي عالمانو څرګندوني:

د تمبكو د حرمت او ديني او روغتيايي اضرارو په هكله د څلورو فقهي مذهبونو ډېرو جيدو عالمانو مفصلي څرګندوني كړي دي. موږ دلته د حنفي فقهاوو او علماوو څرګندوني په لنډه توګه را اخلو او د نورو په هكله په لنډو يادونو بسنه كوو.

1. ابوالحسن مصري حنفي فرمايي: «صحيح او نقلي آثار او څرګند عقلي دلايل د تمبكو د حرمت اعلان كوي. د غه بوټى د ۱۰۰۰ع.كال په شاوخوا كي رامنځته سو. او تر ټولو دمخه د يهودو، نصاراوو او مجوسو (اورپالو) په ملكونو كي څرګند سو او يوه يهود خلك د مغرب اقصٰى په سيمه كي د طبابت په پلمه په روږد كړل. بيا په روم كي د اتكلين په نامه د يوه عېسوي او په سوډان كي د مجوسيانو لخوا دغه بوټۍ خلكو ته وروپېژندل سو او بيا په مصر او حجاز او نورو هيوادونو كي عام سو. لوى څښتنأ هر نشه كوونكى شى منع كړى دى. دغه توكى د څكوونكي ظاهري او باطني غړي بې حسه او كمزوري كوي او كه دا څوك نه مني لږ تر لږه خو مخدر او مفتر هرو مرو دى. ټول ډاكټران د هغه پر مضر والي متفق دي. بدن او شتوته تاوان رسوي او څكول يې د فاسقانو سره مشابهت دى. ځكه دا زياتره فساق او رذيل غوندي وګړي څكوي او څوك چي يې څكوي له خولې څخه يې ناسم او خبيث بوى هم راوزي».
2. محمد فقهي عيني حنفي د تمبكو د حرمت په هكله يوه رساله ليكلې ده او په لاندي څلورو لاملونو يې د هغو څكول حرام بللي دي:

(الف) د معتبرو طبيبانو د څرګندونو سره سم روغتيا ته مضر دي او كوم شى چي صحت ته مضر وي د هغه استعمال په اتفاق سره حرام وى.

(ب) د طبيبانو په اند تمباكو له مخدراتو څخه بلل كيږي او د مخدراتو استعمال شرعاً ممنوع دى. د يادولو وړ ده چي د تمبكو او د تمبكو غوندي شيانو په هكله د طبيبانو خبره د ټولو سلف او خلف (مخكنيو او وروستنيو) عالمانو په اتفاق معتبره او حجت ده.

(ج) د تمبكو بد بوى هغو كسانو ته تكليف رسوي چي نه يې څكوي. په تېره په لمانځه او نورو مجلسونو كي خو له دې امله تكليف بېخي ډېر وي. ان ملايكو ته هم له تمبكو څكولو څخه تكليف رسيږي. امام بخاري او مسلم له حضرت جابرس څخه روايت كوي چي رسول ج وفرمايل: «څوك چي پياز او هوږه وخوري زموږ او زموږ له مسجد څخه دي ګوښه ګرځي او په خپل كور كي دي كښېني». البته په دې ټول پوهيږي چي د تمبكو بوى د پيازو او هوږي تر بوي ډېر بد دى. دغه راز په صحيحينو كي له حضرت جابرس څخه روايت كوي چي رسول ج وفرمايل: «له كوم شي څخه چي خلك په تكليف كيږي ملايكي هم له هغه څخه په تكليف كيږي».

رسول ج دا هم فرمايلي دي چي: «چا چي كوم مسلمان ته تكليف وركړ ګواكي ماته يې تكليف راكړ او چا چي ماته تكليف راكړګواكي لوى څښتن ته يې تكليف وركړ». (دغه حديث طبراني په المعجم الاوسط كي له حضرت انس څخه روايت كړى دى).

(د) د تمبكو څكول فضول خرڅي ده او فضول خرڅي حرامه ده. (فتوٰى في حكم شرب الدخان ۵، ۶مخونه).

1. ابوالعباس احمد رومي حنفي د خپل «مجالس الابرار» نومي كتاب په دېرشم او شپږ نوييم، اووه نوييمو مجلسونو كي د چلم څكولو په هكله بحث كړى دى او په درو سرو مجلسونو كي يې د هغه حرمت ثابت كړى دى. هغه د فقهاوو په حواله وايي: له كوم چا څخه چي داسي بدبوى ځي چي خلك ځني په تكليف كيږي نو له مسجد څخه د هغه ايستل لازم دي. كه يې څه هم د لاسونو او پښو په نيولو او كشولو سره وي. خو د ږيري او سر تر ورېښتانو دې نه نيسي. نو له دې كبله اوس له مسجد څخه د ډېرو امامانو او مؤذنانو ايستل لازميږي. ځكه د دغسي ډېروامامانو له خولو څخه د دغه توكي د استعمالولو په سبب بدبوى ځي. (مجالس الابرار ۶۸۵مخ، د كراچي د دارالاشاعت چاپ).
2. علامه ابن وهبان په خپله نامتو منظومه كي وايي:

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| ويمنع من بيع الد خان وشربه |  | وشاربه في الصوم لاشك يفطر |

يعني د تمبكو بيه او څكول دي منع سي او كه يې په روژه كي څوك وڅكوي روژه يې ماتيږي.

1. حسن بن عمار مصري شرنبلالي حنفي د ابن وهبان د منظومې په شرح كي د الكراهية والاستحسان په فصل كي د يوه مفصل بحث په ترځ كي د تمبكو د ديني او روغتيايي ضررونو او حرمت په هكله څرګندوني كړي او د هغو څكول يې قبيح عادت او د هغو څكوونكى يې دشيطان غوندي بللى دى.
2. د شاه ولي الله محدث دهلوي پلار شاه عبدالرحيم يو لوى عالم وو. هغه كه څه هم د تمبكو د څكولو د قطعي حرمت قايل نه وو، خو د هغو د څكولو سخت مخالف وو. او شاه ولي الله له هغه څخه د تمبكو د قباحتونو په هكله ډېر دلايل وړاندي كړي دي. (وګورئ انفاس العارفين، اردو، د ديوبند د الفلاح چاپ ۱۷۵ـ ۱۷۷مخونه).
3. علامه عبدالعظيم مكي چي په مكه مكرمه كي د احنافو مفتي وو د تمبكو د څكولو د ضررونو او حراموالي په باب په خپله رساله «تحذير الامة عن ملابسة الغمة» كي مفصلي خبري كړي دي.
4. عبدالغني مزجاجي حنفي د تمبكو مكروه تحريمي بلل تر ټولو غوره او مناسب قول بللى دى. (فتاوٰى مولاناعبدالحى ۵۴۰مخ).
5. احمد عجبي حلبي حنفي د تمبكو په هكله يوه رساله ليكلې ده او پكښي ويلي يې دي چي د تمبكو څكولو مصيبت چي په ټولو هيوادونو كي عام سوى دى په ټولو مذهبونو كي بدعت منكره دى، د قرآن كريم په مجلس كي د هغو له څكولو څخه د سوء خاتمې (بد انحام) اندېښنه ده. د هغو په حرمت كي شك نسته.لوى څښتن دي په خپل فضل او كرم موږ ځني وساتي.

نوموړي پوه خپله دغه رساله د عثماني خلافت مركز آستانې (استنبول) ته وړې وه او د هغه مهال شيخ الاسلام ته يې ښكاره كړې وه چي د هغه لخوا هم تائيد او منل سوې وه. همدغه ستر عالم د درمختار په شرح كي هم د «الاشربه» په بحث كي د تمبكو څكول حرام بللي او د ځينو هغو كسانو دلايل يې چي تمباكو حلال بولي رد كړي دي. (الدخان مابين القديم والحديث ۱۷۰مخ).

1. د حلب يوه اسلامي عالم محمد بن عبدالله طرابيشي حنفي د تمبكو د حرمت په هكله درې رسالې ليكلي دي چي دوې په نثر او يوه په نظم ده.
2. محمد حيات مدني حنفي هم په ډول ډول دلايلو د تمبكو څكول حرام بللي دي.
3. عبدالرحمن شهيد نقشبندي سندي حنفي ويلي دي چي د تمبكو څكول مكروه تحريمي دي او څنګه چي دا يو خبيث توكى دى په قرآني نص منع دى او استعمالول يې د الٰهي فطرت بدلون دى. (وګورئ الموقف الشرعي من التبغ والتدخين۹۸مخ).
4. عمر بن احمد مصري حنفي ليكي: د مصر، ديار روم (تركيې)، حجاز، او يمن د ډېرو عالمانو په اند تمباكو حرام دي. د دې توكي په حرمت كي هغه څوك توقف او تردد كوي چي ښويېدلى مكابر او معاند وي او لوى څښتن له بصيرته بې برخي كړى وي.
5. د شام د حنفيانو مرجع شيخ محمد الحامد د تمبكو پر حرمت د فتوا وركولو په ترځ كي وايي: دا خبيث توكى دى او د هغه څكول د ځان هلاكول او بربادول دي. د هغو نقصانونه نوي طبابت جوت كړي دي، نو چي ضرر يې جوت دى حرمت يې هم جوت دى. (الموقف الشرعي۱۰۲ مخ).
6. محمد بن عبدالباقي مكي حنفي د تمبكو د حرمت په هكله د «الحسام القاصم» په نامه يوه رساله ليكلې ده.
7. صبغة الله بهړوچي حسيني هم د تمبكو د حرمت په اړه د «الحجة والبرهان في تحريم الدخان» په نامه رساله ليكلې ده.
8. محمد الحامدي الزبيدي د تمبكو د حرمت په باب دوې رسالې ليكلي دي.
9. د عثماني تركيې ستر مفتي شيخ الاسلام محمد بن سعدالدين حنفي د يوې منظومي استفتا په جواب كي منظوم جواب وركړى چي يو بيت يې داسي دى:

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| حرام شربه لاشك فيه |  | محال ذكره بين الحلال |

ژباړه: د تمبكو د استعمال په حرمت كي هيڅ شك نسته او د حلالو توكو په منځ كي د هغو يادول ناشونى كار دى.

د غه فتوا د عثماني سلطنت د وختو عالمانو هم تائيد كړه.

1. شيخ الاسلام عطاء الله رومي حنفي هم د تمبكو د حرمت ملاتړى وو.
2. دعلامه ابوزيد عبدالرحمن بن محمد بن محمد عمادالدين عمادي حنفي چي د دمشق مفتي وو له كتاب «هدية ابن العماد لعباد العباد» څخه څرګنديږي چي هغه تمباكو مكروه تحريمي ګڼل او د هغو څكوونكى يې فاسق باله. عمادي د خپل دغه كتاب د «الجماعة» په فصل كي وايي: په هغه چا پسي اقتدا مكروه ده چي په سود خوړلو، يا كوم حرام كار كولو يا پر كوم بدعت او مكروه چاره لكه تمباكو څكولو باندي په پابندۍ او اصرار مشهور وي، په تېره چي تمباكو څكول د سلطان لخوا منع سوي هم وي. (وګورئ ردالمحتار۵/ ۴۰۷مخ).
3. د عبدالغني نابلسي پلار اسماعيل نابلسي حنفي په «الاحكام شرح درر الاحكام» كي ويلي دي چي مېړه كولاى سي خپله مېرمن د تمبكو له څكولو څخه منع كړي، په تېره چي مېړه تمباكو نه څكوي. ځكه چي دا خوله بدبويه كوي. اعاذنا الله تعالى منه (لوى څښتن مودي ځني وساتي). (ردالمحتار۵/ ۴۰۶مخ).
4. په مصر كي د خپل وخت د احنافو امام ابوزيد عبدالرحمن مسيري حنفي مصري هم د تمبكو د څكولو د منعي فتوا وركړې ده. (پورتنى ماخذ).
5. علامه محمد بن علي علاء الدين حصكفي حنفي دمشقي د «الدر المنتقٰى في شرح الملتقٰى» د كتاب الاشربه په وروستيو كي په واضح توګه د تمبكو څكول حرام بللي دي.
6. رجب بن احمد حنفي په «الوسيلة الاحمدية والذريعة السرمدية» كي ويلي دي: هغه فضول خرڅي چي له ګنهونو او منهياتو څخه شمېرل كيږي يو هم د تمبكو رانيول دي كوم چي دمسلمانانو د دښمنو كفارو لخوا رامنځته سوي دي. او خاص او عام ټول په اخته سوي دي. څنګه چي دا په لوړه بيه رانيسي نو په حرامو فضول خرڅيو كي راځي. او د دې ترڅنګ د هغو څكوونكي د هغو د بد بوى له امله مسلمانانو ته اذيت رسوي او په حديث كي راغلي دي چي: «كل مؤذ في النار» (كنز العمال ۳۹۴۸۴ حديث او الجامع الصغير ۶۳۴۴ حديث). يعني هر اذيت كوونكى به په دوږخ كي وي.
7. ابوسعيد الخادمي القونوي د «الطريقة المحمديه» د شرحي «بريقة محمودية» د لومړي باب د دوهم فصل د عادي تر بدعتونو په بحث كي ليكي: كه اصح داده چي تمباكو حرام نه دي نو څنګه چي موثقو عالمانو ډېر اختلاف پكښي كړى دى او د هغو په هكله يې فتواوي وركړي دي نو د هغو په كراهيت كي هيڅ شك نسته په تېره چي بيا پاچا د عامه مصلحت لپاره د يوه مباح كار منع كړى وي د هغه متابعت خو نو بېخي اړين دى او په كوم څه كي چي علماوو ډېر لږ اختلاف كړى وي هغه شبهه رامنځته كوي او په التلويح كي وايي چي له شبهاتو څخه محرمات ثابتيږي. (وګورئ البريقة شرح الطريقة ۱/ ۱۳۴مخ).
8. د الفقه الاسلامي وادلته مؤلف ډاكټر وهبه الزحيلي د شيخ محمد بن جعفر الكناني له كتاب څخه د تمبكو پر حرمت باندي اوولس دليله را اخيستي دي او د هغو زښت زيات مفاسد يې په ګوته كړي دي. (وګورئ الفقه الاسلامي وادلته ۷/ ۵۵۰۸مخ).
9. ابوطالب ابن علي حنفي د تمبكو د حرمت په هكله د «البرهان على تحريم الدخان» په نامه رساله ليكلې ده.
10. عيسى شهاوي مصري هم د تمبكو د حرمت په هكله يو كتاب ليكلى دى.
11. محمد عبدالباقي حنفي د تمبكو د حرمت په هكله د «المدافع البرهانية في مدافع المناكير الدخانية» په نامه رساله ليكلې ده.
12. علاء الدين رومي حنفي هم د تمبكو په هكله يوه رساله ليكلې ده او په هغې كي يې ويلي دي چي د تمبكو د حرمت په هكله ډېرو حنفي او غير حنفي عالمانو فتواوي وركړي دي.
13. ملا حسين بن اسكندر حنفي هم د تمبكو د حرمت په باب يوه رساله ليكلې ده.
14. علامه مخدوم عبدالواحد سيوستاني سندهي د فتاواى واحدي په ۷۲مخ كي ويلي دي چي تمباكو د هغو شيانو له جملې څخه دي چي فساق باندي راغونډيږي نو د هغو استعمال فسق دى او د فاسق امامت كه له ده پرته بل څوك وي مكروه تنزيهي دى. په فاسق پسي لمونځ كوونكى كه څه هم د جماعت فضيلت ترلاسه كوي خو د تقي او پرهېزګاره د امامت فضيلت نه ترلاسه كوي. لنډه دا چي د تمبكو څكوونكي امام ته دمخه كېدل او په هغه پسي اقتدا تنزيهي مكروه ده. كه په بل چا پسي لمونځ امكان ولري نو هغه افضل دى كه نه تر انفرادي لمونځ په فاسق پسي اقتدا اولٰى ده.
15. د احياء العلوم الدين او القاموس المحيط شارح محمد مرتضٰى الزبيدي پر تمبكو باندي دوې رسالې ليكلي دي چي يوه يې «اتحاف الاخوان في حكم الدخان» نوميږي او بله يې «هدية الاخوان في شجرة الدخان» نوميږي.

د هند له حنفي عالمانو څخه:

1. شيخ وجيه الدين علوي
2. مولانا صبغت الله.
3. مولانا عبدالغني صديقي سنبهلي.
4. مولانا حسن حسيني.
5. مولانا يار محمد احمد آبادي.
6. مولانا احمد الله احمد آبادي د تمبكو د حرمت فتواوي وركړي دي.
7. مولانا عبدالحى لكهنوي د تمبكو د مطلق اباحت قايل نه وو، بلكي مكروه تنزيهي يې بلل خو دا يې هم ليكلي دي چي د تمبكوپر له پسې استعمالول او عادت كبيره ګناه ده. (وګورئ ترويح الجنان ۲۲ مخ).
8. حكيم الامت مولانا اشرف علي تهانوي د امداد الفتاوٰى په ۴/ ۹۹ مخ كي د چلم او تمبكو څكولو په هكله اوږدي څرګندوني كړي دي چي له هغو څخه د هغه نفرت څرګنديږي او په ځينو مواردو كي يې د حرمت قايل دى. هغه په خپلو څرګندونو كي دا هم ويلي دي چي د تمبكو په څكولو سره د اهل نارو سره مشابهت راځي چي له خولې او پزي څخه يې دود وزي او بد او سخت مكروه دى او كه څوك نشه كړي نو د هغو په حرمت كي څه شك نسته. بيا وايي: په هر حال د تمبكو څكوونكى له ګڼاه خالي نه دى او پر ګناه اصرار سخته ګناه ده. او د زياترو اهل كشفو له اقوالو او رشتنيو خوبونو څخه معلومه سوې ده چي د تمبكو څكوونكى د نبوي محفل څخه بې برخي ليدل سوى دى او ځينو د تمبكو څكوونكى معذب ليدلى دى اعاذ نا الله منه شاعر څه ښه ويلي دي:

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| تمباكو نوش را سينه سياه است |  | اگـر بـاور نـداري نـى گـــواه است. |

1. علامه نواب محمد قطب الدين خان دهلوي د مشكوٰة شارح هم د تمبكو د حرمت قايل دى. (وګورئ مظاهر حق۶۶ مخ).
2. مشهور خطيب او مبلغ مولانا محمد پالن حقاني ګجراتي په خپل كتاب «شريعت يا جهالت» كي د تمبكو په هكله اوږدي څرګندوني كړى او خلك يې د هغو له څكولو څخه پرهېز او ډډي كولو ته بللي دي.
3. مولانا احمد رضاخان برېلوي كه څه هم د تمبكو د څكولو د اباحت قايل وو خو ليكلي يې دي: البته هغه چلم چي ځيني جهال يې د روژې په مباركه مياشت كي د روژه ماتي پر مهال څكوي او په هغه سره په خپلو حواسو او دماغ كي فتور او سستي راولي او سترګي او زړه په يوه عجيب حالت اخته كوي بې شكه چي ممنوع او ناجايز او ګناه ده او هغه هم د روژې په مباركه مياشت كي معاذ الله. لوى څښتن دي دغسي خلكو ته هدايت وكړي.

دا وې د تمبكو د ديني اضرارو او حرمت په هكله د حنفي علماوو نظريې او څرګندوني فاعبروا يا اولى الابصار.

د تمبكو د ديني او دنيوي اضرارو او حرمت په هكله زښتو زياتو مالكي، شافعي او حنبلي علماوو ليكني كړي، فتواوي يې وركړي او ډېري رسالې او كتابونه يې پر ليكلي دي. سعودي سلفي عالمانو هم د تمبكو د حرمت په هكله فتواوي ور كړي او رسالې يې ليكلي دي او ځينو علماوو لا دا هم ويلي دي چي كه چا هغه استعمال كړي او يا يې د هغو تجارت كړى وي بايد د هغو له استعمال او تجارت څخه توبه وكاږي.

د ايران دولت په ۱۹۹۱ع.كال د تمبكو د منعي او تحريم او د تمبكو څكوونكو ته د دندو د نه وركولو امر صادر كړ.

د نورو اسلامي او غير اسلامي مذاهبو عالمانو هم د تمبكو استعمال حرام بللى دى، لكه چي په جزيرة العرب كي اباضيه وو، په شمالي او لوېديزه افريقا كي تيجانيه وو، په سوريه او لبنان كي نصيريه وو او دروزو، په ايران كي بهائيه وو، په هند كي د سيكانو لسم ګرو ګوبند سيګهـ جي او د هندوانو د مذهب كتابونو د تمبكو استعمال منع كړى دى.

د تمبكو په هكله وروستۍ خبري:

په مخكنيو پاڼو كي مو د تمبكو د ديني او روغتيايي اضرارو په هكله د پوهانو، ډاكټرانو، ديني عالمانو او محققينو څرګندوني، نظريات او فتواوي ولوستلې له هغو څخه څرګنده سوه چي ځينو علماوو او اكابرو چي د هغو د اباحت په هكله څه ويلي دي له دې امله وو چي هغوى د تمبكو په دغونو مهلكو تاوانونو نه وه خبر او څوك چي په لومړيو يا راوروسته كي د دغه خبيث بوټي په ډول ډول ضررونو پوهېدلي دي هغوى د هغو د حرمت په هكله فتواوي وركړي دي.

په هر ترتيب د دغه مضر بوټي استعمال، كرل او خرڅول او رانيول د اسلامي شريعت له روح سره منافي كار دى. كه زموږ له ديني عالمانو څخه څوك دغه توكى استعمالوي بايد له امامت او داسي نورو سپېڅلو چارو څخه ګوښه سي څو په دې توګه زموږ اسلامي ټولنه له دغه توكو او نورو ټولو ناولو مخدراتو څخه پاكه سي. زما له پياوړو، جيدو او متعهدو ديني پوهانو او عالمانو څخه په ډېر درناوي هيله ده چي د دين او ټولني د سمون او اصلاح په لړ كي د دغه منكر له منځه وړلو ته هم پام واړوي.

ځيني كسان ښايي ووايي چي نسوار، چلم او تمباكو خو زموږ ځيني لوى عالمان او پوهان استعمالوي، نو موږ هم د هغو د پيروۍ او اطاعت له مخي دا كار كوو. د دغو كسانو په جواب كي بايد عرض سي چي يو خو دغه ستر عالمان د انبياوو غوندي معصوم نه دي، نو د دوى د هر كار تقليد چي د شرعي سره سم نه وي جايز نه دى. لكه چي حضرت عليس له رسول ج څخه روايت كوي «إِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي الْمَعْرُوفِ» (صحيح مسلم كتاب الامارة ۴۰ حديث). يعني اطاعت په ښېګڼو او نېكو چارو كي وي. بل موږ ته اسوه (نمونه او بېلګه) رسول ج دى، لكه چي لوى څښتنأ فرمايي: ﴿لَّقَدۡ كَانَ لَكُمۡ فِي رَسُولِ ٱللَّهِ أُسۡوَةٌ حَسَنَةٞ﴾ [الأحزاب: 21]. يعني «بې‌شكه چي ستاسي لپاره د لوى څښتن په رسول كي يوه خورا غوره نمونه (موجوده) ده». ځكه نو موږ ته د رسولج لارښووني او تعليمات د تقليد وړ دي. نو تاسي فكر وكړئ چي رسول ج دغسي بدبويه توكي استعمالول؟ او كه به بل چا استعمال كړي واى هغه يې ځان يا خپل مسجد ته نژدې پرېښاوه؟ او كه دغه توكي په هغه وخت كي موجود واى د هغو له استعمالولو څخه به يې خلك نه واى منع كړى؟

دغه راز ښايي ځيني كسان ووايي چي اوس خو تمباكو ډېر كسان استعمالوي نو چي دا دونه ناوړه توكى دى او شرعاً يې استعمال ښه نه دى نو ولي يې دا دونه ډېر خلك استعمالوي؟ د دې خبري په جواب كي بايد وويل سي چي تاريخ شاهد دى چي د حق معيار په لږو او ډېرو اړه نه لري. بلكي د اصولو خوښوونكي او د حق پلويان زياتره لږ وي، خو دا د دې معنا نه لري چي موږ د ډېرو يا اكثريت اطاعت وكړو: لوى څښتنأ فرمايي: ﴿وَإِن تُطِعۡ أَكۡثَرَ مَن فِي ٱلۡأَرۡضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا ٱلظَّنَّ وَإِنۡ هُمۡ إِلَّا يَخۡرُصُونَ ١١٦﴾ [الأنعام: 116]. يعني «اى محمده كه ته د زياترو هغو خلكو متابعت وكړې چي په مځكه كي مېشته دي، نو هغوى به تا د لوى څښتن له لاري واړوي. هغوى خو يوازي د ګومان پيروي او ګردسره اټكلي خبري كوي».

له دې څخه څرګنده سوه چي د حق او حقيقت پر لار تلونكي خلك تل لږ وي او دا هم جوته سوه چي د حق او باطل معيار د خلكو اكثريت او اقليت نه بلكي دلايل او براهين دي. يعني داسي نه ده چي كوم كار چي ډېر خلك كوي هغه ښه او حق وي.

نو ښه داده چي د بې ځايه خبرو او كج بحثيو پر ځاى حق ته غاړه كښېږدو او كه غواړو چي سم او بشپړ مسلمانان واوسو او ټولنه مو له ناولتياوو او د مخدراتو او خبائثو او روغتيايي او اقتصادي تاوانونو څخه وژغورو او سپېڅلې او پاكه يې كړو بايد له تمبكو څخه په كلكه ډډه وكړو او د تمبكو او نورو ټولو مخدراتو د استعمال د مخنيوي په لار كي وړ هلي ځلي وكړو او له دې مدركه او د هغو څخه د را ولاړو سوو ناروغيو د درملني له دركه په مليونونو لګېدونكي پيسې د خداى او د خداى د بنده ګانو د خير اوښـېګڼي په لار كي ولګوو.

د قهوې او چايو زهر جني جوشاندې

د قهوې تاريخ:

قهوه يوه وړه ونه ده چي بيضوي تېز نوكي پاڼي لري او سپين خوشبويه ګلان كوي. د مېوې دانې يې د الوبالو د مېوې غوندي دي، د دغودانو ميده پوډر په ايشېدلو اوبو او شيدوكي ايشوي او چيښي يې. وايي چي يوه پوونده چي«خالدي» نو مېدى او د ځينو په قول د يمن وو او د ځينو په وينا د حبشې وو، د يمن يا حبشې په غرونو كي د پسو د رمې پوولو پر مهال ولېدل چي د هغه كوم څاروي چي د غره يو ځانګړى بوټۍ وخوري نه بيديږي او تر نورو وختونو ښه او زيات واښه خوري. نو هغه وو چي دغه پوونده له دغه بوټي څخه څه وخوړل څو د هغه اغېز پر خپل ځان وازميي. خو هغه ته د دغه بوټي خوړلو ښه خوند ورنه كړ او د هغه څه اغېز يې هم احساس نه كړ. بيا هغه دغه بوټۍ په اوبو كي وايشاوه او د هغه له چيښلو څخه يې هم خوند واخيست او هم يې په څرګنده د هغه د چيښلو له امله په ځان كي تكړه توب وموند.

د «قهوې» لفظ له اصله عربي ګڼل سوى او ويل كيږي چي دغه چوپان پر ايښى دى. په يوولسمه عېسوي پېړۍ كي يو عرب طبيب د هغې په خواصو پوه سو. بيا نورو پوهانو پر هغې د «كوفيا ارابيكا» (coffea arabica) نوم كښېښود. بيا په پنځلسمه عېسوي پېړۍ كي په يمن او د سره سمندرګي پر غاړو د هغې كښت او حاصلات زيات سول او په ټول عربستان، يمن او حبشه كي خلك د هغې په استعمالولو روږد سول. انګلستان ته قهوه په ۱۶۰۰ع.كال ورسېدل، خو تر بېخي ډېره مهاله دونه ګرانه وه چي يوازي شتمنو چيښلاى سول.كله چي په ۱۶۱۰ع.كال د انګرېزانو د شرق الهند كمپنۍ د منېجر هينري ميډټيون قافله د سره سمندر ګي پر غاړه تم سوه نو هغه د قهوې د دانو زياتي بورۍ رانيولې او انګلستان ته يې يووړې.په ۱۶۴۴ع.كال قهوه د فرانسې پاچايي دربار ته ورسېده او شپاړسم لوئي د هغې لومړنۍ پياله وچيښل. څو كاله وروسته طبيبانو د هغې د چيښلو سره سخت مخالفت وښوود. خو بيا هم په سلطنتي ماڼۍ او نورو كورو نو كي لږ لږ استعمالېدل.په ۱۶۵۴ع.كال په پاريس كي لومړنۍ قهوه خانه را ووتل چي يوازي قهوه پكښي چيښل كېدل. په اتلسمه پېړۍ كي ډېرو خلكو په تېره د علم او قلم څښتنانو د هغې چيښل پيل كړل.

څنګه چي سوداګرو او شتمنو ته د قهوې تجارتي ارزښت څرګند سو نو د هغې د كرلو په هكله د هغو ترمنځ مقابله پيل سول او هر يوه كوشش كاوه چي په خپله اړونده مځكه كي زياته قهوه وكري، او په رشتيا يې د هغې له كرلو او سوداګرۍ څخه زياتي ګټي تر لاسه كړې. د اوولسمي پېړۍ په منځ كي قهوه پر هر لوري خورا ډېره خپره سوه او له ويانا او اميسټرډام څخه تر بوسټن او نيويارك پوري خلكو د هغې د چيښلو سره مينه پيدا كړه.كله چي ۱۷۱۴كال پيل سو نو د قهوې شهرت د انګرېزانو ډېر ډنګرشاعرالكزانډر پوپ (۱۶۸۸ ـ ۱۷۴۴م.) اړ كړ چي د هغې په ستاينه كي څه ووايي. اوس لكه چي د «اخبار جهان» مجلې د۲۰۰۲ كال د ډسمبر د ۱۶تر ۲۲ ګڼي په ۵۵ مخ كي وايي د يوې احصائيې له مخي يوازي په امريكا كي د كاله تر (۱۴۰) بلينو ګيلاسو زياته قهوه چيښل كيږي.

قهوه اروپاته تر رسېدلو پنځه پېړۍ د مخه اسلامي نړۍ پېژندلې وه. هماغه مهال (د لسمي سپوږميزي پېړۍ په لومړيو كي) د قهوې د چيښلو د منع كولو لپاره كوښښونه وسول ډېرو اسلامي عالمانو د هغې په هكله ډول ډول فتواوي ور كړې ان ځينو روغتيا ته د هغې د ضرر له امله د هغې چيښل حرام وګڼل. بيا د هغې د استعمال د مخالفينو او پلويانو تر منځ شخړي را منځته سوې، تر دې چي دا خبره د ازهر پوهنتون شيخ ته ورسېده. په ۱۵۳۱ع.كال هغه فتوا وركړه چي دا حرامه ده، ځكه چي له هغې څخه سړى نشه كيږي. بيا د الازهر لخوا د قهوه خانو د تړلو حكم وسو. بيا احتجاجي غونډي وسوې او ربړه محكمې ته وړاندي سوه. قاضي د قهوې چيښل حلال وبلل. چي له دې امله په هر كور او كوڅه كي د هغې چيښل عام سول او په لويو لويو اسلامي ښارونو لكه مكه مكرمه، قاهره او استنبول كي دود سوه. د قهوې په هكله د عالمانو د اختلاف او بالاخره حلال والي په هكله د ردالمحتار۵/ ۴۰۸مخ وګورئ. د طريقة محمديه د شرحي البريقه په ۲/ ۱۳۴مخ كي يې هم قهوه حرامه نه ده ګڼلې خو د هغې د چيښلوپرېښوول يې اولٰى يعني ښه كار بللى دى.

په هر صورت اوس پوهو او سترو ډاكټرانو او طب پوهانو جوته كړې ده چي قهوه او چاى روغتيا ته ضرر لري. په دې هكله به تاسي په راتلونكو كرښو كي معلومات تر لاسه كړئ. خو له بده مرغه بيا هم ځيني كسان د چايو او قهوي دضررونو پر ځاى د هغو د ګټو په هكله كله ناكله د مجلو او اخبارونو مخونه توروي. دا درسته ده چي هر څه ان شراب لا هم څه ګټي لري خو بايد وكتل سي چي ګټي يې څوني دي او تاوانونه يې څونه دي. لنډه داچي كومو كسانو چي د چايو يا قهوې په هكله ليكني كړي دي او د هغو روغتيايي ضررونه يې نه دي منلي تاسي يې معلومات وكړئ دغسي كسان يا په دې هكله ناپوهان جوت سوي دي يا د پانګوالو او پانګوالي نظام لاسپوڅي او مزدوران. چي غواړي په افغانستان كي د چايو بازار تر دې لا تود وساتي او د قهوې چيښل هم د چايو غوندي دود كړي او په دې توګه زموږ د بې وزلو خلكو په مليارډونو پيسې د پردو بانكونو ته ولېږدول سي.

د چايو تاريخ:

چاى له چيني ژبي څخه اخيستل سوى لفظ دى. د چايو ونه تر درو مترو پوري جګيږي، زرغونې دندانې لرونكي پاڼي لري، دانې يې كرل كيږي، دوه كلن نيالګي يې ايږدي، پر څلورم كال حاصل ځني اخلي او تر پنځوسو كالو حاصل وركوي. خو ځيني ځايونه يې وني تر شل كلنۍ وروسته كاږي او نوي وني يې پر ځاى ايږدي. د چايو پاڼي تر ټولولو وروسته په ځانګړو ماشينونو او آلو كي وچوي او تخميروي. خو د شنو چايو پاڼي تر ټولولو وروسته سمدستي په آزاده هوا كي وچوي او نه يې تخميروي.

ويل كيږي چي د چايو كښت لومړى په چين كي پيل سو. د چايو په هكله يوه لرغونې چيني كيسه مشهوره ده. وايي چي يوه بودايي مذهبي ته د نفس لېزيمه كولو لپاره د عبادت پر مهال خوب ورغى. كله چي را كښېنستى د خپلو سترګو جږمي يې پرې كړې او پر مځكه يې وغورځولې. بيا له هغو جږمو څخه د چايو بوټۍ راو ټوكېد او يوه كوچنۍ اغزنه ونه ځني جوړه سوه. چي بيا د دغي وني په پاڼو كي د خوب د تښتېدو ځانګړنه وليدل سوه. دغه راز د نورو افسانوي رواياتو له مخي ويل كيږي چي چاى په چين كي د عيسٰى÷ تر زېږېدو ۲۷۰۰ كاله د مخه لا د درمليز چيښاك په توګه پېژندل سوي وې، چي په اوبو كي به يې د هغو تازه پاڼي تر ايشولو وروسته استعمالولې. خو د دريمي عېسوي پېړۍ په بهير كي چاى هلته ورځنى چيښاك وګرځېد او د هغو كښت او پروسيس پيل سو. بيا د چايو د كرلو، پروسيس او چيښلو د لارو چارو خپرېدل په ۳۵۰ع.كال په پراخه پيمانه پيل سول. په ديارلسمه عېسوي پېړۍ كي د هغو تخم جاپان ته ورسېد او هلته هم د هغو كرل پيل سول.

په شپاړسمه پېړۍ كي چاى په اروپا كي د يوه فيشني چيښاك په توګه استعمالېدلې او سمدلاسه په امريكا كي هم د هغو چيښلو رواج وموند.په ۱۶۵۱ع.كال په انګلستان كي د يوه پاونډ (نژدې نيم كېلو) چايو بيه لس پونډه وه. په هغه زمانه كي دا ډېره لوړه بيه وه. دغه مهال په يوه كور كي د چايو شتون د شتمنۍ نخښه ګڼل كېدل. پوهو ښځو به چاى په ځانګړو لوښو كي د ګېڼو غوندي ساتلې. په ۱۷۲۴ع.كال په برما او د هند په آسام كي د چايو كرل پيل سول، خو ډېري ګراني وې. بيا كله چي په ۱۸۲۸ع.كال د چايو بوټي د ځنګلي ونو غوندي ډېر را شنه سول د هغو كښت هم ډېر سو او بيه يې هم را كښته سوه. په دې ډول د چايو كرل او چيښل په نورو ډېرو ځايونو كي دود سول.

د قهوې او چايو ګټي اوضررونه:

لكه چي د مخه مو وويل په قهوه او چايو كي به هرو مرو څه ګټي وي خو د پوهو او تجربه لرونكو ډاكټرانو او طبيبانو ليكنو او څرګندونو ته چي لږ څه ځير سو پوهيږو چي دغه توكي د انسان روغتيا ته ستر تاوان رسوي.

که څوک غواړي چي لږ تر لږه دي ښکلى پاته سي تر ټولو لومړى دي چاى او قهوه پرېږدي. که د چايو او قهوې پر ځاى ايشېدلي اوبه وچيښل سي ښه به وي. ايشېدلي اوبه په بدن کي د هضم آلات د خپلو دندو د ښه تر سره کېدو لپاره په خو ځښت راولي، اينه صافوي او د جسم د رنګ په ساتلو کي ستره مرسته کوي.

يو هندى ليكوال د «د حسن وصحت» په نامه كتاب په ۱۱۱ـ ۱۱۳مخونوكي وايي:

«د ډېرو لږو خلکو دې خبري ته فکر کيږي چي دوى چي د سهار د ناري په مهال کوم چاى او قهوه يا كاكاو (Coco) چيښي، د دوى د دې چيښاک اغېزه د دوى پر جسم او دماغ باندي څه ده. ډېرو نامتو طبيبانو چاى او قهوه بده ګڼلې او د دوى دا بد ګڼل بېله معقو له دليله نه دي. چاى او قهوه په جوړښت او اوصافو کي يو له بله سره ورته دي. په دې دواړو کي يو قابض تو کى چي «ټينک اسيډ» (Tannic Acid) ورته وايي سته چي په چايو کي په سل کي (١٥) او په قهوه کي په سل کي (٥) موجود دي. په دواړو کي داسي يو له منځه تلونکى، لطيف او خوشبويه توکى سته چي د وچېدو او سره کېدو پر مهال څرګنديږي. په دواړو کي يو ډول جوهر هم سته چي د چايو دا په «تئين» (Thayne) او د قهوي دا په «کافئين» (Caffeine) شهرت لري. د دغو له تجزيې څخه څرګنديږي چي دا وژونکي زهر دي چي د هغو له يوازي خوړلو څخه انسان او حيوان سمدستي مري. له دې تجربو څخه جوته سوې ده چي زموږ د چايو او قهوې جوشانده په حقيقت کي زهرجنه ده او دا زهر د تمباکو د نيکوټين سره يو شى دي. ځکه نو زموږ جسم ته هرومرو لږ و ډېر نقصان رسوي. که څوک د چايو د چيښلو څخه پرهيز وکړي نو پرخوړو باندي به د ناړو ترشح (راوتل) بند کړي او چي بند نه سي، نو معدې ته درومي او بيا معده خواړه نه سي هضمولاى.

دا خبره څرګنده ده چي له ډېرو چايو چيښلو څخه عصبي کمزوري پيدا کيږي. بد پرهيزه چاى چيښونکي به ژر يا وروسته په عضلاتي رېږدېدا (رعشه)، بدهضمي، دماغي خراش او بي خوبي اخته سي.

يوه ډاکټر د قهوې په هکله ويلي دي: کمزورو يا ذکي الحس وګړو ته دي معلومه وي چي که دوى نوى د قهوې په چيښلو پيل کړى وي، نو د خوړو تر خوړلو وروسته د تيزي قهوې له چيښلو څخه به د دوي هاضمه سمدستي خرابه سي. دا جوته سوې ده چي نازک مزاجو او زود رنجو ښا غلو ته د قهوې چيښل هيڅکله ښه نه دي. دا يوازي محرک شى دى او د جسم غړي ډېر ژر ځني خرابيږي او انسان ډنګر او ژړ سي. تر چايو او قهوې کوکو يا چاکليټ ډېر ښه دي. دا جسم ته ډېر لږ ضرر رسوي چي د غذا په ډول د خوراک او چيښاک دواړو ځاى نيسي. ځکه چي په هغو کي غوړزګي، البومين او نشايسته لرونکي توکي سته».

د هندوستان يو نامتو طبيب حکيم هري کشن لا ل په خپل کتاب «پيغام جواني» کي د نورو ناوړو شيانو تر څنګ د چايو او قهوې ډېر چيښل هم د صحت او ځوانۍ د بربادۍ عامل بولي او د تيزي مساله لرونکي غذا، شرابو، تمباکو، چاى او قهوې د نه استعمال توصيه کوي. د يوه بل کتاب چي «په خوړو سره درملنه» نوميږي په ۵۴مخ كي ليکلي دي: «چاى خوب لږ وي او که ډېر وخت پرله پسې وچيښل سي، نو وينه خرابوي، معده کمزورې کوي او د احتلام او انزال شکايتونه هم رامنځته کوي».

دوه انګريزي ډاکټران فنبار ګارټن او ډينيل سټيل د خپل کتاب «Peptic ulcer» (د نس خوږ) په ۲۴ مخ کي وايي: «په امريکا کي تر سره سوو تجربو ښوولې ده چي هغه زده کوونکي چي ډېره قهوه يا کوکا کولا چيښي د هغو په راتلونکي ژوند کي د نس د خوږ (د معدي د زخم) ناروغي ډېره ليده سوې ده. مګر چاى او شراب داسي اغيزه نه ښندي». خو يو بل ليکوال په «د نس د خوږو درملنه» نومي کتاب کي د چاى، قهوې او نور چيښاک تر سر ليک لا ندي ليکي چي: «داسي ټول مشروبات او هغه چيښاک چي الکحل په ګډ وي هرومرو په نس کي تيزابي تعامل پيدا کوي او بايد د هغو له چيښلو څخه پرهېز وسي».

د «صحت و زندګي» كتاب په ۱۹۱ مخ كي ليكي:

«په چايو كي «تئين» (د چايو جوهر)، البومين، ډيكسټرين، ټينين (Tannin) او معدني او نباتي اجزا او نور سته. تئين او ټينين د هغو اغېزمني برخي دي. د چايو له ډېرو چيښلو څخه چي بدن ته تئين ډېر ورسيږي نو د ډول ډول ناروغيو ور ته مخه سي؛معده او هاضمه خرابه سي؛ د كولمو ناروغۍ را منځته سي؛ د زړه دربى دونه تېز سي چي د هغه د اختلاج او غورځېدو كيفيت رامنځته سي. د پلاو پلاو تحريك له امله اعصاب ضعيفه سي، مثانه هم كمزورې سي او په وارو وارو متيازو راتلو ستونزه زياته سي؛ ګېډه هم ضعيفه سي او د سړي شى خوا ته نه كيږي؛ څه چي خوري هغه هم ښه نه سي هضمولاى. د چايو بل عيب دادى چي وينه خرابوي او خوب لږوي او د محركو اغېزو له امله د نارينتوب ځواك كمزورى كوي، مني خرابوي او د جريان، احتلام او د انزال دسرعت ستونزي هم رامنځته كوي.

د فرانسې يوه نامتو ډاكټر موسيو اليوي د خپلو تجربو پر بنسټ ليكلي دي: څوك چي چاى ډېري چيښي د هغه په دماغي ځواكونو كي خرابي را منځته كيږي. دماغ نازك رګونه يې كمزوري كيږي، د اورېدو په ځواك كي يې ضعف پېښيږي او په غوږونو كي يې ډول ډول آوازونه مونده سي، زړه يې غورځي او د څېرې رنګ ژړ واوړي. دغه راز د ډاګټر بلارډ نومي په وينا څوك چي چاى چيښي څه يې خواته نه كيږي او د بدهضمۍ، د زړه دربى او داسي نور عوارض هرو مرو ورپېښيږي. يو شمېر نورو ډاكټرانو هم د چايو په هكله دغسي خبري كړي دي».

دغه راز د پورتني كتاب په ۱۹۴مخ كي د قهوې په هكله كاږي: «قهوه هم د چايو غوندي روغتيا ته ضرري ده؛ بدهضمي او بې خوبي رامنځته كوي؛ د هغې له پرله پسې چيښلو څخه د هاضمې په كار كي سستي راځي، د زړه سوى او دربى او د لاسونو او پښو رېږدېده رامنځته كوي. اعصابو او دماغ ته تحريك او ځواك بخښي، نبض تېز وي او خُوَلې او متيازي په زياته اندازه خارجوي».

يو بل ايرانى ډاكټر د «اطلاعات پزشكي» په نامه كتاب په ۵۰۷ مخ كي ليكي:

«قهوه او چاى تقريباً له يوې كورنۍ څخه دي. په قهوه كي كافئين او په چايو كي تئين سته او دواړه كېمياوي مواد باله سي. دغه دوې مادې چي الكالوئيډ يې بولي ټينيك اسيډ لري چي كه تجزيه سي يوريك اسيډ (aciduric) توليدوي، له دې امله ډاكټران د هغو چيښل د بندونو د پاړسوب او درد (نقرس) او د پښتورګو د ډبري ناروغانو ته نه توصيه كوي. قهوه په ځانګړې توګه پر اعصابو اغېز ښندي. كه لږ وچيښل سي څوك نه مسموموي. كه سهار د شيدو سره يوه خوږه پياله تر خوړو وروسته وخوړل سي بده نه ده او ضمنا څنګه چي لږ څه قبض ماتوونكې ده د قبضيت د ماتولو لپاره ښه ده. او سړى كار ته چمتو كوي، خو په دې شرط چي په خوړلو كي يې افراط ونه سي. كه نه سړى د الكحلو غوندي مسموموي. دغه راز د چايو مسموميت تر قهوې لږ دى، خو څنګه چي تر قهوې ډېري خوړل كيږي خطر يې زيات دى په تېره چي ډېري ګاټه وي. د چا چي فشار لوړ وي، يا ډېر عصبي كيږي يا د زړه په كسالت اخته وي بايد د چايو او قهوې له چيښلو ډډه وكړي».

بل ايرانى طبيب د «راز سلامتي وطول عمر» په نامه كتاب په ۵۴۶ مخ كي د «چاى، قهوه او كاكاو» تر سر ليك لاندي د يوه اوږده مطلب په ترځ كي ليكي:

«د چايو پاڼي تئين، مرفين، كوكائين، كودئين، ټينين او داسي نور لري چي له دغو څخه هر يو مهلك او خطرناك سموم دي، د انسان ګېډي ته ضرر رسوي او ژړ وي او ډنګروي يې. دغه راز چاى د پوهانو د څېړنو له مخي راډيو اكټيف تشعشعات لري او له دې امله هم بدن ته ډېري مضري دي. په بدن كي يوريك اسيډ زياتوي او د نقرس ناروغي توليدوي.

د هاوايي د پوهنتون يو استاد ډاكټر ډوريس ام هيلګر وايي موږ ته جوته سوې ده چي چاى او قهوه د انسان په بدن كي ويټامين (B1) له منځه وړي. كله چي يو انسان د دې ويټامين د لږوالي سره مخامخ سي ستړى او عصبي وي، رېږدي، د شپې لخوا يې بدن په موضعي دردونو اخته كيږي او د ځان خارښت ور پېښيږي. دغه حالت د پښو د عضلو په رېږدېدو او د پښو د تلو په خارښت سره پيل سي، بيا د چا شى خواته نه كيږي او پاى كېداى سي د مړيني لامل يې سي».

د «صحت بخش عادات» نومي كتاب په ۱۵۷ مخ كي ليكي: «په تش نس د چايو له چيښلو څخه د اشتها كمى او د هاضمې خرابي رامنځته كيږي. د وخت په تېرېدو سره د چايو د ټينين د اغېزو له امله د ګېډي بلغمي غشا (د نس دننه نرى پوست؛ (Mucos Membrane) ته هم نقصان رسېدلاى سي او په كولمو كي سوى احساسيږي».

په دې وروستيو کي د يوې نړيوالي راډيو يوې خبريالي د افغانستان د ننګرهار اړوند د آدم خيلو په نامه د يوه کلي د يوه اوسېدونکي ګل الدين نومي سره، کوم چي عمر يې يوسل وپنځلسو کالو ته رسېدلى دي او اوس لا هم ښه تکړه دى، مرکه کړې ده، هغه په دې مرکه کي د خپل عمر د ډېرښت راز دا بللى چي تمباکو او چاى يې نه دي استعمال کړي.

يوه بله خبره چي ډېره مهمه او د يادولو وړ ده هغه دا ده چي په هند كي د چايو د پاڼو په ټولولو او د هغو د پروسيس او تخميرولو په بهير كي خواپاكي هيڅ نه مراعاتوي.

دقهوې او چايو د چيښلو له امله د كوچني نقصان:

د «اخبار جهان مجلې» د ۲۰۰۱ع.كال د جنورۍ د ۱۵ ـ ۲۱ ګڼي په (۵۸) مخ كي ليكي: كه اميندواره ښځه هره ورځ د قهوې پنځه ګيلاسه وچيښي نو هغې ته به د كوچني د نقصان (د حمل د اسقاط) خطرونه تر دوه برابره زيات سي. دا خبره تر اوسه پوري د كافئينو او د حمل د اسقاط په اړه د تر ټولو ستري څېړني څخه جوته سوې ده. له آره له لومړيو وختونو څخه ځينو ډاكټرانو شبهه درلوده چي كافئين د حمل د ضايع كېدو سره اړه لري. له دې كبله هغوى دغسي مېرمنو ته سلا وركوي چي له كافئينو څخه پرهېز وكړي.

د نيو انګلينډ جرنل آف مډيسن د وينا سره سم كه دغسي مېرمني د ورځي د امريكايي قهوې له يوه څخه تر درو ګيلاسو وچيښي نو په هغو كي به د حمل د اسقاط خطره ۳۰ فيصده زياته وي. البته له درو څخه تر پنځو ګيلاسو پوري دغه خطره تر۴۰ فيصدو رسوي او تر پنځو يا تر هغو زيات ګيلاسونه خطره تر دوه برابرو زياتوي.

د حمل په دوران كي د چايو د ناوړو اغېزو په هكله د «صحت بخش عادات» نومي كتاب په ۱۵۸ مخ كي ليكي: «په ۱۹۷۳ع.كال د اكسفورډ پوهنتون يوه څېړونكي د اميندوارۍ په وخت كي د چايو چيښلو او د شديدي دماغي خرابۍ (Anencephalous) په هكله د شمېر يوه مهمه اړېكه څرګنده كړه. د برتانيې هغه ميندي چي پورتنۍ ناروغي ولري او چاى خوري د هغو هيوادونو د ميندو په پرتله چي چاى نه خوري لس واره زيات مړه كوچنيان زېږوي او يا د پيدا كېدوسره سم مري.

بوره يا سپين زهر

بوره كومه چي ډاكټرانو سپين زهر بللې ده په لومړيو وختونو كي خلكو ډېر بيې او نادره مساله ګڼل او د خوږولو لپاره يې له شاتو څخه كار اخيستى. لومړى يې بوره له ګنيو (شكرني) څخه جوړول او خورا ګرانه وه. بيا سوونه كلونه وروسته خلكو ته څرګنده سوه چي له جغندرو څخه هم بوره جوړيږي. اوس يې له ګني او جغندرو دواړو څخه جوړوي.

پر بوره باندي په جوړښتونونو (كارخانو) كي د هغې بشپړي بڼي ته تر رسېدو پوري ډول ډول كېمياوي پړاوونه تېريږي. لومړى د جغندرو شربت باسي او دوه نيم فيصده د اهاكو شربت په ګډوي. تاسي پوهېږئ چي ډبري په كوره كي د پخېدو په پايله كي اهاك ګرځي او چي وخوړل سي صحت ته به څونه تاوان لري؟ بيا دغو شربتو ته لس فيصده يو ډول سوډا وراچوي چي هغه هم وژونكي او سوځونكي زهر دي. بيا د جغندرو د ځګ د له منځه وړلو لپاره وازګي ور اچوي او بيا يو بل ډول سوډا په ګډوي څو دغه وازګي له منځه يوسي. بيا د دې لپاره چي جغندر سپينه بوره سي د فاسفورو (Phosphore) په نامه يوډول كېمياوي مواد په وهي. دغه مواد يوه ټوټه سوځونكي او وژونكي سموم دي. د اورلګيتو په جوړښتون كي كه په ګوګړو فاسفور ګډ نه كړي، اور نه اخلي. بيا د بورې د شفافتيا، او خيرو ليري كولو او داسي نورو لپاره څو ډوله داسي مواد په ګډوي چي ټول قوي او وژونكي سموم دي او د انسان بدن ورو ورو له كاره اچوي او د ډول ډول ناروغيو اخته كېدو ته يې برابروي. په دې ډول په ظاهره سپينه شكره خو په اصل كي د ناروغيو تومنه جوړيږي.

له دغسي بورې او تر دې بترو نورو خوږو څخه د نړۍ ټول خواږه خواړه جوړيږي او موږ خو يې بيا په چايو كي تر هر چا زياته استعمالوو. د امريكا، انګلستان او ډېرو نورو ځايونو د طب پوهانو ډول ډول ژورو څېړنو جوته كړې ده چي د بورې او په هغې له خوږو خوړو څخه د زړه، شريانونو، پښتورګو، اعصابو، چاغښت، شكري، كلسټرولو، لوړ فشار، د رګونو د بندېدو، عصبانيت، ستړيا، سردرد، ګنسيت، هېري، تدريجي مسموميت، بدهضمۍ، د تناسلي ځواك د مړژواندي كېدو او ژر سپين ږېرتوب ناروغۍ رامنځته كيږي او د ډېرو مړينو پايله د بوري استعمال بلل سوى دى. ان وايي چي د بورې او خوږو خوړل د انسان په وجود كي د غوړو په پرتله ډېر كلسټرول رامنځته كوي. په دې وروستيو كلونو كي ډاكټران دې پايلي ته رسېدلي دي چي بوره د بشر د جسمي سلامتيا د لومړۍ درجي دښمنانو څخه ده. حتٰٰى ځيني وايي چي كه بوره نه واى اختراع سوې انسان به پنځلس كاله زيات عمر كولاى او د هغو دريمه برخه به لږ ناروغه كېدلاى.

له بده مرغه په موږ كي ځيني مېندي واړه ماشوم ته د قوطيو په شيدو كي بوره ور اچوي او وركوي يې. بيا چي څه لوى سي مور او پلار او نور خپلوان يې ډول ډول چاكلېټونه، ژاولي او داسي ډېر نور ورته وركوي چي په دې ډول كوچنى په خوږو روږد او عادي سي او په پايله كي چي پنځه كلنۍ ته لا نه وي رسېدلي دغاښو په ناروغي اخته سي. بوره وړو ماشومانو ته نور زښت زيات ضررونه هم لري. څنګه چي د دوى ګېډه سخت شيان نه سي هضمولاى. نو كوچنيانو ته د خوږو شيانو وركول د هغو د مقاومت ځواك له منځه وړي او په پايله كي د ډول ډول ناروغيو ښكار سي. د امريكا يو ډاكټر «سيل حارث» وايي كوچنيانو ته د ډېرو خوږو وركول په هغو كي د هډوكو د ناروغيو امكانات زياتوي او بدن يې د ډول ډول مكروبونو په وړاندي له مقاومته اچوي.

له بله پلوه تاسي وګورئ چي ستاسي څونه دوستان او خپلوان د غاښو په ناروغيو اخته دي او د غاښو د ډاكټرانو كتنځايونوته څونه وګړي ورځي. دا زياتره د بورې او په هغې د خوږو خوړو له شامته دي.

په امريكا كي چي بوره ډېره استعماليږي خبره تر دې رسېدلې ده چي له شل كلنۍ څخه تر دېرش كلنۍ پوري ډېر ځوانان له خپلو طبيعي غاښونو څخه بې برخي سوي او مصنوعي غاښونه او زامي يې ايښي دي. د بورې بله ستره خرابي داده چي انسان د چايو او تمبكو په څېر د هغې د خوړلو عادي كيږي. تاسي چي كله هغه شيان چي بوره په ګډه وي لكه شربت يا چاى يا داسي نور وخورئ نو ستاسو بدن د دې خطرناكي پېښي د مخنيوي او مدافعې لپاره خپل ټول ځواكونه فعال كړي، تاسي په ظاهره او سمدستي څه تكړه توب احساس كړئ او دغه شيان بيا بيا استعمالوئ خو خبر نه ياست چي بدن مو د دې توكو په وړاندي داسي عاجز او زبون سوى وي لكه د امريكايانو او نورو كفارو پوځيان چي د عراقيانو او افغانانو په وړاندي لالهانده او سربداله سوي دي.

له بده مرغه نن زموږ نژدې شل فيصده خواړه بوره او شيريني جوړوي. اوس چي سراښ او د دين، وطن او خلكو پر ځاى پر پيسه مين پانګوال او سوداګر په عامه توګه په تېره د كوچنيانو لپاره څه شيان جوړوي او مادي پال راډيو، ټلوېزيون او اخبار والا يې اعلانوي يا له پلاسټيكو څخه جوړي سوي بوغۍ او ناوكۍ وي يا له بورې او نورو ضررناكو خوږو څخه جوړ سوي آيس كريم، شربتونه، مرباوي، كيكونه، چاكلېټ، پلمېټ، بسكېټ، ژاولي او په ډول ډول نومونو نور څه. چي ټول زموږ د لويانو او ګلاليو ماشومانو روغتيا په تېره د هغو غاښو ته ستر او نه جبيره كېدونكى ضرر رسوي.

بده لا داده چي په ځينو خوږو خوړو او ډوډيو كي د دې لپاره چي ښه وپړسيږي او د يخي جوړولو ځيني خاوندان د دې لپاره چي يخى ژر توليد سي د «امونياك» (Ammoniac) په نامه يو ډول مضر ګاز كاروي كوم چي د نوشادرو، اهاكو يا ځينو نورو چټلو شيانو څخه په لاس راځي. چي هم وژونكي سم دي او هم ښايي چټل او ناپاكه وي.

نېكمرغه هغه څوك دى چي په كوچنيوالي يې مور او پلار د بورې او دغسي نورو خوږو خوړو څخه منع كړى وي.

د بورې او نورو خوږو خوړو پرېښوول څه ناشونى كار نه دى، خو لږ څه ستونزمن هرو مرو دى. څوك چي د خپل ځان او اولادونو د سلامتيا سره مينه لري بايد د بوري او د هغې له خوږو څخه په تدريج سره شلوون وكړي او كرار كرار يې پر ځاى د هغو خوړو استعمال پيل كړي چي خوښ يې وي او بوره ونه لري.

كه د نړۍ واكمنانو په رشتيا د خپلو ولسونو د روغتيا سره مينه درلوداى پر ډېرو دغسي مهلكو خوړو به يې بنديزونه لګولي واى او كه يې دا نه كولاى لږ تر لږه خوبه يې د سګرېټو د قوطيو غوندي د دغو زهرجنو توكو پر قوطيو او بوتلونو هم ليكلاى چي: «خبر اوسئ! د خوږو شيانو ډېر استعمال غاښو او روغتيا دواړو ته مضر دى، ځكه نو له هغو څخه پرهېز وكړئ».

په هر صورت تر څو كولاى سئ له هغو طبيعي او اومو موادو څخه چي په بوره نه وي خواږه سوي استفاده وكړئ. تركارۍ، مېوې او حبوبات ډېر استعمالوئ. كه مو خوږو ته هوا كېدل له شاتو يا پاكي ګوړي، وچو انځرو، وچو توتو يا داسي نورو كار اخلئ. شات په جسم كي د مصنوعي تكړه توب پر ځاى رشتيانى ځواك او پياوړتيا رامنځته كوي او صرف په شلو دقيقو كي د بدن برخه ګرځي. دغه راز تاسي كولاى سئ د مصنوعي قندو پر ځاى د مېوو له طبيعي قندو څخه ګټه واخلئ. انګور بېخي ډېر قندي مواد لري. په مڼو او امرتو كي له ۶ څخه تر ۸ پوري قندي مواد سته. وچي مېوې له ۴۰ څخه تر ۶۵ پوري قندي مواد لري. دغه راز په خرما، كشمشو، ګنيو، چغندرو او داسي نورو كي هم زيات قندي مواد سته. (د يادو سوو توكو د روغتيايي ګټو په هكله «زموږ خواړه او درمليز توكي» كتاب وګورئ).

غنم، اوړه او ډوډۍ

غنم د لوى څښتنأ له لويو نعمتونو څخه باله سي. د انسان له هر ډول خوړو څخه خوا توريږي خو د غنمو له ډوډۍ څخه يې هيڅ خوا نه نوريږي او له كوچنيوالي څخه د مړيني تر ساعته يې خوري. د نوو څېړنو له مخي په غنمو كي دونه ګټور مواد، پروټينونه، نشايسته، ويټامينونه، پاسفورس او لږ څه ځانګړي غوړي سته چي تقريباً د انسان د بدن اړتيا ليري كوي او ځواك او ودي ته يې ګټور تماميږي.په غنمو او داسي نورو غلوكي داسي مواد هم سته چي د كلسټرولو د توليد مخه نيسي او زموږ د بدن د اړتيا وړ معدني مالګي او ويټامينونه، په تېره ويټامين B او نور بشپړوي. دغه راز يوه (۳۵۰) ګرامه ډوډۍ (۸۵۰) كالورۍلري، چي د يوه انسان د ورځنۍاړتياوړ كالوريو ۳/۱ برخه تامينوي. هغه كسان چي كار كوي او زياتو كالوريو ته اړتيا لري اكثره وختونه د څه زياتي ډوډۍ خوړل ورته كافي باله سي. (كالوري د تودوښي يا حرارت د اندازه كولو مقياس[واحد] يا د ځواك يا انرژۍ د اندازه كولو واحد چي د خوړو په واسطه په بدن كي پيدا كيږي؛ (Calorie). له بله پلوه څنګه چي غنم او نوري غلې آسانه هضم كيږي ځانګړى غذايي ارزښت لري. دغه راز څنګه چي غنم نسبتاً ارزانه دي نو هغه كورنۍ چي لږ ګټه لري كولاى سي د غنمو په ډوډۍ خپله لوږه ليري كړي.

له بده مرغه اوسمهال په ډېرو ځايونو كي په تېره په اروپايي هيوادونو كي د ډول ډول خوړو د دودېدو له امله د ډوډۍ خوړل لږ سوي او د بورې مصرف زيات سوى دى. په داسي حال كي چي د غنمو او نورو غلو د نشايستې قند تر سپيني بوري ډېر ګټور دي. ځكه چي بوره د هغې د توليد او تصفيې په بهير كي له خپله اصلي حالته وزي او روغتيا ته ډېره ضررناكه تماميږي. په تېره كوچنيان چي خواږه خواړه خورا ډېر خوري، د هغو صحت ته بيا بېخي ډېر تاواني تماميږي.

په هر صورت په خوړو كي بايد توازن او اعتدال له لاسه ورنه كړل سي. دغه راز د غنمو او اوړو د كارولو په هكله هم بايد له ډېر احتياطه كار واخيستل سي. له دې امله موږ په لاندي ډول څه مطالب راغونډ كړي دي چي ستاسي پام ور ته را اړوم:

د غنمو اصلاح سوي تخمونه:

هوښ كوئ چي د غنمو اصلاح سوي تخمونه په تېره د غنمو بهرني اصلاح سوي تخمونه اوړه نه كړئ او ډوډۍ يې ونه خورئ. د جان لوك ډاريګول (Jean-luc Darrigol) په كتاب كي چي د ساعد زمان نومي ايراني لخوا د «غلات براى سلامتى شما» تر سرليك لاندي ژباړل سوى دى ليكل سوي دي چي د ۱۹۵۱ع.كال د اګسټ په مياشت كي د پونټ سنټ سپرى په ښار كي پنځه تنه مړه او په لسګونو نور لېونيان سول. دغه راز د دغه ښار يو شمېر نور خلك په يو ډول غير عادي مسموميت اخته سول. كله چي په دې هكله څېړني وسوې څرګنده سول چي هغو هغه ډوډۍ خوړلې وه چي د اوړو غنم يې د غنمو د تخم د ساتلو او كنسروي لپاره په يو ډول موادو چي «سټاټ فنيل مركور» نوميږي لړل سوي وه. وايي چي دغه مواد د جنين (د مور په نس كوچني) د غړو د نقص لامل ګرځي او هم د ميناماتا (Mina Mata) په نامه مشهوره ناروغي رامنځته كوي.

په ۱۹۷۲ع.كال هم دغسي ډوډۍ په عراق كي نژدې پنځه سوه تنه ووژل. دغه راز په راوروستو كلونو كي د بنګله ديش د وږو خلكو يوې ډلي پر يوه اورګاډي باندي چي د غنمو تخمونه پكښي وړل كېدل بريد وكړ، چي د دغوغنمو د ډوډۍ د خوړلو له امله په زرګونو تنو خپل ژوند له لاسه وركړ.

له دې امله كله چي غنم رانسئ پام مو وي چي اصلاح سوى تخم نه وي. ځكه په اصلاح سوو تخمونو داسي ډول ډول مواد وهي چي زياتره سمي وي او د انسان د مړيني لامل ګرځي.

په غنمو او اوړو هم ډول ډول مواد وهي:

لكه چي پوهيږو په ځينو هيوادونو كي دونه زيات غنم توليديږي چي ګودامونه، بېړۍ، سېلوګاني، د اوړو لويي ژرندي او نور ځني ډك وي او زيات مقدار يې بهر ته صادروي. نو د دې لپاره چي دغه غنم خراب نه سي او شپږۍ ونه كړي ډول ډول مواد لكه تتراكلرور كاربن، ډيبرومټان، ډيكلروس، فسفور المينيوم او... په وهي. دغه راز د اوړو د ساتلو لپاره هم څو ډوله د شپږيو او حشراتو ضد سموم لكه ليډان، ملاټيون، ډىكلروس، ډيبرومټان او فسفورالمينيوم كاروي. په امريكا كي په دې منظور سيانيډريك اسيډ، سولفور كاربن، برومورمتيل، سيانور هايډروجن، كلرپيكرين او يو خورا پېچلى سموم چي وارفارين نوميږي كاروي. چي دا وروستى سموم روغتيا ته ډېر ضررناكه دى. په امريكا كي د غنمو او اوړو د ساتلو لپاره يوازي د دغو سمومو پر استفاده بسنه نه كوي او اوړه په يو څو ډوله نورو موادو چي ترى كلرورازټ، پروكسيډ بنزول، ډىاكسيډكلر او نور نوميږي سپينوي. جان لوك وړاندي ليكي: اوس په دغو سمومو هم بسنه نه كوي او د اوړو د شپږيو سره د مبارزي لپاره د برېښنا د څو زره ولټو څخه په استفاده، د برېښنا شعاعوي د اوړو له ګونيو تېروي. چي د ګونټر شواب نومى په وينا: «دغه اوړه د سمېټو د يوې كڅوړي غوندي مړه مواد وګرځي».

په دې توګه زياتره بهرني غنم او اوړه په دغسي روغتيا ته خطرناكو او مضرو كېمياوي موادو وهل سوي وي.

پر دې سربېره كېداى سي زياتره بهرني اوړه نور عيبونه هم ولري. په دې هكله ستاسي پام د پاكستان د نامتو مجلې«اخبار جهان» د ۲۰۰۱ع.كال دمى د مياشتي د۲۱تر ۲۷نېټې د ګڼي (۱۳) مخ ته را اړوم. د دغي مجلې د «خوراك په اداره كي درغلۍ د رسوايى پولي ته رسېدلي دي» تر سر ليك لاندي په يوه اوږده مضمون كي راغلي دي:

«د سكهر د سيمي د خوراك د ادارې په ګدامونو كي تقريباً دوه نيم لكه بورۍ غنم د شپږيو كولو له امله خراب سوي دي او دغه غنم په اجباري توګه د اوړو لويو ژرندو (فلورملز) ته وركول كيږي. د لويو ژرندو ځينو خاوندانو له دې امله تشويش څرګند كړى او ويلي يې دي چي له دغو غنمو څخه د اوړو معيار خراب او ختم باله سي او دغه غنم انساني روغتيا ته هم مضر دي. د خوراك اداره د خپلي نا اهلۍ د پټولو لپاره دغه غنم د اوړو لويو ژرندو ته وركړه او د هغو پر ځاى يې په ګدامونو كي نوي غنم واچول او د لويو ژرندو او وړو ژرندو مالكان مجبوروي چي دغه خراب غنم استعمال كړي. له بله پلوه د غنمو كښتګر په دغو ورځو كي د سختو ستونزو سره مخامخ دي. په هره سيمه كي په زرګونو ټنه غنم تر آسمان لاندي پر ډاګونو پراته دي او د خوراك د ادارې له خوا نه رانيول كيږي».

ښه، تاسي څه فكر كوئ چي دغسي اوړه او يا تر دې بدتر به لا افغانستان ته نه رالېږي؟ نو عجبه نه ده چي موږ دغه خپل وطني غنم ولي نه اوړه كوو؟ زه خو د غنمو ګنج ته ورسم، په دوبي لس منه او په ژمي شل منه ښه غنم رانيسم، هلته يې ژرندګړي ته وسپارم، د ښه پاكولو سپارښتنه ورته وكړم، خو نه ورته وايم چي ښه ميده يې را اوړه كړه. دا ځكه كه تاسي «زموږ خواړه او درمليز توكي» كتاب لوستى وي، په هغه كي ويل سوي دي چي:

«دا سمه نه ده چي وګړي ډېر ميده اوړه خوښوي او وايي چي ډوډۍ يې ښه، پسته او نازکه وي. د ميده اوړو ډوډۍ روغتيا ته تاوان رسوي قبضيتي او درنه وي، په ډېرعمر هضميږي او هرڅو نه چي اوړه ميده وي هغو نه بې سېکه وي. (په تېره د سپينو ميده اوړو ډوډۍپه خورا تكليف ژوول كيږي).

زموږ د خوړو ډېره برخه پروټين جوړوي. غوښه او وينه د پروټين څخه جوړيږي.او پرو ټين تر ميده اوړو په ځيږو اوړو کي ډېر دي. د ميده اوړو پراټـې يا سمبو سې يا داسي نور شيان ګېډي ته تاوان رسوي او خوړونکي يې تل تر تله په قبض اخته وي. خو ځيږه اوړه ډېر ژر هضميږي.

اوس مهال چي په ځينو نانواييو او هوټلونو يا نورو ځايونو کي اوړه اغږل كيږي يا ډوډۍ پخيږي، تردې ډوډۍ خوړلو نه خوړل ډېر ښه دي، پدې چي دا ډوډۍ نه سېک لري او نه ژر هضميږي.

د ډوډۍ پخولو پر مهال بايد زواله په وچو اوړو کي ډېره ونه وهل سي، ځکه چي وچ اوړه نس ته تاوان رسوي. په اوړو کي مالګه اچول ډېر ضروري دي، پدې چي مالګه د خوړو ډېره مهمه برخه ده او خواړه په ډېره ښه توګه په وينه بد لوي.

غنم بايد دونه اوړه کړئ چي په دوبي کي مو د پنځلسو ورځو لپاره بس سي او په ژمي کي د يوي يا دوو مياشتو لپاره بسنه وکړي. پدې چي اوړه ژر خرابيږي او بې سېکه کيږي او په خوند کي يې هم توپير راځي. په نوره نړۍ کي د اوړو پر بوجيو باندي د هغو د مودې د تېرېدو (Expiry) نېټه ليکلې وي او چي د مودې د تېرېدو ڼېټې ته يې لږ وخت پاته وي لا يې څوک نه رانيسي. مګر زموږ هيواد ته چي پاکستاني يانور اوړه راځي د هغو پر بوجيو باندي د هغو د وخت د تېرېدو نېټه هيڅ نه وي ليکلې او زموږ دولتي چارواکي او خلک هم سر نه په ګرځوي، چي دا ښه نه ده».

بله خبره داده چي كه كېدلاى سي غنم په وطني (د اوبو په ژرندو) اوړه كوئ. ځكه د برېښنايي ماشيني ژرندو د ډېري تېزۍ له امله اوړه داسي ګرم سي چي جوهر او ګټور مواد يې وسوځي. كه بيا هم غنم نه سئ اوړه كولاى له بازار څخه بهرني سپين اوړه مه رانيسئ. په بهر كي غنم په داسي ځانګړو ماشينونو اوړه كوي چي د غنمو پوست كوم چي د غنمو عمده، ژوندۍ، ګټوري او فعالي برخي باله سي، په بشپړه توګه ځني بېلوي او تقريباً يوازي د غنمو مغز پاتيږي. چي د دغو اوړو ډوډۍ ګردسره بې خاصيته، بلكي روغتيا ته زښته زياته ضررناكه تماميږي.د سپينو اوړو ډوډۍ، ډبل روټي او نور د معدې تېزاب ډېروي چي په پايله كي په په معده کي بدهضمي او په بدن كي عمومي ضعف، فشار، د شکري ناروغي او د چاغښت ناروغي رامنځته كوي او د عفوني ناروغيو لار ورته پرانيزي. څوك چي سپينه ډوډۍ خوري د هغې (۵۸) فيصده نه هضم كوي او دفع كوي يې. د دې په خلاف د سرو غنمو او د سبوس لرونكو اوړو ډوډۍ ډېره ګټوره ده اوپه ډېره آساني هضميږي، په دې شرط چي ښه يې وژوياست او ډېري اوبه ورسره ونه چيښئ. كه نه په ګېډه كي باد پيدا كوي او هاضمه خرابوي. البته د ډوډۍ برشته برخه د هغې تر مغز ډېره ژر هضميږي. بل دا چي كوچنيانو ته تر درې كلنۍ پوري ډېره لږ ډوډۍ وركوئ او بيا يې مقدار په تدريج سره زياتوئ. نوي ځوانان او هغه لويان چي ډېر بدني كار كوي كولاى سي د ورځي له (۵۰۰) څخه تر (۶۰۰) ګرامو پوري ډوډۍ وخوري. خو ګټه يې په دې كي ده چي تر دې زياته ونه خوري. دغه راز د غنمو اوګره، كوچه او د غنمو د اوړو حلوا هم روغتيا ته ډېر ګټور خواړه باله سي.

ترميده اوړه:

د تر ميده او ړو په هكله بايد ووايو چي كه څه هم موږ له هغو څخه په شل ګونو ډوله خوندور او مالګين خواړه تياروو خو له دې حقيقت څخه هم انكار نه سي كېدلاى چي له ترميده اوړو څخه جوړ سوي شيان چي موږ يې په ډېر خوند او شوق سره خورو او ډېري پيسې پر وركوو ثقيل (درانه) دي او په ډېر عمر هضميږي. په تېره هغه چا ته يې خوړل چي د كمزوري صحت خاوند وي ښه نه دي او نقصان ور ته پېښوي. پوهو طبيبانو د دې خبرو د څرګندولو تر څنګ دا هم ويلي دي چي ترميده صحت ته مضر دي او د هغو د ډوډۍ خوړلو څخه هم بايد ډډه وسي.

د اوړو خميره:

لكه چي پوهېږو پخوا موږ د اوړو په طبيعي خميره اوړه خميرول چي نه لګښت پر راتى او نه يې روغتيا ته تاوان درلود. خو اوس چي د نوي تمدن له بركته ژوند ماشيني سوى او نوو لاسته راوړنو له يوې خوا په ژوند كي سرګردانۍ او له بلي خوا آسانتياوي راوستي دي، ډېري چاري په مصنوعي توكو تر سره كيږي. په دې لړ كي موږ خپل اوړه لا هم په مصنوعي توكو خميروو. خو له بده مرغه د روغتياپوهانو د څېړنو له مخي د دغسي ډول ډول خميرو استعمالول صحت ته ډول ډول تاوانونه لري. بدن په تدريج سره مسموموي، لومړى د هاضمې خرابي ورته پېښوي او بيا يې په نورو صعب العلاجو ناروغيو اخته كوي. له دغه ځايه دى چي نوى تمدن كه هوسايي لري ډول ډول خطرات يې هم له ځانه سره راوړي دي. په دې هكله زما هيله له ګرانو خوندو او نانوايانو څخه داده چي د پوډري، كېمياوي خميرې له استعمال څخه ډډه وكړي او خپل ځانونه او هم خپل ګلالي ماشومان، د كورنۍ او ټولني غړي له دې پلوه په ناروغتيا اخته كېدو څخه وژغوري.

سره مرچک يا سره زهر

سره مرچک ډېر ګرم او وچ دي. وينه سوځي، د بدن پوستکى سور کوي. بدن ګرموي. د ګرم مزاجو لپاره ډېر تاوان کوي او مواسير پيدا کوي. د مرچکو له خوړلو څخه د توليد د مادې ناروغۍ، د احتلام او جريان، سرعت انزال، نامردي، سوزاک او آتشک ډېريږي. د سرو مرچکو لږ خوړل بلغم څټي، اشتها خلاصوي او خواړه هضموي. د سرو مرچکو پاخه سوي غوړي هر ډول پاړسوب، کا او د پوستکي د خرابى لپاره ګټور دي او د بندو پاړسوب ليري کوي.

شنه مرچک هم کټ مټ د سرو مرچکو خواص لرى.

د «صحت و زندگي» په نامه يو کتاب د هند يوه نامتو ليکوال خوشتر ګرامي په اردو ژبه ليکلى او د ١٩٤٦ع. له جولا ى څخه د١٩٨٠ع.کال تر نومبر پوري نولس ځلي چاپ سوى دى، څنګه چي په دغه کتاب کي د سرو مرچکو په هکله د «سره زهر» تر سر ليک لا ندي يو مطلب راغلى دى او ډېر ګټور او په زړه پوري دى، نو موږ يې ځيني برخي دلته را ژباړو:

زموږ «خوند پالني» موږ ته د يوه شي د ګټي او تاوان په اړه د فکر کولو موقع نه ده راکړې. په دې هکله موږ نه د ځان او نه د خپلي مېرمني او اولا دونو روغتيا ته څه پام کړى دى. زموږ کوچنى چي د ډوډۍ د خوړو سي موږ هغه ته په مرچکو تريخ سالن ور کول پيل کړو. لومړى کوچنى له هغه څخه د خپلي کرکي څرګندونه کوي، خو موږ د هغه کرکي ته پام نه کوو پاى هغه د مرچکو د خوړلو سره عادي سي او له مرچکو څخه د کرکي هماغه فطري جذبه يې له دماغه ووزي.

د سرو مرچکو د تاوانونو فهرست ډېر اوږد دى او د هغو ګټي دوني دي لکه په اوړو کي مالګه.

د مرچکو ضررناكي اغېزي تر ټولو د مخه د انسان د خوړو پر هغه نالۍ پرېوزي چي له خولې پيل سوې تر مقعدي رسېدلې ده. کله چي موږ کوم داسي څه خورو چي په هغو کي مرچک تېز او ډېر وي نو تر ټولو د مخه هغه زموږ ژبه احساسوي. ګواکي د لوى څښتنأ لخوا د جوړ سوى جسماني نظام سره سم موږ ته خبر تيا راکوي چي موږ داسي شى خورو چي زموږ روغتياته د تاوان رسېدو اندېښنه ځني سته. خو له بده مرغه موږ د دې خبرتيا پروانه کوو.

په دې ډول مرچك خوله په ډېره بده توګه سوځي، پزه راوبهيږي، له سترګو اوښکي رواني سي، په ژړاسي، خو موږ بياهم دغه سره زهر خورو. د خولې، ستوني، او ژبي د دې اخيستي اور د وژني لپاره پرله پسې يخي اوبه غوړپو. چي پاى خبره تر نزلې، زکام او ټوخي ورسيږي. اوبيا ټوخى ډېر اومزمن سي او په ټول ژوند کي مو نه خوشي کوي.

د مرچکو ګوله چي ژبه، خوله او ستونى وسوځي تر سرې غاړي (مرى) تېره سي ګېډي ته ورسيږي. سره غاړه له دې امله له هغې څخه لږ اغېزمنه کيږي چي له هغې څخه ژر تېريږي. له مرچکو څخه ګېډي ته هم د خولې غوندي اذيت رسيږي. د نس په مخاطي غشاوو کي سوى پيداسي او له دې امله د ګېډي د رطوبت ترشح او راوتل زيات سي او هاضمه خرابه سي. چي بيا د چا شى خواته نه کيږي، معده ضعيفه سي او پاى خبره دې ته ورسيږي چي د سرطان د مهلکي ناروغۍ اندېښنه رامنځته سي.

کله چي دغه سره مرچک له ګېډي تېر سي اوکولموته ورسيږي، هلته هم بېله خپلو اغېزو ښوولو نه پاته کيږي. سهار په تشناب کي د خوړو نالۍ هغسي سوى کوي لکه د مرچکو د خوړلو په مهال چي خولې کاوه.

کله چي د مرچکو تېزي او ګرمي په وينه کي جذب سي او دغه اغېزمني ويني سترګوته ورسيږي نو خپل مضر اغېز پر سترګو هم اچوي. سترګي چُخړي کوي، جږمي يې سوى کوي او دانې پکښي راوخېژي. چي که يې ژر علاج ونه سي کېداى سي چي بېخي د سترګو ليد کم سي.

دغه راز دغه اغېزمني ويني پر اينه هم اغېز وښندي او په ډول ډول ناروغيو يې اخته کړي. تر مثانې، پښتورګو او د متيازو تر نلکۍ د هغو اثرات ورسيږي.

په کومه ورځ چي مو مرچک ډېر خوړلي وي په هغه ورځ مو متيازي ډېري ژړي وي او سوى هم کوي. خو موږ بيا هم څه پروانه کوو او نور هم د مرچکو خوړلو ته ادامه ورکوو چي پاى يې پايله داسي چي د مثانې او د متيازو د نالۍ سوى ډېر سي او نوونه ځني راوزي.

د مرچکو له پرله پسې او بېخي ډېر استعمال څخه پر نورو تاوانونو سربېره د توليد مادې ته هم ډېر ستر تاوان رسيږي. د توليد ماده ډېره نرۍ سي د سرعت او پرله پسې احتلام شکايتونه رامنځته سي او پاى د باه د ضعف بڼه غوره کړي.

د مرچکو په ډېر لږ استعمال کي لږ ګټي هم سته. (پورته وويل سوې). دا ځکه چي دا يوه قدرتي خبره ده چي په دې نړۍ کي داسي هيڅ شى نسته چي يوازي تاوانونه ولري.

پاپړ

پاپړ وچ او ګرم دي. په عامه توګه د ماشو له اوړو څخه جوړيږي. پاپړ ژر هضميږي. خواړه خوندور کوي، که هاضمه کمزورې وي، يا څوک د يوې ناروغۍ څخه راولاړ سوى وي، که د پاپړ سره ډوډۍ وخوري د خولې لعاب يې ډېر وي او خواړه ښه هضموي او ډېره وينه ځني پيدا کيږي. البته هغه پاپړ چي په بازار کي خرڅيږي او ډول ډول رنګونه لري، له روغتيايي پلوه ډاډ نه سي پر کېدلا ى. ويل كيږي چي ځيني زهرجن جوهر ورسره ګډ وي. بل لمر هم وهلي وي او دوړي هم پر لوېدلي وي، نو له دې امله د بازار پاپړ پورتنۍ ګټي نه لري، بلکي هغه پاپړ ګټور دي چي په کور کي پاخه سوي وي.

د کټوي دارو (مسالې) ګټي اوتاوا نونه يې

په خوړوکي د کټوي داروته اړتياسته کنه؟ که وي نو څنګه سته؟ د هغو شيانو چي د مسالې په توګه کاريږي ګټي اوتاوانونه څه دي؟

دا داسي خبري دي چي د هر چا لپاره د هغو په اړه معلومات اړين دي. پوهيږو چي كه خواړه ګټوروي تاوانونه هم لري. د هغو د تاوانو د اصلاح لپاره پوهانو مسالوته اړتيا محسوسه کړې ده. او څنګه چي دا اصلاح د پوهو خلکو لخواوه، ځکه نو د هغو سره ځيني نوري ضروري خبري هم رامنځته سوې. لکه دا چي د هاضمې د تحريک لپاره د خوړو خوندورکول او ښه رنګ او بوى هم د مسالې جز وبلل سو.

مسالو ته په لا ندي لا ملونو اړتياده:

1. لومړى شى چي د خوړو په اړه پام ورته اوړي، د خوړو شکل اورنګ دى. که خواړه د رنګ له مخي ښکلي او په زړه پوري وي، نوښه خوړل کيږي. وايي: خواړه له رنګه خوړل کيږي. اوله دې امله يې ګټي هم ډېري وي.
2. په دې پسي د خوړو د ښه بوى خبره راځي. که خواړه خوشبويه وي، نو طبعاً يې انسان خوښوي او له دې امله يې په وجود کي هضم او جذب هم زيات وي.
3. خونددى. که خواړه ډېر خوندور وي، نوغذائيت به يې هم ډېر وي. ځکه چي خوندور خواړه د بدن اعضا ډېر هضموي او جذبوي يې.
4. د خوړو د بدبويى او بدخوندى ليري کول دي.
5. د خولي د ناړو زياتول دي. څو د خولې د ناړو زياتوب د خوړو نشايسته لرو نکي توکي په آساني هضم کړاى سي.
6. د هاضمې پر خوځښت راوستل دي. څو د خوړو درانه توکي ژر هضم کړاى سي.
7. د کولمو پر خوځښت راوستل دي. څو قبض رامنځته نه سي.
8. د بدن د رئيسه اعضاوو پياوړتياده. (د بدن رئيسه اعضا: د بدن بنسټيزغړي، لکه زړه، د ماغ، اينه اونور).
9. له ځينو ناروغيو څخه مخکي تر مخکي ځان ساتل (وقايه) ده.

د مسالو له رامنځته کولو څخه موخه اومقصد يوازي دونه وو چي خواړه لږ څه په خوند سره وخوړل سي او له بله پلوه پورتنۍ‌ ګټي هم ترلاسه سي. خو د زمانې په تېرېدوسره څنګه چي ژبي په زيات خوندورتوب روږدي سوې، د مسالو مقدار هم ورسره زيات سو. تردې چي هغه مسالې چي د ګټي لپاره رامنځته سوي وې، د تاوانونو سبب سوې؛ معدې اوکولموته يې د سوزش ناروغۍ پيدا کړې؛ هاضمه يې خرابه کړه؛ کولمې يې کمزوري کړې؛ د پېچ، د ويني د سونګ او مواسيرو شکايتونه ځني رامنځته سوه.

د مسالو د مغزيانو پرته د هغو نور هيڅ توکى بايد د بدن جز نه سي. ځکه لکه چي څرګنده ده مسالې درمل باله سي. او د درملو تعريف دادى چي هغه د بدن جز نه سي. بلکي خپل اغېز وښندي او له بدن څخه بهر سي. او د خوړو تعريف دادى چي ډېره برخه يې د بدن جز وګرځي.

نو څه چي تاسي خورئ په هغو کي بايد ډېره برخه د خوړو وي او د درملو برخه يوازي د نامه لپاره پکښيکي وي. داسي خواړه به هرومرو څه بې خونده وي، خو د ګټو له پلوه به ډېر ښه وي. که تاسي په پورته ډول کړنه نه سئ کولا ى، نو يوه آسانه لار داده چي په خپلو خوړوکي د مسالو اندازه کرارکرار را لږکړئ څو ستاسي پر طبيعت باندي د دې بدلون سملاسي اغېز پرې نه وزي او په غير محسوسه توګه مقصد ترلاسه سي.

په پاى کي بايد ووايو چي په مسالوکي عموماً مالګه، سره مرچ، تورمرچ، کورکومن، ګشنيز، لونګ، زيره، لوى هېل، زعفران، دارچيني، نعنا، اوري، خواږه ولني، شونډ، اونور لږلږ په کاريږي. خو د اوسمهال د درغليو تاوده بازار ته چي ګورو د بازارونو پر ميده، جوړو سوو او په قوطيوكي اچول سوو مسالو باندي اعتماد نه سي كېدلاى. كېداى سي په دغو مسالو كي صحت ته مضر او غير حلال اجزا ګډوي. لكه چي په پاكستان او نورو ځايونو كي زياتره په دغسي مسالو او نورو شيانو د غير حلالو توكو لكه مونو سوډيم ګلوټاميټ (Mono Sodium Glutamate) د ګډېدو آوازې خپريږي چي ښايي بې څه نه وي.نو ښه داده چي د دغو مسالو غټ او ناميده سوي شيان له بازاره رانيسو او په كور كي د خپلي خوښي سره سمي مسالې ځني جوړي كړو او بېخي لږ استعمال كړو.

د امريكايي او صهيونيستي مصنوعاتو تحريم

لكه څنګه چي پوهيږو د اسلام سره د بې دينو مادي پالو طاغوتي ځواكونو، نصاراوو، يهودو او هنودو له ډير پخوا څخه دښمني پرته ده. په دې لړ كي دغو اهريمني ځواكونو د تاريخ په اوږدو كي د مسلمانانو پر ضد بېل بېل زړه بوږنوونكي جنګونه او ډول ډول شيطاني توطئې او چلونه په لار اچولي دي. اوسمهال كه څه هم د يهودو او نصاراوو د دوسو (دسيسو) او توطئو جال د پخوا په پرتله ډېرپېچلى دى خو د هغو موخى او مقاصد بيا هم هماغه دي. دوى په دې وروستيو كلونو كي داسي پلانونه تر لاس لاندي نيولي دي او د خپل ژوند او تجارت پاليسۍ يې داسي جوړي كړي او عياري كړي دي چي ټوله نړۍ او د هغې اوسېدونكي د خپلو ځانو او د خپلو مذاهبو مريان او چوپړيان كړي.

اوس پر عراق او افغانستان باندي د امريكې ظالمانه يرغل او نورو اسلامي هيوادونو او تحريكونو ته د امريكا د شيطاني او طاغوټي حكومت ګواښونو، پر بې دفاع فلسطينيانو، لبنانيانو او نورو عربو باندي د اسرائيلو، پر كشميريانو باندي د مشركو هندوانو، پر چيچينيانو باندي د قطبي خرسانو (روسانو) او د نړۍ په نورو ډېرو ګوټونو كي د كفارو د ډول ډول مظالمو او نارواوو له امله په درسته نړۍ كي د مسلمانانو غم او غوسه را پارولې او په هر لوري رشتياني مسلمانان په يو ډول نه يو ډول د امريكايانو او نورو كفري ځواكونو پر ضد احتجاجونه او اعتراضونه كوي او د دوى او د دوى د شرمېدلو ګوډاګيانو په وړاندي خپل له كركي او نفرته ډك احساسات څرګندوي.

له بده مرغه اوس مهال ډول ډول كفري ځواكونو او د هغو لاسپوڅو په افغانستان كي ظلم او چور تالان داسي لوړي پوړۍ ته رسولى دى چي نه داچي زموږ ديني عالمان، پاڅون كوونكي او بې ګناه ملكي وګړي، ښځي، ماشومان او بوډاګان د القاعدې، طالب او نورو په نومونو شپه او ورځ پر له پسې په مډرنو الوتكو او وسلو په ډله ييزه توګه كشتاروي، بلكي د دولتي لوټمارو په همدستي لګيادي په پټه او ښكاره زموږ تر مځكه لاندي شتمنۍ، جواهرات، سره زر، قېمتي ډبري او نور ډول ډول كانونه را باسي او خپلو هيوادونو ته يې لېږدوي.

له دې امله دى چي د نړى په ګوټ ګوټ كي اسلامي پوهانو د خپلو مقالو، ويناوو، نصيحتونو او فتواوو په واسطه پتيلې ده او دا يې جوته كړې ده چي له امريكا او نورو ټولو كفري ځواكونو څخه د ژغورني يوازينۍ لاري دوې دي:

1. له كفري كلتور څخه په كلكه ډډه كول.
2. په ژوند او تجارت كي د كفري هيوادونو د شيانو تحريم او بايكاټ.

د دغو خبرو په درك سره او د اسلامي عالمانو د څرګندونو پر بنسټ اوسمهال په ټوله اسلامي نړۍ كي د كفري ملټي نيشنل تجارتي كمپنيو (هغه كمپنۍ چي په بېلا بېلو هيوادونو كي يې پانګي اچولي دي او تجارتي فعاليتونه كوي) په وړاندي د كركي او نفرت څپې راپورته سوي دي. ځكه دا هغه كمپنۍ دي چي د امريكا او ګردي كفري نړۍ اقتصادي قوت جوړوي او دغه قوت بيا د دوى پوځي ځواك پياوړى كوي چي په پايله كي زموږ پر هيوادونو دغسي په سپين سترګۍ سره را دانګي، په مستقيمه توګه او د دوى د ګوډاګيانو په ذريعه زموږ پر ټولنيزو شئوناتو او دولتونو ولكه ټينګوي او بالاخره مو خپلو ځانو ته اړباسي او غلامان كوي مو.

له بده مرغه نن مهال موږ د دغو كفري هيوادونو ډېر داسي شيان زموږ په هر كور كي كاروو چي هم زموږ سپېڅلي دين ته تاوان باله سي. هم زموږ د هيواد لوړوملي ګټو ته دروند خطر راولاړي او هم مو روغتيا ته ضرر رسوي.

پر دې سر بېره دغه كمپنۍ موږ ته بل ستر تاوان هم رسوي چي هغه د دغو كمپنيو د مصنوعاتو د اعلانولو او اشتهارولو په پلمه زموږ د اخلاقو ورانول او زموږ له اصيل فرهنګ څخه زموږ د ځوانانو پردي كول دي. لكه چي پوهيږو د دغو هيوادونو حكومتونه، پانګوال او ملټـي نېشنل كمپنۍ په اسلامي هيوادونو كي په سترو لګښتونو او پانګو سينماوي، ټلويزيونونه، ډش كېبلونه، ګېمونه، كلپونه، هوټلونه او داسي نور راباسي او شپه او ورځ، په تېره د مسلمانانو د عبادت او كار او د هغو د بچيانو د تعليم په وختونو كي د هغو د ډول ډول بې لاري كوونكو خپرونو او زموږ د فرهنګ خلاف اعلانونو له لاري په موږ كي فحش او لڅ كلتور خپروي او زموږ ځوانان په مشروباتو او نورو نارواوو روږدوي.

له دې امله دى چي په دې وروستيو كلونو كي په عربي هيوادونو كي د امريكايي او يهودي مصنوعاتو تحريم ښه په زور او زوږ روان دى او په دې ډول ايماني غيرت يې د كفر اقتصاد ته ستره ضربه وركړې ده. زموږ باور دى كه چيري د نړۍ ټول مسلمانان په تېره د زموږ پر هيواد او اسلام مين او سر وركوونكي وګړي د كفارو توليدات دغسي تحريم كړي، هغوته به سخته صدمه ورسيږي او اړ به سي چي د مسلمانانوپر هيوادونو له تېريو، د هغو د ګواښونو، عام وژني او سپكاوي څخه لاس په سر سي.

په دې وروستيو كي د اسلامي نړۍ ستر نامتو عالم او د ډېرو كتابونو ليكوال شيخ يوسف قرضاوي مدظله د الجزيرې په ټلويزيون كي د څرګندونو په ترځ كي اعلان كړى دى چي: «د امريكا مصنوعات دي له پيپسي څخه نيولې تر پيمپر پوري تحريم سي». كه زموږ مولويان او پوهان هم دغسي وكړي او د مسجدو نو، غونډو، انټر نيټ او نورو ډله ييزو رسنيو له لاري د دغو كفري توليداتو په اسلامي، هيوادنيو او روغتيايي تاوانونو زموږ خلك پوه كړي او د هغو تحريم او د مسلمانو هيوادونو د توليداتو كارولو ته يې وهڅوي بشپړ يقين دي چي د لوى څښتنأ او د هغه د پاك رسول ج د خوشالۍ سبب به سي.

د سركوزي غوښي ولي حرامي دي؟

قال الله تعالى:

﴿إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيۡكُمُ ٱلۡمَيۡتَةَ وَٱلدَّمَ وَلَحۡمَ ٱلۡخِنزِيرِ وَمَآ أُهِلَّ بِهِۦ لِغَيۡرِ ٱللَّهِۖ﴾ [البقرة:173].

ژباړه: «لوى څښتن پر تاسي باندي د مړه سوي څاروي (مردار سوي)، (بهېدونكي) ويني، د سركوزي غوښي او هر هغه څه چي د الله له نامه پرته د نورو نوم پراخيستل سوى وي حرام كړي دي».

په تفاسيرو او نورو ډېرو كتابونو كي وايي چي: سركوز ى نجس العين دى او د هغه ټول اجزا؛ غوښي، پوست، غوړزګي، نوكان، ورېښتان، هډوكي، پلې او نور ناپاك او نجس دي او له هغو څخه ګټه اخيستل او كارول يې حرام دي. د انسان او سركوزي پوستونه په دباغت سره نه پاكيږي. البته د انسان دا د شرف له امله او د سركوزي دا د نجاست له امله.

د سركوزي د غوښو په هكله نوي ساينسي تجزيې او تجربې ډېري د عبرت وړ دي. راځئ وګورو چي د سركوزي د غوښو استعمال په كومو لاملونو منع سوى دى. له تېرو څه د پاسه دېرشو كلونو څخه ساينس د قرآن كريم د دغه حكم په تائيد څو ډوله سببونه موندلي او په ګوته كړي دي. چي په دې توګه ساينس پوهان د لوى څښتنأ دې څرګند حكم اريان كړي دي. اوس به د دغه نجس څاروي د جسم د هغو برخو په هكله رڼا واچوو چي انساني روغتيا ته ضررناكي دي. لومړى بايد دا ووايو چي ډاكټرانو جوته كړې ده چي په سر كوزي كي د يو ډول مشهورو طفيلي تاوان رسوونكو جراثيمو كڅوڼي (Trichina Cyst) موجودي دي. په تېره د جرمني نامتو روغتيايي ساينس پوه هاينريك ريكوګ (HeinrichReckweg) د سركوزي په غوښو كي د سټوكسين (Zootoxin) په نامه يو ډول عجبه زهرجن پروټين موندلي دي. چي د حساسيت څو ډوله ناروغۍ ځني پيدا كيږي. په تېره دغه زهرجن پروټين د اګزيما او سالنډۍ لامل كيږي. كه څه هم د سټوكسين كچه يا خوراك لږ هم وي بيا هم كهالي او د بندونو درد ځني پيدا كيږي. دغه راز د سركوزي په غوښو كي د ميوكو پولايزيك چرايډ (Mucopolysac Charides) په نامه هم عنصر ډېر وي. نو څنګه چي په دغه عنصر كي (سلفر) تر ضرورت زيات وي له دې امله هم د بندونو ډېري ناروغۍ ځني پيدا كيږي. همدا شان ډاكټران وايي چي د سركوزي د غوښو خوړونكي په خنازيرو (Scrofula)، كډو دانه (Tapeworm) يا د نس په چينجيانو او داسي نورو ناروغيو هم اخته كيږي. د نورو نوو څېړنو له مخي څنګه چي د سركوزي غوښي د غوړزګيو او ناسمي غذا لرونكي دي او ژر نه هضميږي له دې امله د هغو د پرله پسې استعمال څخه انسان د پوست، اينې، زړه، كولمو ګېډي اوسرطان په ناروغيو هم اخته كېدلاى سي.

دغه راز د سركوزي د غوښو له خوړلو څخه يو ډول چينجى پيدا كيږي چي د ډاكټرانو په ژبه «سوليم» ورته وايي. دغه چينجى له وينو او كولمو څخه تېريږي او دماغ ته رسيږي چي په پايله كي يې د مرګي ناروغي رامنځته كيږي. له بله پلوه څنګه چي د سركوزي په غوښو كي غوړ بېخي ډېرزيات دي نو د هغه د غوښو له خوړلو څخه په وينه كي «كليسټرول» (Cholesterol) هم بېخي ډېر زياتيږي. چي له امله يې شريانونه تنګيږي او د ويني په جريان كي خنډونه رامنځته كيږي. چي لازمي او هرو مرو پايلي يې تر وخت د مخه زړښت، ضعف، د فلج حملې يا د زړه ناروغۍ (Diseases of the Heart) يعني د زړه دوره يا داسي نور وي. دغه شان د سركوزي د دغو غوړو غوښو له خوړلو څخه په انساني جسم كي «ويټامين اى» (Vitamin-E) تر اړتيا زيات مصرفيږي او په پايله كي په ناڅرګنده توګه كميږي. اوس ټول پوهيږي چي ويټامين اى ډېر په زړه پوري كار وركوي. چي يوه يې پر جنسي غدودو باندي مهمه اغېزه ده. ډېر چاغ، په تېره د سركوزي د غوښو خوړونكي د ويټامين اى د كمښت ښكار كيږي چي په نتيجه كي له جنسي پلوه سست او له جنسي مړاني څخه ولوېږي.

پر دې سربېره د سركوزي په غوښو كي د «ټري كينا» (Trichina) په نامه يو ډول نري نري چينجيان وي. د دغو غوښو د خوړلو سره دغه چينجيان هم انساني جسم ته درومي چي له كبله يې د «ټري كينوسس» په نامه يو ډول ناروغي پيدا كيږي. د دغي ناروغۍ نخښي هيضه يا «سم الفار» وژونكي زهر غوندي وي. كه دغه چينجيان عضلاتوته ولاړ سي نو شديد دردونه ځني پيدا كيږي او زياتره وختونه دغسي عضلې فلجيږي. البته كه په وجود كي دغه چينجيان ډېرزيات سي نو د ناروغ مړينه تر ډېره حده يقيني كيږي.

دغه راز د سركوزي د غوښو د خوړلو له امله پر پوست باندي يو ډول كوچنۍ دانې راخيژي چي بالاخره په بېله جلدي ناروغي اوړي. د سركوزي په غوښو كي يې يوه بله ناوړه ناروغي هم موندلې ده چي«شيپ وايرس» (Shape Virus) ورته وايي. دغه وايرس د انسان سږو ته تاوان رسوي. دغه وايرس د سركوزي په سږو كي هم ډېر وي. ښايي له دې امله وي چي په ډېرو اروپايي هيوادونو كي يې د سركوزي د سږو خوړل منع كړي دي.

پر دغو ناروغيو علاوه څو نوري ناروغۍ هم د دغه خبيث څاروي د غوښو له خوړلو څخه پيدا كيږي.

ډېر مسلمان پوهان ادعا كوي چي سركوزى بېخي ډېر بې غيرته، خبيث، بې حيا او د چټلو او ككړو شيانو د خوړلو ډېر شوقي او د ګنده عاداتو څښتن څاروى دى. صرف سركوزى يو داسي څاروى دى چي پر خپله ماده (ښځه) باندي غيرت نه كوي. نو له دې امله د نړۍ د ډېرو بدو څارويو د ليست په سركي راځي. له همدې امله كوم كسان چي د سركوزي غوښي زياتي خوري او يا د هغه له اجزاوو ګټه اخلي په هغو كي هم د سركوزي دغه عادتونه په څرګنده ليدل كيږي. او له جنسي پلوه بې حسه او بې تعصبه وي.

درنو لوستونكو! دا خبري هسي خوشي بې معنا خبري نه دي. موږ وړاندي وويل چي د سركوزي د غوښو د خوړلو له امله د ويټامين اى ډېر كمښت انسان له جنسي پلوه سستوي او له مردۍ څخه يې اچوي.پر دې خبرو د لوېديز د بې حيايۍ تهذيب ډېر ښه شاهد دى. په امريكا او برتانيه غوندي په ظاهره متمدنو هيوادونو كي چي د سركوزي غوښي ډېري خوري د هغو د خلكو په بې حياييو اوس هرڅوك خبر دى. موږ به يې دلته څو كوچنۍ بېلګي درته ووايو. د لاهور د «جنګ» ورځپاڼي د ۱۹۸۴ع.كال د اګسټ د (۲۵) نېټې د ګڼي او د لاهور د «نواى وقت» د ۱۹۸۱ع.كال د مارچ د (۲۲) نېټې د ګڼي او د«جنګ» ورځپاڼي د۱۹۸۴ع.كال د اكتوبر د (۲) نېټې د ګڼي د خبرونو پر بنسټ د امريكا او برتانيې اړوندو چارواكو په ډېر وياړ سره ويلي دي چي په دغو هيوادونو كي هر درېيم زوكړى ارمونى دى، او د دغسي زوكړو شمېر ورځ په ورځ زياتيږي. په سويزرلينډ كي حكومت په دې چاره كي لا دوه ګامه وړاندي تللى دى او پر اړوندو قوانينو باندي بيا ځلي كتني كوونكو ته يې ويلي دي او پتېيلې يې ده چي نه يوازي نارينه وو ته د بازاري ښځو سره د اوسېدلو اجازه ده، بلكي كه خور او ورور هم وغواړي چي جنسي اړيكي وساتي قانون يې ننګه او ملاتړ كوي. دغه راز وايي چي په امريكا كي د نشويلي اوسېدونكى ډپټي جېمز نومي د خپلي سكه مور سره واده كړى دى. چي هلته پر دې خبره هيچا هم څه اريانتيا نه ده ښوولې.

وګورئ چي د بې غيرته څاروي د غوښو خوړونكى قوم څخه د غيرت جنازه ګردسره وړل سوې ده كه نه؟ په دې ډول موږ ته پته لګيږي چي د لوېديځ د كلتور په دكان كي د شرم او حيا هيڅ شى نسته؟!

په پاى كي موږ په زغرده او يقين سره ويلاى سو او پوهيږو چي قرآن په دې فرمان سره چي: ﴿إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيۡكُمُ ٱلۡمَيۡتَةَ وَٱلدَّمَ وَلَحۡمَ ٱلۡخِنزِيرِ وَمَآ أُهِلَّ بِهِۦ لِغَيۡرِ ٱللَّهِۖ﴾ هسي بې معنا خبري نه دي كړي، بلكي دا د انساني صحت لپاره يوه لويه تحفه ده.

هغه شيان چي د سركوزي وازګي پكښي استعمال سوي دي

كفار او د سركوزي غوښي:

لكه چي څرګنده ده په ټوله اروپا، امريكا او د نړۍ په نورو برخو كي كفار د سركوزي غوښي خوري. د اروپا، امريكا او ليري ختيځ په هيوادونو كي د سركوزو د روزلو په لكونو فارمونه سته. يوازي د فرانسې په (٤٢) زرو غټو او كوچنيو فارمونو كي په لكونو سركوزي تر روزني لاندي نيول سوي دي. په دغو هيوادونو كي هر كال په مليونونو سركوزي روزل كيږي او كله چي خپل ټاكلي عمر ته ورسيږي د دوى پر طريقه يې وژني او غوښي يې بازارونو ته د خرڅلاو لپاره وړاندي كوي. خلك د دغو سركوزو غوښي خورا ډېري او په پېخر خوري خو د هغو سپيني هيڅ نه استعمالوي. په داسي حال كي چي د دغو سركوزو سپيني د هر څاروي تر سپينو ډېري دي.

د خوراك او چيښاك په شيانو كي د سركوزي د غوړزګيو كارول:

تقريبا دوه سوه كاله پخوا يې د دغو سركوزو سپيني سوځلې. بيا يې فكر وكړ چي دا بايد په هغو شيانو كي وكاروي چي غوړزګيو ته اړتيا لري. نو هغه وو چي دا غوړزګي يې د صابون په جوړولو كي وكارول. بيا دغه غوړي غوښي او وازګي پروسيس او پيكينګ كېدلې او ماركېت ته عرضه كېدلې. ډول ډول كمپنيانو هغه رانيولې او د خورا ك او چيښا ك په ډول ډول شيانو كي به يې استعمالولې.

بيا د رواني پېړۍ په پيل كي د كواليټي كنټرول (Quality Control) د توليداتو د كيفيت او څرنګوالي د كتني، څېرني او څارني (سلسله رامنځته سوه. د اروپا بېلو بېلو هيوادونو د خورا ك، چيښا ك توكي، د ناروغانو درمل او نور په لابراتوارونو كي معاينه او تجزيه كول او ټولي كمپنۍ يې قانوناً اړ ايستلې چي پر خپلو مصنوعاتو باندي د هغو اجزا او اثرات وليكي. د دې سره كمپنيانو د خپلو توليداتو پر قوطيو او بوتلونو باندي د نورو اجزاوو سره د خوك د غوړزګۍ په هكله ليكل: Pig Fats of يا s Fats Pig (د سركوزي غوړزګي). تر څه مهاله دغه كار دغسي پر مخ روان وو. خو كله چي دغه توليدات بهر او اسلامي هيوادونو ته ورسېدل نو مسلمانانو هغه بايكاټ (تحريم) كړل. بيا تر ډېرو سلامشورو وروسته اروپايي كمپنۍ او حكومتونه پر دې سلاسول چي د Pig Fats of يا ,s Fats Pig پر ځاى Animal Fats (د څارويو غوړزګي) وليكي. خو بيا بله ربړه رامنځته سوه. لوېديزيان خو پسونه، غوايي او نور د مسلمانانو د ذبحي د طريقې په خلاف بل ډول او د ماشينونو په ذريعه وژني. څنګه چي د مسلمانانو په عقيده په غير شرعي طريقه د وژل سوي څاروي غوښي مرداري دي نو د هغه غوړي خو هم مردار دي. له دې امله اسلامي هيوادونو بيا دغه مصنوعات تحريم كړل.

دا هغه مهال وو چي دغو كمپنيو د بشپړو ملټي نيشنل تجارتي كمپنيو (هغه كمپنۍ چي په بېلا بېلو هيوادونو كي يې پانګي اچولي وي او تجارتي فعاليتونه كوي) بڼه خپله كړې وه او د دوى توليدات د يوه هيواد له پولو تېر سوي او ټولو اوو لويو وچوته رسېدلي وه. دغه راز په اروپا كي هم د مسلمانانو شمېر زيات سوى وو. دغو كمپنيو له يوې خوا پر مسلمانانو باندي دونه ستره ګټه نه سواى پرېښوولاى. له بله پلوه كمپنۍ دوني زياتي سوي وې چي د حلالو څارويو غوړزګي او نورو نباتاتو تېل يې نه سولاى برابرولاى. كه يې له مسلمانو هيوادونو څخه د حلالو څارويو غوړزګي يا د نباتاتو تېل رانيولاى ګټه يې لږېده او د توليداتو بيه يې لوړه تله. بل هم د اروپا د سركوزو غوړ هدر پاته كېده. نو هغه وو چي د دغو كمپنيانو مالكانو او د دوى نورو سلاكارانو او مرستندويانو تر زيات غور او فكر وروسته دا سي حل لار را وايستل چي كمپنيو پر خپلو توليداتو د غوړزګيو يادونه نه كول او د اړوندو قوانينو د احكامو په پام كي نيولو لپاره يې د غوړزګيو د نومونو او كچو لپاره څو كوډونه وټاكل، هغه يې د خپلو اړوندو هيوادونو اړوندو ادارو ته ولېږل او وروسته يې پر خپلو توليداتو د غه كوډونه ليكل. د "ملټـى نيشنل كمپنيون كى اسلام دشمنى" په (١٩) مخ كي يې د دغو كوډونو بشړ فهرست راوړى دى چي يو څو يې په دې ډول دي: E100- E110- E120- E140- E141- E135- E210

دغه راز يې د دغه كتاب په ۱۳ مخ كي په فرانسه كي د دغو شيانو په هكله د ياسر محمد خان په نامه د يوه مسلمان د سترګو ليدلى حال ليكلى دى. هغه وايي چي زه فرانسې ته په سفر تللى وم او څو ورځي د جابر په نامه د خپل يوه پښتانه دوست سره چي له (۲۲) كالو راهيسي په فرانسه كي اوسېدى واوسېدلم. د بېرته راتلو پرمهال چي زه د جابر په ملګرتيا د څه شيانو د رانيولو لپاره ماركېټونو ته ولاړم، كله چي به ما څه شى راپورته كړ جابر به يې د اجزاوو تركيب وكوت او زه به يې د هغه له رانيولو څخه منع كړم. بيا هغه زه خپل يوه دوست ته وروستلم چي جابر شيخ صاحب ورته ويل. دغه شيخ صاحب دمخه د فرانسې په يوه دولتي اداره كي كار كاوه. خو كله چي هغه اسلامي كالي اغوستل پيل كړل، ږيره يې پرېښوول، حج يې وكړ او پنځه وخته لمونځ يې كاوه نو يې خپل دغه كار له لاسه وركړ. ځكه نو هغه اړ سو چي د فرانسې په يوه ښار كي يو رستوران را وباسي. شيخ صاحب د جابر په غوښتنه را ته وويل چي ما د فرانسې په فوډ ډيپارټمنټ (د خوړو په يوه څانګه كي) لس كاله كار وكړ. زما كار د خوړو، د سينګار د سامانونو او د قوت د درملو راجسرول وو. كله چي به كومي كمپنۍ خپل يو توليد كړى شى بازار ته وړاندي كاوه نو لومړى به يې د هغه شى نمونه ماته راوړل. په پايله كي زه وپوهېدم چي د غاښو په كريمونو، د ږېري خريولو په كريمونو، ژاولو، چاكلېټو، خوږو، بسكېټو، د خوړو په بندو دبليو، ځينو درملواو ملټـي ويټامين ګوليو او داسي نورو كي دغه كمپنۍ د خنزير وازګي استعمالوي او د هغو پر قوطيو باندي د وازګي نوم نه، بلكي د وازګو د اقسامو كودونه ليكي.

په هغه خبر كي چي د پاكستان د لاهور د «نواۓ وقت» ورځپاڼي د۱۹۸۸ ع.كال د اپريل د ۲۲مي نېټې په ګڼه كي خپور سوى دى او په دغه كال د ترجمان القرآن مياشتيزي هم له «اردو ډائجسټ» څخه اقتباس كړى دى وايي چي: د متحده عرب اماراتو حكومت د پروفيسر احمد صقر (بيروت) يوه مقاله خپره كړې او په هغې كي تر هر اړخيزي څېړني وروسته د اروپا او امريكا د هغو شيانو فهرست راغلى دى چي د خنزير د جسم يوه برخه لا نه يوه بر خه پكښي ګده سوې ده. په دغو شيانو كي پر صابونونو، لبسيرينو او ډول ډول د سر، مخ او غاښو كريمونو سربېره د خورك شيان لكه چاكلېټ، بسكېټ، پوڅه، خواږه خواړه او كيكونه، پنډه ډوډۍ (ډبل روټي) او مشروبات هم شامل دي.

په دغه مقاله كي ليكي: د مسلمانانو ديني فريضه ده چي لاندي الفاظ ياداښت كړي او دكومو شيانو پر قوطيو او دبليو چي يې وويني بايد پوه سي چي په هغه كي د سركوزي غوړزګي يا غوښي ګډي دي او هيڅ يې بايد ونه خوري. او كوم بل څوك چي يې استعمالوي هغه لا په پوه كړي چي دغه شيان سم نه دي. ان كوم دكاندار چي يې خرڅوي هغه هم پوه كړي چي د دغو شيانو له خرڅولو ډډه وكړي. د دغو شيانو فهرست په دې دول دى:

1. پګ هاك سواين (Pig-Hog, Swine) سركوزي او د هغه غوښو ته وايي.
2. پورك (pork) سپارګل (Sporkle) هيم (Ham) بيكن (Bacon) او مالګين پوركر (Saltiest Porker) د خنزير د غوښو بېل بېل نومونه دي
3. لارډ (Lard) د سركوزي غوړزګيو ته وايي.
4. جلاټين (Gelatin) يوه سريښناكه ماده ده چي د څارويو (زياتره د سركوزو) د هډوكو، پوستونو، ښونګرو او نورو څخه لاسته راځي. (له شينلويعني نباتاتو څخه هم په لاس راځي).
5. پيپسين (Pepsin) يوډول درمل يا جوهر دي چي د سركوزي وينه په ګډه ده. (پخپله پيپسين د معدوي عصارې يا دوو ډولو مهمو انزايمونو څخه د يوه نوم دى چي په معده كي رامنځته كيږي، په اسيډي چاپېريال كي فعاليت كوي او پروټين او كوچني كېمياوي اجزاپه (Peptones) او (Proteoses) بدلوي.
6. ايل شارټننګ يا اينيمل شارټننګ (L-Shortening) يا (Animal Shortening) يوډول تېل (ويلي غوړي) دي چي په عامه توګه خواړه پكښي پخيږي. په دغو كي زياتره د سركوزي يا د داسي څارويو غوړزګي وي چي په غير شرعي طريقه ذبح سوي وي.

په پاكستان كي هم په ځينو شيانو كي د سركوزي غوړ ګډوي

زموږ ګاونډى هيواد پاكستان د مسلمانانو ملك دى او د اسلام پر نامه جوړسوى دى. خو له بده مرغه لكه چي د «ملټـي نيشنل كمپنيون كى اسلام دشمنى» كتاب له (۱۱۷) مخ څخه څرګنديږي د دغه هيواد د غاښو د كريمونو ځيني كمپنۍ هم د غاښو په كريمونو كي د سركوزي غوړ استعمالوي. دغه كتاب د دې خبري د ثبوت لپاره د لاهور د «نواۓ وقت» ورځپاڼي د ۱۹۸۶ع.كال د اګسټ د اوومي نېټې د «سر راهے» كالم اقتباسوي او د ضمير پلورونكو د دې قبيح عمل په هكله ليكي:

«په دې ملك كي د سركوزي دغوړزګيو د راوړلو سوداګر هم سته. په يوه خبر كي ويل سوي دي چي تېركال د سركوزي د غوړزګيو پر واردولو باندي دري دېرش لكه روپۍ لګېدلي دي. كله چي په ورځپاڼو كي پر دې خبره حيرانتيا او خواشيني وښوول سول او دا يې د دغه ملك او قوم پر تندي يو تور داغ وباله نو په همدغه كال هم د څلورو لكو روپو په بيه د سركوزي غوړزګي وارده سول. پر دې سربېره د دغه هيواد ځينو نورو ادارو هم ويلي دي چي د غاښو په كريمو كي د سركوزي د غوړو استعمال نه سي نفي كېدلاى». تفو بر تو اى چرخ ګدون تفو!

د سينګار په شيانو كي جعلكاري:

د يادولو وړ ده چي د پروفيسر احمد صقر د پورتنۍ څېړني له مخي په لاندي كاسمټيكس يا ميك اپ (د سينګار سامانونو) Lard (د سركوزي غوړزګي) هرومرو ګده ده با يد له رانيولو او استعمالولو څخه يې ډډه وسي:

1. **Lux Soap.**
2. **Camy Soap.**
3. **Avery Soap.**
4. **Soap Lata.**
5. **Safe Guard.**
6. **Zict.**
7. **Bryl Cream.**
8. **Liscap.**
9. د ورېښتانو ډول ډول كريمونه.
10. ډول ډول لبسرينونه.
11. د غاښو كريمونه.

پورتني شيان د كولګيټ (Colgate)، پام ليف (Palm leaf) كمپنۍ جوړوي.

د غاښو په كريمو نوكي جعلكاري:

د دغو دوو كمپنيو د غاښو په كريمو كي هم د سركوزي غوړزګي ګډه سوې ده:

1. كولګيټ (Colgate).
2. بروفن فوډ (Food Burpen).

د ښځو په لب سرينونو كي جعلكاري:

ساينسي څېړنو جوته كړې ده چي د سركوزي له غوړزګۍ پرته د بل هر څاروي غوړزګي د انسان پر بدن باندي ويلي كيږي. نو له دې امله په لب سرينونو كي د سركوزي غوړزګي ګډوي. (د لب سرين په هکله بشپړ تفصيلات د «لب سرين او نوي ساينسي څېړني» تر سر ليک لاندي مطالعه کړئ).

د سينګار په سامانونو كي د ماشومانو د هډوكو كارول:

د سـينګار په سامانونو كي د خنزير پر غوړزګيو سربېره هغه يو ډول كيمياوي مواد هم ګډوي چي د حمل د اسقاط له لاري يې د ضايع سوو كوچنيانو له هډوكو څخه په لاس راوړي. دا خبره د فرانسې د كاسمټيك (Cosmetic) د يوې مشهوري كمپنۍ د موټر د تلاښۍ په پايله كي څرګنده سوه.

په دغه موټر كي يې د مړو ماشومانو جسدونه وموندل او بيا جوته سوه چي د دغو كوچنيانو هډوكي په ډول ډول كريمونو كي استعمالول.

په شيندونكو عطرونو (Perfume Spray) كي شراب ګډوي:

لكه چي پوهيږو زموږ په مذهب كي د عطرو او خوشبويۍ وهل نبوي سنت باله سي او په اسلامي رواياتو كي مسلمانان د هغو وهلو ته هڅول سوي هم دي. خو د اسلام په سپېڅلي دين كي د خنزير غوښي او شراب خوړل په ټينګه حرام بلل سوي دي. د روغتيايي پلوه هم د عطرو وهل غوره ګڼل سوي، مګر د خنزير د غوښو او شرابو خوړل د انسان صحت ته خورا مضر جوت سوي دي. اما امريكا يان او اروپايان كوم چي ځانونو ته متمدن او ډېر پا ك خواره وايي د خنزير دغه نجسي غوښي او مردار شراب په پېخر خوري.

دغه كفار د شرابو سره دونه مينه لري چي بېخي يې په عطرو او خوشبوييو ګډوي. لكه چي تقريباً د سپرې عطرو په ټولو ډولونو كي شراب ګډ دي. د بېلګې په توګه ما چي په دې هكله د معلوماتو په منظور د لومړي ځل لپاره د بدبويۍ ليري كولوسپرې عطرو يوه قوطۍ را واخيستل پر هغې د INGREDIETS (توكي يا اجزاوي) تر سرليك لاندي لومړى توكى ALCOHOL40-B. SD (ايس ډي الكحل - ۴۰ بي) ليكلى وو.

لكه چي موږ پوهيږو د لومړي ځل لپاره محمد زكرياى رازي د شرابو له تقطير څخه دغه ماده تر لاسه كړل او هغه يې الكحل وبلل. الكحل له اصله عربي لفظ دى كوم چي انګرېزان يې د شرابو په معنا استعمالوي.

نو كه موږ دغه سپرې پر بدن او يا كاليو باندي ووهو څرګنده خبره ده چي ټول بدن او كالي مو مرداريږي او په مردار جسد او د مردارو كالو سره لمونځ او عبادت نه صحيح كيږي. د جسد او كالو طهارت او پاكي د لمانځه شرط باله سي.

موږ هم عجب خلك يو په ټولو اسلامي هيوادونو كي، ان زموږ په همدغه كندهار كي ډول ډول ښه عطر او خوشبويى جوړيږي او د عطرو پلورلو ډېر پخواني او سابقه لرونكي دكانونه سته، خو موږ د اسلامي هيوادونو او زموږ خپلو عطرونو ته په كمه سترګه ګورو او د كفري ملكونو دغسي نجس عطر چي هم زموږ تر عطرو ګران او هم بي كيفيته دي رانيسو او په ناپوهۍ او بې خبرۍ سره هم زموږ ملي ګټي وټي ته تاوان رسوو او هم مو لمونځ، عبادت او آخرت خرابوو. زموږ بدمرغي داده چي زموږ د وطن شيانو ته ارزښت نه وركوو. په تېره چي كوم شى ارزانه وي هغه ته خو بېخي قدر نه وركوو. ان داسي لا هم كيږي چي ځيني خلك چي ځانو ته پوهان او عالمان وايي په سپرې كي د الكحولو له شراب بللو څخه انكار كوي او ادعا كوي چي په سپرې عطرو ګډ الكحل د الكحلو هغه ډول دى چي شراب نه بلل كيږي او په دې ډول د خپل وطن د عطرو پر ضد او د كفارو په ګټه دلايل هم وايي.

په كلونيا كي هم الكحل او يو بل ډول نجسه ماده ګډه ده:

كلونيا (Cologne) چي (Eau De Cologne) هم ور ته وايي يو ډول معطر او خوشبويه محلول دى چي معمولاً د الكحلو او له دوو څخه تر شپږو فيصدو عطرو د يو ځاى كېدو څخه جوړيږي. پخوا اصلي كلونيا د سيټروس د غوړيو (كوم چي د لېمبو يا نارنجو څخه په لاس راځي)، د شينشوبي غوندي يو ډول نبات او د نارنجو د ګلانو د غوړيو څخه جوړېدل. وګورئ:

ENCYCLOPAEDIA BRITANNICA, 2005. Deluxe Edition CD

د Cologne ماده. خو اوس پر الكحلو سر بېره يو ډول بله نجسه ماده هم په ګډوي. د فتاوٰى علماء مسجدالحرام له (۱۴۰) مخ څخه څرګنديږي چي په ځينو عربي هيوادونو كي په كلونيا كي د دغي مادې د ګډېدو له امله تشويش او جر او بحث رامنځته سوى وو. نو د سعودي عربستان ستر اسلامي عالم عبدالعزيز بن عبد الله بن باز فتوا وركړه: «څنګه چي د ډاكټرانو په وينا په كلونيا كي د «السبرتو» په نامه يو ډول نشه كوونكې ماده ګډه ده نو بايد له استعمال څخه يې ډډه وسي او پر ځاى يې نور سم عطر وكارول سي». د يادولو وړده چي عرب په عامه توګه الكحلو ته «السبرتو» وايي. (Spirituous) هغه ماده ده چي مخمر الكحل په افراط سره په ګډوي. (Dictionary The Standard English Urdu).

په پاى كي بايد ووايو چي كېداى سي اوس د ډېرو چالاكيو په دودېدوسره   
د كفارو د ملټـي نېشنل كمپنيو په توليداتو كي تر دې زياتي درغلۍ رامنځته سوي وي. لكه چي په دې وختونو كي موږ ليدلي او اورېدلي دي چي امريكايانو او ځينو نورو په اصطلاح مرستندويو او خيراتي موسسو زموږ په هيواد كي زياتره دغسي مواد د ښوونځيو زده كوونكو او نورو ته وېشلي او بازارونو ته يې وړاندي كړي چي زياتره تر وخت تېروي، ډېر بدخونده وي او ډېر بد بوى يې هم ځي. داچي له دغو توليداتو څخه د ځينو استعمال حلال دى كه حرام دا بېل فقهي بحث دى. په اوسنيو شرايطو كي موږ ته د مسلمانانو په توګه ښايي چي د امريكايانو او نورو كفري ملكونو دغسي مشكوك او مشبوه شيان هيڅ استعمال نه كړو. ځكه له يوې خوا د دغسي شيانو استعمالول د اسلامي تقوا سره مخالف كار دى. بل دغسي شيان زموږ روغتيا ته مضر او اقتصادته تاواني دي او د دغسي نجسو توكو استعمال زموږ پر اخلاقو او كړو وړو هم ډېره بده اغېزه ښندي. تاسي كولاى سئ له دغو شيانو څخه ځيني هيڅ استعمال نه كړئ. ځينو ته چي اړتيا لرئ پخپله يې په خپلو كورونو كي جوړ كړئ. يا يې پر ځاى د هغو معادل او يا ځيني طبيعي او زموږ دوديز توكي وكاروئ. يا د دغو شيانو پر ځاى د اسلامي هيوادونو له دغسي توليداتو څخه چي اوس بېخي ډېر دي او هر ځاى موندل كيږي استفاده وكړئ. اوس الحمد لله موږ هيڅ اړ نه يو چي د كفري هيوادونو دغه ناولي او چټل او زموږ روغتيا ته مضر توكي استعمال كړو.

البته موږ دا هم په غوڅه توګه نه سو ويلاى چي د اسلامي هيوادونو په دغسي شيانو كي د سركوزي غوړ پا پيپسين يا نور ناپاكه توكي نه دي ګډ. په دې هكله بايد هغه سوداګر چي دغسي شيان له اسلامي هيوادونو راوړي هلته له كمپنۍ والاوو څخه پوښتني او ګروېږني وكړي، خپل ډاډ تر لاسه كړي او د اړوندو كمپنيو فهرستونه او سندونه وګوري، د خپلو مالونو سره يو ځاى يې راواخلي، زموږ د حكومت اړوندو ادارو ته يې وښيي او په خبري رسنيو كي په دې هكله لازم وضاحتونه خپاره كړي.

سينګار، سينګار ځاى او د سينګار شيان

په هر مهال او هر ولس کي ښځي د ځان جوړولو او سينګار سره ځانګړې مينه لري. د اسلام مبارک دين هم د دې لطيف جنس دغه طبيعي ذوق او شوق له پامه نه دى غورځولى. زموږ پيغمبر ج په دې هکله هم څرګندي لارښووني کړي دي. په دې هکله د هغه دې حديث ته پام وکړئ:

«إِنَّ اللَّهَ جَمِيلٌ يُحِبُّ الْجَمَالَ» (صحيح مسلم او مسند احمد).

ژباړه: الله تبارک و تعالى پخپله ډېر ښکلى دى او ښکلا ډېره خوښوي.

معنا داچي زموږ پيغمبر ج غواړي چي موږ صاف ستره اوسو، د باطني پاکۍ او سپېڅلتيا ترڅنګ خپلي ظاهري بڼي، د سر او ورېښتانو او د کالو پاکوالي او خواپاکۍ ته هم متوجه اوسو. قرآن کريم فرمايي:

﴿قُلۡ مَنۡ حَرَّمَ زِينَةَ ٱللَّهِ ٱلَّتِيٓ أَخۡرَجَ لِعِبَادِهِۦ وَٱلطَّيِّبَٰتِ مِنَ ٱلرِّزۡقِۚ﴾ [الأعراف: 32].

ژباړه: «(اى پيغمبره!) دوى ته ووايه چي چا دالله هغه ښکلا حرامه کړې ده چي هغه دخپلو بندګانو لپاره را اېستلې ده او چا دخداى بخښل سوي پاک شيان منع کړل؟».

ښځي ته په حلالو شيانو او په هغو شيانو چي روغتيا ته ضرر نه لري سينګار جواز لري، خو چي د کور دننه وي. البته ښځه د کور دباندي هم آرايش کولاى سي، خو چي په حجاب کي په بشپړه توګه پټ وي او داسي نه وي چي د نامحرمو خلکو د ورته کتلو يا کشش لامل سي.

کومي ښځي چي بې ستره له کوره دباندي وزي د هغو په هکله د رسول اللهج دې حديث ته پام وکړئ:

«نِسَاءٌ كَاسِيَاتٌ عَارِيَاتٌ مَائِلَاتٌ مُمِيلَاتٌ لَا يَدْخُلْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يَجِدْنَ رِيحَهَا وَرِيحُهَا يُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ خَمْسِ مِائَةِ عَامٍ» (صحيح مسلم او نور).

ژباړه: داسي ښځي به وي چي د کالو اغوستلو سره سره به لڅي وي او داسي ښځي به وي چي خپله به هم بدو چارو ته مايلي وي او خلک به هم ځان ته او ناوړو چارو مايل کوي. دغه ښځي نه جنت ته ننوتلاى سي او نه به يې خوشبويي ور ورسيږي. په داسي حال کي چي د جنت خوشبويي د پنځو سوو کالو د سفر په ليري فاصله هم ځي.

سينګار په کور کي د مېړه لپاره دى نه د باندي د خلکو لپاره:

سينګار او ښه کالي اغوستل هم د ښځي حق دى او هم پر هغې باندي د مېړه حق دى. خو تاسي ټولو ته معلومه ده چي اسراف نه دى ښه. نو داچي زموږ ځيني خوندي د هندي او غربي (يعني مشرکينو او کفارو) دموډ او فېشن په پيروي ډول ډول لباسونه په خورا ډېرو پيسو رانيسي او چي په يوه واده کي يې واغوسـتل بيا يې بل واده يا خوښۍ ته نه اغوندي، نو آيا دا اسراف نه دى؟ او آيا دا د هندوانو او کفارو پيروي او پېښې نه دي؟

دا د مېړه حق دى چي ښځه هغه ته ځان جوړ کړي او خپل حسن او ښکلا ورته څرګنده کړي. خو له بده مرغه په موږ کي دا دود اوس سر چپه سوى دى. زموږ زياتي ښځي په کور کي د مېړه په مخ کي خيرني پيرني ګرځي، خو چي له کوره دباندي وزي نو ځان ښه جوړ او يو غوړپ کړي او هغه څه زر او زينت او ښه جامې چي لري په ځان يې واغوندي. رسول الله ج څه ښه ويلي دي:

«الْمَرْأَةُ عَوْرَةٌ فَإِذَا خَرَجَتْ اسْتَشْرَفَهَا الشَّيْطَانُ» (رواه الترمذي).

ژباړه: ښځه د پټېدو شى دى، کله چي هغه له کور څخه دباندي ووزي شيطان يې په پېڅه سي. (يعني د خلکو په نظر کي يې ښه وايسوي چي په بده ورته وګوري).

ښه خو داده چي که ښځه له کوره وتلو ته اړه سي، نو په ساده لباس کي دي وزي.

په قرآن کريم کي د پردو په مخ کي د ښځي په سينګار سوي حالت کي وتلو ته د «تبرج» لفظ استعمال سوى دى. په صحيح البخاري کي د تبرج ژباړه داسي راغلې ده: «التَّبَرُّجُ أَنْ تُخْرِجَ مَحَاسِنَهَا» (تبرج دادى چي ښځه خپل د ښکلا ځايونه څرګند کړي).

د ښځي تبرج او د حسن او جمال اظهار او لڅه او بې ستره پر بازار کېدل، لکه همدا اوس چي د امريکايانو او لوېديځوالو د تېري او نيواک سره زموږ په هيواد کي ډېر ليدل کيږي د کور نيو او ولسونو د تباهۍ او بربادي او خوارى او ذلت لامل سوى دى. نو د ټولنيزي فتنې او فساد د مخنيوي لپاره بايد ښځي حيا او عفت خپل کړي.

سينګار ځاي (آرايشګاه) او شرعي احکام:

د ښځي لپاره سينګار يو فطري عمل او روا کار دى، دغه راز د ښځي لخوا د ښځي سينګارول هم روا کار دى، خو چي په سينګار او د سيګاروونکي ښځي په کار کي ناروا او ناسمي چاري نه وي. که يوه ښځه بله ښځه وړيا يا په مناسبه اجوره جوړوي په دې کي څه خبره نسته، لکه چي په درالمختار کي وايي: «وَجَازَ إجَارَةُ الْمَاشِطَةِ لِتُزَيِّنَ الْعَرُوسَ إنْ ذُكِرَ الْعَمَلُ وَالْمُدَّةُ» «د ناوي د سينګار لپاره د آرايشګري اجاره چي کار او د کار موده ذکر سي جواز لري». خو که آرايشګره داسي چاري تر سره کوي چي د لوى څښتنأ له طاعت او عبادته دا يا سينګار کوونکې ښځه په وزي، نو دا بيا ښه کار نه دى. يا حرام کارونه کوي، لکه چي د ښځي ورځي جوړوي يا يې د مخ لږ او عادي ورېښتان اخلي يا يې د سر سپين ورېښتان په تور رنګ رنګوي يا د ښځي سر د لوېديځ د کافرو او خداى ته ياغي ښځو په پېښو د اوښ د بوک غوندي جوړوي، يا يې سر د نارينه وو غوندي جوړوي، يا نور ورېښتان پوري نښلوي يا د بدن ورېښتان لکه د شرمځاى يا داسي بل ځاى ورېښتان ليري کوي يا داسي کارونه کوي لکه چي په دې وروستيو کي د نورو کفري هيوادونو په سينګار ځايونوکي دود سوي دي، يا د سينګار خبره اسراف ته ورسيږي، (لکه په اوسمهال کي چي زموږ د هيواد په ګوټ ګوټ کي زياتي آرايشګراني بېخي ډېري پيسې اخلي) نو په دې صورت کي دا کار ناروادى.

دلته به يوه بله خبره هم ياده کړو او هغه دا ده چي له امام احمد/ څخه د هغه مهال يوې آرايشګري ښځي پوښتنه وکړه چي ما د ښځو په ورېښتانو پوري د زياتي ورېښمو غوندي توکو په نښلولو او د ښځو د سرونو په جوړولو سره دغوني پيسې ګټلي دي چي حج ته په ولاړه سم، نو دا څنګه دى؟ هغه د نه! جواب ورکړ او د دې کسب يې مکروه وباله او ورته ويې ويل چي حج تر دې په حلالو پيسو وي. (احکام تجميل النساء (٣٨٦) مخ د المغني په حواله).

دغه راز په الفقه الاسلامي وادلته کتاب او کشاف القناع نومي کتاب کي وايي چي: «وَيُكْرَهُ كَسْبُ الْمَاشِطَةِ» يعني د سينګار کوونکي ښځي کسب مکروه دى.

په اوسنيو عالمانو کي د سعودي عربستان نامتو اسلامي پوهاند شيخ الفوزان هم د يوې فتوا په ترڅ کي ښځو ته لارښوونه کوي چي د سينګار لپاره دي سينګارځايونو ته نه ځي. ځکه چي له کور څخه سينګار ځاى ته د دې په وتلو کي په فتنه او ناروا د اخته کېدلو امکان سته. او دغه راز په سينګار ځايونو کي يا هغه ښځي وي چي د اسلام په احکامو پابندي نه وي يا نارينه کار پکښي کوي چي هغو ته د ښځي د ورېښتانو ښکاره کول حرام دي.

دغه راز د سينګار ځاى په هکله د شبکة الاسلامية د مركز الفتوى د 1424هـ کال د جمادي الثاني (څلورمي خور) په يوه فتوا کي چي په المکتبة الشاملة کي راغلې ده داسي وايي:

د سينګار ځي په پرانيستلو کي کوم حرج نسته، خو په دې شرط چي د شرعي ضوابطو سره سم کار وکړي او له حرامو او منع سوو کارونو څخه خالي وي، په دې ډول: ١. د سينګارځاى کارکوونکى به مسلمانه ښځه وي. ٢. سينګارځاى به متبرجي (د ښکلا د ځايونو څرګندوونکي، آزادي ښځي) نه سينګاروي، ځکه چي دا د هغو سره پر معصيت باندي مرسته ده او الله تعالى فرمايي:

﴿وَتَعَاوَنُواْ عَلَى ٱلۡبِرِّ وَٱلتَّقۡوَىٰۖ وَلَا تَعَاوَنُواْ عَلَى ٱلۡإِثۡمِ وَٱلۡعُدۡوَٰنِۚ﴾ [المائدة: 2].

ژباړه: «كوم كارونه چي د نېكۍ او تقوا دي په هغو كي يو له بله مرسته وكړئ او د ګناه او تېري په چارو كي د چا ملاتړ مه كوئ».

د سيګاروونکي په کار کي به حرام کار شامل نه وي، لکه دا چي د ښځي ورېښتان داسي جوړ او لنډ کړي چي د کافرو يا فاجرو ښځو يا د نارينه وو سره يې مشابهت او ورته والى وسي. يا يې ورځي جوړي کړي، ځکه چي رسول الله ج پر ورځي جوړوونکي او پر هغي ښځي چي د بلي ښځي ورځي جوړوي لعنت ويلى دى. يا د ښځي عورت ته وګوري يا لاس په ووهي. او د ښځي عورت ښځئ ته له نامه څخه تر زنګنو پوري دى. يا دا چي د سر سپين ورېښتان يې په تور رنګ ور رنګ کړي.

په بې حيا آرايشګرو ځان سينګارول:

په سينګار ځايونو کي چي کومي آرايشګري ښځي کار کوي او ښځي جوړوي او سينګاروي زياتي يې بې لمانځه او لڅ مخي، آزادي او د خداى او رسول له احکامو څخه بې خبري او ياغياني وي. دا داسي ښځي وي چي مېړه له دوى څخه او دوى له مېړه څخه بېزاره وي او بالاخره يې دغه کارونه پسي را اخيستي وي. دوى نوري ښځي جوړوي، خو پخپله دوى خپل ځانونه خپلو مړونو ته هيڅ نه جوړوي، نو آيا يوه سترمينه او حياناکه ښځه په دغسي بې حيا او ګنهکارو ښځو خپل ځانونه جوړوي؟ نه! هيڅکله نه! دغسي پاکخورې او باعفتي ښځي د دغسي ناولو ښځو لاسونه هيڅ وخت ځان ته نه پرېږدي.

په نارينه سينګار کوونکو ځان جوړول حرام کار دى:

که په سينګار ځاى کي کار کوونکى نارينه وي يا په دغسي ځاى کي کوم ناينه د وظيفې له مخي وزي ننوزي، نو په دغسي ځاى کي د ښځي د ځان جوړولو د حراموالي او پر هغې باندي د خداى د لعنت د اورېدو څه شبهه پاته کيږي؟

په دغسي ځايونو کي په ناولو، بې حيا او ګنهکارو بدنامو ښځو يا په نارينه وو ځان جوړول پاکي او مسلماني ښځي ته هيڅ مناسب کار نه دى، بلکي ښځه په کور کي چي څه کېداى سي، په هغو بايد ځان سينګار او تيار کړي. په دې کي د هغې د دنيا او آخرت ښېګڼه او کاميابي ده.

سينګار ځايونه او نوي ساينسي څېړني:

اوسمهالو سينګار ځايونو ته د ښځو تلل او د اسلام او وطن د دښمنو لوېديځوالو نوى رامنځ ته کړى فيشن غوره کول او د سينګارکوونکو لخوا ډول ډول مضر او د روا والي او نه روا والي له مخي معلوم او نامعلوم کېمياوي مواد استعمالول د مخ، جسم او ورېښتانو فطري او طبيعي ښکلا له منځه وړي او ډېر نور تاوانونه هم ځني رامنځ ته کيږي. په دې لړ کي د قاهرې د روغتيايي کالج پروفيسر ډاکټر عبدالمنعم ليکنه ډېره فکر پاروونکې ده، هغه ليکي:

«سينګارځايونو ته تلل او د سر د ورېښتانو ډول ډول جوړول او د اروپايي ښځو په پېښو د فېشن ډول ډول رنګونه په وهل، د هغو دصافولو او اړولو رااړولو لپاره بېلي بېلي غير فطري طريقې په کار اچول ورېښتانو ته ډېر ستر تاوان لري. له دغسي چارو څخه ورېښتان ژر توييږي او د هغو بېخونه کمزوري کيږي. دغه راز د ورېښتانو جوړولو ماشين استعمالول او په ورېښتانو ډول ډول کېمياوي دواوي وهل ورېښتانو ته سخت تاوان رسوي او ښځي بايد له دغسي زيب او زينت څخه په کلکه ډډه وکړي».

زموږ ډېرو خوندو ته دا هيڅ معلومه نه ده چي د هغو د سر د ورېښتانو چپه او راسته اړول څونه تاوانونه لري؟ د سر د ورېښتانو د هاخوا دې خوا اړولو پايله دا کيږي چي د هغو پر ريښو زور راځي او د ويني هغه ځانګړى مقدار چي بايد ورېښتانو ته ورسيږي، نه ور رسيږي. چي له امله يې د ورېښتانو بېخونه کمزوري کيږي. او نتيجه يې دا کيږي چي د آرايش ځايونو په صالونونو کي د سينګار د ډول ډول چارو په تر سره کولو سره ښځه د څه مهال لپاره په ظاهره ډېره ښکلې ايسي، خو وروسته چي د سينګار د دغو چارو اثرات له منځه ځي، نو بيا پنځه ويشت کلنه ځوانه ښځه که پنځوس کلنه نه وي، څلوېښت کلنه خو هرو مرو ايسي او د دې ګناه اغېزه دا وي چي د مېړه په زړه کي د ميني او محبت پرځاى کرکه او نفرت ورڅخه پيدا سي.

سينګار ځايونه له ډول ډول خطرونو ډک دي (برتانوي څېړنه):

لکه څنګه چي په ښځو کي د ښکلا شوق زياتيږي همدغسي پر تجارتي بنسټونو ولاړو، د سينګار د مراکزو کار وبار هم پرمختګ کوي. ورځ په ورځ نوي سينګار ځايونه د نوو نوو سامانونو او د سينګار د توکو سره را وزي، او ډېر نارينه او ښځي په دې کار بوختي دي.

اوس د برتانيې د جلدي ناروغيو دوو ماهرو ډاکټرانو بروس پولاک او مارک ولکسن په خپل يوه رپوټ کي څرګنده کړې ده چي د نرسانو او په بېکريو (کلچه پزيو) کي د کارکوونکو غوندي په سينګارځايونو کي کار کوونکي او د وېښتانو جوړوونکي هم د جلد د پاړسوب يا التهاب دخطره سره مخامخ دي. دغه شکايت د آرايشګر پر لاس سربېره د هغه د بدن په هره هغه برخه کي کېداى سي چي د کار په دوران کي کېمياوي مواد پوري نښلي.

د ورېښتانو جوړوونکو په لاسونو کي جلدي التهاب په ظاهره دوه لامله لري: زياتره په ورېښتانو له لاس وهلو څخه، په لاسونو کي يو ډول سوى پيدا کيږي او پر پوست باندي د کېمياوي مرکباتو له لګېدو څخه حساسيت رامنځ ته کيږي. ښايي دغه کېمياوي مواد د ورېښتانو د پرېوللو لپاره استعمال سي يا د ورېښتانو په نوي انداز د جوړولو يا د سپينو ورېښتانو د رنګولو لپاره وي.

د سينګار په مرکزونو کي کار کول هغو کسانو ته ډېر نامناسب دى چي له کوچني والي د يو ډول دانو يا بل ډول حساسيت په ناروغي اخته سوى وي. که دغسي څوک د سينګار په مرکز کي د خپل کار په بهير کي د پوست د پاړسوب په ناروغي اخته سي، نو له دې ناروغۍ څخه د ژغورني امکانات ډېر کم دي. البته د چا پوست چي لږ پړسېدلى وي او بيا په لاسونو شامپو او نور کېمياوي مواد ونه وهي، نو کېداى سي چي د حساسيت له دغي ناروغۍ څخه وژغورل سي.

سينګار ځاى او د سرطان ناروغي:

ډاکټر رت آرم او ډاکټر فرينک موروي وايي چي هغه کسان چي په سينګار ځاى کي کار کوي، په هغو کي لس برابره دا امکان سته چي د سږو په سرطان اخته سي. او عموماً له دغي ناروغۍ څخه د دوى مرګ وي. دغه څرګندونه د کاليفرونيا درو ډاکټرانو د ١٩٧٥ع. کال په جولاى کرې ده. دغه څېړنه يوازي د يوې سيمي د حسن او ښکلا پر ماهرينو سوې ده. ساينس پوهان وايي چي له دې څخه په ټول هيواد کي په دغه سبب د دغي ناروغۍ اندازه لګېداى سي.

که پر ورېښتانو باندي د استعمالوونکو رنګونو څېړنه وسي، نو معلومه به سي چي دغه ورېښتان هم د سرطان د پيدا کولو وړتيا لري. سوال دا دى چي دغه کېمياوي ماده د سږو پر ځاى د جلد سرطان ولي نه پيدا کوي. د دې پوښتني جواب تر اوسه د چا سره نسته. خو دونه معلوميږي چي په سينګار ځايونو کي کار کوونکي ټوله ورځ په ککړ چاپېريال کي اوسي او ورسره د داسي توکو سره سروکار لري چي کېداى سي په يو ډول لا نه يو ډول دي سرطان پيدا کوونکي وي. يا داسي معلوميږي چي دغه ټول عناصر په مجموعي توګه سرطان پيدا کوونکي وي. پر ورېښتانو باندي استعمالېدونکي عناصر وته «ايروسول» وايي او هر وخت کېداى سي چي لاسونه په دغه ماده ککړ سي او چي ټول عمر دغه مواد استعمال سي نو دغه اغېزې ځني را منځ ته کيږي. اړتيا دې خبري ته ده چي په دې هکله پرېکنده او بشپړه مطالعه وسي. او رپوټ يې وړاندي سي، خو ډېره ښه مشوره داده چي ښځي دي هغه شيان استعمال کړي چي په درملتونونو کي پيدا کيږي او د سينګار هغه توکي دي نه رانيسي چي په نورو ځايونو کي خرڅيږي.

د سينګار د سامانونو ناوړي اغېزې

موږ په مخكنيو مخونو كي د سينګار په ځينو شيانو كي د سركوزي د غوړو او نورو مضرو توكو د استعمال او د هغو د ځينو نورو دنيوي او اخروي اضرارو له امله د هغو ځيني بدګڼي بيان كړې. له لويه سره په خپله آرايش او سينګار هم ډېري ناوړي پايلي لري.

د سينكار د شيانو كارول له ډېرو پخوا زمانو څخه رواج لري. د هومر د اوډيسي (ستري حماسي منظومې) د «پِنِي لوپ» په نامه د پاك لمني خو ډېري ښكلي ښځي چي د اوليس مېرمن او د تلماك مور ده د سينګار په ذكر كي د هغې د باړخو ګانو د سينګار لپاره د يو ډول غوړيو، چي وايي د زيتون غوړي وه يادونه سوې ده. د مصر ښايستې ملكې كلوپاترا هم د سينګار لپاره د زيتون غوړي په مخ وهل. له دې څخه څرګنديږي چي له ډېرو پخوا مهالونو څخه ځيني ښكلا بخښونكي توكي د ښځو د مخونو د ښكلا لپاره كارېدل. د جزبيل په كيسه كي چي د تورات يوه برخه ده لولو چي هغه پر خپل مخ رنك وواهه، د سر ورېښتان يې سمبال كړل او له كړكۍ د باندي يې كتل. د فارسيانو نارينه وو هم په باړخو ګانو سرخي وهل. د دوى يوه پاچا چي اسټـيـاجز نومېدى او د ۵۸۹ قبل الميلاد په شاوخوا كي واكمن وو په خپلو سترګو رنګ واهه، په مخ يې سرخي او سپېده وهل او پر سر به يې مصنوعي ورېښتان ايښوول. د لرغوني روم ښځو به خپل ډېر وخت د خپلو څېرو پر سينګار تېراوه. دغه مهال ميناكارۍ ډېر رواج درلود. او د پاچا مېرمني د هغې سره ډېره مينه درلوده. اوس خو نو دادى موږ وينو چي زموږ د مهال ټولي ښځي په تېره زموږ موډرني او دفترونو او بهرنيو موسسو ته تلونكي ښځي خپل ډېر قېمتي وخت پر ځان جوړولو تېروي او داسي ډول ډول شيان پر مخونو وهي چي هم ممكن مردار وي او هم يې د مخونو طبيعې او خداى وركړې ښكلا خرابه كړي او بالاخره يې په ډول ډول جلدي ناروغيو اخته كړي.

د ځان جوړولو دغه دود سره د دې چي د زرګونو كلونو راهيسي روان دى، په هيڅ ګون ښه كار نه دى جوت سوى. په نژدې تېرو سوو مهالونو كي چي كومي ښځي د خپل حسن او جمال له امله مشهوري سوي دي او د خلكو زړونه يې وړل هغو پر خپلو مخونو سرخۍ، سپېدې، پوډر يا كوم بل رنګ نه واهه.

سرخۍ او پوډر د پوست هغه مسامات بندوي كوم چي د هغو پرانيستي پرېښوول د جلد د روغتيا لپاره ډېر اړين دي. او لكه چي پوهيږو روغتيا او ښكلا يو له بله لازم او ملزوم دي. نو ټول هغه كسان په تېره زموږ خوندي چي د خپلي ښكلا قدر كوي بايد دغه صابونونه، لبسيرين، سرخۍ او سپېدې او ډول ډول پوډرونه او د سر او مخ كريمونه او داسي نور د سينګار سامانونه هيڅ نه كړي استعمال. يو نامتو ډاكټر وايي: «ما ډېر ناروعان ليدلي دي چي پر مخونو يې د بازارونو د خرڅېدونكو پوډرو او پر كېمياوي توكو مشتمل كاسمټيك سامانونو د وهلو له امله توري لكې او دانې څرګندي سوي وي».

دغه راز نوو ځوانانو او پېغلو ته د جلدي ناروغيو د ماهرانو مشوره داده چي هغوى هيڅ ميك اپ (سينګار) ونه كړي. خو دا ددې معنا نه لري چي دوى دي د خپل پوست د نرم او روغ ساتلو لپاره هيڅ ډول غوړ ياكريم نه استعمالوي. ځكه چي په كم عمرۍ كي پوست د ناوړو اغېزو سره مخامخ كيږي. نو كه د دغسي كسانو څېره د دغسي اغېزو څخه متاثره سوې وي هغوى بايد د خپل جلد د صفايى، نرمۍ او ښكلا لپاره د زيتون غوړي استعمال كړي.

پر غير روغتيايي شيانو مشتمل كاسمټيكس كه څه هم د اوس لپاره پرتاسي بد نه دي لګېدلي خو امكان لري چي په راتلونكې كي ستاسي پر جلد بده اغېزه وكړي.

دغه راز د مخ ځيني هغه كريمونه او لوشنونه چي كېمياوي توكي په ګډ وي ستاسي جلد سمدستي هرومرو صافوي او ښكلى كوي. خو دا هم ممكنه ده چي پر پوست باندي د دغسي كريمو نو په وهلو سره د پوست طبيعي غوړزګي له منځه يوسي او وروسته وروسته ستاسي پوست د وچي څرمني غوندي وايسي.

د سينګار سامان جوړولو ځيني كمپنۍ په خپلو مصنوعاتو كي د طبيعي نباتاتو توكي لكه شات، د زيتون غوړي، ګنى، نكريزي، كاكاو، د بادامو غوړي، د لېمبو او سنګترې ارغ او داسي نور شاملوي. البته د دغسي كاسمټيكسو استعمالول د هر چا لپاره ګټور او د هر پوست سره موافق دي.

نوكله چي د كاسمټيك سامان رانيسئ لېبلونه يې په ډېر پام سره لولئ كه پر هغو باندي د طبيعي بوټو او توكو نومونه ليكلي وه او كمپنۍ هم كومه معتبره كمنۍ وه رانيسئ يې كه نه تر تېرېږئ.

لب سرين او نوي ساينسي څېړني

آيا ښځي خبري دي چي کوم لب سرينونه چي دوى پر شونډانو وهي له څه شي څخه جوړ سوي دي؟ داخو پرېږده چي په ځينو لب سرينونو کي د سرکوزي غوړي استعمال سوي دي، نور ټول له داسي ډول ډول کېمياوي موادو څخه جوړ سوي دي چي شونډانو ته خو تاون رسوي چي رسوي او که په خوله ننوزي او تېر سي روغتيا ته هم په جدي توګه ضررناک تماميږي.او ان د ځينو طب پوهانو د څېړنو له مخي سرطان زېږوونکي هم دي.

لب سرين معمولاً له تېزابو، نباتي غوړيو، صابون، کسټرآيل، د پټروليمو له يو ډول مومو، خوشبويۍ، غذا ساتونکو کېمياوي موادو، د کبانو له ځينو اجزاوو، نارنجي اسيدو او رنګونو څخه جوړوي، نو تاسي فکر وکړئ چي د بدن پر داسي حساس او نازک ځاى لکه شونډانو باندي د دغسي کېمياوي اجزاوو پرله پسې وهل به بالاخره څه نتيجه ولري؟

يوه بله د پام وړ خبره داده چي په ځينو لب سرينونو او د نوکانو په رنګ الکحول هم ګدوي. په داسي حال کي چي د الکحولو په حراموالي کي هيڅ شک او شبهه نسته. د «عورت کى اسلامى زندګى او جديد ساينسى تحقيقات» نومي کتاب ليکوال محمد بن اختر ليکي چي د لب سرين په حراموالي او ناپاک والي کي هيڅ شک مه کوئ، ځکه چي په هغو کي د خنزير غوړي، الکحول او نور نجس مواد ګډوي.

د جان پرنس په نامه يو اروپايي څېړونکى وايي چي اروپايي ښځي سرخي پوډر او لب سرين خورا ډېر استعمالوي. له دې امله اوس روغتيا پالونوکو جوته کړې ده چي د لب سرينو له استعمالولو څخه به پر راتلونکي نسل باندي ناوړي اغېزي لوېږي. يوې بلي څېرونکي مسز ميک کروکوډيل چي د برتانيې د «نيشنل ايسوسيشن فار هيلت» مشره ده اندېښنه څرګندوي چي په لب سرينو کي شامل کېمياوي اجزا په بدن کي د مرغړيو د پيدا کېدو لامل کيږي.

دغه راز يوې برتانوۍ جريدې «نيو آيډيا» د ١٩٨٣ع. کال په يوه ګڼه کي ويلي دي چي د څېړونکو تر پرله پسې څېړنو وروسته څرګنده سوه چي پر شونډانو باندي د لب سرين له وهلو څخه په معده کي کرار کرار سرطاني مرغړي پيدا کيږي چي په نتيجه کي يې هغه ښځي چي لب سرين وهي د ګېډي په سرطان اخته کيږي.

روڼ اندې او په معنوي پسول ښكلې ښځه سينګار ته اړتيا نه لري

په ښځو كي ډېر فرق سته. هغه ښځي چي ښوونځى او پوهنځى يې ويلى وي يا يې په كور كي د ځاني مطالعې له لاري ليك لوست زده كړى او خپل شخصيت يې په مطالعه او خپل زيار د علم او پوهي په تر لاسه كولو د يوې رشتيني مسلماني او افغاني په صفت جوړ كړى وي او په اند او ژوند كي يې رڼا او ځلا را غلې وي هغو ته خپل دغه ليك لوست، علم او پوهه او معنوي ښكلا هر څه وي. هغو د ټولني د منفي او ناسمو دودونو څخه ځانونه ژغورلي وي، نه دغسي دودونو ته څه ارزښت وركوي او نه يې په نه تر سره كولو كي څه شرم او د چا د څه ويلو او پېغور پروا كوي، بلكي هر څه چي كوي د اسلامي اصولو او خپلي ټولني په وړاندي د مسؤوليت په احساس يې كوي.

اوسنۍ متمدنه، روڼ اندې او باسليقه مسلمانه ښځه پوهيږي چي د پردو هيوادونو پر ډېر بيو ټوكرانو او د هغو پر جوړولو پيسې وركول هم د خپل هيواد د اقتصاد سره جفا ده او هم د خپلي كورنۍ د ګټي وټي بې ځايه لګول او خپل كور او په تېره د كور مشر د ستونزو سره مخامخ كول دي.په معنوي سينګار پسوللې ښځه پوهيږي چي د آرايش پر ډول ډول موادو پيسې وركول او د هغو په مخ وهل هم د دې د كورنۍ ګټي ته تاوان دى او هم د دې صحت ته. دغسي ښځو په رشتيا درك كړې ده چي د وخت هره شېـبه چي پر بې ګټي كارونو تېريږي نه بيا را ګرځېدونكې ده او نه جبيره كېدونكې. نو هغوى خپل قېمتي وخت پر دې نه تېرروي چي په ډول ډول ډېر بيو برېښندوكو كاليو اغوستلو او غليظ سينګار كولو له ځانه نانځكه جوړه كړي او د هوس بازو وګړو سترګو ته يې عرضه كړي. هغه پوهيږي چي په دې كار تر بوختېدو خو د خپل كور كار او د هغه د لوښو او اثاثيو اوډل او سمبالول يا د قرآن كريم تلاوت يا د كتاب مطالعه او ديني او علمي معلومات ترلاسه كول يا څه ليكل يا بل ټولنيز يا وټه ييز كار ډېر ښه دى. رشتيا داده چي دغسي ښځي څه د حقارت عقده هم نه لري او ښه ژوند يې په ساده ګي او پاكي كي موندلى وي. خو د دې په خلاف ناپوهي، نالوستي او چادياني ښځي يا په اصطلاح لوستي متجددي، لوېديځ خوښي او له دين او اسلامه بېزاري (باسوادې خو بې شعوره) ښځي له هغه ځايه چي په ځانو كي معنوي ښكلا او پانګه نه ويني او له علم او پوهي څخه بې برخي دي يا يې ښوونځى او پوهنځى په يو ډول يا د واسطې او اعتبار په زور لوستى وي خو اوس د باسوادۍ له نامه او د شهادت نامې پرته بل څه په سينه كي نه لري نو دغسي ښځي د پوهو او لايقو ښځو په وړاندي د حقارت احساس كوي او بالاخره خپله دغه نيمګړتيا او عيب په مادي ښكلا، ډول او سينګار او زر او زېورو پټوي. دا نو بيا د دغسي ښځو د پلرونو او يا مړونو په اقتصاد پوري هم اړه لري. كه له دې پلوه څه شتمنه وه بيا نو دا د ناز مېرمن او په اصطلاح د لوى كور ښځه له ځانه د زرو او طلاوو ويترين يا مجسمه جوړوي او دونه رنګونه په مخ موږي چي ته به وايي د سركس يا كومي كومېډي ډرامي لوبغاړي خپل ځا ن مكياژ كړى دى. دغـسي بې علمي او ناپوهي خوار كياني غواړي په دې ډول خپل بې ارزښته او بې خاصيته او بې شخصيته وجود چي هيڅ معنا او بيه نه لري او مازي ډوډۍ خورې باله سي د پلار يا مېړه د پانګي په زور او د زرګرانو د هنر، د بهرنيو كمپنيو د صنعت او د خياطانو د زيار او زحمت په بركت د معنوي ښكلو سره سم او برا بر وايسوي او ان كله نا كله لا هغو ته په پوسخند ووايي چي: «يُوْ خوري ستا د شيانو موډ خو او س ختم سوى دى؟!».

البته دغسي ښځي دا هم هيڅكله نه غواړي چي د دوى په مجلسونو كي بېله د زرينانو، كړو او بنګړو او فېشن او موډو او كله كله پر هندي فلمونو او د هغو د هلكانو په باب له تبصرو پرته د بل څه په تېره د اسلام، وطن، ټولني يا د علم او پوهي خبره را منځته سي. خو كه كله كله دغسي خبري پېښكي رامنځته هم سي ووايي: «يُوْ خوري نن مآال دا د اوغانستان د آباتۍ او د خلګو د خذمت او دا مكتب، كتابونه، نميشتې او سبكونه څه په كار دى؟ نن پيسه پيدا كه بس هر څه يې. نه وينې چي پلانى مالم چي پاكولته يې ويلې ده هغه دى خواركى زما د سړي مزدور دى او ماينه يې دغسي خواربوشكې ده او څنګه چي د موډ سره سم كالي او د آرايش سم شيان نه لري د شرمه ودونو ته نه سي تللاى».

هو! دا موډونه او فېشن او په مصنوعي تجملي توكو پسولل د نامتمدنو ټولنو د ښځو لا څه چي د ځينو نارينه وو مرض ګرځېدلى دى. كه څه هم دا يو تريخ حقيقت دى، خو حقيقت دى چي زموږ هيواد په نړۍ كي يو وروسته پاته هيواد دى. تاسي وګورئ چي زموږ د دې وروسته پاته هيواد ځوانان ان ځيني شيك پوشه او ځوان طبيعته زاړه د موډ او فېشن په سيالي كي د امريكا تر ځوانانو نه دي وړاندي سوي؟ له بده مرغه دا يو تريخ خو منلى حقيقت دى چي د وروسته پاتو ټولنو د دښمنانو او لوټوونكو د نامرئي چلونو او د موډ او فېشن د تبليغونو له امله د لوكس پالني او تجمل خوښوني ناروغي د دې ټولنو يوه څانګړنه ګرځېدلې ده. تاسي وګورئ په افريقايي او آسيايي نجونو او هلكانو كي دونه ډېر او داسي وړاندي تللي موډكيان، سينګار خوښي او فېشنيان سته چي اروپايان او امريكا يان يې پېښې لا منې كه وكړي. په دې هكله نور څه ووايم؟ بس دونه به ووايم چي دا موږ ته ډېر د شرم ځاى دى.

د سينګار د شيانو استعمال له شرعي او اقتصادي پلوه

نن مهال په نړۍ كي اقتصادي جنګ روان دى. اوسمهال د سترو صنعتي هيوادونو طاغوتي ځواكونو او ملټـي نېشنل كمپنيو د ګلوبلايزېشن او آزاد تجارت او معيشت په نامه د يوه نوي ښكېلاكي او نيواكي نظام دسيسه په لار اچولې ده. دغه هر څه دسايس چي د نړۍ د سترو قدرتونو او د هغو د انډيوالانو او ګوډاګيانو لخوا د مسلمانانو او وروسته پاتو ولسونو په وړاندي په لار اچول سوي دي دا د هغو د شتمنيو د لوټولو او چورولو او د هغو د بې ځواكه كولو، خوارولو او د هري اسلامي ټولني د هر فرد د ژوندانه په ډول ډول بخولو اخته كولو او بالاخره د ټولو د مريي كولو لپاره دي؛ څوك زموږ شته وړي د اسرايلو په ګټه يې په كار اچوي؛ څوك يې د خپلو هيوادونو، پوځي ځواكونو، دين او فرهنګ د ځواكمنتيا او د خپلو خلكو د لا شتمنۍ او د هغو د ژوندانه د لاسمون او داسي نورو چارو د پرمختيا لپاره په كار اچوي؛ څوك زموږ شته پخپله زموږ پر ضد او زموږ د خوارولو لپاره كاروي. په دې لړ كي د اسلام دښمنانو زموږ څخه د پيسو لوټولو لپاره يو چل دا په لار اچولى دى چي زښت زيات مضر او نا اړين شيان يې زموږ د ژوندانه ضرورت جوړ كړي دي. داسي بېخي ډېر جعلي، زموږ دين، روغتيا او اقتصاد ته مضر شيان دي چي زموږ مادي پال، سراښ او بې بصيرته سوداګر يې د بهرنيو كمپنيو سره د جوړ جاړي په پايله كي راوړي او زموږ د بېوزلي هيواد په مليونونو پيسې پر وركوي. په داسي حال كي چي زموږ هيڅ نه دي په كار او موږ كولاى سو بېله هغو هم خپل ژوندانه ته په عادي او سمه توګه ادامه وركړو. موږ مسلمانان يو. موږ ته اسلامي شريعت په مختصر سامان د ژوند كولو لارښوونه كړې ده. رسول ج به بي بي عايشېل ته ويل: «اى عايشې! كه ته غواړې چي په آخرت كي زما سره يوځاى سې، نو تا ته د دنيوي ژوندانه د تېرولو لپاره دونه لږ او مختصر سامان په كار دى لكه مسافر چي يې د ځان سره وړي. د شتمنو سره مه اوسه او تر څو چي دي كاليو ته پينه نه وي وركړې زاړه يې مه بوله».

وګورئ د رسول الله ج په دې وينا كي څونه لوى حكمت او نصيحت نغښتى دى. كه موږ د لوېديزو هيوادونو دغه په ظاهره ضروري خو له اصله بي ضرورته زيات شيان رانيسو يا به حرامو ته اړكيږو يا پور ته. نن مهال زموږ ځيني ځوانان او نجوني د لوېديزو هيوادونو د ړانده تقليد او د هغو د ډول ډول سامانونو د رانيولو دونه شوقيان سوي دي او دونه يې خرڅونه زيات سوي دي چي د كورنۍ ګټه يې هر څونه وي نه يې بسيږي او تل اړ او تر پورونو لاندي وي. دغسي وګړي تل په څرګنده خوشاله خو په زړونو خوابدي او پرېشانه وي. ګټه يې برابره او كافي وي خو ګذاره يې بيا هم سخته وي او تل په فكرونو او چورتونو كي ډوب وي. دا خو لا پرېږده ځيني دغسي نجوني چي د مړونو كورونو ته ولاړي سي څنګه چي په درنو خرڅونو آموخته سوي وي، مړونه چي يې هر څه ګټي ټولي د موډ او فېشن پر نا اړينو شيانو او كاليو باندي وركوي. چي له دې امله د ډېرو دغسي نوو واده سوو تر منځ شخړي او جنجالونه رامنځته سوي او پاى په طلاق منجر سوي دي.

نو څنګه چي د دغو شيانو توليدوونكي يهود او نور كفار د مسلمانانو پر ضد پياوړي كوي، نو د مسلمانانو لخوا د دې شيانو راوړل او رانيول لويه ګناه او د مسلمانانو سره ستر ظلم دى. لوى څښتن فرمايي:

﴿وَتَعَاوَنُواْ عَلَى ٱلۡبِرِّ وَٱلتَّقۡوَىٰۖ وَلَا تَعَاوَنُواْ عَلَى ٱلۡإِثۡمِ وَٱلۡعُدۡوَٰنِۚ وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَۖ إِنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلۡعِقَابِ ٢﴾ [المائدة: 2].

«كوم كارونه چي د نېكۍ او تقوا دي په هغو كي يو له بله مرسته وكړئ او د ګناه او تېري په چارو كي د چا ملاتړ مه كوئ. له لوى څښتن څخه وبېرېږي، ځكه چي د هغه نيونه ډېره سخته ده».

د اوسمهال په شرايطو كي ښايي د يهودو او نصاراوو د هيڅ شي رانيول جايز نه وي. كېداى سي دغسي د اړتياوړ شيان له اسلامي هيوادونو څخه برابر او رانيول سي. په دې هكله زموږ مشرو علماوو ډېر پخوا لا څونه پر ځاى نظر وركاوه. له حضرت مولانا اشرف علي تهانوي/ څخه چا پوښتنه وكړه چي د هندو له دكان څخه خوږې او داسي نور رانيول جايز دي كه څنګه؟ هغه په جواب كي ورته وليكل: «كه په څرګنده كوم نجاست نه وي رانيول يې جايز دي، خو كه دغه شيان له خپل مسلمان ورور څخه رانيسې او ګټه ورورسوې نو دا ډېره ښه ده». وګورئ امداد الفتاوٰى ۳/ ۱۴۱مخ.

په دې هكله په كويټ كي خپرېدونكي عربي اوونيزي «المجتمع» د ۲۰۰۲ع. كال د مى پر ۲۵مه د اسلامي نړۍ د نامتو ستر عالم ډاكټر يوسف قرضاوي وينا هم خپره كړې ده. هغه په دې وينا كي په زغرده ويلي دي چي د يهودو لخوا د جوړو سوو درملو او نورو شيانو رانيول جايز نه دي.كه بېخي ډېره اړتياوي نو د «الضرورة يقتدربقدرالضرورة» «يعني د هر هغه كار كول يا پرېښوول چي د اړتيا له مخي رخصت باله سي نو رخصت يا جواز يې د اړتيا په كچه وي او تر هغه زيات جواز نه لري». د قاعدې له مخي دي دغسي شيان هغه مهال له كفري هيوادونو څخه رانيول كيږي چي د اسلامي هيوادونو شيان كفايت نه كوي.

د لاهور د «آب حيات» مياشتيزي د ۲۰۰۲ع.كال د ستمبر په ګڼه كي ليكي: «ډاكټر قرضاوي څرګنده كړې ده چي د نړۍ خوړني په دې نوي پېر كي پر موږ فرض ده چي موږ د مسلمانو هيوادونو جوړو سوو شيانو ته كوم چي د ملټـي نېشنل كمپنيو په خونړيو منګولو كي ښكېل دي، ترجيح وركړو. زموږ د اسلامي هيوادونو مصنوعاتو ته د دغو ملټـي نېشنل كمپنيو لخوا جدي ستونزي او خطرې متوجه سوي دي». د معلوماتو له مخي پر ډاكټر قرضاوي سربېره نورو ډېرو اسلامي عالمانو هم د دغو كمپنيو پر خلاف فتواوي وركړي دي او په عربي هيوادونو كي د هغو پر مصنوعاتو بنديزونه او تحريمونه لګېدلي دي.

اوس به موږ د موډ او فېشن او داسي نورو څو داسي شيانو مثالونه راوړو چي زموږ اقتصاد ته پر تاوان سر بېره كېداى سي زموږ دين، فرهنګ او آخرت ته هم تاوان ورسوي. موږ درېشۍ، نكټايي، كاسمټيكس او داسي نورو ته څه اړتيا لرو؟ آيا دا د پردي كفري فرهنګ ښكارندي نه دي؟ آيا دا زموږ د اسلامي افغاني فرهنګ مخالف توكي نه دي؟ آيا موږ له دې توكو پرته خپل ژوند ته ادامه نه سو وركولاى؟ د لوېديز فرهنګ او فېشن د پيروۍ او تقليد له امله د ډېرو نورو سترو فسادونو او ورانيو تر څنګ زموږ د مسلمانو او پښتنو ښځو دا حال سو چي له كورونو لڅ مخونه او سرتور سرونه راوزي، په موټرونو او دفترونو كي د افغانانو او بهرنيانو سره يوازي ناستي وي. ډول ډول عطرونه يې وهلي وي. زموخته سينګارونه يې كړي وي، ډول ډول غير اسلامي او غير افغاني لباسونه اغوندي. ان ډېري مصنوعي پلاسټيكي ورېښتان پر سرونو ږدي او…

په دې باب د شرعي د احكامو په هكله بايد ووايو چي د حجاب خبره خو اوس د اسلامي عالمانو په وعظونو او كتابونو كي د لوى څښتنأ د كلام او د هغه د ستر پېغمبر ج د احاديثو په استناد دونه څرګنده سوې او تبليغ سوې ده چي اوس هر څوك او هره ښځه په خبره ده او په پوهيږي. دلته په دې هكله څه ويلو ته اړتيا نه ليدل كيږي. خو بهرنيو كفري هيوادونو ته د مسلماني ښځي بېله محرمه تلل او هلته لڅ مخ ګرځېدل او د كفارو سره ناسته ولاړه تر اشدو اشده ګناه ده. رسول ج به ويل: «إِنِّي لَا أُصَافِحُ النِّسَاءَ». (النسائي، كتاب البيعة، بيعة النساء) (زه د ښځو سره په لاس روغبړ نه كوم). حضرت بي بي عايشهل وايي: رسول ج هيڅ وخت د ښځي لاس ته لاس نه دى وروړى او د هغو سره به يې بيعت په خبرو كاوه. زموږ پېغمبر د ښځو سره د لاس روغبړ نه كاوه، خو زموږ ښځه د كفارو سره د لاس روغبړ لا څه چي ملكونو ته يې بې له محرمه سفرونه كوي.

په موټر او دفتر كي د نارينه وو سره د ښځي د تنها ناستي په هكله مو د رسول ج دې حديث ته پام را اړوم:

عَنْ ‏‏ابْنِ عَبَّاسٍ ‏رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ‏صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ‏ ‏يَقُولُ: «‏لَا يَخْلُوَنَّ رَجُلٌ بِامْرَأَةٍ وَلَا تُسَافِرَنَّ امْرَأَةٌ إِلَّا وَمَعَهَا مَحْرَمٌ فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ اكْتُتِبْتُ فِي غَزْوَةِ كَذَا وَكَذَا وَخَرَجَتْ امْرَأَتِي حَاجَّةً. قَالَ اذْهَبْ فَحُجَّ مَعَ امْرَأَتِكَ» (بخاري، كتاب الجهاد، باب من اكتتب (۳۰۰۶) حديث).‏

ژباړه: حضرت ابن عباسب له رسول ج څخه واورېدل چي: نارينه دي د ښځي سره يوازي نه كښېني، او ښځه دي بېله محرمه سفر نه كوي. دغه مهال يو سړى ولاړ سو او ويې ويل: اى د لوى څښتن استازې! ما خپل نوم پلانۍ غزا ته د تللو لپاره ليكلى دى او مېرمن مي حج ته وتلې ده. رسول ج ورته وفرمايل: ولاړ سه د مېرمني سره دي حج وكړه.

د اسلامي احكامو له مخي ښځه حج ته لا بېله محرمه يوازي نه سي تللاى. (له پورتني حديث څخه هم معلومه سوه) او سفر يې حرام او د رسول ج د لارښوونو مخالف كار باله سي، نو د كفارو ملك ته به يې تلل او بې محرمه سفر څنګه وي؟

د ښځو د ورېښتانو او ځينو نوروپه هکله ځيني احکام

د اسلام سپېڅلي دين د انسان ورېښـتانو ته د نارينه وي که د ښځي ډېره پاملرنه کړې ده. په اسلامي احکامو کي، په تېره د فقهي په کتابونو کي د ورېښتانو د پاکولو، اصلاح کولو، ږمونځولو، منظم ساتلو، کوڅۍکولو، روزلو، په غوړيو او خوشبويي وهلو په هکله ځانګړى لارښووني سته. صحيح حديث دى:

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ كَانَ لَهُ شَعْرٌ فَلْيُكْرِمْهُ» (ابوداود، باب في اصلاح الشعر).

ژباړه: له حضرت ابو هريرهس څخه روايت دى چي رسول الله ج وفرمايل: څوک چي ورېښتان لري، نو د هغو دي په تنظيف او تزئين او غوړو وهلو او ږمونځولو اکرام، ساتنه او پالنه وکړي.

په دې هکله په دې کتاب کي د (ځان او څېرې سمون او سمبالښت ته پاملرنه) تر سرليک لاندي هم څرګندوني سوي دي

دلته د ښځو د ورېښتانو او ځينو نورو په هکله، ځينو څرګندونو او لارښونو ته ستاسي پام را اړوو.

د ورېښتانو رنګول:

که ورېښتان تور وي او سپين سوي نه وي يا يې رنګ داسي نه وي چي بد ايسي، نو په بل رنګ بدلون ورکول يا په داسي ډول رنګول چي د بهرنيو کافرو ښځو د سر سره ورته والى پکښي را سي نو دا حرام دى. اما د سپينو ورېښتانو رنګول له تور رنګ پرته په بل رنګ سنت باله سي او رسول الله ج يې امر کړى دى، خو په خالص تور رنګ د ورېښتانو رنګول هم حرام کار دى. رسول الله ج فرمايلي دي:

«غَيِّرُوا الشَّيْبَ وَلَا تُقَرِّبُوهُ السَّوَادَ» (مسند احمد) يعني سپينو ورېښتانو ته په بل رنګ ورکولو بدلون ورکړئ، خو تور رنګ مه ورنژدې کوئ.

دغه راز فرمايي:

«غَيِّرُوا هَذَا بِشَيْءٍ وَاجْتَنِبُوا السَّوَادَ» (مسلم) يعني دغه سپين ورېښتان په يوه بل رنګ بدل کړئ، خو له تور رنګ ورکولو څخه ډډه وکړئ.

بل حديث دى:

عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَكُونُ قَوْمٌ يَخْضِبُونَ فِي آخِرِ الزَّمَانِ بِالسَّوَادِ كَحَوَاصِلِ الْحَمَامِ لَا يَرِيحُونَ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ» (ابوداود او نسائي)

ژباړه: حضرت ابن عباسب وايي چي رسول الله ج وفرمايل: به آخره زمانه کي به داسي قوم وي چي په تور رنګ به خپل ورېښتان د کوترو د تورو ججورو غوندي رنګوي، دوى به د جنت بوى، بوى نه کړي.

البته دغه حکم ښځي او نارينه دواړو ته دى. خو که د تور رنګ سره بل رنګ ګډ سي چي تور بخون وګرځي پروا نه کوي. اما د سر په ورېښتانو د داسي شي له وهلو څخه دي په کلکه ډډه وسي چي دکافرو، زنا کارو او فاجرو ښځو د سر سره يې ورته والى راسي. ځکه چي دا حرام دى. (المکتبة الشاملة، د شيخ ابن عثيمين او شيخ فوزان فتواوي او نور).

د ښځو لخوا د مصنوعي ورېښتانو استعمالول:

د مصنوعي (جوړو سوو) ورېښتانو د پر سر ايښوولو په هكله رسول ج فرمايي:

«لَعَنَ اللَّهُ الْوَاصِلَةَ وَالْمُسْتَوْصِلَةَ وَالْوَاشِمَةَ وَالْمُسْتَوْشِمَةَ» (رواه البخاري ومسلم)

يعني: د خداى لعنت دى پر هغه ښځه باندي چي د ورېښتانو د لنډو يا اوږدو ايسېدو لپاره د بل نارينه يا ښځي ورېښتان په خپلو ورېښتانو يا د بل چا په ورېښتانو پوري تړي. او پر هغه ښځه هم د خداى لعنت دى چي په ستنو خالونه وهي يا د ستنو په ذريعه دغه كار د نورو ښځو پر ځانو تر سره كوي. دغه راز په صحيح البخاري، كتاب اللباس، باب وصل الشعر (۵۹۳۲) حديث كي دي چي حضرت معاويهس د حج پر مهال پر منبر باندي د وعظ په وخت كي يوې اندازې ورېښتانو ته چي يوه ساتونكي (سرتېري) په لاس كي نيولي وه اشاره وكړه او ويې ويل چي ستاسي علما چيري دي؟ ما له رسول ج څخه اورېدلي دي چي د زينت لپاره يې د دغسي ورېښتانو له استعمالولو څخه منع كول او ويل يې: «إِنَّمَا هَلَكَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ حِينَ اتَّخَذَ هَذِهِ نِسَاؤُهُمْ» «اسرايل هله هلاك سول چي ښځو يې دغه ورېښتان په خپلو ورېښتانو پوري تړل».

د ښځي د ورېښتانو خريل:

ټول علما پر دې باندي يوه خوله دي چي ان په حج کي دي لا ښځه چي ځان له احرامه باسي د سر درېښتان نه خريي، بلکي د ګوتي د يوه بند يا څه زيات په اندازه دي د سر د ورېښتانو څوکي لنډوي. په دې هکله د علماوو فتوا ده:

ويكره لها حلقه بالكلية، وذهب بعض أهل العلم إلى حرمة ذلك، ولذلك ينبغي لمن تعمل في هذا المجال ألا تحلق للنساء شعورهنَّ بالكلية إلا لضرورة، كمرض ونحو ذلك، وكذا لا تحلقه لهنَّ على هيئة التشبه بالكافرات والفاجرات، أو التشبه بالرجال. (فتاوى الشبكة الاسلامية، مركز الفتوى بإشراف د.عبدالله الفقيه، المكتبة الشاملة).

ښځي ته د سر د ورېښتانو ګردسره خريل مکروه دي او ځيني يې حرام بولي. نو کومي ښځي چي په سينګار ځايونو کي کار کوي هغو ته لازمه ده چي بې له اړتيا د ښځو سرونه ونه خريي، خو که د ناروغۍ او داسي بل څه لپاره وي دا بيا بېله خبره ده، همدا راز دي سيګاروونکي ښځي د ښځي سرونه په داسي ډول هم نه خريي چي د کافرو او فاجرو ښځو يا نارينه وو سره يې ورته والى او مشابهت راسي.

د ښځي د ورېښتانو لنډول:

د ښځي د ورېښتانو د لنډولو په هکله صحيح حکمونه په دې ډول دي:

1. د ښځي بچه ګانه سر جوړول يا په داسي ډول د سر ورېښتان کوچني کول چي د نارينه وو او کافرو ښځو د سر سره مشابهت او ورته والى پکښي راځي جواز نه لري او حرام دى. د ښځي په خوښه وي که يې د مېړه په غوښتنه وي. د ښځو د نارينه وو سره د ورته والي يا د نارينه وو د ښځو سره د ورته والي په هکله حديث دى:

عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ لَعَنَ الْمُتَشَبِّهَاتِ مِنْ النِّسَاءِ بِالرِّجَالِ وَالْمُتَشَبِّهِينَ مِنْ الرِّجَالِ بِالنِّسَاءِ. (دغه حديث بخاري او نورو روايت کړى دى).

ژباړه: حضرت ابن عباسب وايي چي رسول الله پر هغو ښځو لعنت ووايه چي ځانونه د نارينه وو سره ورته کوي او همدا راز يې پر هغو نارينه وو لعنت ووايه چي ځانونه د ښځو سره مشابه کوي.

دغه راز فقهي حکم دى:

قَطَعَتْ شَعْرَ رَأْسِهَا أَثِمَتْ وَلُعِنَتْ زَادَ فِي الْبَزَّازِيَّةِ وَإِنْ بِإِذْنِ الزَّوْجِ لِأَنَّهُ لَا طَاعَةَ لِمَخْلُوقٍ فِي مَعْصِيَةِ الْخَالِقِ، وَلِذَا يَحْرُمُ عَلَى الرَّجُلِ قَطْعُ لِحْيَتِهِ، وَالْمَعْنَى الْمُؤَثِّرُ التَّشَبُّهُ بِالرِّجَالِ ا هـ. (د ردالمحتار د ٥/ ٢٨٨ مخ پر حاشيه باندي درالمختار).

د کفارو سره د مشابهت او ورته والي په هکله رسول الله ج فرمايي:

«مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ» «دغه حديث احمد او ابوداود روايت کړي دي او علامه الباني صحيح بللى دى».

ژباړه: څوک چي ځان د يوه قوم سره ورته او مشابه کوي، هغه له هغو څخه دى.

دغه راز حضرت رسول اکرم ج فرمايي:

«لَيْسَ مِنَّا مَنْ تَشَبَّهَ بِغَيْرِنَا لَا تَشَبَّهُوا بِالْيَهُودِ وَلَا بِالنَّصَارَى» «دغه حديث ترمذي روايت کړى دى او د هغه اسناد يې ضعيف بللي دي، خو علامه الباني په السلسلة الصحيحة مختصرة او نورو کي ويلي دي چي دغه حديث د هغه د شواهدو له مخي صحيح دى».

د حديث ژباړه: څوک چي له موږ پرته د نورو سره ځان مشابه کړي، هغه زموږ څخه نه دى او د يهودو او عېسويانو سره ځانونه مه مشابه کوئ.

1. د ورېښتانو په يوه اندازه داسي لنډول او اخيستل چي د اوږو تر لاندنۍ برخي ورسيږي پروا نه کوي، خو چي د کفارو سره د مشابهت او ورته والي خبره نه وي. په دې هکله دغه فتوا ده.

أما قص الشعر للسيدة فليس هناك ما يمنعه شرعا، فقد كان أزواج النبى صلى الله عليه وسلم يأخذن من شعر رءوسهن حتى تكون كالوفرة، كما رواه مسلم. والوفرة ما قصر عن اللمة أو طال عنها، واللمة ما يلم من الشعر بالمنكبين كما قاله الأصمعى. [ هناك خلاف فى تحديد معنى الوفرة واللمة والجمة موجود فى «نيل الأوطار» ج 1 ص 137 وثلاثيات أحمد ج 2 ص 207 ] وقد قصر أزواج النبى صلى الله عليه وسلم من شعورهن بعد وفاته، لتركهن التزين واستغنائهن عن تطويل الشعر وتخفيفا لمئونة رءوسهن كما قاله القاضى عياض وغيره، ولم يكن ذلك فى حياته (فتاوى الازهر، مفتي عطيه صقر، المكتبة الشاملة).

د پورته مطلب لنډون دادى چي که ښځه د خپل سر ورېښتان دونه لنډ کړي چي تر اوږو پوري يې رسيږي پروا نه کوي، ځکه چي د حضرت رسول الله ج مېرمنو د هغه تر وفات وروسته خپل ورېښتان په دغه اندازه لنډول.

1. د ځينو ورېښتانو لنډول او د ځينو ورېښتانو پرېښوول هم جواز نه لري. او دې ته په عربي کي«القزع» وايي چي د منعي په هکله يې د رسول الله ج صحيح حديث راغلى دى او حکم يې نارينه وو او ښځو ته عام دى. او د قزع په منع کي دليل او حکمت دادى چي ويل سوي دي چي دا د مشرکسنو او يهودو کار دى او يا دا چي يه دې سره د لوى څښتن خلقت بد رنګه کيږي.

د قزع د منعي په هکله حديث دادى:

عَنْ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ الْقَزَعِ (صحيح البخاري).

ژباړه: حضرت عمرس وايي چي رسول الله د ځينو ورېښتانو له لنډولو يا خريلو او د ځينو د پرېښوولو څخه منع وفرمايل.

په دې هکله فقهي فتوا ده:

واما قصّ بعضه وترك بعضه فهذا لا يجوز، وهذا القزع الذي صح عنه النهي من النبي عليه الصلاة والسلام كما في صحيح البخاري وغيره (فتاوى الشيخ عبدالكريم، المكتبة الشاملة).

يعني د ځينو ورېښتانو لنډول او د ځينو پرېښوول جواز نه لري او دا د قزع په نامه هغه کار دى چي منع يې له رسول ج څخه په صحت رسېدلې ده. او په دې هکله په صحيح البخاري او نورو کي حديث راغى دى.

1. د ښځي د شا دخوا ورېښتان لنډول او د بغلو د خوا دا اوږده پرېښوول هم جواز نه لري، ځکه چي په دې کي بدرنګي راځي او عبث کار دى.

همدا شان په دې کي د کافرانو سره مشابهت هم دى او په سر کي د نر وي که د ښـځي د کافرانو سره مشابهت حرام دى. په دې هکله د د سعودي عربستان د نامتو عالم شيخ الفوزان فتوا په دې ډول ده:

لا يجوز للمرأة أن تقص شعر رأسها من الخلف وتترك جوانبه أطول؛ لأن هذا فيه تشويه وعبث بشعرها الذي هو من جمالها، وفيه أيضًا تشبه بالكافرات، وكذا قصه على أشكال مختلفة وبأسماء كافرات أو حيوانات؛ كقصة (ديانا) اسم لامرأة كافرة، أو قصة (الأسد)، أو (الفأر)؛ لأنه يحرم التشبه بالكفار والتشبه بالحيوانات، ولما في ذلك من العبث بشعر المرأة الذي هو من جمالها.

يعني ښځي ته روا نه ده چي د خپل سر ورېښتان د شا لخوا لنډ کړي او د دواړو بغلو لخوا يې تر هغو اوږده پرېږدي، ځکه چي په دې کي د ښايست بد رنګي راځي او خوشي عبث کار دى. دغه راز په دې کي د کافرو ښځو سره ورته والى هم راځي. همدا شان په بېلو بېلو بڼو د سر ورېښتان لنډول او د کافرو ښځو، لکه د مشهوري کافري ډيا نا د سر په تقليد د سر د ورېښتانو لنډول يا يې په هغه ډول لنډول چي د زمري او موږک په نامه ياديږي هم جواز نه لري.ځکه چي د کفارو او څارويو سره ورته والى حرام دى

1. «تېري نام» د يوه هندي فلم د هلک يا د «ډيانا» نومي مشهوري کافري ښځي غوندي سر لنډول او جوړول د کفارو پېښې او د هغو سره ورته والى دى چي حرام بلل سوى دى. (په دې هکله پورته فتوا وګورئ).
2. که ضرورت وي لکه چي په سر کي ټپ وي او د هغه د درملني لپاره د ښځي د سر د ورېښتانو لنډولو يا خريلو ته اړتيا وي، نو د حاجت په اندازه يې لنډول يا خريل جواز لري. په دې هکله لاندي فتوا ته پام وکړئ:

هل يجوز للمرأة شرعا أن تقص شعرها؟

فأجابت اللجنة: لا يجوز لها أن تقص أو تحلق شعر حواجبها أو شعر رأسها إلا لضرورة تدعو إلى ذلك كعلاج جروح بالرأس أو الحاجب يتوقف علاجها على قص الشعر أو بعضه فيجوز ذلك بقدر الحاجة. اهـ وقال الأثرم: سمعت أبا عبد الله [أحمد بن حنبل ] يُسأل عن المرأة تعجز عن شعرها وعن معالجته أتأخذ على حديث ميمونة؟ قال: لأي شيء تأخذه؟ قيل له: لا تقدر على الدَّهْنِ وَمَا يُصْلِحُهُ وتقع فيه الدواب. قال: إن كان لضرورة فأرجو ألا يكون به بأس.

وقال شيخنا الشيخ ابن عثيمين/: المشروع أن المرأة تبقي رأسها على ما كان عليه، ولا تخرج عن عادة أهل بلدها.

وإذا أمَر الزوج بِترك الشعر وعدم قصِّه فليس للمرأة أن تُخالِفه ؛ لأن له حقّ في ذلك (الفتاوى العامة للشيخ عبدالرحمن السحيم المكتبة الشاملة).

د پورته مطلب خلاصه داده: که د ښځي په سر يا ورځو کي ټپونه وي، او د هغو علاج د ټولو ورېښتانو يا ځينو په پرې کولو يا خريلو کيږي نو دا کار د ضرورت په اندازه روا دى. او د سعودي عربستان نامتو عالم شيخ ابن عثيمين ويلي دي چي مشروع داده چي ښځه د خپل سر ورېښتان لکه څنګه چي دي هغسي پرېږدي او د خپلي سيمي د دود سره مخالفت ونه کړي. او که خاوند خپلي مېرمني ته د ورېښتانو د پرېښوولو او نه لنډولو امر وکړي نو ښځه يې د مخالفت حق نه لري.

دغه راز په عالمګيري کي وايي:

وَلَوْ حَلَقَتْ الْمَرْأَةُ رَأْسَهَا فَإِنْ فَعَلَتْ لِوَجَعٍ أَصَابَهَا لَا بَأْسَ بِهِ وَإِنْ فَعَلَتْ ذلك تَشَبُّهًا بِالرَّجُلِ فَهُوَ مَكْرُوهٌ كَذَا في الْكُبْرَى.

يعني: که ښځه خپل سر د کوم درد له امله وخريي پروا نه کوي او که دا کار   
د نارينه سره د ورته والي له امله وکړي، نو دا مکروه دى.

1. د ښځي د پېکي ورېښتان اوږدول يا لنډولو او جوړول که د کافرو او ملحدو ښځو سره د ورته والي لپاره وي حرام دي، که نه پروا نه کوي. په دې هکله لاندي فتوا ته پام وکړئ:

ما حكم القصة التي يستعملها بعض النساء وهي قص الشعر من فوق الجبهة وجعل خصلات منه تتدلى عليها؟

الجواب: الحمد لله.إذا كان الغرض من القصة التشبه بنساء الكافرين والملحدين فهي حرام ؛ لأن التشبه بغير المسلمين حرام لقوله صلى الله عليه وسلم: (من تشبه بقوم فهو منهم) وأما إذا لم يكن القصد منها التشبه وإنما هي عادة من العادات المستحدثة بين النساء فإذا كان فيها ما يعتبر زينة يمكن أن تتزين بها لزوجها وتظهر بها أمام أترابها في مظهر يرفع من قدرها عندهن فلا يظهر لنا باس بها (فتاوى اللجنة الدائمة للإفتاء ج/3 ص 881 المكتبة الشاملة).

مطلب دا چي که د ښځي د مخ د پېکي د ورېښتانو لنډول د کافرو او ملحدو ښځو د مشابهت په موخه نه وي او د خپل مېړه او د خپلو همزولو په مخ کي د ښه ايسېدو لپاره وي روا باله سي.

د ښځي د سر د ورېښتانو توني کول:

د ښځي سر توني کول که د کفارو سره د مشابهت خبره پکښي نه وي او نامحرمو نارينه وو ته يې نه ښکاره کوي مباح کار دى. د لږي مودې لپاره يې توني کوي که د ډېري مودې لپاره. په دې هکله د سعودي عربستان د نامتو عالم شيخ الفوزان فتوا په دې ډول ده:

يباح للمرأة تجعيد شعرها على وجه ليس فيه تشبه بالكافرات، ولا تظهره للرجال غير المحارم. يعني ښځي ته د سر د ورېښتانو توني کول په داسي توګه چي د کافرو ښځو سره مشابهت پکښي نه او نامحرمو نارينه وو ته يې ښکاره نه کړي روا دى.

له تورو ورېښتانو څخه د سپينو ورېښتانو ايسته کول:

د نارينه او ښځي د سر، ږيري، برېتونو، ورځو او باړخو له تورو ورېښتانو څخه د سپينو ورېښتانو اخيستل او ايسته کول چي د جهاد او دښمن د بېرولو لپاره نه وي، مکروه دي. په دې هکله صحيح حديث دى:

أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ نَتْفِ الشَّيْبِ وَقَالَ: «إِنَّهُ نُورُ الْمُسْلِمِ» (سنن الترمذي). يعني پيغمبر ج له تورو ورېښتانو څخه د سپينو ورېښتانو له ايسته کولو څخه منع کړې ده او ويلي يې دي چي سپين ورېـتان د مسلمان نور دى.

بل صحيح حديث دى:

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَنْتِفُوا الشَّيْبَ فَإِنَّهُ نُورُ الْمُسْلِمِ مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَشِيبُ شَيْبَةً فِي الْإِسْلَامِ إِلَّا كُتِبَ لَهُ بِهَا حَسَنَةٌ وَرُفِعَ بِهَا دَرَجَةً أَوْ حُطَّ عَنْهُ بِهَا خَطِيئَةٌ» (دغه حديث احمد او ابو داود روايت کړى دى او الباني حسن بللى دى).

ژباړه: له تورو ورېښتانو څخه سپين ورېښتان مه ايسته کوئ، ځکه چي دا د مسلمان نور باله سي. څوک چي په اسلام کي سپين ږېرى سي لوى څښتن د هغه په سبب نېکي ورته ليکي، درجه يې لوړه کړي او يا يې خطا ور وبخښي.

امام نووي وايي چي که وويل سي چي له تورو ورېښتانو څخه د سپينو ورېښتانو اخيستل د رسول الله ج د صرېح منعي له امله حرام دي څه ليري خبره نه ده. ابن عربي وايي چي دغه منع د دې لپاره ده چي د خداى په خلقت کي تغير او بدلون راځي.

پر مراقي الفلاح باندي د طحطاوي په حاشيه کي وايي چي امام ابوحنيفة/ د سپينو ورېښتانو ايسته کول چي د تزئين لپاره نه وي، مکروه نه ګڼل.خو دا ښايي چي د لږو ورېښتانو په هکله به وه. اما د ډېرو ايسته کول (د پورته ياد سوي حديث) په سبب مکروه دى. په (الدين الخالص او ارشاد) نومي کتاب کي وايي: «نتف الشيب: هو مكروه عند الأئمة الأربعة والجمهور». (وګورئ الفقه الاسلامي وادلته، فتاوى الهنديه، حاشية الطحطاوي على مراقي الفلاح او الاسئلة واجوبة الفقهية کتاب، المکتبة الشاملة).

د ښځي د سر د ورېښتانو په ډول ډول ډېزانونو جوړول:

که ښځه د سر ورېښتان پرې نه کړي او په مختلفو ډېزاينونو او فېشن سره يې جوړ کړي پروا نه کوي. البته په دې کي دې خبرو ته پاملرنه په هر حال ضروري ده:

په دې کي بايد د کافرو او فاسقو ښځو سره د مشابهت خبره نه وي.

يوازي د ځان يا د مېړه د زړه د خوشالولو لپاره وي.

دونه وخت پر ضايع نه سي چي په نورو ضروري چارو کي ځنډ راسي.

(خواتين کے لئے جديد مسائل ٨٥ مخ)

د ورېښتانو د ودي او زياتوب لپاره د هغو څوکي پرې کول:

د ځينو ښځو د ورېښتانو څوکي پر دوو درو برخو چاودلي وي چي له امله يې د ورېښتانو وده ودريږي. که د دغو ورېښتانو سرونه پرې سي، نو ورېښتان بېرته وده کوي او اوږديږي. نو په دې صورت کي د ورېښتانو د سمون او ودي لپاره د هغو د سرونو معمولي پرې کول بې له څه شبهې جواز لري. خو که په پوره توګه ورېښتان اوږده سوي وي، نو د زياتو اوږدېدو لپاره يې د پرې کولو اجازه نسته.

(خواتين کے لئے جديد مسائل ٨٥ مخ، د فتاوى رحيميه د ١٠/١٢٠ مخ په حواله)

د ښځي سر عورت دى:

د ښځي سر او د سر ورېښتان عورت دي او د ورېښتانو پټول او ستر يې واجب باله سي. داچي نن مهال په اسلامي هيوادونو کي، په تېره پر ګران هيواد افغانستان باندي د نړۍ د منفور قدرت امريکې او نورو د اشغال سره افغاني ښځي بې ستره لڅ مخونه او سر تور سرونه په بازارونو او نورو ځايونو کي ليدل کيږي دا له ډېرو بدو کارونو څخه باله سي. په دې هکله د رسول اللهج حديث دى:

«نِسَاءٌ كَاسِيَاتٌ عَارِيَاتٌ مَائِلَاتٌ مُمِيلَاتٌ لَا يَدْخُلْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يَجِدْنَ رِيحَهَا وَرِيحُهَا يُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ خَمْسِ مِائَةِ عَامٍ» (صحيح مسلم او نور).

ژباړه: داسي ښځي به وي چي د کالو اغوستلو سره سره به لڅي وي او داسي ښځي به وي چي خپله به هم بدو چارو ته مايلي وي او خلک به هم ځان ته او ناوړو چارو ته مايل کوي. دغه ښځي نه جنت ته ننوتلاى سي او نه به يې خوشبويي ور ورسيږي. په داسي حال کي چي د جنت خوشبويي د پنځو سوو کالو د سفر په ليري فاصله هم ځي.

د ورځو جوړول او د مخ او لاسونو او پنډيو ورېښتان ايسته کول:

د ورځو د ورېښتانو اخيستل او د هغو نرۍ کول او جوړول په هره وسيله چي وي حرام کار او کبيره ګناه ده، ځکه چي په دې کي د لوى څښتن د خلقت بدلون راځي او څوک چي د لوى څښتن په خلقت کي بدلون راولي د شيطان په خوله کوي. او پر ترسره کوونکي يې او پر هغه چا چي د بلي ښځي ورځي جوړوي د رسول الله ج لخوا لعنت ويل سوى دى.

په دي هکله قرآن کريم د شيطان خبره داسي راوړي:

﴿وَلَأٓمُرَنَّهُمۡ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلۡقَ ٱللَّهِۚ﴾ [النساء: 119].

ژباړه: «او زه به هغو ته امر وکړم او هغوى به زما په امر د خداى په خلقت او پيدايښت کي بدلون راولي».

د يادولو وړ ده چي که د ښځي پر مخ باندي د ږيري او برېتو پر ځاى دونه ورېښتان راغلي وي چي د ښځي مخ بد ايسوي، يا يې پر پنډيو او لاسونو باندي ورېښتان راغلي وي ښځي ته يې ايسته کول روا، بلکي مستحب دي.خو د مخ د لږو او عادي ورېښتانو ايسته کول جواز نه لري. (وګورئ په المکتبة الشاملة کي د شيخ ابن باز او شيخ فوزان او د فتوا لپاره د دايمي ټولني فتواوي)

شنه خالونه د بدن پر بېلو بېلو ځايونو وهل:

زموږ د هيواد په ځينو اطرافي سيمو کي په تېره په کوچيانو کي له ډېر پخوا څخه د ښځي پر تندي، زنه او باړخو ګانو او د بدن پر نورو برخو او د نارينه وو پر لاسونو او د پښو پر ځينو برخو باندي شنه خالونه وهي. د دې خالونو د وهلو ترتيب داسي دى چي د بدن پر هغه ځاى باندي چي خال وهي ستني ووهي او ويني په راوباسي. بيا پر دغه ټپ باندي رانجه يا اهاک واچوي او کله چي جوړ سي، نو شين خال وګرځي. خو له څه مودې څخه بيا خبره داسي سوې ده چي ځينو کسانو چي دغه خالونه په کوچني والي يا په پخوا وختونو کي وهلي وي اوس په شرميږي او په ډول ډول لارو چارو يې بېرته ايسته کوي.

له شرعي پلوه د دغو خالونو وهل ښځي او نارينه دواړو ته حرام او کبيره ګناه ده او رسول الله ج يې پر وهونکي او پر هغه چا چي دغه خالونه د بل چا پر بدن وهي لعنت ويلي دى، لکه چي حديث دى:

عَنْ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: لَعَنَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْوَاصِلَةَ وَالْمُسْتَوْصِلَةَ وَالْوَاشِمَةَ وَالْمُسْتَوْشِمَةَ (صحيح البخاري).

ژباړه: حضرت عبدالله بن عمرب وايي چي پيغمبر ج په سر باندي د ورېښتانو د نښلوونکي ښځي او پر هغي ښځي باندي چي د بلي ښځي په سر پوري ورېښتان نښلوي او پر هغي ښځي چي پر بدن خالونه وهي او پر هغي چي د بلي ښځي پر بدن خالونه وهي لعنت ويلى دى.

دا ځکه چي په دې سره د لوى څښتن په خلقت کي بدلون راځي او د خال پر ځاى باندي د نجسي ويني د درېدو له امله د خال ځاى نجس کيږي. نو که کوم نارينه يا ښځي دغسي خالونه وهلي وي او ايسته کېده يې بې له ضرره او بې له زياته عيبه ممکن وي استه دې کړې او توبه دي پر وکاږي خو که يې مخ يا بل ځاى ته ډېر ضرر رسوي استه کېده يې واجب نه دي. په دې هکله د فقهي حکم دادى:

والوشم والنمص والتفليج حرام على الرجال والنساء، الفاعل والمفعول به، لورود اللعن عليه، مما يدل على تحريمه. ويصبح موضع الوشم متنجساً لانحباس الدم فيه، فإن أمكن إزالته بالعلاج وجب، وإن لم يمكن إلا بالجرح، فإن خيف منه الضرر أو العيب الفاحش في عضو ظاهر كالوجه والكفين، لم تجب إزالته، وتجب التوبة منه، وإن لم يكن ضرر، لزم إزالته. (الفقه الاسلامي وادلته)

ژباړه: خالونه وهل، د ورځو او د مخ ورېښتان کښل او د غاښونو نري کول پر نارينه وو او ښځو دواړو حرام دي او پر هغو هم حرام دي چي نورو ته يې تر سره کوي. ځکه چي د دې کارونو پر ترسره کوونکو باندي لعنت ويل سوى دى. او دخال ځاى د نجسي ويني له امله نجس سي که يې په علاج سره له منځه تله کېداى سي، له منځه وړل يې واجب باله سي او که د بدن په ظاهري غړي کي لکه په مخ او لاسونو کي د ضرر يا فاحش عيب بېره وي له منځه وړل يې نه لازميږي. بلکي پر دې کار باندي دي توبه وکاږي.

د غاښونو کوچني کول او داسي جوړول چي سره جلا جلا سي:

ځيني ښځي او نارينه د ښکلا د زياتوب لپاره او ځيني زړې ښځي او زاړه نارينه د دې لپاره چي ځوان وايسي خپل ځيني غاښونه د غاښو په ډاکټرانو نري او کوچني کوي او يا يې د ښه ايسېدو لپاره په يوه اندازه داسي جوړوي چي سره جلا جلا سي چي دا کار هم د غاښو خاوند ته او هم ډاکټر ته حرام دى: ځکه چي دا عبث کار دى او په دې سره د لوى څښتن په خلقت کي تغير او بدلون راځي. په دې هکله صحيح حديث دى:

عَنْ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَلْعَنُ الْمُتَنَمِّصَاتِ وَالْمُتَفَلِّجَاتِ وَالْمُوتَشِمَاتِ اللَّاتِي يُغَيِّرْنَ خَلْقَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ (سنن النسائي).

ژباړه: حضرت عبدالله بن مسعودس ويلي دي چي ما له رسول الله ج څخه اورېدلي دي چي پر هغو ښځو يې لعنت وايه چي د ورځو او مخ ورېښتان ايسته کوي او خپل غاښونه د ښايست لپاره داسي جوړوي چي سره جلا جلا سي او پر بدن خالونه وهي او د خداى خلقت ته تغير ورکوي.

اما که په غاښونو کي علت او ضرر وي او بد ايسي او اصلاح او علاج ته يې اړتيا وي يا خواړه سم نه سي په خوړلاى، نو علاج يې پروا نه کوي. دغه راز که د غاښو سره اضافي غاښ را شين سوى وى يا کوم غاښ دونه اوږد وي چي د خورک په وخت کي اذيت کوي، نو کښل يې پروا نه کوي. په دې هکله فقهي فتواوي په دې ډول دي:

سئل الشيخ صالح الفوزان عن تقويم الأسنان فقال: إذا احتيج إلى هذا كأن يكون في الأسنان تشويه واحتيج إلى إصلاحها فهذا لا بأس به، أما إذا لم يُحتج إلى هذا فهو لا يجوز، بل جاء النهي عن وشر الأسنان وتفليجها للحسن وجاء الوعيد على ذلك لأن هذا من العبث ومن تغيير خلق الله.ولا يجوز التفليج ولا الوشر للنهي عنه.

أما إذا كان هذا لعلاج مثلاً أو لإزالة تشويه أولحاجة لذلك كأن لا يتمكن الإنسان من الأكل إلا بإصلاح الأسنان وتعديلها فلا بأس بذلك.أما إزالة الأسنان الزائدة فقال الشيخ ابن جبرين: لا بأس بخلع السن الزائد لأنه يشوه المنظر ويضيق منه الإنسان...، ولا يجوز التفليج ولا الوشر للنهي عنه.

انظر كتاب فتاوى المرأة المسلمة ج/1 ص/477.

غاښونو ته د سرو يا سپينو زرو پوښ ورکول:

د ځينو خلکو غاښونه ښوري او يا ووزي. بيا د هغو ښورېدونکو غاښونو ته ډاکټران د سرو يا سپينو زرو يا نورو موادو پوښونه ورکوي او د وتلو غاښونو پرځاى د سرو يا سپينو زرو غاښونه ور ايږدي او د ځينو خلکو غاښونه د سرو زرو په سيم ور تړي. څنګه چي دا ضرورت دى، نو شرعاً ښځي او نارينه دواړو ته روا کار دى، اما بې له اړتيا د نارينه وو غاښونو ته د سرو زرو پوښ ورکول يا د سرو زرو غاښونه ايښوول چي د ښکلا او وياړ او داسي نورو لپاره وي جواز نه لري. ځکه چي نارينه د سرو زرو له استعمال څخه منع سوي دي. او څنګه چي د اوداسه پر مهال د دغسي غاښونو په ايسته کولو کي حرج دى، نو حرج شرعاً مدفوع دى. له دې امله د هغو له ايسته کولو پرته اودس او غسل صحيح دى. (خواتين کے لئے جديد مسائل، ٩٧ مخ د امداد المفتيين په حواله او نور).

په دې هکله د فتاواوو عبارتونه په دې ډول دي:

فلا حرج في تركيب أسنان صناعية للضرورة، والحاجة الصحية، كمن سقطت أو تلفت أسنانه أو بعضها؛ لأن ذلك من باب العلاج وإزالة العيب المأذون فيه شرعاً، إذا لم يترتب عليه ضرر.

ولا خلاف - فيما نعلم - في جواز اتخاذ السن من أي مادة كانت، وإنما اختلف العلماء في اتخاذ السن من الذهب؛ فأجازه الجمهور؛ قياساً على الأنف واحتجوا بحديث عَرْفَجَة بن أسعد - رضي الله عنه - قال: «أصيب أنفي يوم الكُلَاب في الجاهلية، فاتخذتُ أنفًا من وَرِقٍ، فأنتن عليَّ، فأمرني رسول الله - صلى الله عليه وسلم - أن أتخذ أنفًا من ذهب» ؛ رواه الترمذي والنسائي وأبو داود، والسن في معنى الأنف.

قال الكاساني في «بدائع الصنائع» : «وأما شد السن المتحرك بالذهب، فقد ذكر الكرخي - رحمه الله - أنه يجوز، ولم يذكر خلافاً.

وذُكر في الجامع الصغير أنه يكره عند أبي حنيفة، وعند محمد لا يُكره، ولو شدها بالفضة، لا يُكره بالإجماع» (فتاوى الموقع الالوكة، المكتبة الشاملة).

يجوز اتّخاذ السّنّ من الذّهب عند الجمهور قياساً على الأنف، لأنّ «عرفجة بن أسعد قطع أنفه يوم وقعة كلابٍ فاتّخذ أنفاً من فضّةٍ فأنتن فأمره النّبيّ صلى الله عليه وسلم باتّخاذ أنفٍ من ذهبٍ...» فعلم أنّ كلّ ما دعت إليه الضّرورة يجوز استعماله من الذّهب، وإلى ذلك ذهب المالكيّة والحنابلة. وقال الشّافعيّة: يجوز وإن أمكن اتّخاذه من فضّةٍ.

وذهب أبو حنيفة إلى المنع وقال: إنّ الأصل في الذّهب تحريمه على الرّجال والإباحة للضّرورة، وقد اندفعت بالفضّة وهي الأدنى فيبقى الذّهب على التّحريم. غير أنّ محمّد بن الحسن من الحنفيّة وافق الجمهور وكذلك أبو يوسف في قولٍ.

(موسوعة فقه العبادات، المكتبة الشاملة).

د نوكانو اوږدول او رنګول:

د احاديثو په كتابونو كي د رسول ج مشهور حديث دى چي د نوكانو اخيستل د اسلامي فطرت له سننو څخه دى. يعني دا له هغو سننو څخه يو لرغوني سنت دى چي لوى څښتنأ د انبياوو† لپاره غوره كړي، ټول شرايع پر هغو متفق وه او موږ ته يې د هغو په ترسره كولو كي په هغو پسي د اقتدا امر كړى دى. نو له دې امله د نوكانو اوږدول د سنتو خلاف كار باله سي. په هره اوونۍ كي يوه پلا د نوكانو پرې كول او د بغل او تر نامه لاندي ورېښتانو اخيستل مستحب دي. د جمعې ورځ د دې كارونو لپاره افضله ده. په پنځلسو ورځو كي هم جايز دي، خو تر څلوېښتو شپو زيات پرېښوول يې مكروه تحريمي دي. (عمدة المناسك ۲۰۴ مخ د درمختار د ۵/ ۲۸۸ مخ په حواله). د فتاوى علماء البلد الحرام په ۵۸۸ مخ كي وايي چي د نوكانو اوږدول د څارويو او ځينو كفارو سره مشابهت او ورته والى دى.

نوكان د انسان د وجود ډېر مهم جز باله سي.په ډېرو مواردو كي كار ځني اخيستل كيږي او د انسان په تېره د ښځينه وو د ښكلا يوه غوره ذريعه ده. له دې امله بايد د هغو ډېره ښه ساتنه وسي. ځكه د نوكانو ناجوړي د بدن د عمومي روغتيا د خرابۍ لامل جوړېداى سي. نوكان بايد له زخمي كولو او ګرږلو څخه په ټينګه وساتئ. كه كوم كېمياوي مواد استعمالوئ يا كالي يا لوښي مينځئ نو بايد ربړي دسكلې په لاس كړئ. كه مو نوكان ګرږل سوي يا كمزوري سوي وي د زيتونو او شړشمو غوړي سره ګډ كړئ، څه هوږه ور واچوئ پاخه يې كړئ. بيا چي ساړه سول بوتل ته يې واچوئ، له كاره تر وزګارېدو وروسته لاسونه ښه پرېولئ او لاسونه او نوكان دواړه ښه په وموږئ او دا كار څو واره تر سره كړئ. نوكان د ښكلا لپاره په توږلو او شيپ وركولو مه كمزوري كوئ. د نوكانو درنګ (Nail Polish) يا (Enamel) استعمال د نوكانو سطح وچوي او رنګ جذبوي چي له دې امله بيا د هغو طبيعي رنګ خراب سي او يو ډول پيكه ښكاري. د رنګ د پاكولو تېز كېمياوي مواد (Remover) خو يې بيا بېخي خرابوي.

وايي چي پر نوكانو د رنګونو وهلو دود هم لومړى مصريانو رامنځته كړ. د مصر په ډېر ښايست نامتو ملكې كلوپاترا او د هغې مينځو به ساده او بې ضرره رنګونه استعمالو ل. خو نن مهال فيشني ښځي خپل نوكان په ډول ډول كېمياوي رنګونو ښكلي كوي. په دې رنګونو كي ځيني داسي تېز كېمياوي مواد ګډ وي چي پر حساس جلد ډېر بد لګيږي.

له ديني نظره يې د فتاواوو په كتابونو كي د نوكانو نه رنګول اولٰى يعني ښه كار بللى دى او ويلي يې دي چي د اوداسه تازه كولو پر مهال يې ايسته كول او زايلول لازم دي. ځكه دغه رنګ نوك ته د اوبو له رسېدو څخه ممانعت كوي او په اوداسه كي نوكانو ته د اوبو رسول اړين دي. د اوداسه پر غړو له رشتيانۍ اړتيا پرته د داسي شي نښلول او لګول چي اوبه ورپرې نه ږدي د اوداسه د صحت مخه نيسي. او لكه چي پوهيږو د ښځو لخوا پر نوكانو رنګ وهل د اړتيا لپاره نه بلكي د ښكلا لپاره دي. نو له درنو خوندو څخه هيله كيږي چي د نوكانو له اوږدولو او رنګولو څخه تېري سي. په دې هكله په فتاوى عالمګيري (۴) مخ، او جديد فقهي مسائل ۱/ ۲۳مخ كي هم څرګندوني سوي دي

د ښځو لخوا عطرونه وهل:

د ښځو د عطرونو وهلو په هكله رسول ج فرمايي:

«كُلُّ عَيْنٍ زَانِيَةٌ وَالْمَرْأَةُ إِذَا اسْتَعْطَرَتْ فَمَرَّتْ بِالْمَجْلِسِ فَهِيَ كَذَا وَكَذَا يَعْنِي زَانِيَةً» (رواه ابوداود والترمذي وقال حديث صحيح). يعني: په بدو كتونكې هره سترګه زنا كاره ده. او كومه ښځه چي عطر ووهي او (د نارينه وو) مجلس ته نژدې تېره سي داسي او داسي ده، يعني زنا كاره ده.

د پورتنيو خبرو په پاى کي بايد ووايو چي د ښځو د ورېښتانو او د هغي د بدن د نورو غړو د سينګار په هکله مسايل خورا ډېر دي، خو دغه کتاب پر هغو ټولو باندي د بحث کولو حوصله نه لري، ځکه نو موږ په دې هکله خپلي خبري همدلته پاى ته رسوو. خو نارينه وو، ښځو، ډاکټرانو او په سينګار ځايونو کي بوختو ښځو ته توصيه کوو چي د سينګار او د سينګار د شيانو د استعمال او په سينګار پوري د اړوندو ځينو کارونو په هکله له جيدو اسلامي عالمانو څخه وخت په وخت پوښتني وکړي، په دې هکله شرعي احکام ځان ته معلوم کړي او له هغو کارونو څخه چي کتاب او شريعت يې د تر سره کولو اجازه نه ورکوي، له تر سره کولو څخه ډډه وکړي. دغه راز زموږ سوداګرو ته توصيه کوو چي روغتيا ته ضرري شيان او هغه شيان چي استعمال يې د شريعت له مخي ښه نه دى هيواد ته وارد نه کړي او حکومت هم په دې هکله وخت په وخت څارنه وکړي او متخلفينو ته شرعي جزاوي ورکړي.

له امريكا او نورو كفري هيوادونو څخه راوړل سوي غوښي

لكه چي څرګنده ده اوسمهال د افغانستان په بازارونو كي له امريكا او نورو كفري هيوادونو څخه د چرګانو، غويو او پسونو راوړل سوي غوښي او همدارنګه په بندو دبليو كي ډول ډول پخې غوښي خرڅيږي.

دغه غوښي له شرعي پلوه:

د اسلامي شريعت له مخي د لاندي كسانو ذبيحه حرامه ده بايد ونه خوړل سي: د مشرك او وثني (بت پالونكي). د ملحد چي په هيڅ دين نه وي. د مرتد كه څه هم د اهل كتابو په دين سوى وي او د زنديق (څوك چي په باطن كي كافر وي خو په ايمان تظاهر كوي).

پر دې بنسټ د جاپانيانو، كمونيسټانو او هندوانو ذبيحې حلالي نه دي. (الفقه الاسلامي وادلته۳/ ۶۴۹مخ.

يهود او نصارا د اسلامي شريعت له مخي اهل كتاب دي. د يهودو او نصاراوو ذبح سوى څاروى هله حلال باله سي چي د ذبحي لپاره يې هغه طريقه كارول سوې وي چي اسلام ويلې ده. بل دا چي پر هغه يې په رشتيا د «الله»أ نوم اخيستى وي او د بل چا يا حضرت عزير÷ يا حضرت مسيح÷ نوم يې نه وي پر اخيستى او اهل كتاب په رشتيا اهل كتاب وي.

خو اوس لكه چي ليدل كيږي د امريكا او نورو كفري هيوادونو زياتره خلك كوم چي له لويه سره اهل كتاب اورسماً يهود يا نصرانيان بلل كيږي ملحدان، دهريان او بې دينه سوي دي او مذهب او وحي او آخرت هيڅ نه مني. بلكي په دغسي عقايدو ملنډي وهي. نو د دغسي كسانو د لاس ذبيحه حلاله نه ګڼل كيږي او چي په يقيني توګه جوته نه سي چي ذبيحه د معتقد كتابي په لاس د الله د نامه په اخيستلو او د اسلامي شريعت سره سمه ذبح سوې ده له دغسي ذبايحو څخه احتراز واجب دى.كه ووايو چي دغه څاروي به د دوى دغسي معتقدو مذهبي وګړو ذبح كړي وي نو څنګه چي يهود د عزير÷ د الوهيت (خدايى) او نصارا د عيسٰى÷ د الوهيت قايل دي نو قوي اندېښنه ده چي دوى به د ذبحي پر مهال د خداى د نامه سره د عزير يا مسيح نومونه هم اخيستي وي چي بيا هم ښايي د دغسي غوښو له خوړلو څخه د احتياط له مخي ډډه وسي. (دامداد الفتاوٰى د ۳/ ۵۴۴مخ او جديد فقهي مسائل د ۱/ ۱۳۲مخ څخه په استفاده).

حكيم الامت مولانا اشرف علي تهانوي/ د امداد الفتاوٰى په ۳/ ۵۴۳ مخ كي فرمايي: «د هندو لخوا خرڅه سوې ذبيحه حلاله نه ده كه څه هم هغه ووايي چي دا مسلمان ذبح كړې ده. ځكه چي د كافر خبره په دياناتو كي د منلو وړ نه ده».

په دياناتو لكه حل او حرمت او طهارت او نجاست كي د كافر او د مستور او نامعلوم سړي قول د منلو نه دى (فتاوٰى عالمګيري (۵/ ۳۰۷) مخ).

مولانا خالد سيف الله رحماني د جديد فقهي مسائل په ۱/ ۱۳۳مخ كي وايي: «له اروپا څخه چي كومي غوښي راځي او پر ليكلي وي چي: (په شرعي طريقه حلال سوى دى) د دغسي غوښو د خوړلو ګنجايش سته. البته كه په نورو قراينو او ذرايعو غالب ګومان داوي چي دا يې هسي ليكلي دي خو په حقيقي معنا يې د هغه په حلالولو كي شرعي طريقه نه ده رعايت كړې نو بيا د دغسي غوښو خوړل درست نه دي».

اوس به وګورو چي له امريكا او نورو كفري هيوادونو څخه راوړل سوي غوښي معمولاً څنګه حلالي سوي دي. لكه چي څرګنده ده په اروپايي هيوادونو كي يې له ډېرو پخوا زمانو څخه د څاروي سر غوټ ور پرې كاوه. بيا يې دې چاري ته نوې بڼه وركړه او د ګلوټين يا ګيوټين (Guillotine) په نامه د سر پرې كولو مشين يې اختراع كړ. څاروى به يې ودراوه او له پاسه به يې يوه غټه چاړه پر را كش كړه او د څاروي سر به يې له تنه بېل كړ. بيا يې د څارويو د ذبح كولو بله طريقه رامنځته كړه. د دې طريقې سره سم څاروى پر سر باندي په يوه درانه شي وهي يا پر سر باندي د برېښنا كرنټ وركوي. كله چي څاروى بې سده سي په زنځيرونو يې تړي او د مشين له تېرې چړې څخه يې تېروي او نيمه غاړه يې ورپرې كوي. د «امت مسلمه پر كفار كى مظالم كى دلخراش حالات» په ۱۳۸ مخ كي ليكي: «د جرمني د ميونيخ د ښار يوې سيمه ييزي محكمې هلته پر مسلمانو اوسېدونكو باندي په اسلامي طريقه د څارويو د حلالولو په هكه بنديز لګولى دى او حكم يې كړى چي مسلمانان هم بايد هرو مرو څاروى د برېښنا په كرنټ بې سده كړي».

نو اوس د كفري ملكونو له عمومي حالت څخه دا خبره جوته ده چي په امريكا، اروپا او نورو كفري هيوادونو كي د غوښو د تجارت شركتونه او موسسې زياتره څاروي په دغه ډول ذبح كوي. چي دا بېخي غير اسلامي طريقه ده او د دغسي ذبح سوو څارويو غوښي روغتياته هم مضري دي.

د دغي طريقې له مخي چي د څاروي د بې سده كولو لپاره دماغي ضربه يا د برېښنا جټكه وركوي په هغه كي د دغي جسماني صدمې له امله د هسټامين (Histamine) د پيدا كېدو لامل ګرځي چي په دې سبب د څاروي غوښي ډېري بدرنګه او بد خونده كيږي. لنډه دا چي اوس په امريكا، اروپا او نورو كفري هيوادونو كي د غوښو د كاروبار كمپنۍ څاروي په ماشينانو وژني چي ګردسره د اسلامي شريعت مطابق نه وي. نو تاسي فكر وكړئ چي د دغسي غوښو پركارټنانو او كڅوړو باندي چي ليكلي وي: «مذبوح حلال حسب الشريعة السلامية» (په شرعي طريقه حلالي سوي دي) رښتيا به وي؟ هغه هم د داسي امريكايي او اروپايي كفارو لخوا چي نه خپل دين مني او نه د اسلام دين.

قا ل الله تعالٰى:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِن جَآءَكُمۡ فَاسِقُۢ بِنَبَإٖ فَتَبَيَّنُوٓاْ﴾ [الحجرات: 6].

ژباړه: «اى مومنانو! كه كوم فاسق تاسي ته كوم خبر ووايي نو تاسي د هغه په هكله ښه څېړنه او تحقيق وكړئ».

په پورتني آيت كي په فردي او ټوليزه توګه يو ډېر مهم اصل بيان سوى دى او هغه دادى چي د هر فرد او هر حكومت دا دنده ده چي هغه ته چي كوم خبر يا اطلاع ورسيږي، په تېره د بدو فاسقو او مفسدو وګړو له لوري، نو لومړى بايد هغه ښه وڅېړي.

نوپه دې هكله چي هر څوني څېړني سوي دي يا وسي پايله يې د تفسير مظهري دا قول دى: «ولاشك ان النصارى في هذا الزمان لايذبحون بل يقتلون بالوقد غالباً فلايحل طعامهم» (تفسير مظهري ۳/ ۴۰ مخ). يعني دا حقيقت دى چي د دې مهال عېسويان څاروي نه ذبح كوي بلكي په برېښنايي مشين يې وژني. له دې امله د دوى ذبيحه حلاله نه ده.

دغه راز لوى څښتن فرمايي:

﴿وَلَا تَأۡكُلُواْ مِمَّا لَمۡ يُذۡكَرِ ٱسۡمُ ٱللَّهِ عَلَيۡهِ وَإِنَّهُۥ لَفِسۡقٞۗ وَإِنَّ ٱلشَّيَٰطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰٓ أَوۡلِيَآئِهِمۡ لِيُجَٰدِلُوكُمۡۖ وَإِنۡ أَطَعۡتُمُوهُمۡ إِنَّكُمۡ لَمُشۡرِكُونَ ١٢١﴾ [الأنعام: 121].

ژباړه: «او كو م څاروى چي د لوى څښتن په نامه نه وي ذبح سوى د هغه غوښي مه خورئ، دا كار فسق دى. شيطانان د خپلو ملګرو په زړونو كي شكونه او اعتراضونه اچوي، څو هغوى ستاسي سره شخړه وكړي. خو كه تاسي د هغو اطاعت مانه تاسي به هرومرو مشركان ياست».

په ماشين باندي د دې دونو چرګانو او څارويو د ذبح كولو پر مهال د دې كفارو لخوا د لوى څښتن د نامه يادول كله امكان لري او كله يې يادوي؟

نوښه داده چي د دغسي غوښو له رانيولو او خوړلو څخه احتراز وسي او پر ځاى يې زموږ د خپل هيواد يا د اسلامي هيوادونو د چرګانو، پسو او غويو غوښي استعمال سي. البته كه دولت په رشتيا د خلكو خدمت كوي نو خلك دي د امريكايانو د غير صحي او بې كيفيته غوښو له اړتيا څخه وژغوري او د چرګانو د فارمونو زياتولو او دودولو او د نورو غوښو د محصولاتو ډېرولو ته دي رشتيانۍ توجه وكړي.

د بهر نيو په اصطلاح ذبح سوو چرګانو د غوښو په هكله څه نوري خبري

د كراچي د اووه ورځنۍ مجلې «اخبار جهان» د ۲۰۰۰ع.كال د د سمبر د ۴ ـ۱۰ ګڼي په۶۴ مخ كي د «ككړو خوړو څخه خپرېدونكي مكروبي ناروغۍ» تر سرليك لاندي ليكي:

«بازاري خوركونه زياتره په ځانګړې توګه په مكروبونو ككړ وي. څېړنو جوته كړې ده چي ككړ خواړه د ډول ډول ناروغيو لامل كيږي. په امريكا كي هركال درې لكه تنه د خورك له امله ناروغه كيږي چي روغتونونو ته داخليږي او بيا له هغو څخه پنځه زره تنه مري. د چرګانو په شمول د نورو الوتونكو غوښي زياتره په بكټرياوو ككړي وي. د امريكا د چرګانو پر غوښو تازه څېړنو جوته كړې ده چي د دغه ځاى د چرګانو شپيته فيصده غوښي مكروبي دي. ستونزه داده چي كه خواړه د خوني د تودوښي په درجه كي كښېښوول سي نو بكټرياوي په ډېره تېزي پر راټوليږي. دا هم جوته سوې ده چي كه خواړه په يخچال كي وساتل سي هم مكروبونه اخلي.دغوښو ساتلو ګودامونه (stacks) له دې پلوه نور هم زيات خطرناك وي. ځكه چي د ګودامونو ورونه ډېر خلاصيږي او بنديږي او له دې امله زيات جراثيم ور دننه كيږي».

له پورتنيو څرګندونو څخه موږ اټكلولاى سو چي د كومو په اصطلاح ذبح سوو چرګانو غوښي چي دسمندرونو له هاخوا څخه ترموږ پوري را رسيږي د اوږده واټن نقل وانتقال او د ډېر عمر پر تېرېدو له امله هرو مرو په ډول ډول مكروبونو ككړيږي؛ له خپله اصلي حالته وزي او خامخا خوسا او خرابيږي. چي كېداى سي خوړل يې موږ په ډول ډول مكروبي ناروغيو اخته كړي.

له بله پلوه لكه چي پوهيږو په دې وروستيو كلونو كي په پر له پسې توګه د چرګانو او الوتونكو د ټيغـك يا وبايي والګي (سارس يا انفلونزا) د خپرېدو په هكله خبرونه خپريږي. همدا اوس هم چي د ۱۳۸۵ل.كال د كب مياشت ده د نړۍ په ګوټ ګوټ كي ان زموږ د هيواد په پلازمېنه (مركز) او څو نورو سيمو كي دغه ناروغي په چرګانو كي ليدل سوې ده. څنګه چي دغه ناروغي د چرګانو، مرغانو او د هغو له غوښو او هګيو څخه په انسانانو هم پوري كيږي او د هغه د مړيني لامل ګرځي، نو له دې امله زموږ د حكومت په شمول ډېرو حكومتونو د چرګانو پر غوښو او هګيو واردولو او د هوا د مرغانو پر ښكار او نيولو بنديزونه لګولي دي. نو د دې لپاره چي خداى مه كړه د دغسي مشبوهو، ككړو او غير صحي غوښو د خوړلو له امله په روغتيايي ستونزو اخته نه سو لازمه ده چي پر هغو خپلي حلالي پيسې ور نه كړو او تر خوړلو يې تېر سو.

د ګامېښو او غويو د غوښو روغتيايي تاوانونه

غوښى له روغتيا يي پلوه:

ډاكټران وايي چي غوښي د غذائيت، خوند او جسماني ودي له پلوه په ټولو خوړو کي ځانګړى ځاى لري. د ځينو طبيبانو په اند په ځينو ناروغيو او کمزوريو کي د غوښو خوړل طاقت ورکوي. نو هغه ناروغان چي د غوښو خوړلوته ضرورت لري بايد غوښي وخوري اما د ځينو ناروغانو طبيعتونه چي د غوښو خلاف دي پر هغو باندي لومړې بايد غوښي بندي سي او بيا يې علاج وسي.

لويو لويو ډاکټرانو او حکيمانو په خپلو مستندو کتابونو کي ويلي دي چي غوښي باد ليري کوي، ډېر ژر طاقت ورکوي. د توليد ماده، وينه او وازګه ډېروي. شهوت زياتوي، د احتلام باعث کيږي او بدن چاغوي. خو د دې تر څنګ هغو دا هم ويلي دي چي د غوښو خورک پر دماغ بده اغېزه کوي او خرابوي يې. ځيني طبيبان وايي: د هغو هيوادونو وګړي چي غوښي ډېري خوري جګړه مار او ويني بهوونكي وي، خو دماغي څرنګوالى يې صفر وي. ان يو هندى مسلمان طبيب ادعا كوي: څنګه چي افغانان د نورو هيوادونو تر خلكو ډېري غوښي خوري نو ډېر جګړه مار او بهادران دي او پر ډېره كوچنۍ خبره مشتعل كيږي. يو بل ډاکټر په خپل کتاب کي وايي: هغه څوک چي غوښي ډېري خوري د هغه ميلان د حيواني جذباتو خواته وي او له روحاني برکت څخه لږ برخه ور رسيږي چي په نتيجه کي د هغه پر څېره باندي د نرمۍ او لطافت نوم او نښان نه ليدل کيږي. د اسلام نامتو عالم امام غزالي/ په احياء العلوم كي وايي چي د غوښو پر خوړلو باندي مداومت د زړه قساوت رامنځته كوي.

په يوه بل کتاب کي د غوښو په باره کي داسي ويل سوي دي: عموما د غوښو هر ډول خواړه چي وي د هغو د هضم کولو لپاره لويي معدې او ځګر ته ضرورت پيدا کيږي. دا ډول غوښن خواړه په ډېر مشکل سره هضم کيږي. دغه ډول که د نس خوږ (د معدې زخم) وجود هم ونه لري ورو ورو په کولمو کي د ننه سفر کوي او په دې ډول د کولمو د ننه سفر سست او نيمګړى کړي او د هغو د وران هم کمزورى سي، چي د دغو خوړو د هضمولو لپاره په معده کي زياتو تيزابوته ضرورت وي چي په دې ډول د تيزابي مادې د ترشح څخه په معده کي يو ډول درد پيدا کيږي او دا ډول غوښن خواړه تر دوو درو اوونيو پوري په نس کي دننه پاته کيږي او اغيزه يې جاري وي.

په يوه بل کتاب کي وايې: هغه څوک چي د معدې يا کولمو په ټپ اخته وي هغه بايد لومړى د غوښو د خوړلو څخه پرهيز وکړي.

په بل كتاب كي وايي: د غوښو خوړل د احتلام شكايت رامنځته كوي او د جريان او سرعت انزال ناروغيوته ډېري ضررناكي دي. غوښي د سبو او نورو غوندي په آسانه نه هضميږي. بلكي د غوښو پروټين او غوړزګي د هضمولو پر غړو باندي ډېر فشار راوړي. د غوښو د خوړلو له امله په پوښتورګو كي يو ډول تيزابي ماده چي يورك اسيډ (Uric Acid) نوميږي زياتيږي. چي بيا يې پښتورګي په آسانۍ نه سي خارجولاى. دغه راز غوښي په بدن كي صفرا هم زياتوي. د غوښو له ډېرو خوړلو څخه د مثانې او پښتورګو ناروغۍ رامنځته كيږي او د اينې، پښتورګو، زړه او د بدن د نورو غړو په كار كي نقص رامنځته كيږي. له دې امله بايد غوښي لږ وخوړل سي. په تېره د غټ څاروي غوښي بايد ډېري لږ وخوړل سي ځكه چي دغسي غوښي روغتياته ډېري تاواني دي.

د غوا او ګاميښي غوښي:

د ګاميښي او غوايي غوښي د خپل تاثير له پلوه په ډېرو قوي خوړو کي نه راځي. په دې چي هغه پروټين چي په زياته اندازه د سېرلي، پسه، چرګ او کبانو په غوښو کي سته د غوايي په غوښو کي نسته. او هغه خوند چي په هغو غوښو کي سته په دې غوښو کي نسته.

د غوايي غوښي وچي او ګرمي دي. او ځيني تاوانونه يې په لاندي ډول دي:

خرابه وينه په بدن کي پيداکوي. سودايې ناروغۍ رامنځته کوي. نس غټوي، د مرغړيو او نورو د درد لپاره تاواني دي. په دماغ کي زهر جن مواد ډېروي. د ډېرو خوړو څخه يې ورۍ خرابيږي. په ډېر عمر هضميږي. په دې ډول د غوايي غوښي د روغتيا لپاره ډېري مضري دي.

خو ځيني خلک چي د غوايي غوښي خوري کوښښ دي وکړي چي د کوچني ګيلګي غوښي واخلي او هغه دي يوازي نه پخوي، بلکي يو بل سابه دي ضرور ورسره اچوي. خو ګرمه مساله او مرچک دي ډېر نه وراچوي. په دې چي دغه غوښي پخپله ګرمى دي.

د غوايي د سر او پښو يخني ښوروا ګټوره ده. البته چي په ژمي کي يې په مناسبه اندازه وخورئ. دا د بدن حرارت نورمال ساتي او د نارينتوب ځواک پياوړى کوي. طبيبان وايي: «مرق البقر دواءٌ ولحمه داءٌ» يعني د غوايي د غوښو ښوروا درمل دي خو غوښي يې ناروغي ده.

د ګاميښي غوښي هم ډېري ګرمي او وچي او د غوايي د غوښو په څېر دي. د نازک طبعو، په تېره د علمي، ادبي او ذهني کار کوونکو لپاره تاواني دي. خو د ګاميښي د کټي غوښي دونه تاواني نه دي.

له بهرنيو هيوادونو څخه د غوايي راوړل سوي غوښي:

يوه ډېره بده بدمرغي چي تر ايډز را وروسته د اروپايانو په پېڅه سوې ده د غويو لېونتوب دى. دغه مصيبت په ځانګړي ډول په انګلستان كي ډېر رامنځته سوى دى. دې ناروغۍ ته په انګرېزي Mad Cow Disease (د لېوني غوايي ناروغي) وايي. د Foot & Mouth Disease (د ښونګري او خولې ناروغي) يې هم بولي. خو دا وروستۍ ناروغي څه نوې نه ده. دا يوه بېله او لرغونې ناروغي ده چي په څارويو كي د يو ډول وايرس له تيتېدو څخه رامنځته كيږي. لومړى د څارويو پر پښو او خوله دانې راوخېژي بيا ټپ سي او له دې امله يې شيدې ډېري لږ سي. د دې ناروغۍ درملنه شونې ده. خو د Mad Cow ناروغي بالكل نوې ده، په پخوا وختونو كي هيڅ نه ده ليدل سوې او درملنه يې هيڅ شونې نه ده. د دې ناروغۍ له امله غويى ګردسره لېونى سي. د دېوالونو سره سر وهي. ګردچاپېره ګرځي را ګرځي اوپرانسانانو او څار ويو بريدونه كوي. دغه ناروغي له څارويو څخه انسانانو ته هم لېږدول كيږي. د University of Illinois at Urbana Champaign په اسنادو كي يې د دې ناروغۍ نوم په ميډكل ژبه (Bovine Spongiform Encephalopathy BSE) ايښى دى. په دغو اسنادو كي په څرګنده توګه ليكل سوي دي: بواين سپانجي فارم د څارويو يوه وژونكې ناروغي ده. دا له كومي باكټريا يا وايرس څخه نه بلكي د يوډول خپل په خپله پيدا كېدونكي مضر پروټين څخه چي پري اونز (Prions) ورته وايي، پيدا كيږي.

وايي چي دغه ناروغي لومړى په ۱۹۸۵ع.كال څرګنده سوه. تر ۱۹۹۰ع.كال وروسته په برتانيه كي د دغي ناروغۍ يولك دري اتيا زره پېښي په ګوته سوې. دغه وبا په ۹۳ - ۱۹۹۲ع.كلونو كي خپل اوج ته ورسېدل او په هره اوونۍ كي د دغسي كېسونو شمېر تر زرو پوري ورسېد. اوس هم د ټولو تدابيرو سره سره په هره اوونۍ كي د دغسي نژدې سلو پېښو راپور وركول كيږي.

دا ناروغي يوازي په برطانيه كي نه ده رامنځته سوې، بلكي د اروپا په زياترو هيوادونو كي تيته سوې ده. په آيرلېنډ كي د دغي ناروغۍ ۳۳۷پېـښي، په فرانسه كي ۵۱پېښي، په پرتګال كي ۱۹۵پېښي او په سويزرلېنډ كي ۲۸۳ پېښي ثبت سوي دي.

په څارويو كي د Mad Cow Disease او Foot & Mouth Disease دواړي ناروغۍ يوځاى هم رامنځته سوي دي. خو د Mad Cow ناروغي ځكه خطرناكه ده چي د هغو د غوښو له خوړلو څخه انسانانو ته لېږدول كيږي. په انسانانو كي يې دغه ناروغي (CJD Jakob disease Creuztfeldt) بللې ده. په برتانيه كي له ۱۹۹۵ع.كاله تر اوسه د لېونيو غويو د غوښو د خوړلو له امله د مړوسوو انسانانو په شمېر كي ورځ تر بلي ډېرښت را ځي. له دې امله د دغه هيواد دغوښو كاروبار ډېر خراب سوى دى او له دې امله د دې هيواد اقتصاد ته دروند تاوان اوښتى دى.

د يوه تازه ر پوټ سره سم د دغي ناروغۍ له امله د دماغ د پاړسوب پېښي د كاله ۲۳ فيصده زياتيږي او دا ناروغي د هلكانو په پرتله په نجونو كي زياته ليدل سوې ده.

لويه ستونزه داده چي ډاكټران په دماغ كي د دغي ناروغۍ د پاته كېدو موده نه سي اټكلولاى. دا ناروغي په ځينو حالتونو كي تر شلو كالو په دماغ كي پرورښت كوي. له دې امله د دې ناروغۍ علامې تشخيصول ډېر ستونزمن كار ګرځېدلى دى.

د لېونيو غويو د دغي خطرناكي ناروغۍ له امله د نړۍ ډېرو هيوادونو د انګرېزانو د غوښو پر واردولو بنديزونه ولګول. ځكه نو انګرېزانو په لكونو غوايي بېله دې چي لومړى يې په يو ډول ووژني په ډېره بې رحمانه توګه ژوندي وسوځول. خو لكه چي ښكاري تر اوسه هم دغه ناروغي وركه سوې نه ده. اوس هم د ځينو هيوادونو چارواكي د نورو هيوادونو د غوايي د غوښو د ناسم كيفيت او داسي نورو خبرو له امله د هغه دصادروونكو سره په شخړو اخته وي.

غوايي زموږ په هيواد كي بېخي ډېر روزل كيږي او كه يې د دولت لخوا د لازيا ت روزلو لپاره پاملرنه وسي كېداى سي چي د غويو غوښي زموږ له هيواده بهر ته صادري سي. همدا اوس هم زموږ په هيواد كي د قصابانو لخوا د حلالو سوو غويو او ګامېښو تازه غوښي په پېخر خرڅيږي. خو د تعجب ځاى دى چي د دې سره سره زموږ هيواد ته له ډېري مودې له بهر څخه هم د غوايي غوښي راوړل كيږي. له بده مرغه دلته هيڅ يوه اداره هم نسته چي د دغسي او نورو ډول دول غوښو لابراتواري معاينات وكړي.

بله دا چي زموږ د وطن د غويو غوښي بايد له بهر څخه تر راوړلو سوو غوښو ډېري ارزانه واى. ځكه نه له بهر څخه تر دې ځايه د انتقال لګښت پر لوېږي نه كوم محصول. خو بيا هم په حيرانتيا سره دغه د بهر څخه راوړل سوي غوښي زموږ د غويو تر غوښو ډېري ارزانه دي. نو دا ولي؟ دا څنګه غوښي دي چي زموږ په وطن كي تر حلالو سوو غوښو يې ارزانه وركوي؟ هرومرو په دې غوښو كي څه خرابي سته. كه نه نو داسي ارزانه به نه واى.

په پاى كي زموږ هيوادوالو ته زموږ سپارښتنه دا ده چي لومړى د روغتيايي وجوهاتو له مخي ګردسره غوښي ډېري ونه خوري او څه لږ غوښي چي خوري زموږ د وطن د ماهيانو، چرګانو، پسو او سېرليانو، غويو او ګامېښو تازه حلالي سوي غوښي دي خوري. اما له بهره راوړل سوي غوښي خو د پورتنيو مطالبو په پام كي نيولوسره او له دې امله چي ممكن په ماشينانو ذبح سوي وي بايد هيڅ ونه خورو. څو خداى مه كړه له دې پلوه په كوم تكليف اخته نه سو. په هغه صورت كي به يې درملنه راته ګرانه وي او پښېماني به هم ګټه نه كوي.

بله خبره دا ده چي په دې وروستيو كي زموږ په ځينو رستورانونو او خوړنځايونو كي د برګر او داسي نورو په نومونو غوښي خرڅيږي. لكه چي په بهرنيو هيوادونو كي ليدل سوي دي Burger د سركوزي له ورانه څخه جوړيږي او دغوايي غوښي هم پكښي استعماليږي. خداى دي وكړي چي دغه برګر هماغه د بهرنيو هيوادونو برګر نه وي. په دې هكله اړوند چارواكي بايد څېړنه او پلټنه وكړي. كه يې غوښي د سركوزي يا په غير شرعي طريقه د ذبح سوو غويو وي بايد په كلكه يې د خرڅولو مخه ونيول سي.

كوکاکولا، پيپسي، فانټا او دغسي نور مشروبات (خواږه زهر)

لكه چي پوهيږو كوكاكولا، پيپسي او داسي ډېر نور د چيښلو شربتونه د نړۍ په ډېرو هيوادونوكي په تېره زموږ په دې وروسته پاته او په اقتصادي لحاظ له پښو لوېدلي هيواد كي په پېخر چيښل كيږي او اړوندي كمپنۍ يې له دې دركه د ورځي په ميليونونو ډالر ترلاسه كوي. موږ په دې مضمون كي د كولاكولا او پيپسي كمپنيو پر رامنځته كېدو، اسرايلو ته د دغو شربتو له ګټي څخه د برخي وركولو، د هغو پر تركيب او روغتيا ته د هغو پر ضررونو ږغېږو.

كوكا كولا:

كوكاكولا يوه امريكايي كمپنۍ ده چي د اټلانټا د يوه فارميسيسټ (درمل جوړوونكي) جان ايس. (۱۸۳۱ــ ۸۸) لخواپه ۱۸۸۶ع.كال په ابتدايي ډول رامنځته سوه او په ۱۸۹۲ع.كال په امريكا كي رسماً پرانيستل سوه. اوس د دغي كمپنۍ لوى او نړيوال منځى (مركز) په اټلانټا كي دى. د معلوماتو له مخي اوس دغه كمپنۍ دغه توكي جوړوي:

كوكاكولا Coca Cola

فانټا Fanta

فروټوپيا Fruitopia

كيا اورا Kiaora

للټ Lilt

سپرايټ Sprite

سن كټ Sunkit

سكوپس Schwoppes

دغي كمپنۍ په ۱۹۶۶ع.كال د اسرائيلو د حكومت د يوې ستري مرستندويي كمپنۍ په توكه تبارز وكړ. په ۱۹۹۷ع.كال د اسرائيلو حكومت له دې امله چي دغي كمپنۍ د هغو سره زښت زيات كومكونه كړي وه هغې ته ټريډ ايوارډ (تجارتي مډال) وركړ. په ۲۰۰۱ع.كال د امريكا او اسرائيلو د سوداګرۍ اتاق لخوا د كوكا كولا په نړيوال ستر مركز كي د اسرائيلو سره د كوكاكولا د ستر مرستندوى په صفت د «ګالا ايوارډ» په نامه مډال وركړ.

دا هم جوته سوې ده چي «د اسرائيلو سره د مرستي» تر پروګرام لاندي كوكاكولا كمپنۍ خپلو كاركوونكو ته د اسرائيلو او عربو د جګړې په اړه ځانګړې روزنه وركوي. د دغي روزني ځانګړى نصاب يوې كمپنۍ جوړ كړى او مالي مرستي د «جيوش ايجنسۍ» (يهودي ټولني يا ادارې) او د اسرائيلو د حكومت لخوا ورته برابريږي. دغه وګړي د يهودو لخوا په لاندي سوو سيمو كي له هغو كسانو څخه استخداميږي چي له پخواني شوروي اتحاد څخه ورغلي وي. په دغه تربيتي پروګرام كي د اسرائيلو او عربو د منازعې په اړه ځانګړى مضمون تدريسيږي او هغو ته دا ويل كيږي چي فلسطين د يهودو پلرنى ټاټوبى دى او د مسجد اقصٰى پر ځاى دمخه سليماني هيكل موجود وو، اوس موږ غواړو د هغه پر ځاى بيرته سليماني هيكل ودان كړو. دغه راز دغو كسانو ته د كوكاكولا د بازار موندلو د لارو چارو او د هغو له ګټي څخه اسرائيلو ته د مرستو په باب هم لكچر وركول كيږي. دا هم ورته تدريسيږي چي د عربو په خلاف او د اسرائيلو په ملاتړ څنګه پروپاګنډ په لارواچول سي.

د ۲۰۰۲ع.كال په فرورۍ كي كوكاكولا كمپنۍ د اسرائيلو سره د مرستو د كچي د لا زياتو لوړولو او د دوى په ګټه د مرستو د ټولولو په موخه د «فرينډز آف اسرائيل» او «نېشنل هيلي» دوو صهيوني كمپنيو سره يوځاى د ګډ لكچر وركولو پروګرام په لار واچاوه چي په هغه كي د منيسوټا د پوهنتون يوه يهودي استازي لنډا ګريډسټين لكچر وركړ. دغه سړى د صهيوني ټولنو او تنظيمونو څخه تنخوا خوري خو دى وايي چي د نيشنل پبلك راډيو (NPR) د منځني ختيځ استازى دى. د ۲۰۰۱ع.كال د سپټمبر پر لسمه د مصر «الاهرام» ورځپاڼي د كوكاكولا يو اعلان خپور كړ. په دې اعلان كي د كوكاكولا كمپنۍ په څرګندو الفاظو خپلو رانيوونكو ته ويلي وه چي: «كوكاكولا رانيسئ او د اسرائيلو سره مرسته وكړئ».

كوكاكولا كمپنۍ اعلان كړى دى چي هر كال د خپلي ګټي لس فيصده د اسرائيلو يهودي غورځنګ ته وركوي.

پر دې سربېره كوكا كولا كمپنۍ څه مهال دمخه په اسرائيلو كي ستره پانګه په كار واچول او د اسرائيلو لخوا د فلسطينيانو پر غصب سوې مځكه يې د تصفيه سوو معدني اوبو (منرل واټر) يوه كمپنۍ په شلو مليونو ډالرو رانيول. د دې كمپنۍ په جوړولو سره نه داچي اسرائيلو ته ګټه رسيږي، بلكي د هغو اووسووتنو ته د كار زمينه هم مساعديږي. په اسرائيلو كي د كوكاكولا لخوا د دغسي ستري پانګي اچوني او يهود پالني له امله اسرائيلو كوكاكولا ته هلته د هر څه زياتو توليداتو د جوړولو حق وركړ.

پيپسي كولا:

پيپسي كولا هم د خوړو او مشروباتو يوه امريكايي كمپنۍ ده او دغه نوم يې په 1965ع.كال هغه مهال ځان ته غوره كړ چي د Frito-Lay, Inc. په نامهيوې بلي كمپنۍ سره يوځاى سوه. د دغي كمپنۍ مركزي دفتر په نيويارك كي دى. د لومړۍ پيپسي كمپنۍ بنسټ په 1898ع.كال د يوه امريكايي فارمسيستCaleb D. Bradham (۱۸۶۶ــ ۱۹۳۴) لخوا كښېښوول سو. بيا په 1931ع.كال بل امريكايي فارمسيسټ Guth G. Charles (۱۸۷۶– 1948) د بلي نوي پيپسي كمپنۍ تجارتي نخښه او سامانونه رامنځته كړه او د يوې نوي پيپسي كمپنۍ بنسټ يې كښېښود. څنګه چي دغه پانګوال د Loft, Incorporated كمپنۍ مشر هم وو نو بيا دغه دواړي كمپنۍ سره يو ځاى سوې او Loft, Incorporated هم په Pepsi-Cola Company. ونومول سوه. بيا دغه كمپنۍ د نورو كمپنيو سره هم يو ځاى سوه او يو لړ بدلونونه پكښي راغله.

د دغي كمپنۍ په هكله بايد وويل سي چي په ۱۹۹۲ع.كال كله چي د عربو ټولني د كوكاكولا مشروبات تحريم كړل پيپسي د عربو او اسرائيلو په بازارونو كي خپل مشروبات په ډېره چټكۍ سره پلور ته وړاندي كړل او ښه غوښنه ګټه يې ترلاسه كړه. چي بيا پيپسي مشروبات هم د عربي ټولني په تور ليست كي راغله. په دغو ورځو كي پيپسي كمپنۍ د دې لپاره چي د عربي ټولني له تور ليست څخه ځان وژغوري د لنډ مهال لپاره يې له اسرائيلو څخه ځان ګوښه كړ. خو له دې امله په امريكا كي پر هغې باندي پرله پسې نيوكي كېدلې او د پيپسي دغه كار يې له سياسي پلوه ناسم باله. د امريكا يوه تنظيم د پيپسي پر خلاف دعوه دايره كړه او تور يې پر ولګاوه چي پيپسي پر اسرائيلو باندي د تحريم په چاره ك برخه اخلي.كه څه هم د امريكا قوانينو امريكايي كمپنۍ په دغه تحريم كي له برخي اخيستلو څخه منع كولې خو دغه قوانين ښه څرګند نه وه. بيا د محكمو د تحقيقاتو په نتيجه كي څرګنده سوه چي پيپسي كمپنۍ په دغه تحريم كي نه ده شامله، بلكي د پردې ترشا اسرائيلو ته مرستي وركوي. له دې امله پر دې خبرو خوله پټه سوه.

تاسي پوهېږئ چي د پيپسي معنا څه ده؟ په (ملټـى نيشنل كمپنيون كى اسلام دشمنى) كتاب كي وايي چي د Pepsi توري د دغو الفاظو مخففات دي:Pay each penny to save Israel يعني يوه يوه روپۍ واچوئ او اسرائيل په ځواكمن كړئ. پر همدې بنسټ پيپسي كمپنۍ اسرائيلو ته د كاله لس ارب ډالره كومك وركوي. د يادوني وړ ده چي د مرنډا ( MIRINDA) توري د دغو الفاظو مخففات دي: Muslim & Islam Ruined Intensively Never Dawn Again. يعني مسلمان او اسلام دي په ډېره بده توګه پوپنا سي او هيڅكه دي لوړتيا او عروج ته نه رسيږي. د سپرايټ (SPRITE) توري د دغو الفاظو مخففات دي: Supper Power Remained Israel Till End يعني اسرائيل دي تر پايه د ستر ځواك په توګه پاته وي. د ټيم (TEEM) توري د دغو الفاظو مخففات دي: Tease Each & Every Muslim. يعني هر مسلمان ته ازار ورسوئ.

په لومړيو وختونو كي دا خبره ښه جوته نه وه چي دغه تجارتي كمپنۍ په رشتيا د يهودو ملاتړي دي او د هغو د ګټو ستره برخه اسرائيلو ته رسيږي، خو اوس په عامه توګه داسي شواهد سته چي د هغو له مخي له دې ترخه اوبېروونكي حقيقت څخه انكار نه سي كېداى.اوس په رشتيا جوته سوې ده چي دغه كمپنۍ د فلسطينيانو، عربو او نورو مظلومانو او بې وزلو وژونكي دي. د دوى په دغو پيسو وژونكي وسلې برابريږي، د اسرائيلو پوځ په پياوړى كيږي او د اسرائيلو لخوا د اسلام پر ضد ډول ډول دسيسې په لاراچول كيږي او د اسلام بېخ په كښل كيږي.

له بله پلوه دغو او دغسي نورو يهودي او عېسوي كمپنيو د ټولي نړۍ پر ماركېټ خپله منحوسه ولكه لګولې او په ځانګړې توګه يې د اسلامي هيوادونو سيمه ييزي كمپنۍ د ګواښ او ناكامۍ سره مخامخ كړي دي. د دې سترو او توطئه ګرو كمپنيو د پانګي، تبليغاتو، چلونو او د زبرځواكو دولتونو د ملاتړ له امله د اسلامي هيوادونو كوچنۍ او سيمه ييزي كمپنۍ بې وسه سوي چي په پايله كي د دغو اسلامي هيوادونو شته او پانګه دغه ستري كمپنۍ لوټوي او اسرائيل په ځواكمن كوي.

بله د خواشينۍ خبره لا داده چي دغه كمپنۍ د اعلانونو په نامه په نورو هيوادونو په تېره په اسلامي هيوادونو كي د يهودو، هنودو او صليبي عېسويانو د فرهنګي تېريو سره غوښنه مرسته كوي او په دغو هيوادونو كي فحاشۍ او لوڅ فرهنګ ته وده او پرمختيا ور بخښي. د كوكاكولا او پيپسي كمپنۍ په اسلامي هيوادونو كي پر اعلانونو باندي په مليونونو ډالره لګوي. څرګنده ده چي پر دغو اعلانونو باندي دغه لګېدلي پيسې هم دغه كمپنۍ د هغو د رانيوونكو له جېبو نو څخه پوره كوي.

ښه نو اى درنو او عزتمنو لوستونكو! تاسي فكر وكړئ چي د دغو شربتو رانيوونكي او چيښونكي څه كوي او څه چيښي؟ آيا دا شربتونه همدغه خوږې اوبه دى او كه زموږ د مسلمانو فلسطيني او نورو عربو وروڼو ويني؟

آيا موږ كله دا فكر كړى دى چي پر فلسطيني مسلمانانو باندي دغه بده ورځ او دا ميزايل، بمونه او راكټونه اورېدل پر دغو مشروباتو باندي زموږ د پيسو په وركولو سره تر سره كيږي؟ آيا موږ كله دا فكر كړى دى چي د حرمينو شريفينو شاوخوا چي د يهودو او نصاراوو پوځيانو محاصره كړې ده پر كوكاكولا، پيسي او داسي نورو يهودي او عېسوي مصنوعاتو باندي زموږ د پيسو د وركولو او زموږ د تېلو او داسي نورو شتو د غصبولو په سبب ده؟

كه موږ هر يو د زړه له صدقه او په اسلامي او افغاني هوډ تصميم ونيسو چي نور به زموږ د مسلمانو وروڼو ويني يعني دغه كوكاكولا او نور يهودي او عېسوي خواړه او مشروبات نه خورو نو باور ولرئ چي د اسلاميت دښمنان به مو په كلكه د ناكامۍ سره مخامخ كړي وي. كه موږ په رشتيا د فلسطين، عراق، افغانستان او نورو مظلومو مسلمانانو سره خواخوږي لرو نو بايد لږ تر لږه خو دغه كوكاكولا او دغسي نور مشروبات تحريم كړو او په ټينګه ژمنه وكړو چي نور به دغه ګنده شربتونه ګردسره نه چيښو. موږ بايد د دې ناولو مشروباتو له چيښلو څخه داسي ډډه وكړو لكه د شرابو له چيښلو څخه. بلكي كه ووايو چي شراب يوازي يوه سړى ته تاوان رسوي خو كوك او پيپسي تر شرابو ډېر مضر او خطرناكه دي دا به ډېره مناسبه خبره وي. ځكه چي دا ټول امت ته تاوان پېښوي. د كوكاكولا او پيسي چيښونكى نه يوازي د خپل ضمير مجرم دى، بلكي دا د بشپړ اسلامي امت مجرم دى. دا د فلسطينيانو دښمن، د عراقيانو دښمن، د افغانانو دښمن او بالاخره د حضرت محمد مصطفٰى ج دښمن دى. ځكه چي د ده په پيسو اسرائيل او نور كفار خپل پوځي ځواكونه پياوړي كوي، زموږ پر لومړۍ كعبه بيت المقدس يې منګولي نوري هم ښخيږي او د كعبې شريفي او مدينې منورې نيولو ته يې هم لار اواريږي.

نو درنو لوستونكو! د لوى څښتنأ لپاره كه د يهودو او هنودو په وړاندي  
د ځپلو مظلومو مسلمانانو سره په خپلو ځانو او وسلو مرسته نه سئ كولاى، د هغو د شيانو سره خو شلوون (بايكاټ) كولاى سئ؟ او كه موږ دغونه هم نه سو كولاى نو د لوټ سوو عصمتونو، معصومو كوچنيانو د شهادت او پر بې ګناه مسلمانانو باندي د ډول ډول زړه دردونكو مظالمو پر ليدو باندي به د خپلو بې حسيو او بې پرواييو جواب خپل ربأ ته په كومه خوله وركوو؟

د كوكاكولا او پيپسي كېمياوي مواد:

اوس را ځئ وګورو چي په دغو شربتونو كي چي موږ يې داسي په خوند خوند چيښو او خپلو ګرانو مېلمنو ته يې هم د هغو د عزت لپاره وركوو او كه يې ورنه كړو د پزې پرې كېده يې بولو كوم توكي ګډ دي.

1. سيکلميټ (Cyclamate): دا يو بې بويه، سپين، شفاف پوډر دي چي معمولاً Cyclamate Calcium يا Cyclamate Sodium ورته وايي. دغه پوډر د لومړي ځل لپاره په ۱۹۳۷ع.كال د Michael Sveda نومي لخوا كشف سول. دغه مصنوعي قند بېل بېل ډولونه لري او د خوږولو ځانګړنه يې تر معمولي قندو او بورې له (٣٠٠) څخه تر (٦٥٠) واره ډېره ده. دغه ماده زياتره د يوې بلي له روغتيا يي پلوه مضري مادي سره چي سكرين (Saccharin) يا مثقال ورته وايي هم ګډوي. سكرين بورې غوندي ماده ده چي له كوئيلې (سكرو) څخه يې را باسي.

له بله پلوه د دغو مصنوعي خوږو بيه د جغندرو د بورې په نسبت ډېره لږ او ارزانه ده. له دې امله په ډېرو هيوادوکي د غيرالکلي مشروباتو او نورو په خوږولو کي د بورې پر ځاى ګټه ځني اخلي. د دغو قندو د روغتيايي ضررونو په هکله د نړۍ مطبوعاتو او روغتيايي سازمانونو ډېري څرګندوني کړي او په ټينګار سره يې ويلي دي چي دغه پوډر له روغتيايي پلوه د انسان كولمې د ډول دول باكټرياوو بريدونو ته چمتو كوي او سرطان زېږوونکى دى.

1. كاربن ډاى اكسايډ (CO2): دا له يو ډول زهرجنو ګازو څخه تېري سوي عامي ساده اوبه دي (چي دپاك بللو هيڅ ګرنټي يې نسته).

قدرت دغه زهرجن ګاز چي د وينو د فضلې غوندي دى دسا ايستلو په ذريعه له سږو څخه دباندي را باسي. خو د كوكاكولا او پيپسي په اوبو كي دغه ګاز ګډوي او جذبوي چي د دغو مشروباتو د بوتلونو او دبليو يوه ډېره مهمه برخه جوړوي او بالاخره له دې عمليې څخه د مشروباتو د تېزابيت درجه ۳، ۴ كيږي. دغه ګاز د مشروب پر خوند اغېز ښندي، په شربتو كي يو ډول كوبۍ جوړوي چي د چيښونكي خوله تخنوي او د خوند او يخوالي احساس يې ډېروي. د مشروباتو كمپنيو ته كاربن ډاى اكسايډ له دې امله هم مهم او ړين دى چي د بوتل اوبه تر ډېره مهاله نه خرابيږي. نو څنګه چي موږ دغه ګاز د دغسي مشروباتو په چيښلو سره بيرته ګېډي او جسم ته ننباسو او له امله يې د انساني جسم تېزابيت تر عادي تېزابيت درې يا څلور واره تېزيږي. زموږ هډوكو او غاښونو ته تاوان رسوي او د بدن روغتيا ته هم خطرناك تماميږي. له بله پلوه څنګه چي دغه مشروبات ډېر يخ وي زموږ پر جسماني نظام او ګېډه باندي دوه چنده بوج اچوي: يو د تېزابيت له امله او بل د مشروب د حرارت د درجي له امله چي عموماً صفر سانتي ګراډ وي. په داسي حال كي چي د جسم د حرارت درجه ۳۷سانتي ګراډه وي. چي د دې توپير د له منځه وړلو لپاره ګېډه بايد زيات كار وكړي. د خوړلو پر مهال د دغو مشروباتو له چيښلو څخه د هاضمې مرستندويه كېمياوي ماده (Digestive Enzymes) تحليليږي، پر ګېډه زيات بوج اچوي چي له امله يې په ګېډه كي ګازونه او نور زهرجن مواد رامنځته كيږي. كوم چي په كولمو كي جذبيږي او جسم تر خپل وخت دمخه بوډاكوي.

1. فاسپوريك اسيډ (Phosphoric Acid): دغه تېزابي ماده زموږ د بدن د هډوكو او غاښونو د كلسيمو ماده اخراجوي. له پرله پسې استعمال څخه يې د هډوكو د كمزورۍ له امله د هډوكو درد او ملا درد پيدا كيږي او كله ناكله هم له معمولي ضربې څخه هډوكى ماتيږي. چي دې ناروغۍ ته «Osteoporosis» يعني د هډوكو كمزوري وايي.
2. كافئين (Caffeine): دا عصبي نظام ته تحريك وركوونكي او نشه راوړونكي درمل دي چي له استعمال څخه يې سړى د يو څه مهال لپاره تكړه او تازه دمه وي او خوښي احساسوي. خو پنځه شپږ ساعته وروسته چي يې اغېزه له منځه ولاړه سي كمزوري، سستي، كهالي او خوابدي محسوسه كړي. د كافئين له ډېر استعمال څخه كېداى سي په انسان كي ناكراري، د ځينو غړو رېږدېده، د زړه ټكان او داسي نور رامنځته سي. پردې سربېره كېداى سي د سر درد او سرپرله ګرځېده هم ورپېښ سي. (د كافئينو په هكله څه مطالب د قهوې او چايو تر سرليك لاندي هم وويل سول.). كافئين د مشروباتو په عامو بوتلونو كي له ۳۵ څخه تر ۵۰ ملي ګرامو پوري وي چي په دې حساب بايد په نيم لېټر كي ۲۰۰ ملي ګرامه وي.
3. سوډيم بينزويټ (Sodium Benzoate) : دا يوه مشهوره د يخ ضد كېمياوي ماده ده، چي د موټرانو ليلېټرونو ته يې د دې لپاره اچوي چي اوبه يې يخى نه سي. دا «سم الفار» ته ورته يو ډول زهر دي چي كرار كرار اغېز كوي. كه څوك په يوه ساعت كي كوكاكولا څلور لېټره وچيښي كېداى سي چي د دغو زهرو له امله د مرګ تر پولي ورسيږي. د مشروباتو كمپنۍ يې د مشروباتو سره د دې لپاره ګډوي چي د بوتلونو د خرابۍ مخه ونيسي. (د خلكو په ګېډو چي هرڅه كيږي ودي سي).
4. رنګ لرونكي توكي ياكېمياوي رنګونه (Food Coloring) : ټول كېمياوي رنګونه په تېره سور امارنت (Amaranth Red No.) او بور بورډيكس (Bordeaux) د څېړنو له مخي د سرطان د ناروغۍ قوي لامل ګرځي او د انسان روغتيا ته ناوړي پايلي لري.
5. كنين: يو نشه كوونكى مركب دى چي په دغو مشروباتو كي يې له دې امله ګډوي چي خلك د دغو مشروباتو معتاد سي.
6. ايملسي فاير: Emulsifier: يو ډول كيمياوي ماده ده چي د انسان روغتيا ته مضره تماميږي. په ځينو مشروباتو كي يې د هغو د بېلو بېلو توكو د سره يوځاى كولو لپاره كاروي.
7. نور داسي ناڅرګند طبيعي خوندور توكي چي ښايي په قصد سره يې د مشروباتو پر بوتلونو نه وي ليكلي.

دلته د كوكا كولا د مشروباتو د يوې مشهوري ادارې د يوه ليك د يوې برخي وړاندي كول له ګټي خالي نه دي. د دغي ادارې په ليك كي وايي: «زموږ د مشروباتو د طبيعي اجزاوو فارموله پټه ده اوزموږ د كمپنۍ د ستر دفتر له څو تنوپرته بل څوك نه دي په خبر».

د كوكاكولا، پيپسي او داسي نورو روغتيايي تاوانونه:

لكه چي پوهيږو نن مهال زموږ په بازارونو کي کوکاکولا، فانتا، ټيم، انرژۍ، سپرايټ، مرنډا او نورو ډول ډول شربتونه په پېخر خرڅيږي او زموږ خلک يې بېخي ډېر مصرفوي، د غټو اوکوچنيو مېلمستيا وو سترخانونه په ښکلي کيږي او په ښاديو او ودونو کي ساده اوبه يا سکنجبين يا د داسي نورو شيانو ورکول د پزي پرې کېدل ګڼي. خو په ځينوکتابونواونشرياتوکي د همدغو غيرالکلي مشروباتو او ډول ډول كولاوو په هكله ويل سوي دي چي دغه مشروبات روغتياته له ډول ډول مضرو توكو او مصنوعي قندو څخه جوړيږي او په وګړو کي د سرطان او نورو ډول ډول ناروغيو سبب کيږي.

د ډاكټر انعام الله په نامه يو ډاكټر په خپله يوه ليكنه كي پر صحت باندي د دغو مشروباتو د ناوړو اثراتو په هكله داسي ليكي:

پيپسي او كوكاكولا د كوچنيانو پر ذهني روغتيا باندي د بدي اغېزې له امله په هغو كي ناارامي، هيجان او سركښي رامنځته كوي او كوچني ضدي جوړوي. په هغو كوچنيانو كي چي كوكاكولا ډېره چيښي د مور او پلار د په عذابولو او يو له بله د جنګ جګړو كولو تمايلات زيات وي او په ذهانت كي يې كمښت ليدل كيږي.

كوكاكولا د كوچنيانو پر جسماني روغتيا باندي داسي بد اغېز ښندي چي په ظاهره چاغ ښكاري خو دننه كمزورى او سست وي. ژړ او ډنګر وي سترګو يې توري الغې وهلي وي او څېره يې مړاوې ښكاري.

د دې مشروباتو ډېر چيښل د اينې د ناروغيو (Liver Cirrhosis) لامل ګرځي. البته د دغي ناروغۍ لومړى لامل د الكحلي مشروباتو استعمال دى او تر هغه وروسته يې لويه وجه د كوكاكولا، پيپسي او داسي نورو چيښل دي.

د كوكاكولا او داسي نورو له زيات چيښلو څخه ذهني كمزوري، د سر درد، په تېره د ټېكو درد، د رويې او برخورد بدلون او د ذهني وړتيا كمښت رامنځته كيږي. ډېر استعمال يې د ګېډي او مثانې د سرطان لامل كېداى سي. كه يې اميندواري ښځي وچيښي د ماشوم د بڼـي د خرابۍ او يا د عيبي پيدا كېدو سبب كېداى سي.

امريكايي او اروپايي ډاكټرانو د پورتنيو ناروغيو لاملونه د كوكاكولا او داسي نورو چيښل ګڼلي دي. هغو خلكو ته خبردارى وركړى دى چي كه په خپل خوراك او چيښاك كي بدلون را نه ولي په راتلونكو شلو كالو كي د بدو پايلو سره مخامخ كېدلاىسي.

د غه راز د ملټى نيشنل كمپنيون كى اسلام دشمنى په (۸۹) مخ كي ليكي: «د روغتيا د ماهرانو د څېړنو سره سم پيپسي، كوكاكولا، سيون اپ، مرنډا، سپرايټ چيښل هيپاټايټس بي او سي (Hepatitis) د اينى مهلكي ناروغۍ رامنځته كوي. دغه راز د كوكاكولا او پيپسي له چيښلو څخه د شكري د ناروغۍ امكانات هم۵۰ فيصده زياتيږي». (د كولاكولا د ضررونو په هكله د دې كتاب په (۷۹) مخ كي د دووانګرېزي ډاكټرانو څرګندوني هم وړاندي سوې).

له دې امله دى چي په امريکا، سکانديناوي هيوادونو، لوېديزه اروپا او نورو هيوادونو کي د روغتيا وزارتونو خلکو ته اعلام کړې ده چي دغه خوږې غير الکلي اوبه چي له ډول ډول کولا وو او د هغوله متفرعاتو او متشابهاتو څخه عبارت دي. او له مصنوعي قندو څخه جوړيږي د سرطان او ډېرو نورو ناروغيو زېږوونکي دي. په ځينو هيوادونو لکه ډنمارک او نوروکي د دغو شربتونو خرڅلا و د دولت لخوا منع سوى دى او خلکو ته اعلام سوې چي دغه شربتونه رانه نيسي او ويې نه خوري.

له بده مرغه دغه مشروبات چي نن مهال زموږ هيوادته له باندنيو هيوادونو څخه په ډول ډول نومونو او خورا ډېر راځي، د اسلامي او مذهبي پلوه خو دولت هيڅ هم نه پر وايي. د روغتيايي لحاظه هم زموږ د عامي روغتيا د وزارت د مسئولينو لخوا نه څېړل کيږي. نو څنګه چي دغه مواد زموږ ډېر خلک شپه او ورځ په خورا ډېره اندازه مصرفوي بايد په دې هکله زموږ د دولت د اسلامي او اقتصادي چارو مسئولين او د عامي روغتيا وزارت جدي څېړنه وکړي. هغه مشروبات او نور خوراكي توكي چي راوړل او مصرفول يې زموږ دين او ديني وروڼو، زموږ آخرت او زموږ وطني اقتصاد او د شربتو دوديزو داخلي توليداتو ته تاوان وي او زموږ صحت را خرا بوي په كلكه منع كړي، د واردولو مخه يې ونيسي او د هغو ديني، اقتصادي، سياسي او اخروي ضررونه رسماً تائيد او په ګوته كړي او خلک وپوهوي چي نور د هغو له خوړلو څخه ډډه وکړي. البته د هغو مشروباتو په هكله چي زموږ ديني امورو، روغتيا او اقتصاد ته مضر نه وي، اعلان وكړي چي زموږ سوداګر يې وارد كړي او خلک يې بېله کومي اندېښنې مصر ف كړي.

بله د پام وړ خبره داده چي په دې وروستيو كي زموږ په هيواد كي هم د ځينو شربتو او منرل واټر د توليد كمپنۍ را وتلي دي چي دا د ډېري خوښۍ خبره ده. لوى څښتنأ دي زموږ په ګران اسلامي هيواد كي هر څه ژر رشتيانۍ سوله او كراري راولي چي زموږ دا د تمدن اوپرمختګ له كاروانه وروسته پاته ټاټوبي پر خپلو پښو ودريږي او هر څه له خپله توله ولري. په دې هكله لومړى بايد د دغو كمپنيو څښتنان داسي توكي توليد نه كړي چي خداى مه كړه زموږ دين او صحت ته تاوان وي او د دوي غاړي بندي وي او يا يې زموږ پر بې وزلو خلكو په ډېره ګرانه بيه وپلوري. البته اړوند مسئولين هم بايد د دغو كمپنيو د توليداتو په هكله څېړني وكړي او د ناسمو شيانو د توليد او بازار ته د هغو د وړاندي كولو مخه په كلكه ونيسي.

سوډا واټر او لېمونيډ:

كه څه هم نن سبا سوډا واټر لږ مصرفيږي اما لېمونيډ (د لېمبو خوږې اوبه يا شربت) بيا هم نسبتاً ډېر چيښل كيږي. نو بده نه ده چي دلته د دغو اوبو په هكله هم څه رڼا واچوو څو كه يې څوك چيښي د هغو په خواصو هم څه پوه وي.

د بد هضمۍ په حالت کي چي خواړه نه هضميږي يا نس پاړسوب کړى وي، يا ټېغ بندوي، يا په کولمو کي رطوبت لږ وي، په دغسي حالتونو کي که سوډا واټر وخورئ ښه دي. يعني د درملو په ډول يې د هاضمې لپاره استعمال کړئ. خو بېله کوم ضرورته سوډا او لېمونيډ استعمالول هم ډېر تاوان لري. د هغو د ډېرو خوړو څخه معده کمزورې کيږي، په بدن کي رطوبت ډېريږي، قوت کميږي، ستونى خرابيږي، خوب لږيږي او بيا بېله هغو خواړه نه هضميږي. ټېغ نه راوځي، د هغو سره د يخي استعمالول خو بېخي تاواني دى. که په يخي کي بوتل ايښى وي هغه هم دونه ګټه نه کوي.

د كوكاكولا او داسي نورو پر ځاى بايد څه شي وچيښو؟

موږ د خپل هيواد په ګوټ ګوټ كي په تېره زموږ په تاريخي ولايت كندهار كي د ډول ډول ښو، خوشبويو او خوږو شربتو ډېر سابقه لرونكي شربت جوړوونكي لرو. همدا اوس زموږ د كندهار په ښار كي د شربتو خرڅولو داسي دكانونه سته چي اويا كلنه سابقه لري او ډېر ښه شربت لكه د انارو، غورې، انګورو، نارنجو، لېمبو، سكنجبين او داسي نور شربتونه جوړوي او خرڅوي يې. چي هم خوندور دي، هم د ځينو ناروغيو درمل او هم ډېر ارزانه دي. خو له بده مرغه چي موږ خپل نه منو ليكن د بل دا هر څه منو!

د بهرنيو اسلامي هيوادونو له شربتونو څخه هم دلته ډېر ښه او زموږ روغتيا ته ګټور شربتونه موندل كيږي. لكه روح افزا، نور، جام شيرين، قرشي او د ډول ډول مېوو صحي جوسونه.

دغه راز موږ كولاى سو په ډېره آساني سره په خپلو كورونو كي ډېر ښه او تازه شربتونه، جوسونه، شيريخ، آيس كريمونه او د شيدو ډول ډول مشروبات جوړ كړو. چي هم پاك او ستره وي، هم تازه او هم ارزانه. موږ په دې هكله يو كتاب هم ليكلى دى ان شاء الله د دې كتاب د خپرېدو سره به يو ځاى خپور سي. تاسي كولاى سئ د هغه له مخي په ډېره آساني او په ډېر لږ لګښت ډېر ښه، خوندور او روغتيا ته ګټور شربتونه جوړ كړئ، چي هم يې پخپله وچيښئ او هم يې خپلو درنو مېلمنو ته وركړئ.

د كوكاكولا او پيپسي په هكله ځيني عجيبي تجربې

1. په «ملټــى نيشنل كمپنيون كى اسلام دشمنى» كتاب كي د ډاكټر انعام الله د تجربې په هكله داسي ليكي: د كوكاكولا او پيپسي په بوتلونو كي كښل سوى غاښ يا نوك واچوئ، تاسي به ووينئ چي هغه به په دوو ورځو كي ويلي سي او په دوو اوونيو كي به بېخي حل سي. په داسي حال كي چي دغه غاښونه، هډوكي او نوكان د انسان تر مړيني وروسته په زرګونو كلونه خوندي پاته كيږي او نه خرابيږي.
2. كه ستاسي د تشناب كوم پيپ بند سي، نو د شپې د پيپسي يا كوكاكولا يو يا يونيم لېټر بوتل پكښي واچوئ، سهار يې پمپ كړئ نو پيپ به دستي خلاص سي.

د پيپسي يخ بوتل واخلئ، د غوښو يوه كوچنۍ ټوټه پكښي واچوئ. پنځلس دقيقې وروسته به د غوښو ټوټه په بوتل كي وشوړيږي او لږ وروسته به په بوتل كي يوډول چينجي غوندي شيان څرګند سي. نو تاسي فكر وكړئ چي د غوښي د ټوټې دا حال وي، نو زموږ د ګېډي او اينې به څه حال وي؟ آيا موږ د دغو مشروباتو په چيښلو سره خپل ځانونه د مرګ خولې ته نه وركوو؟

معدني اوبه (منرل واټر Mineral Water)

له بده مرغه زموږ پر هيواد باندي زموږ د ډول ډول بهرنيو او كورنيو دښمنانو د شومي ولكې او د خپل چاروكو، نا اهلو چارواكو د واكمنۍ او خيانتونو له امله په دې يوويشتمه پېړۍ كي زموږ د ګران هيواد زياتره خلك د چيښاك له روغتيايي اوبو څخه بې برخي دي. په داسي حال كي چي اوبه د انسانانو، حيوانانو اونباتاتو ټولو لپاره يوه حياتي اړينه ماده ده. د انسان په بدن كي نژدې اويا فيصده اوبه وي. لوى څښتنأ اوبه د ژوند سبب او بنسټ ګرځولى دى. له دې امله په خپل سپېڅلي كلام كي د اوبو په هكله داسي فرمايي:

﴿وَجَعَلۡنَا مِنَ ٱلۡمَآءِ كُلَّ شَيۡءٍ حَيٍّۚ﴾ [الأنبياء: 30].

«او موږ هر ژوندى شى له اوبو څخه پيدا كړ». بل ځاى فر مايي:

﴿وَٱللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٖ مِّن مَّآءٖۖ﴾ [النور: 45].

«او لوى څښتن هر ساكښ له اوبو څخه پيدا كړ».

تاسي پوهېږئ چي د ككړو او غير صحي اوبو له چيښلو څخه انسانان په ډول ډول ناروغيو اخته كيږي او لكه چي څرګنديږي د كندهار د ښار تر مځكه لاندي اوبه هيڅ د چيښلو وړ نه دي خو ټول خلك يې له مجبوريته چيښي.

دا څو كاله كيږ: ي چي د كندهار د اوبو رسولو چارواكي دلته او هلته د اوبو د نلونو د غځولو په كار اخته دي خو د كار د نتايجو درك يې نسته او خلك تر اوسه لاهم د غير صحي اوبو چيښلو ته اړ دي.

څنګه چي د انسان بدن څه معدني تو كو ته هم ضرورت لري نوپه نوره نړۍ كي له ښايسته ډېره مهاله خلك كاني يا منرالي اوبه چيښي.

دلته بده نه ده چي لومړي د معدني يا منرالي اوبو په هكله څه رڼا واچوو:

په ENCYCLOPAEDIA BRITANNICA,2005.DeluxeEditionCD كي د Mineral Water (معدني اوبه) تر سر ليك لاندي ليكي:

«معدني اوبه هغه اوبه دي چي پر زيات مقدار تجزيه سوو منرالونو يا ګازو مشتملي وي. هغه معدني اوبه چي په طبيعي توګه له ځينو چينو څخه په لاس راځي معمولاً زيات مقدار كلسيم كاربونايټ، مګنېشيم سلفر، پوټاشيم او سوډيم سلفاټ لري. دغسي اوبه بايد د كاربن ډاى اوكسايډ يا هايډروجن سلفايډ ګازونو له پلوه هم غني او مشبوع وي. دغه راز منرل واټر مقطرو يا كاربن ډاى اوكسايډ ګاز وركړل سوو اوبوته په مصنوعي او غير طبيعي توګه د ځينو مالګو په وراچولو سره لاسته راوړل كيږي.

د دواړو مصنوعي او طبيعي معدني اوبو منرالونه پر زياتو او بېلو بېلو منرالونو مشتمل دي. خو په ځينو مواردو كي كېداى سي دغه منرالونه د عادي اوبو په پرتله هم لږ وي.

له ډېرو لرغونو زمانو څخه خلك د منرال لرونكو اوبو په چينو كي په تېره په تودو چينو كي لمبيږي.دا ځكه چي د دوى په اند دغه اوبه د روماتيزوم، د بندو د درد او پاړسوب، د جلدي ناروغيو او داسي نورو په وړاندي معالجوي ارزښت لري. رشتيا هم ډېري دغسي چينې د ناروغيو د ليري كېدو او معالجې ډېر ښه او مرستندوى ځايونه جوت سوي دي. په ځينو هيوادونو لكه انګلستان، جرمني، امريكا او نورو كي يې پر دغسي چينو ډېري ستري او مشهوري ودانۍ جوړي كړي دي. د ۱۹۷۰ع.كلونو له نيمايي را په دې خوا معدني اوبه د چيښاك د اوبو په توګه ورځ تر بلي زياتي استعماليږي.د فرانسې، ايټاليې او نورو اروپايي هيوادونو د منرالي اوبو له چينو څخه هركال زيات مقدار بوتلونه بهر ته صادريږي».

زموږ د هيواد په خورا ډېرو برخو كي هم معدني اوبه په زياته پيمانه سته چي هم روغتيايي او هم تجارتي ارزښت لري. خو له بده مرغه ګټه نه ځيني اخيستل كيږي. له څه مهاله له بهرنيو هيوادونو څخه د منرل واټر په نامه اوبه په بوتلونو كي خورا ډېري راوړل كيږي چي يو غټ بوتل يې په شل، پنځه ويشت افغانۍ دى او زياتره يې په دولتي او د شتمنو وګړو په مېلمستياوو، عصري هوټلونو او د ودونو په صالونونو كي چيښي. چي زياتي يې هماغه اوبه دي كومي چي موږ يې په كورونو كي په ايشولو سره د چيښلو وړ ګرځوو. خو زه ګومان نه كوم چي تر اوسه دي چا پوښتنه كړې وي چي دا كله معدني اوبه دي او ولي دونه ګراني دي؟

په دې وروستيو كي زموږ د هيواد ځينو تجارانو هم دغسي اوبه را ايستلي دي. چي كه په رشتيا معدني اوبه وي نو د شكر ځاى دى. خداى دي وكړي چي زموږ دولتي چارواكي او نور ملي سوداګر هم وهڅيږي او زموږ د هيواد له دغسي اوبو څخه په زياته پيمانه د درملني او چيښلو لپاره ګټه واخلي. البته دولت بايد دا نوري بهرنۍ اوبه ګردسره بندي كړي. زموږ سوداګر هم بايد دغه اوبه دوني ګراني ونه پلوري. بلكي بوتلونه دې په ښه صحي توګه چمتو كړي، ښه او ښايسته لېبلونه دي پر ونښلوي. د هغو د محتوياتو په هكله دي د روغتيايي مراجعو تصديقونه واخلي او د دغو اوبو د نورو اوصافو، تركيب، روغتيايي ځانګړنو او ګټو سره يو ځاى دې پر لېبلونو چاپ كړي، بوتلونه دي ښه بسته بندي كړي او كورنيو او بهرنيو بازارونو ته دې د خرڅلاو لپاره وړاندي كړي. څو هم خپلو خلكو او نورو وګړو ته له دې لاري روغتيايي خدمت وكړي او هم خپلو ځانو او هيواد ته ګته ورسوي.

دغه راز كه دولت يا ملي سوداګر يا نور پانګوال د تودو معدني روغتيايي اوبو چينو ته پخې لاري وباسي او دغو چينو ته نژدې هوسنځايونه (سناتوريمونه)، د دغو چينو په اوبو كي د ځان مينځلو ځايونه او نوري اړوندي ودانۍ جوړي كړي هم به د خلكو د ځينو جلدي او نورو ناروغيو په ښه كولو كي مرسته وكړي او هم به خپل او د هيواد اقتصاد ته غوښنه ګټه ورسوي.

د معدني اوبو په هكله په پښتو ژبه دوه مغتنم كتابونه خپاره سوي دي چي يو يې «د افغانستان تر ځمكي لاندي او كاني اوبه» نوميږي او پوهاند غلام جيلاني عارض ليكلى دى او بل يې «په افغانستان كې د منرالي اوبو چينې» نوميږي او محقق ديپلوم انجنير ستانه مير زهير او محقق ديپلوم انجنير شېرشاه رشاد په دواړو ليكلى دى. كه څوك د هيواد د كاني اوبو په هكله مطالعه كوي له دغو كتابونو څخه ښه استفاده كولاى سي.

د شربتو د پوډرو پوړۍ

له ډېره مهاله زموږ د هيواد د بازارونو په ځينو د كانونو كي د ډول ډول شربتو د پوډرو په نومونو يو ډول كوچنۍ كاغذي پوړۍ (ساشۍ Sachet) پلورل كيږي چي ډول ډول نومونه يې پر چاپ كړي وي، لكه: Mvit-C: Tang, Jivan’s, Neda, او داسي نور. پر دغو پوړيو باندي د ځينو د جوړېدو ځايونه د امريكا د Kraft Foods Inc كمپنۍ، د ځينو دا تركيه د ځينو دا دبى او د ځينو دا پاكستان ليكلي دي.

د دغو پوړيو د رنګونو او ليكنو څخه له ورايه څرګنديږي چي دا ګردسره جعلي توكي دي. ځكه يو خو يې د دغو پوډرو د ځينو محتوياتو د انګرېزي نومونو Spellings سم نه دي پر ليكلي. د بېلګې په توګه سوډيم سيكلمېټ Cyclamate Sodium يې د Jivan’s پر دوه ډوله پوړيو باندي Sodyum Siklamat ليكلي دي. دغه راز يې د سكرين (Saccharin) نوم Sakkarin ليكلى دى.

بل د دغو پوړيو د پوډرو د محتوياتو په تركيب كي ځيني هغه كوډونه ليكلي دي چي د سركوزي د غوړزګيو لپاره يې كاروي. پر دې سربېره د دغو پوډرو په تركيب كي د سكرين او سوډيم سيكلمېټ نومونه هم تر سترګو كيږي. چي دا توكي لكه چي وړاندي مو اوږدې خبري پر وكړې روغتيا ته ډېر مضر دي.د انسان كولمې د ډول دول باكټرياوو بريدونو ته چمتو كوي او سرطان زېږوونکى هم ګڼل سوي دي.

پر دغو پوړيو يې ليكلي دي چي د دې پوړۍ پوډر په دوو يا يو نيم لېټرو يخو اوبو كي واچوئ او ويې چيښئ. د تعجب وړ خبره ده چي له دغونه ارزانو او لږو پوډرو څخه يو نيم يا دوه لېټره خواږه شربت جوړيږي. نو تر هغه ځايه چي عقل حكم كوي دا شربت نه، بلكي د چالاكو او حرامخورو ساكښانو لخوا د ځينو ناپوهو وګړو له جېبونو څخه يو ډول غلا او كيسه بري ده. سمه خبره خو داده چي دا ګردسره شربت نه، بلكي د ډول ډول ناروغيو تومني او زهرجن توكي دي چي له را نيولو او چيښلو څخه يې په كلكه بايد ډډه وسي. د دغو پوړيو پيسې او ګټه دي لوى څښټنأ د هغو د جوړوونكو، زموږ هيواد ته د را پرېښوونكو او خرڅوونكو د اولادونو په دواوو ور خرڅي كړي.

شيدې، د قوطيو شيدې، وچي شيدې او د مور شيدې

لوى څښتنأ په قرآن كريم كي د جنت پر شيدو يادولو سربېره د څارويو د احوالو په عجايبو باندي د استدلال په هكله د څارويو د شيدو په باب داسي فرمايي:

﴿وَإِنَّ لَكُمۡ فِي ٱلۡأَنۡعَٰمِ لَعِبۡرَةٗۖ نُّسۡقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهِۦ مِنۢ بَيۡنِ فَرۡثٖ وَدَمٖ لَّبَنًا خَالِصٗا سَآئِغٗا لِّلشَّٰرِبِينَ ٦٦﴾ [النحل: 66].

ژباړه: «اوستاسي لپاره په څارويو كي يو عبرت او درس هم پروت دى. د هغو له نسونو د خوشيو او ويني تر منځ موږ خالصي شيدې په تاسي چيښو چي د چيښونكو له ستوني په آسانۍ تېرېدونكي او خوندوري دي».

د حضرت رسول ج د معراج پر مهال، د بيت المقدس په اقصٰى جومات كي تر دوه ركعته لمانځه وروسته كله چي له جوماته بهر راووتى جبرايل÷ د شرابو او شيدو دويگ پياليگ ورته ونيوليگ. چي هغه مبارك د شيدو پياله حگني واخيسته. جبرايل÷ ورته وويل چي تا فطرت غوره كؤ، كه دي د شرابو پياله اخيستيگ واى امت به دي بيگ لاري سوى واى.

بيا چي يې د جبرايل÷ سره يو حگاى اّسمانو ته تشريف يووؤ، سدرة المنتهٰى ته په رسيگدو او د بيت المعمور په ور شگوولو سره بيا د شرابو، شيدو او عسلو پياليگ ورته راوؤه سويگ، چي له هغو خگخه ييگ بيا د شيدو پياله واخيسته او وييگ خوؤليگ. بيا جبرايل ورته وويل چي تا فطرت غوره كؤ، له ديگ امله به ته او ستا امت پرفطرت ولاؤ ياست. دغه راز له حضرت ابن عباسب څخه روايت دى چي د رسول ج د چيښلو په شيانو كي شيدې تر تولو ډېري خوښېدلې. چي له دې څخه د شيدو ستر ارزښت په ښه توګه څرګنديږي.

د شيدو د ګټورتيا په هكله هيڅ شك نسته. لوى څښتنأ چي انسان ته هر څه نعمتونه وركړي دي په هغو كي شيدې ځانګړى ځاى لري. د بزې، مېږي، غوا، ګامېښي او اوښي شيدې هر يو ځانته بېل بېل خاصيتونه لري. خو ډاكټرانو په ټولو كي د بزې شيدې ښې بللي دي. زموږ هيواد داسي يو ځاى دى چي بايد شيدې وركوونكي څاروي بېخي پكښي ډېر واى او موږ شيدې او له هغو څخه تر لاسه كېدونكي شيان لكه كوچي، غوړي، پېروى، پوڅه، مستې او داسي نور بېخي ډېر درلودلاى. خو له بده مرغه زموږ د ګران هيواد په چارو كي د پردو غليمانو ډول ډول مداخلې او د هغو د ګوډا ګيانو خيانتونه او زموږ بې اتفاقى او ناپامى زموږ په هيواد كي د لبنياتو د ډېرښت او پر مختيا په مخ كي ستر خنډونه ګرځېدلي دي. دلته د دې پر ځاى چي د كوچيانو او مالدارانو د وضعي ښه كېدو ته پام وسي او مرستي ورسره وسي په ډېره بده توګه ځپل سوي او د ډول ډول كړاوونو سره مخامخ سوي دي. كه ځينو نوروكسانو د غواوو يا ګامېښو ځيني فارمونه را ايستلي دي، څنګه چي په تاوان كي وه بېرته يې پرې ايښي دي. صرف د كندهار د ښار د كابل دروازې د باندي يوه ډېر شتمن سوداګر دغواوو يو فارم را ايستلى دى، چي كورونو او د استوګني ځايونو ته د نژدې والي له امله يې بد بوي خلك ډېر په عذاب كړي او د روغتيايي ستونزو سره مخامخ كړي دي. خو شيدې يې هر چا ته نه رسيږي، بلكي د ځينو رشوتخورو او معتبرو وګړو كورونو ته يې لېږي او كله ناكله چي څه لږ قدري پاته سي هغه هم هغه چا ته په بيه وركوي چي زړه يې غواړي. له دې امله دى چي عام خلك د لوى څښتن له دې ستر نعمت څخه يا ډېره لږ ګټه اخلي يا د بازار هغه شيدي او مستي خوري چي اوبه وراچول سوي وي او له روغتيايي پلوه هم ښې نه وي. اما ډېر خلك د بهرنيو هيوادونو څخه راوړل سوي د قوطيو يا وچي شيدې ډېري استعمالوي.

د قوطيو مايع شيدې:

كه څه هم د كاغذي قوطيو او پلاسټيكي بوتلانو د شيدو څښتنان ادعا وي او تبليغات كوي چي د دوى شيدې د فارمونو تر شيدو ښې، پاكي او معياري دي، خو د دغو شيدو د ډېرمهال ساتلو لپاره هغوى ډول ډول روغتيا ته مضر كېمياوي مواد ور اچوي.

د بېلګې په توګه دغو قوطيو ته د شيدو د ډېر مهال لپاره د ساتلو او نه خرابېدو په خاطر يو ډول كېمياوي مواد ور اچوي چي فارمل ډي هايډ (Formal Deyhde) نوميږي.كوم چي ډېر خطرناك دي او له استعمال څخه يې د سرطان د خطرناكي ناروغۍ د پيدا كېدو احتمال سته. په پاكستان كي د (PCSIR) په نامه يوه نامتو لابراتوار څه موده د مخه له بازارونو څخه د دغو شيدو څو قوطۍ ټولي كړې او د هغو د معاينې په پايله كي يې فارملين كېمياوي مواد پكښي وموندل. له دې امله زموږ حكومت ته لازمه ده چي د دغسي غير صحي شيدو د واردولو مخه ونسي او كه حكومت دا كار نه كوي خلك دي د دغو مضرو شيدو له خوړلو څخه په كلكه ډډه وكړي.

د نيسټلي د شيدو په قوطۍ كي شرموښكۍ؟!

دغه زړه بدوونكى او خواګرځوونكى خبر په ۱۹۹۹ع.كال د «ډان» ورځپاڼي د سپټمر د ۲۱مي نېټې په ګڼه كي خپور كړ. د ايوب ملك په نامه يوه سړي دغي ورځپاڼي ته يو ليك لېږلى وو چي لنډيز يې په دې ډول دى: «ما د ۱۹۹۹ع.كال د سپټمبر پر ۱۳مه د نيسټلي د قوطيو د مايع شيدو يو كارټن رانيوى. چي څو ورځي مو دغه شيدې استعمالولې. يو مهال زما مېرمني د دغه كارټن له قوطيو څخه يوه دانه پرې كړه يو څه شيدې يې خپل ماشوم ته ځني وركړې او نوري يې په يخچا ل كي كښېښوولې. بيا كله چي زما مېرمني د دغي قوطۍ پاته شيدې په كوم لوښي كي اچولې نو ناڅاپه له قوطۍ څخه مړه شرموښكۍ را ولوېدل. د دې حالت په ليدو سره زما مېرمن ډېره وبېرېدل او سمدستي يې دغه شيدې ايسته توى كړې. څه مهال وروسته زما زوى هم په قيونو سو. بيا مو هغه روغتون ته يووړ، چي څو ساعته وروسته يې طبيعت سم سو. له دې امله موږ د دغو شيدو نور ټول كارټن ايسته وغورځاوه او پرېكړه مي وكړه چي بيا به د دغو شيدو پر ځاى د بازار پرانيستي شيدې رانيسم».

دغه راز يوه ايراني ويب سايټ د نيسټلي په کمپنۍ پوري اړوند په يوه کاريکاتور کي داسي انځور کښلى وو چي دغه کمپنۍ په يهودانو پوري متعلق ګڼي.

وګورئ موږ زياتره پر دغسي په قوطيو كي پټو شيانو باندي پيسې وركوو او ناسنجيده او ناليدلي يې خورو او چيښو! بايد هرشى چي رانيسو محتويات يې ښه ځانته معلوم كړو او كه يې نه سو معلومولاى په دې د چلونو په بازار كي پر هر شى خپلي په زيار او خواري ګټلي پيسې ور نه كړو او داسي شيان رانيسو چي په يقيني توګه پاك او صحي وي او د هيڅ ناوړتيا احتمال پكښي نه وي.

وچي شيدې او د سركوزي غوړزګي:

د ۱۹۸۵ع.كال د اپريل پر ۱۳مه د پاكستان د لاهور د «جنګ ورځپاڼي» په دوهم مخ (۶) كالم كي يو خبر خپور سوى وو چي پكښي ويل سوي وه چي: «له جاپان او نورو لوېديزو هيوادونو څخه په راوړلو سوو د كوچنيانو او لويانو د خوړلو په وچو شيدو كي د سركوزي غوړزګي ګډه ده. د سينګاپور د مسلمانانو د ټولني د جريدې «وايس اف اسلام» د خپاره سوي راپور سره سم دغه خبره د ماليزيا د مصرف كوونكو ټولني كړې ده. كوم چي د دغو تورونو څېړنه يې كړې ده. د دې خبري تائيد د ايم، ټى ګليز په ليكلي كتاب كي هم سوى دى. په دغه كتاب كي ويل سوي دي چي: په ۸۸۰ ګرامو وچوشيدو كي ۱۲۰ ګرامه د خرس غوړي وي. په دې هكله د ماليزيا ټولني د سويډن د اړوندو ادارو سره اړيكي ټينګي كړې. هغو هم تر څېړنو وروسته دا خبره تصديق كړه. د سويډن د مسلمانانو د ټولني مشر محمود الديبي وويل: كه تاسو خپلو ماشومانو ته د وچو شيدو په لټه كي ياست نو تاسي ته داسي شيدې نه پيدا كيږي چي د سركوزي غوړي په ګډ نه وي. د جاپان د مصرف كوونكو اتحاديې هم دغه خبره تصديق كړې ده».

د دې خبر په خپرېدو سره په پاكستان كي په خلكو كي تشويشونه رامنځته سول. ځكه چي زياتره وګړي خپلو كوچنيانو ته د دبليو وچي شيدې وركوي. پر دې سر بېره ډېر خلك له دغسي وچو شيدو څخه مستې جوړوي، شېرچاى هم ځني جوړوي او په ډېرو نورو شيانو كي، لكه په ځينو خوږو، آيس كريمونو، ډوډيو او نورو كي يې هم خورا زياتي كاروي. له دې امله مختلفو افرادو د پاكستان له دولت څخه د دې خبري د تحقيق او څېړني غوښتنه وكړه. شپاړس مياشتي وروسته د ۱۹۸۶ع.كال د اګسټ پر دوهمه د پاكستان د وفاقي محتسب له خولې په ورځپاڼو كي دا خبر خپور سو چي: «د لوېديزو هيوادونو څخه په راوړلو سوو وچو شيدو كي د سركوزي غوړي نسته. په هغو هيوادونو كي چي دغه شيدې ځني راوړل كيږي د پاكستان د سفارتونو له لاري د دغو شيدو له جوړوونكو څخه وضاحت وغوښتل سو، هغو وويل چي د دوى لخوا په جوړو سوو وچو شيدو كي د سركوزي د غوړو كومه برخه نه ده ګده. د پاكستان د سوداګرۍ وزارت هم د دغو شيدو له توليدوونكو څخه د هغو فارمولې وغوښتلې. له هغو څخه هم جوته نه سوه چي په دغو وچو شيدو كي د خرس غوړي ګډوي. د پاكستان د شيدو د توليداتو ټولني هم تصديق كړه چي په وچو شيدو جوړولو كي د سركوزي د غوړو«لارډ» استعمالولو ته هيڅ اړتيا نسته». اما د پاكستان د لاهور د (PCSIR) په نامه يوه نامتو لابراتوار چي د وارداتي وچو شيدو پر نمونو لابراتواري تجزيه او معاينات تر سره كړه. هغو وويل چي په دغو نمونو كي د ځينو څارويو د غوړو پته ولګېدل. خو دايې جوته نه كړلاى سوه چي دا د سركوزي غوړي دي كه د كوم بل څاروي؟ له دې امله د (PCSIR) لابراتوار راپور د غور وړ دى. كه د غه غوړي د خرس نه بلكي د بل څاروي هم وي بيا هم هغه په كفري هيوادونو كي په شرعي طريقه نه حلاليږي، بلكي مردار بلل كيږي او د هغو غوښي او غوړي هم شرعاًښه نه بلل كيږي. البته كېداى سي په دغو وچو شيدو كي دغه غوړي د همدغو غواوو وي خو د پورتنيو خبرو او معتبرو اسلامي ارګانونو د څرګندونو په پام كي نيولو او زموږ ديني معتقداتو ته د توليدوونكو د نه درناوي او د اوس مهال سراښيو، غولونو او چالاكيو ته په پام او كتنه سره تر څو په يقيني توګه جوته نه سي چي په دغو شيدوكي كوم غوړي ګډ دى، د دغسي وچو شيدو په استعمال كي هم د ديني تاوانونو او هم د روغتيايي تاوانونو احتمال سته. نو ښه به دا وي چي د دغسي شيدو تر خوړلو چي دوني ارزانه هم نه دي او ځيني روغتيايي ستونزي هم رامنځته كوي تېرسو او د خپل وطن د غواوو او نورو څارويو پاكي شيدې وخورو. او لوى څښټنأ ته په عاجزي دعاوي وكوړو چي اى لويه ربه! زموږ پر حال ورحمېږه او موږ او زموږ دولت لكه څنګه چي ښايي هغسي جوړ كړې او دا ډېري ناسمي مو ته په خپله خدايي را سمي كړې. آمين.

د مور شيدې كه د دبليانو او نورو وچي شيدې؟

ډېري كمپنۍ ادعا كوي چي د دوى جوړي كړي شيدې او نور خواړه د مور د شيدو نعم البدل (ښه عوض) دي. ليكن دا ټولي له مبالغې ډكي خبري دي. اصلاً دا خبره جوته سوې ده چي بل هيڅ خواړه او يا شيدې د مور تر شيدو ښه نه دي.

خپل كوچني ته له ځيګر څخه شيدي وركول آسانه او ارزانه دي. د دې لپاره هيڅ بوتل يا چوشك ته ضرورت نسته. ډېر وخت هم نه نيسي او د دې د حرارت درجه هم تر عامو تودو سوو شيدو ښه ده. وچي شيدې هيڅكله هم كوچنيانو ته مه وركوئ. ځكه كوچني ته د وچو شيدو وركول د كوچني پر روحيه، وده، اند دود او روزنه او اخلاقو باندي ډېره بده اغېزه كوي او له بله پلوه هم كه تاسي د مور د شيدو په مقابل كي وچي شيدي استعمال كړئ، نو له دې امله به تاسي په بله لويه ستونزه هم اخته سئ. ځكه لوښي د جراثيمو او مكروبونو څخه د پاكولو لپاره په پلاوو پلاوو پرېولل او د ورځي لږ تر لږه دوه واره ايشول غواړي. بيا كه شيدې ډېري تودې وي د كوچني د ستوني د سوځلو او خرابيدو خطر هم ورسره وي. ځيني هغه شيدې چي ژر جوړيږي هغه پر كوچني باندي ښه نه لګيږي. له تيو څخه كوچني ته شيدې وركول د قدرتي فارمولې طريقه ده. نو كوچني ته تر ټولو ښه او طبعي د مور د خپل ځيګر شيدې دي. چي د دې خبري له اهميت څخه هيڅ انكار نه سي كېدلاى.

كه چيري كوچني ته د غوا شيدې وركوئ په دې شيدو كي مالګه د انسان د شيدو په پرتله درى برابره ډېره ده او پروټين يې دوه برابره دي. نو د غوا د شيدو د رودلو څخه د كوچنيانو پر وينه نفوذي فشار (Osmotic Pressure) او پر پښتورګو باندي غير ضروري بوج لوېږي. د غوا په شيدو كي كالورۍ ډېري وي په دې خاطر د هغوكوچنيانو په پرتله چي د مور شيدې روي د هغو ماشومانو وزن چي د غوا شيدې په چوشك كي روي تر معياري وزن ډېر وي او د هغو څخه د ۸۰% ماشومانو چي عمر يې ډېر سي د چاغيدو د ناروغۍ امكانات ډېر سته.

د كوچنيانو د شيدو جوړوونكي ډېري ادارې ادعا كوي چي د دوي جوړي سوي شيدې د كوچنيانو هډوكي كلكوي. خو د دې برعكس ويل كېداى سي چي په مصنوعي شيدو روزل سوي كوچنيان د چاغښت له امله تر خپل طبيعي وخت د مخه بلوغ ته رسيږي.

د هغو كوچنيانو چي په چوشك كي شيدې روي د غوا په شيدو كي د بهرني پروټين (Proteins) له امله د حساسيت په ناروغيو لكه (Eczema) او سالنډى (Asthma) په اخته كېدو ډېر امكانات سته او كله چي د چوشك سر خلاص ورپرېږدئ د هغه چوشك په ربړونو باندي مكروبونه نښلي چي له امله يې د ګيډي د پاړسوب شكايت را منځته كيږي.

د مور د شيدو له ډېرو ګټو څخه يوه ګټه دا هم ده چي په كوچنيانو كي د ټپ څخه د ژغورلو لپاره (Antibodies) برابر وي او د دغسي ناروغيوپه وړاندي د مور له لومړنيو شيدوڅخه چي (كانډيات) (Colostrums) ورته وايي دسپينو كروياتو لومړنۍ دفاع كوونكي مرستي موندل كيږي. هغه كوچنيان چي چوشك روي هغه د غوا د شيدو د كيمياوي تركيب څخه هم ناروغه كيږي او د غوا شيدې په مخفي ډول د ګيډي د درد د ناروغۍ منځته راوړونكو بكټرياوو د زياتېدو لامل ګرځي. په داسي حال كي چي د مور شيدي بي ضرره ليكټك اسيډ بكټريا ته (Lactic Acid Bacteria) ځواك وربخښي.

كله چي مور خپل كوچني ته شيدي وركوي، مور او كوچنى دواړه ډاډ او تسليت محسوسوي او د دواړو تر منځ ښې اړيكي پيدا كيږي.

كوچني ته د شيدو وركولو څخه ژر د ښځو رحم خپل اصلي حالت ته راګرځي او هغه ميندي چي خپلو ماشومانو ته د خپل ځيګر شيدي وركوي په هغو كي د ځيګر (تي) د سرطان امكانات ډېر لږ وي. خو هغه ښځې چي د شيدو وركولو عمل د ايسټروجن درملو په استعمال باندي دروي او خپلي شيدې وچوي هغوى د ويني په لخته كېدو اخته كيږي چي د دغه ډول وچولو څخه د ځيګر د سرطان امكانات ډېريږي. د خپل ځيګر څخه كوچني ته شيدي وركول بله دا ګټه هم لري چي كه ناروغه كوچني ته په كوم سبب د مور شيدي مونده نه سي نو هغه په كوم روغتون كي د دايي (Donor mother) څخه شيدي رودلاى سي. په يوه زمانه كي دغه دود عام وو چي كه به مور ناروغه وه يوه دايي ښځه به يې چي د شيدو وركولو وړ به وه په خپل كور كي ساتل چي كوچني ته خپلي شيدي وركړي. تاسي به د رضاعي ورور او رضاعي خورپه هكله ډېر اورېدلي وي د دې معنا دا ده چي دغه هلك يا انجلۍ د يوي مور څخه شيدي رودلي دي. په اسلام كي كوچني ته د مور د شيدو وركول دونه مهم دي چي په قرآن كريم او د فقهي په كتابونو كي د «رضاع» تر سر ليكونو لاندي مفصلي خبري او شرعي مسئلې راغلي دي. پر ميندو باندي د قرآن كريم حكم دى چي خپل اولاد ته تر دوو كالو خپلي شيدې وركړي دا ځكه چي د مور شيدې د ماشوم لپاره تر نورو شيدو ډېري غوره او مناسبي دي.

ډېري ښځي داسي فكر كوي چي زه كوچني ته شيدي نه سم برابرولاى خو داخبري بېخي بې بنسټه دي. يوه مور زياتره هغه وخت دغه خبري كوي چي د دې د كوچني وزن سمدستي نه زياتيږي. هغه ښايي دا فكر كوي چي د دې ماشوم ته پوره خواړه نه ور رسيږي. په داسي حال كي چي په حقيقت كي د كوچني د پيداكېدو څخه دوې ورځي وروسته دهغه ۱۰% وزن كميږي او بيا كوچنى د مور د شيدو د رودلو په صورت كي په تقريبا ۱۵ ورځوكي د خپل پيداكېدو د وخت وزن بيرته لاس ته راوړي. خو كه د غوا شيدې يا نوري وچي شيدې روي د كوچني د زوكړي د لومړي وزن دبيرته لاس ته راوړلولپاره ډېر وخت تيرېږي. د دې پلوه هم د مور شيدي ډېر ښه خواړه دي او واقعا چي د دې هيڅ نعم البدل (ښه عوض) نسته.

كه څه هم د مختلفو ښځو د شيدو د توليد په اندازه او د ځيګر په كچه كي توپير وي خو بيا هم د ځيګر كچه د شيدو د توليدولو سره څه اړه نه لري.

يوه ښځه د اوو كوچنيانو د غذائي اړتياوو د بشپړولو وړتيا لرلاى سي. په نوي طبابت كي د مور د شيدو د ډېرېدو لپاره ډول ډول ګولۍ او كېمياوي تركيبات سته چي شيدې د يو څه مهال لپاره زياتوي خو د دغسي شيانو استعمال د سر درد او د سر پرله ګرځېده او نور تكليفونه رامنځته كوي. له دې امله د شيدو د ډېرېدو لپاره بايد دغسي ګولۍ ونه خوړل سي. د دې ګوليو او تركيباتو پر ځاى تاسي كولاى سئ د نورو دوديزو درملو په مرسته خپلي شيدې ډېري كړئ. پر دوديزو درملو سربيره پر شيدو رودنكي باندي د مور توجه د شيدو د زياتوب لپاره ډېره ښه نسخه باله سي. كله چي كوچنى د خپلي مور تى نيسي د هغه د نيولو څخه شيدې راويښيږي او ډېري رابهيږي او د كوچني د رودلو څخه شيدې هم ډېريږي. كله چي كوچني ته ضمني خواړه هم وركوئ نو څنګه چي كوچنى ډېر وږي نه وي او تى ښه په زوره نه روي له دې امله په شيدو كي هم كمى راځي. البته اروايي مسايل هم د شيدو د ډېرېدو مخه نيسي. پريشاني، كورنۍ ربړي اوپه احساساتو كي سړه وضع هم د شيدو په مقدار كي كمښت راولي. د درملو د ډېر استعمال څخه، په ځانګړي ډول د حمل اخيستلو د مخنيوي د درملو، اينټي هيسټامين (Antihistamine) انتي بيوټيک له استعمال څخه او د متيازي راوړونكو درملو له خوړلو څخه هم شيدي كميږي. نو هغه ميندي چي كوچني ته شيدي وركوي بايد د دغسي درملو څخه ډډه وكړي. پدې چي د دغسي درملو اثر زياتره د مور په شيدو كي شامليږي او د كوچني پر روغتيا باندي ډېري بدي اغېزي ښندي. نو له دې امله دغه ډول درمل د ډاكټر له مشوري پرته مه استعمالوئ.

د شيدو وركولو پر مهال چي كوم عام مسايل پيدا كيږي هغه د تيانو د سرو پاړسوب او د ځيګر درد دى چي په دوو تر څلورو ورځو كي بيرته سميږي. شيدې وركونكي ميندي بايد خپل ځيګر پاك وساتي ليكن د دې لپاره د صابون استعمال ښه نه دى. پدې چي د صابون له پرېولو څخه د پوست مثبته غوړزګي له منځه ځي او د ځيګر پوست و چيږي او پوستكى يې خوروكي خوروكي كيږي او چوى چي د دې څخه د ځيګر درد پيل كيږي. د درد څخه د ځان ساتلو لپاره يو احتياط په كار دي او هغه دا چي د شيدو رودلو پر مهال تى بايد د كوچني په خوله كي سم وركړئ او كله چي كوچنى تى وروي، تى هغه مهال ځني ليري كړئ چي هغه خوله ټينګه نه وي نيولې تر څو تى د كوچني د خولې څخه په آساني سره راووځي. د كوچني چي تى په خوله كي وي يو دم يې مه ځني را ايسته كوئ چي د دې څخه د تى د سر د ټپي كيدو خطره ډېره ده. د ځيګر درد اكثره د تيو له ډكېدو څخه د كلكېدو له امله پيداكيږي او دغه كلك والى هغه مهال له منځه ځي چي كوچنى د شيدو په رودلو پيل وكړي. كله چي په تيانو كي غټى ښكاري د هغه سره تبه هم وي چي په دې صورت كي بايد معالج ډاكټر ته مراجعه وكړئ يا ممكن دغه پاړسوب د تيانو د (Mastitis) نخښه وي. په دغه حالت كي د هغو د له منځه وړلو لپاره اكثره له اينټي بيوټيك درملو څخه ګټه اخلئ.

غوړي

داچي په ځينو ځايونو كي دغوړيو پاكوالى او روغتيا يي مسايل څونه په پام كي نيسي تر دې پوري به خپل د سترګو ليدلى حال در ته ووايم. په هند كي د ملګرو ملتونو د مهاجرو د څانګي يوه هندۍ ډاكټره وه. هغې به تل خپلو افغانو ناروغانو ته توصيه كول چي د بازار شيان مه خورئ. په لومړي سر كي موږ ته د دغي ډاكټري خبري بې ارزښته ايسېدلې. خو ورسته پوه سولو چي دا ډېر ښه وايي. يو مهال مي د نوي ډيلي په يوه سيمه كي پر پاخه سړك د لمر ګلي يا كاپر ګل (آفتاب ګردان) بېخي ډېري داني اواري ولېدلې. كله چي ورنژدې سوم ومي ليدل چي په دغو دانو كي بې حسابه توري شپږۍ ګرځي او يو سړى دغه دانې او شپږۍ په بېلچه كي اخلي او په يوه لغوړنه كوټه كي يې د يوه ماشين د ژرندي د جلتي غوندي ځاى ته اچوي او وروسته د دغو دانو غوړي بېل او كنجاړه بېله راوزي. په دې توګه يې زما د بازار له شيانو څخه څه چي د غوړو له استعمالولو څخه يې لازړه راتور كړ. د غوړو په هكله ترڅو كېداى سي د زيتونو يا د شړشمو غوړي (تېل) يا د غواوو او مېږو غوړي يا د خپل وطن يا د عربي هيوادونو د با اعتمادو كمپنيو ويلي غوړي چي كلسټرول ونه لري رانسئ او په خوړو كي يې بېخي لږ كاروئ.

زيات آشپزان د خوړو په پخلي كي كوچي استعمالوي. دا ځكه چي د كوچو ويټامينونه نسبتاً ډېر او غوړزګي يې لږ وي. خو ځيني خلك د كوچو او مارجرين (Margrine) تر منځ توپير نه سي كولاى. د كوچو د رانيولو پرمهال مو پام وي چي د كوچو پر ځاى مارجرين را نه نيسئ. مارجرين د ۱۸۶۰ع. كلونو په وروستيو كي يوه فرانسوي درمل جوړوونكي H. Mège-Mouriès ايجاد كړل.دغه مهال په فرانسه كي كوچي لږ وه. مارجرين د يوه يا څو ډولو نباتاتو، د پسونو له وازګو يا ځينو نورو څارويو له غوړيو يا تېلو څخه په لاس راځي چي د كوچو په پرتله يې بيه لږ ده. په ۱۹۲۸ع.كال په انګلستان كي يو قانون را ووتى چي د مارجرين پر هر پاكټ دي د هغو نوم په څرګنده توګه وليكل سي. په دې توګه مارجرين او كوچي سره بېل سول او د هر يوه بيه هم بېله بېله وټاكل سول.

دغوړو روغتيايي ضررونه:

غوړي يوازي د چاغښت او زړه ناروغۍ نه رامنځته كوي، بلكي د طب پوهانو د څېړنو له مخي له هغو څخه هډوكي هم نري او نازك كيږي. د غوړو له امله د ويني لوړ فشار، د كلسټرولو لوړوالى او په پايله كي د زړه د ناروغيو علامې ځيني وختونه ناجوتي وي. څنګه چي د زړه د زياتو ناروغيو پته پر وخت نه لګيږي نو عام وګړي له هغو څخه د ژغورني لپاره تر هغه مهاله پرهېز نه كوي څو د زړه ناروغي په پشبړه توګه ورپېښه نه سي.

د زړه پر سطحه داسي يو ډول رګونه سته چي زړه ته اكسيجن رسوي. نو كله چي دا رګونه بند سي كوم چي سبب يې غوړ مواد كيږي نو زړه اكسيجن نه سي تر لاسه كولاى او له دې امله نور غذايي توكي هم نه ور رسيږي. له دغو رګونو څخه كه كوم يو ناببره په پشبړه توګه بند سي نو له هغه څخه يو ډول تكليف چي «هارټ اټيك» (د زړه حمله) ورته وايي پيدا كيږي. پر دې بنسټ چي كوم كسان غوړ خواړه خوري په حقيقت كي خپل زړه وږى ساتي.

ځوان او په ښكاره روغ وګړي عموماً فكر كوي چي هغوى د زړه له ناروغيو څخه خوندي پاته سوي دي او دا د بوډاګانو ناروغي بولي. خو دا ډېره خطرناكه غلط فهمي ده. زيات شمېر داسي ځوانان سته چي د زړه په ناروغيو اخته دي. دوى د زړه د ناروغيو ځينو لومړنيو نخښو ته پام نه كوي او په دې توګه د مړيني كومي ته ځانونه ور اچوي. په دوى كي د بد احتياطۍ له امله د زړه ناروغۍ ورځ تربلي زياتيږي. د دوى خوراك، چيښاك او عادات د روغتيايي اصولو سره سم نه دي او له دې امله په اوسني ژوندانه كي هغو ته تكړه او فعال اوسېدل مشكل سوي دي.

په دې برخه كي يوه ګټوره څېړنه سوې ده. له هغې څخه څرګنديږي چي آسيايي وګړو چي لوېديز تهذيب او هڅوب (كلتور) خپل كړى دى د خپل ژوندانه د خوراك، چيښاك صحي او سمي لاري چاري يې پرې ايښي او له دې امله په دوى كي د زړه د ناروغيو ګچه لوړه تللې ده.

د ساري په ډول د جاپانيانو په تېره بيا د سهيلي آسيا د وګړو ژوند دود د زړه او د شكري ناروغۍ كنټرولوي. د دغو سيمو عام وګړي لكه كارګران، مزدوران، بزګران او نور د روغتيايي اصولو تر پولي ډنګر دي او د كلسټرولو سطحه ډېره پكښي ټيټه ده. خو ځينو نورو د ښاري او لوېديز ژوندانه د اغېزو له كبله د ځان هوساينه غوره كړې او زياتره هغه خواړه چي كله كله بايد وخوړل سي د خپلو همېشنيو خوړو غوندي خوري.

د زړه له ناروغيو څخه د ژغورني بنسټيز شرط دادى چي وګړي روغتيايي عادتونه خپل كړي او په خوراك، چيښاك كي احتياط وكړي او جسماني فعاليتونه زيات كړي. بل دا چي زموږ دوديز خواړه روغتيا ته زښت زيات ګتور دي. په هغو كي مېوې، سابه (تركارۍ او سبزي) دالونه، حبوبات او غلې دانې ډېري دي. خو له بده مرغه نن مهال د دې خوړو پر ځاى زياتره له غوړزګيو او خوږو څخه ډكو خوړو ته مخه سوې ده. چي كه د دې حالت مخه ونه نيول سي او داسي غير صحي عادتونه پرې نه ښوول سي نو به له ۴۰ څخه تر ۵۰ كلنو وګړو مړينه د زړه د ناروغيو له لاسه بې كچي ډېره سي. د زړه د ناروغيو د مخنيوي لپاره مشوره داده چي چهل قدمي كوم چي يو غوره اسلامي سنت دى هر وګړى خپل عادت وګرځوي او ور سره ورسره بڼوالي، بايسكل ځغلول او يا داسي كوم بل ورزش وكړي.

مشكل دادى چي اوس خلكو ماښام لا څه چي د ورځي ډېر وختونه ټلويزيو نونو ته ناسته غوره كړې او خپل دغه ارزښتناك وخت پر غير صحي لارو او د لوېديزيانو او هنديانو د كلتوري يرغل د پروګرامونو پر كتو لګوي. دغه راز ډېره لږ لار هم د موټر په واسطه پرې كوي.

په دې لړ كي ځينو نورو ناسمو تصوراتو ته خاتمه وركول هم اړين برېښي. ځيني وګړي فكر كوي چي كه په سبزيو كي موجود ګټور توكي د ويټامينونو له ګوليو څخه تر لاسه سي نو دغه ضرورت به بشپړ سي. خو دا غلط خيال دى. دغه اړتيا په خپله د سبزيو په خوړلو سره تر سره كيږي. ډېر سابه او مېوې خوړل ډېر ګټور او د زړه له ناروغيو څخه د مخنيوي ډېره ښه لار ده.

د پلاسټيکي کڅوړو استعمال زموږ روغتيا او چاپېريال د ګواښ سره مخامخ کړى دى

په پخوا وختونو کي که زموږ ژوند ساده وو، خو خورا پاک، بې ضرره، روغتيايي او صفا ستره هم وو. دلته زموږ موخه زموږ د ژوند پر ټولو برخو باندي خبري او څېړنه نه ده، بلکي موږ دلته د پلاسټيکي کڅوړو پر بېخي زياتو روغتيايي تاوانونو او د چاپېريال په ککړتيا کي د هغو د زياتي ونډي په هکله لنډي خبري کوو. پخوا به موږ له کوره د ټوکره څخه جوري سوي کڅوړي را واخيستي بازار ته به ولاړو. له دکاندارانو څخه چي به مو شيان رانيول، هغو به ټول په کاغذونو او کاغذي کڅوړو کي په يو ډول څانګړي مهارت سره پېچل او همداراز به يې پر ځينو کاغذونو او کڅوړو تار هم پېچى او راکول به يې او موږ به په خپله د ټوکره په کڅوړه کي واچول او کور ته به مو راوړل. دغه راز به موږ ډول ډول مېوې او نور په ځانګړو ټوکريو کي ايښوولې او په هغو کي به مو ساتلې.

خو له بده مرغه له کومه مهاله چي زموږ ټولني ته د پردو کلتور را څرګند سو زموږ د ټولني د ډېرو ښو دودونو او معمولاتو ځاى غير صحي او مضرو کړو وړو اشغال کړ. په دې لړ کي يو هم پلاسټيکي کڅوړي او ډېر نور دي چي زموږ د ټوکره او کاغذي کڅوړو ځاى يې ونيو او د څه سهولت او آسانتيا په را بخښلو سره يې زموږ روغتيايي حالت او چاپېريال د ستر ګواښ سره مخامخ کړى دى. نن مهال دادى وينو چي زموږ د هيواد په هر ګوټ کي ډول ډول پلاسټيکي کڅوړي او نو شيان خورا ډېر کارول کيږي..

بدمرغي داده چي د دې کڅوړو زښتو زياتو تاوانونو ته نه زموږ دولت متوجه دى، نه زموږ د روغتيا او چاپېريال ساتني مسؤولين او چار واکي څه پر وايي او نه زموږ د خلکو د دې کڅوړو روغتيايي خطراتو ته پام اوښتى دى.

دغه پلاسټيکي کڅوړي او نور له پولي اـ تهايي لين څخه جوړيږي چي يو ډول پټروليم محصول دى. په رنګه کڅوړو کي کروميم (Cromium) لېډ (Laed).کاپر (Copper) کېډميم (Cadmium) او داسي نور مضره مواد کارول کيږي چي په انسانانو کي د حساسيت او ډېرو نورو ناروغيو لامل ګرځي. تور رنګي پلاسټيکي کڅوړي تر نورو ډېري زياتي هلاکوونکي دي، او د سرطان غوندي خطرناکي ناروغۍ سبب ګرځي.

پر دې سربېره د موثقو منابعو په حواله په پاکستان کي په روغتونونو کي د استعمال سوو پلاسټيکي موادو، لکه سرنجونو (پېچکاريو) او داسي ډېرونورو ناپاکو او فضله موادو څخه د پلاسټيکي کڅوړو په جوړولو کي کار اخلي. چي دغسي کڅوړي لا زياتي خطرناکي باله سي

پر دې سربېره دغه کڅوړي هغه مهال ډېري خطرناکي کيږي چي په هغو کي خواړه په تېره تاوده خواړه کښېښوول سي او بيا وخوړل سي. که تاسي چاى، سالن، شيدې يا درمل په دغو کڅوړو کي ايږدئ، نو له هغو څخه د کڅړو کېمياوي مادې جذبوي چي په پايله کي يې دغه شيان تاسي ته د روغتيا پر ځاى د بېلابېلو ناروغيو لامل ګرځي.

دا چي دغه پلاسټيکي کڅوړي او نور شيان په لارو، کوڅو، لښتيو او ډنډونو کي د غورځولو له امله څونه ډېر مکروبونه جذبوي او زېږوي او زموږ چاپېريال څونه ککړوي دا بيا بېل او ډېر اوږد بحث دى چي دا کوچنى کتاب يې د بيانولو حوصله نه لري. په دې هيله چي زموږ دولت، روغتيا يي موسسې او خلک د دغو خطرناکو توکو له شره د ژغورني لپاره اغېزمن تدابير ونيسي.

درملنه

په نړۍ او زموږ په هيواد كي د درملني لنډ تاريخ:

له كومي ورځي څخه چي لوى څښتنأ حضرت آدم÷ مځكي ته را كوز كړ طبابت هم ور سره رامنځته سو. پر مځكه باندي د هغه د ګام ايښوولو سره سم د ځان په فكر كي سو؛ له سړو، تودو او طبيعي آفتونو څخه به يې ځان خوندي كاوه او چي څه درد او تكليف به ورپېښ سو د هغه چاره به يې كول. په دې توګه ويلاى سو چي د انساني ټولني په تاريخ كي طبابت په ټولو طبيعي پوهنو كي لومړۍ پوهنه ده چي په بېلو بېلو ټولنو او تاريخي پړاوونو كي يې وده كړې او تر دې اوسنۍ پوړۍ پوري را رسېدلې ده. د تاريخ پوهانو په وينا زموږ عنعنوي طبابت د زردشت له وختو څخه دود دى. د اورپالو (آتش پرستانو يا مجوسيانو) دغه پخواني پېغمبر چي د عيسٰى÷ تر زېږېدو شا وخوا اووه پېړى دمخه په بلخ كي اوسېدى د «اوستا» په نامه كتاب وليكى چي په هغه كي يې د طبابت او روغتيا ساتني په هكله هم څرګندوني وكړې. وروسته لرغوني افغانستان ته د سكندر او يونانيانو په را تلو او بيا دلته د ځينو يونانيانو په پاته كېدو او د هندي درملو او طبابت په رانقلېدو سره تر اسلام دمخه دلته يو ډول افغاني، يوناني او هندى مخلوط طبابت رامنځته سو. بيا په اسلامي دوره كي مسلمانان ديوناني طبابت سره بلد سول. هارون الرشيد، مامون، متوكل، مقتدر او نورو عباسي خلفاوو په بغداد كي روغتونونه پرانيستل او يوناني طبيبان يې ور ته را جذب كړل. چي په دې توګه د مسلمانانو لخوا د طبابت په تاريخ كي ستر بدلون راغى. لومړى د يوناني طب كتابونه په عربي وژباړل سول او بيا په عربي ژبه د طب مستقل كتابونه د ځينو عربي، افغاني او ايراني طب پوهانو لخوا وليكل سول. څنګه چي د اسلام په سپېڅلي دين كي د خير او ښېګڼي په هكله زښت زيات ټينګار سوى دى او د انسانانو روغتيا ته په ستر ارزښت قايل دى له دې امله د طب پوهي د اسلام په سيوري كي بشپړتيايي پړاوونه ووهل، د دې دين په پيروانو كي ډېر ستر ستر او په نړيواله كچه نامتو طبيبان، لكه محمد زكرياى رازي، شيخ الرئيس بوعلي سينا، ابن رشد او ډېر نور مونده سول چي د يونان، هند او فارس ګډوډ او سره پاشلى طبابت يې مرتب او منظم كړ، پر هغه يې زياتوني وكړې، له نظري بڼي څخه يې عملي بڼه وركړه او په دې توګه د عربو او نورو مسلمانانو د تلاښونو، تجربو، زيراكت او نبوغ له امله نوى، مستقل اسلامي طبابت را منځته سو.

دغه اسلامي طبابت د عباسيانو په پېر كي افغانستان ته نفوذ وكړ چي بالاخره د لرغوني افغاني، يوناني، هندي او عربي طبابت څخه زموږ اوسني دوديز طبابت تشكيل سو كوم چي زموږ د هيواد په ګوټ ګوټ كي رواج لري خو له بده مرغه چي د واكمنو د نه پاملريني له امله د دې طبابت (د طبي بوټو او طبيعي منابعو) درمليزي ګټي له پامه لوېدلي دي.

دغه راز اسلامي طبابت چي خپلي لوړي كچي ته رسېدلى وو او د ناروغيو پوهي ته يې پراختيا وركړه، په داسي حال كي چي اروپايان له طبابته بېخي بې برخي وه لومړى د عادي تلو راتلو له امله اروپا ته ورسېد او ورپسې چي د صليبي جګړو او ډول ډول يرغلونو په پايله كي اروپايان ختيزو هيوادونو او اندلس ته ورسېدل او خپل ځانونه يې د يوه ستر تمدن سره مخامخ وليدل نو يې له دې ستري پوهي څخه په ګټه اخيستنه پيل وكړ چي په دې توګه تر ډېرو پېړيو پوري اسلامي طبابت پر اروپا مسلط وو. ډېر اروپايي طبيبان او د طبابت د زده كړي مراكز د اسلامي طبابت د مكاتبو شاګردان او پيروان وه، د اسلامي طب پوهانو آثارو په اروپايانو كي دونه نفوذ درلود چي ان د ابن سينا د «قانون» لاتيني ژباړه تقريباً دېرش واره چاپ سوې ده. ډېرو اروپايي شارحينو د قانون بېلي بېلي برخي شرح كړي دي. ډېر نور طبي كتابونه يې هم به بېلو بېلو ژبو ژباړلي او ان ځيني يې تقريباً څلوېښت ځلي طبع كړي دي.

په دې توګه د لوېديز اوسنى طبابت چي د نولسمي پېړۍ په پيل كي په مستقله توګه د لوېديز يا انګريزي طب په نامه ونومول سو هماغه يوناني، اسلامي طبابت دى چي د لوېديزيانو د ډول ډول زيارونو او پرمختياوو په پايله كي اوسنۍ پوړۍ ته رسېدلى دى. خو بيا هم په ډېرو مواردو كي نيمګړى او د ډېرو ناروغيو په وړاندي بې وسه پاته دى.

زموږ په هيواد كي د دغه طبابت دودېدل له افغانستان څخه د انګرېزانو تر وتلو وروسته په محدوده توګه پيل سول. د شلمي پېړۍ په لومړيو لسيزوكي روغتونونه را منځته سول. په ۱۳۱۱ل.كال په كابل كي د طب پوهنځي او د درمل جوړولو عالي ښوونځي بنسټ كښېښوول سو. خو له بده مرغه پر موږ د نا اهلو، ځان او پردي پالو واكمنانو د شومي سيطرې او د پردو غليمانو د توطئو او تېريو له امله زموږ د طبابت چاري دونه ورسته پاته دي چي ټول د اړتيا وړ درمل او طبي سامان آلات مو له بهرنيو هيوادونو په ډېره ټيټه سطحه او كيفيت او ګرانه بيه را ته راځي او زيات شمېر ناروغان مو په ګاونډيو او نورو هيوادونو كي تداوي كيږي.

اسلام او درملنه:

لكه چي پوهيږو د اسلام د سپېڅلي دين ستره او بنسټيزه موخه له روحي او معنوي پلوه د انسان جوړښت او لوړو او سپېڅلو پوړيو ته د هغه رسول دي. له دې امله اسلامي شريعت د انسان جسماني روغتيا او د هغې ساتني ته ډېر پام اړولى دى. ځكه چي جسم دې موخي ته د رسېدلو او د انسان لخوا د اسلامي ارشاداتو او شرعي چارو د تر سره كولو او د دواړو جهانو دسمولو او د ژوندانه د كړاوونو او ستونزو د اوارولو وسيله باله سي. دغه لامل دى چي اسلامي شريعت له زښتو زياتو روغتيايي لارښوونو او سپارښتونو ډك دى. څو مسلمان له ديني او بدني پلوه ښه ځواكمن او پياوړى اوسي. په دې هكله رسول ج فرمايي:

«الْمُؤْمِنُ الْقَوِيُّ خَيْرٌ وَأَحَبُّ إِلَى اللَّهِ مِنْ الْمُؤْمِنِ الضَّعِيفِ وَفِي كُلٍّ خَيْرٌ احْرِصْ عَلَى مَا يَنْفَعُكَ وَاسْتَعِنْ بِاللَّهِ وَلَا تَعْجَزْ» (مسلم، كتاب القدر، باب في الامر بالقوة ۲۶۶۴ حديث).

يعني لوى څښتن ته ځواكمن مومن تر بې سېكه مومن غوره دى. په دواړو مومنانو كي خير دى. د هغه څه كوښښ كوه چي ګټه درته رسوي، له لويه څښتنه مرسته غواړه او ځان عاجزه او اسكېرلى مه ګڼه. يعني د خداى په طاعت كي چي ډېر ګټور كار دى زيات كوښښ كوه او په دې چاره كي له خدايه مرسته غواړه او د عبادت او له خدايه د مرستي په كار كي سستي مه كوه.

لوى څښتنأ د انسان د وجود د ساتني او له آفتونو، ناروغيو، وژونكو مكروبونو او زهرجنو اغېزو څخه د هغه د ژغورني لپاره په خپله د هغه په بدن كي دونه قوي تدابير په كار اچولي دي چي لاتر اوسه پوري د انسان علم په دې نه دى بريالى سوى چي په هغو باندي په بشپړه توګه وپوهيږي. كه دغه طبيعي تدابير موجود نه واى نو يوه مازي ساده ناروغي به هم د انسان لپاره وژونكې جوتېدلاى او د هغه د درملني لپاره به د هغه هيڅ هڅه او هاند نه سواى بريالى كېدلاى. له دې امله وو چي حضرت ابراهيم÷ خپل پلار او قوم ته د نورو خبرو په ترځ كي وويل:

﴿وَإِذَا مَرِضۡتُ فَهُوَ يَشۡفِينِ ٨٠﴾ [الشعراء: 80].

«او كله چي زه ناروغه سم هغه رب العالمين مي رغوي».

كله چي د اسلام مقدس دين د نړۍ د انسانانو د دې او هغي دنيا د نېكموغۍ لپاره دا د جهل په تورتمونو او مادي او معنوي ناروغيو تياره نړۍ په خپلو سپېڅلو لارښوونو رڼا كړه، نه يوازي دا چي د انسانانو د نورو ډېرو شئونو تر څنګ يې د هغو د مادي او بدني ناروغيو رغولو ته پام واړاوه، بلكي د هغو د زړونو د ناروغيو رغولو ته يې هم بشپړه پاملرنه وكړه.

د زړونو د ناروغيو يادوني موږ په لاندي آيتونو كي موندلاى سو:

لوى څښتن د شبهې د ناروغۍ په هكله وايي:

﴿فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٞ فَزَادَهُمُ ٱللَّهُ مَرَضٗاۖ﴾ [البقرة: 10].

ژباړه: «د هغو (منافقانو) په زړونو كي يوه ناروغي ده چي لوى څښتن هغه لا پسي زياته كړه».

دغه راز فرمايي:

﴿وَلِيَقُولَ ٱلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٞ وَٱلۡكَٰفِرُونَ مَاذَآ أَرَادَ ٱللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلٗاۚ﴾[المدثر:31].

ژباړه: «او د زړه ناروغان او كافران دا وايي چي ښه نو د لوى څښتن د دې عجيبي خبري څخه څه مطلب كېداى سي؟».

او د هغه چا په هكله چي د قرآن اوسنتو پرېكړي ته بلل كيږي او نه يې مني فرمايي:

﴿وَإِذَا دُعُوٓاْ إِلَى ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ لِيَحۡكُمَ بَيۡنَهُمۡ إِذَا فَرِيقٞ مِّنۡهُم مُّعۡرِضُونَ ٤٨ وَإِن يَكُن لَّهُمُ ٱلۡحَقُّ يَأۡتُوٓاْ إِلَيۡهِ مُذۡعِنِينَ ٤٩ أَفِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَمِ ٱرۡتَابُوٓاْ﴾ [النور: 48-50].

ژباړه: «كله چي دوى د لوى څښتن او پېغمبر لوري ته بلل كيږي څو پېغمبر د دوى د خپل منځي شخړو په هكله پرېكړه وكړي نو له دوى څخه يوه ډله په څنګ كيږي. البته كه حق د دوى پر خوا وي نو پېغمبر ته د امر منونكي په بڼه مراجعه كوي. آيا د دوى په زړونو كي د (منافقت) نارغي ده؟ او كه په شك كي لوېدلي دي؟».

د شهوتونو د ناروغۍ په هكله فرمايي:

﴿يَٰنِسَآءَ ٱلنَّبِيِّ لَسۡتُنَّ كَأَحَدٖ مِّنَ ٱلنِّسَآءِ إِنِ ٱتَّقَيۡتُنَّۚ فَلَا تَخۡضَعۡنَ بِٱلۡقَوۡلِ فَيَطۡمَعَ ٱلَّذِي فِي قَلۡبِهِۦ مَرَضٞ﴾ [الأحزاب: 32].

ژباړه: «اى د پېغمبر مېرمنو! تاسي د عامو مېرمنو غوندي نه ياست. كه تاسي له لوى څښتن څخه بېرېدونكي ياست نو په داسي لهجه خبري مه كوئ چي د زړه په ناروغۍ اخته كوم سړى تمه پيدا كړي».

البته د بدني ناروغيو په هكله په قرآن كريم كي داسي يادونه سوې ده:

﴿لَّيۡسَ عَلَى ٱلۡأَعۡمَىٰ حَرَجٞ وَلَا عَلَى ٱلۡأَعۡرَجِ حَرَجٞ وَلَا عَلَى ٱلۡمَرِيضِ حَرَجٞ﴾ [النور: 61] - [الفتح: 17].

ژباړه: «كه ړوند، ګوډ او ناروغ جهاد ته ولاړ نه سي نو څه باك نسته».

په حج، روژه او اودس تازه كولو كي د بدن د ناروغۍ يادونه د داسي عجيبو اسرارو او رازونو لپاره سوې ده چي پوه سړي ته د قرآن عظمت له ورايه څرګندوي.

له هغه ځايه چي د اسلام مقدس دين په خپلو مباديو او توجيهاتو كي د حفظ الصحې، د ناروغيو د خپرېدو مخنيوى او د هغو په وړاندي وقايوي تدبيرونو نيولو ته بلنه وركوي او د هغو د درملني لپاره خپل پيروان هڅوي نو اسلامي طبيبانو د لوى څښتنأ له معجز كتاب څخه د حفظ الصحې او د ناروغيو د وقايې لپاره دغه درې قاعدې يا اصول را ايستلي دي:

(۱) حفظ الصحه. (۲) روغتيا ته د ضرر رسوونكي شي له خوړلو او استعمالولو څخه ډډه كول. (۳) د داسي عمل څخه ځان ساتل چي پر ناروغي ناوړي اغېزي ښندي.

په دې هكله ستاسي پام لاندي آيتونو او د هغو ژباړو ته را اړوو:

په هغه آيت كي چي د روژې په هكله نازل سوى دى فرمايي:

﴿فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوۡ عَلَىٰ سَفَرٖ فَعِدَّةٞ مِّنۡ أَيَّامٍ أُخَرَۚ﴾ [البقرة: 184].

ژباړه: «كه له تاسي څخه څوك ناروغ يا مسافر وي، نو په نورو ورځو كي دي هغونه روژې ونيسي چي خوړلي يې دي».

په دې آيت كي لوى څښتنأ ناروغ لره د ناروغۍ د عذر په خاطر او مسافر لره د روژې خوړل روا كړي دي. څو د هغه صحت او روغتيا وساتل سي او تاوان ورته ونه رسيږي.

د حج په هكله چي كوم آيت نازل سوى دى په هغه كي داسي فرمايي:

﴿فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوۡ بِهِۦٓ أَذٗى مِّن رَّأۡسِهِۦ فَفِدۡيَةٞ مِّن صِيَامٍ أَوۡ صَدَقَةٍ أَوۡ نُسُكٖۚ﴾ [البقرة: 196].

ژباړه: «خو كه له تاسي څخه څوك ناروغ وي يا يې په سر كي څه تكليف وي (چي له امله يې خپل سر وخريي) نو هغه دي د فديې په توګه روژې ونيسي يا دي خيرات وركړي او يا دي قرباني وكړي».

په دې ډول يې ناروغ او هغه چا ته چي په سر كي څه تكليف ولري او د احرام په حالت كي سر خريل ورته لازم وي، د سر خريل مباح كړي دي. چي له دې څخه اسلامي فقهاوو او علماوو نور دغسي مسايل هم قياس كړي دي.

د اوداسه په آيت كي فرمايي:

﴿وَإِن كُنتُم مَّرۡضَىٰٓ أَوۡ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوۡ جَآءَ أَحَدٞ مِّنكُم مِّنَ ٱلۡغَآئِطِ أَوۡ لَٰمَسۡتُمُ ٱلنِّسَآءَ فَلَمۡ تَجِدُواْ مَآءٗ فَتَيَمَّمُواْ صَعِيدٗا طَيِّبٗا﴾ [النساء: 43] - [المائدة: 6].

ژباړه: «او كه تاسي ناروغ ياست يا په سفر كي ياست، يا انساني حاجت رفع كړئ يا مو ښځو ته لاس وروړئ او بيا اوبه ونه مومئ، نو له پاكي خاوري څخه كار واخلئ».

په دې آيت كي په اودس تازه كولو كي ناروغ ته د وقايې او حمايې لپاره د اوبو پر ځاى له خاوري څه كار اخيستل مباح سوي دي.

پر همدې بنسټ اسلامي سترو طبيبانو د اوسني عصري طبابت تر رامنځته كېدلو په سلګونو كلونه وړاندي ويل: د طب موخه روغتيا ساتنه او د ناروغۍ رغېدنه ده. چي اوسنى طبابت يې د وقايوي او معالجوي طب په نومونو راښيي. كه تاسي د اسلام د نامتو طبيب ابن رشد (۱۱۲۰ـ ۱۱۹۸ع) «الكليات في الطب» كتاب وګورئ، هغه وقايه او معالجه په «حفظ الصحه وازالة المرض» تعبيروي. دغه راز كه تاسي د نامتو مسلمان طبيب ابن البيطار (په ۱۲۴۸ع.كال مړ) كتاب «تحفة البيطار» وګورئ، هغه سوونه كلونه دمخه ويلي دي: حفظ الصحه داده چي څوك د ځان د روغتيا ساتنه په داسي حال كي چي بدن يې روغ رمټ وي، مراعات كړي او د خپل ځان راتلونكې په پام كي ونيسي. ځكه هوښيار سړى هغه دى چي د يوې چاري چاره د هغې تر پېښېدو دمخه وكړي او وقايه تر علاج غوره ده.

اسلامي طبيبانو ډېر پخوا لا ويل چي وقايه تر معالجې هم آسانه او هم مهمه ده. ځكه د معالجې لپاره پوه طبيب په كار دى څو د ناروغۍ تشخيص او درملنه وكړاى سي. خو داسي پوه طبيبان ممكن لږ وي. او كه پوه طبيبان هم وي ممكن داسي يوه ناروغي وي چي معالجه يې ممكنه نه وي. او يا د معالجې وسايل مونده نه سي او د معالجې وخت تېر سي او بيا كه د معالجې اسباب هم مونده سي ممكن ناروغ د طبيب خبره ونه مني او كه دا هم ومني ممكن ناروغ د تداوۍ واك ونه لري.او كه د تداوۍ قدرت هم ولري او ناروغي درمل سي ممكن د ناروغۍ يا درملو اغېزه بل تكليف رامنځته كړي. ځكه نو اسلامي طبيبان «الاطباء افضل من الدواء» د حضرت محمد ج وينا بولي. او سپارښتنه كوي چي هر څوك بايد د روغتيا وقايې ته زيات پام وكړي او په دې هكله هغوى په مشهورو طبي كتابونو كي ډېري ښې مشورې هم وركړي دي.

د ناروغيو د درملني په هكله د اسلام لارښووني:

رسول ج به د خپل ځان ناروغي هم تداوي كول او خپلو هغو اړوندو كسانو او اصحابوته چي په ناروغي به اخته وه هم د درملني لارښوونه كول. د رسول ج هغه احاديث چي د ناروغانو درملني ته هڅونه كوي:

عَنْ ‏جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ‏ ‏صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ‏ ‏أَنَّهُ قَالَ: «‏لِكُلِّ دَاءٍ دَوَاءٌ فَإِذَا أُصِيبَ دَوَاءُ الدَّاءِ بَرَأَ بِإِذْنِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ» (مسلم، كتاب السلام، باب لكل داء دواء، ۲۲۰۴حديث).

ژباړه: له حضرت جابرس څخه روايت دى چي رسول ج وويل: لوى څښتن داسي هيڅ ناروغي نه ده موندلې چي هغې ته دې درمل نه وي را استولي او چي درمل پر ناروغي ولګيږي د خداى په فضل رغيږي.

عَنْ ‏ ‏أَبِي هُرَيْرَةَ ‏ ‏رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ‏ ‏صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ‏ ‏قَالَ: «‏مَا أَنْزَلَ اللَّهُ دَاءً إِلَّا أَنْزَلَ لَهُ شِفَاءً» (بخاري، كتاب الطب، ۵۶۷۸حديث).

ژباړه: له حضرت ابوهريرهس څخه روايت دى چي رسول ج وويل: لوى څښتن داسي ناروغي نه ده را لېږلې چي د هغې درمل دې نه وي را لېږلي.

عَنْ ‏ ‏أُسَامَةَ بْنِ شَرِيكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ‏ ‏قَالَ: قَالَتْ ‏ ‏الْأَعْرَابُ: ‏ ‏يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَا ‏ ‏نَتَدَاوَى؟ قَالَ: «‏نَعَمْ يَا عِبَادَ اللَّهِ تَدَاوَوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَمْ يَضَعْ دَاءً إِلَّا وَضَعَ لَهُ شِفَاءً» (ترمذي، ابواب الطب، باب ما جاء في الدواءوالحث عليه).

اسامه بن شريكس وايي: اعرابو له رسول ج څخه پوښتنه وكړه چي آيا موږ د ناروغيو درمل وكړو؟ هغه ورته وفرمايل: هو! تاسي اى د لوى څښتن بنده ګانو تداوي وكړئ، ځكه چي الله تعالى هيڅ ناروغي نه ده را استولې چي هغې ته دې درمل نه وي موندلي.

اسلام د ناروغيو درمل سنت او مستحب بولي. لكه څنګه چي د اسلامي نړۍ سترو پوهانو ويلي دي هر انسان لره د طبابت دغونه زده كړه چي ځان له ناروغۍ په وساتي مستحب ده. او وايي پوهه دوه ډوله ده: د اديانو پوهه او د ابدانو پوهه. نو لكه چي د ديني علم دغونه زده كړه چي خپلي ديني چاري په سمبالي كړي لازمه ده، د طبابت هغونه زده كړه چي د خپل ځان روغتيا او سلامتيا په وساتي هم لازمه ده.

له همدې امله مسلمانانو ډېر روغتونونه، طبي انستيتوتونه، او مدرسې وداني كړې چي له هغو څخه داسي ستر او نوميالي اطبا راووتل چي نړيوال به تر څو دا نړۍ وي د هغو په علمي او همېشنيو زيارونو وياړي.

د اسلام پيروانو په هماغو لومړيو كي دوه ډوله، ځاى پر ځاى (ثابت) او ګرځنده (سيار) روغتونونه درلوده. ګرځنده روغتون د رسول ج په وختو كي د خندق د غزا پر مهال د لومړي ځل لپاره جوړ سو. په دغه جګړه كي خېمه ووهل سوه او د هغې له لاري د جګړې د ټپيانو معالجه كېدل. چي وروسته دغه ډول ګرځنده روغتونونه زيات منځته راغله او په ټولو ضروري وسايلو، لكه درملو، خوړو، كاليو، طبيبانو، روغتيا پالو او درمل جوړوونكو سمبال، له يوه ښار څخه بل هغه ښار ته چي ځاى پر ځاى روغتونونه به يې نه درلودل لېږل كېدل.

د ځاى پر ځاى روغتونونو په هكله د اسلامي تمدن تاريخ ليكونكي وايي: په اسلامي نړۍ كي لومړى روغتون د وليد بن عبدالملك بن مروان په وختو كي پرانيستل سو. چي يوازي د جذام په ناروغي اخته كسان به يې درملول. وروسته دغه ډول روغتونونه ورو ورو زيات سول او په ټولو اسلامي ښارونو او ان ډېرو كوچنيو ښارګوټو كي او د كلينيكونو په بڼه په عامو محلاتو كي د ډول ډول ناروغيو د درملني لپاره را منځته سول. چي په هغو كي ټول ناروغان په وړيا توګه درمل كېدل، او د فارمسي څانګي، د طبو په كتابونو سمبال كتابتونونه او طبي انستيتوتونه به يې درلودل. چي د طب زده كوونكو به پكښي د ډېرو سترو اطباوو څخه زده كړه تر لاسه كول.

په ساري ناروغيو له اخته كسانو څخه ګوښه اوسېدل:

د صحيح مسلم د كتاب السلام، باب اجتناب المجذوم و نحوه په۲۲۳۱ حديث كي راغلي دي چي يو مهال د رسول ج سره د ليدلو او بيعت كولو لپاره د ثقيفو د قبيلې يو پلاوى ورغلى وو. په دغه پلاوي كي يو سړى د خوراړه (خوړونكي يا جذام) په ناروغي اخته وو. رسول ج پرې نه ښود چي ورسره وګوري او سړى يې ور واستاوه او ورته ويې ويل: «انا قد بايعناك فارجع» «موږ ستا سره بيعت وكړ او ولاړ سه».

د صحيح البخاري د كتاب الطب، باب الجذام په ۵۷۰۷ حديث كي د حضرت ابوهريرهس څخه تعليقاً روايت دى چي رسول ج وفرمايل:

«فِرَّ مِنْ الْمَجْذُومِ كَمَا تَفِرُّ مِنْ الْأَسَدِ» «د خوراړه په ناروغي اخته سړي څخه داسي تښته لكه له زمري څخه چي تښتې».

د سنن ابن ماجه او نورو په حسن، صحيح حديث كي د حضرت ابن عباس څخه روايت دى چي رسول ج وويل: «لَا تُدِيمُوا النَّظَرَ إِلَى الْمَجْذُومِينَ» «په خوراړه ناروغۍ اخته كسانو ته ډېر مه ګورئ».

څنګه چي حضرت رسول ج پر خپل امت باندي زښت زيات شفقت درلود، نو يې دوى ته لارښوونه وكړه چي له هغو اسبابو څخه چي د دوى اجسامو او زړونو ته علت او ناروغي پېښوي ډډه وكړي. او په ساري ناروغيو اخته كسانو ته د دغسي ناروغيو ځني اخيستلو له امله او د وقايوي تدابيرو د نيولو په پام كي نيولو سره نژدې نه سي.

دغه راز په هغه حديث كي چي امام احمد په خپل مسند كي راوړى دى وايي چي رسول ج يوه ښځه وغوښتل. كله چي يې د هغې سره د دخول اراده وكړه د هغې په بغل كي يې سپين ټكى وليد. نو يې ورته وويل: «الحقي باهلك». (ته بېرته خپلي كورنۍ ته ولاړه سه).

دا چي ځيني علما دغه احاديث د ځينو نورو احاديثو معارض او مخالف ګڼي بايد ووايو چي دې ټكي ته ډېر ستر علما متوجه سوي دي او په دې هكله يې په ځيرنه سره څه تعارض نه دى موندلى.

د ساري ناروغيو او د هلاكت د ځايونو څخه د ځان ساتلو او ګوښه اوسېدلو په هكله د ر سول ج لخوا نور ورته ارشادات هم سته. د بېلګې په توګه: په ابوداود كي دي چي يوه صحابي چي فروه بن مسيك نومېدى رسول ج ته وويل: اى د لوى څښتن استازې! موږ څه د كركيلې مځكه لرو چي «ابين» ور ته وايي. خو دا د وبايي ناروغيو ځاى دى. نو رسول ج ور ته وويل: «دعهاعنك، فان من القرف التلف» «دغه ځاى پرېږده ځكه چي دغه ځاى ته نژدې كېدل د هلاكت او مرګ سره مخامخ كېده دي». (البته د دغه روايت اسناد ځينو ضعيف بللي دي).

دغه راز په بخاري او مسلم كي له حضرت اسامه بن زيد څخه روايت دى چي رسول ج وفرمايل:

«‏‏إِذَا سَمِعْتُمْ بِالطَّاعُونِ بِأَرْضٍ فَلَا تَدْخُلُوهَا وَإِذَا وَقَعَ بِأَرْضٍ وَأَنْتُمْ بِهَا فَلَا تَخْرُجُوا مِنْهَا» «كله چي واورئ چي په يوه مځكه كي طاعون دى نو هغې مځكي ته مه ورځئ. او په كومه مځكه كي چي د طاعون ناروغي ګډه سوې وي او تاسي پكښي اوسېږئ، نو له هغې مځكي مه وزئ».

دا ارشاد له دې امله دى چي كه هغه ځاى ته څوك ورسي چي د وبا يا طاعون ناروغي پكښي تيته سوې وي ځان به د دې خطرناكي ناروغۍ سره مخامخ كړي. چي دا د شرعي او عقل دواړو مخالف كار دى. لوى څښتن فرمايي:

﴿وَلَا تُلۡقُواْ بِأَيۡدِيكُمۡ إِلَى ٱلتَّهۡلُكَةِ﴾ [البقرة: 195].

«تاسي په خپلو لاسونو خپل ځانونه په هلاكت كي مه اچوئ». او كه څوك له دغسي ځايه وزي كېداى سي چي دغه ناروغي له ځان سره نورو ځايونو ته ولېږدوي، خپله هم له دې ناروغۍ ونه ژغورل سي او د نورو ډېرو خلكو ژوند هم د خطر سره مخامخ كړي. نو ښه داده چي څوك د طاعون له سيمي ونه وزي، بلكي ځان د لوى څښتن رضا او قضا ته وسپاري او دعاوي او دواوي دي كوي. او كه په همدغه سيمه كي يوې فراخي ارشو ته ووزي كېداى سي چي هوايي بدله سي او له خطره وژغورل سي.

څنګه چي دلته پر دې خبرو نور ډېر بحث موږ له خپلي اصلي موضوع څخه ليري كوي، ځكه نو په دې هكله له نورو تفصيلاتو څخه ډډه كوو. البته كه څوك په دې هكله مفصل معلومات غواړي له سترو او جيدو عالمانو څخه دي پوښتني وكړي. يا دي معتبرو كتابونو ته مراجعه وكړي.

د ناروغۍ روحاني درملنه او دعاوي:

كه چاته څه ناروغي ورپېښه سي تر ټولو دمخه دي په بشپړ يقين او اعتقاد سره قلبي او روحاني درملني ته پناه وروړي. دا د لوى څښتنأ لخوا انبياوو صلوٰة الله عليهم اجمعين ته او د هغو لخوا موږ مسلمانانو ته داسي را ښوول سوې درملنه ده چي د سترو سترو ډاكټرانو او حكيمانو عقلونه، پوهي او تجربې نه په رسيږي.

ناروغ دي ګردسره زړه نه اچوي، بلكي زړه او نفس دي قوي كوي، پر هغه ستر ذات دي توكل كوي او ځان دي پر سپاري چي پيدا او پنا يې دى. ښې چاري دي تر سره كوي، خيراتونه دي وركوي، د خلكو سره دي ښه وضع كوي، د ويرجنو د ويرونو په ليري كولو كي دي ونډه اخلي، په عاجزي او انكسار سره دي توبه وكاږي او د ذكر او استغفار تر څنګ دي د زړه په حضور، قبلې ته مخامخ، په اوداسه، په داسي حال كي چي لاسونه يې پورته كړي وي هغه دعاوي چي رسول ج د ناروغۍ پرمهال كړي دي او داسي نوري دعاوي دي لوى څښتنأ ته د خپلي روغتيا لپاره كوي.

دعا تر ټولو ګټوره دوا ده. دعا د بلاوو دښمنه ده. دعا د بلاوو او ناروغيو دفع او علاج كوي، كه بلا او ناروغي نه وي نازله سوې د نازلېدو مخه يې نيسي او كه نازله سوې وي يايې له منځه وړي او يايې كموي. دا د مومن ډېره ښه وسله ده. حاكم په خپل صحيح كي له حضرت عليس څخه روايت كوي چي رسول ج وويل: دعا د مومن وسله، د دين ستون او د آسمانو او مځكي رڼا ده. دا چاري ډېرو سترو پوهانو ازمويلي دي او د هغو داسي اغېزي يې ليدلي دي چي په حسي او مادي درملو كي يې نه دي ليدلي. دا د لوى څښتن حكمت او قانون دى چي كله زړه رب العالمين او د درد او درملو خالق او د طبيعت مدبر او تصرف كوونكي ته ورسيږي دغسي ناليدلي درمل پر ولګوي.

دا هم جوته سوې ده چي كله روح، نفس او طبيعت پياوړي وي د ناروغۍ په دفع كي يو له بله لاسونه وركوي او ناروغ د خداى په حكم روغ رمټ سي. البته دا خبري رشتياني او د يقين درلودونكي پوهان مني، خو د جاهلانو، منكرانو او ناولو اروحونو د خاوندانو زړونو ته نه لوېږي. هغوى به هله پوه سي چي د زكندن سلګۍ ورته ودريږي او ورته و ويل سي: ﴿ذَٰلِكَ مَا كُنتَ مِنۡهُ تَحِيدُ ١٩﴾ [ق: 19] «دا هغه شى دى چي ته ځني تښتېدلې». يعني دا هغه حقيقت دى چي د هغه له منلو څخه تا ډډه كول.

هو! موږ ته زموږ دين د دغسي روحاني علاج تر څنګ د حسي او جسماني درملني لارښوونه هم كړې ده. په دې هكله موږ څه وړاندي څرګندوني وكړې. د دې چارو تر څنګ بايد د معالجې دارو درملو او نورو ټولو تدابير هم په كار واچول سي. دا هم د اسلام لارښوونه ده. خو دا يقين مو وي چي درمل د ناروغۍ د رغېدو لپاره يو سبب باله سي له آره خو شفا د لوى څښتن لخوا ده. البته كه څوك درمل شفا بالذات وګڼي پر هغه باندي د شرك بېره ده.

ناروغ دي پخپله هم ځانته په زاريو او په ډېره عاجزي د شفا دعا كوي. ځكه چي د ناروغۍ په حالت كي دعا قبليږي. د هغه خپلوان او پوښتني كوونكي دي هم هغه ته د شفا دعاوي كوي. خو ګورئ چي د ناروغۍ پر مهال د شرعي او ادب حدود په پام كي ونيسئ او د شكايت په ډول دعا و نه كړئ. بيا چي لوى څښتن څه كوي په هغو رضا واجب ده. البته د دعا د قبلېدو لپاره تلوار د دعا د نه قبلېدو له آفاتو څخه باله سي.په بخاري شريف كي د رسول ج حديث دي چي: «يُسْتَجابُ لاحَدِكُمْ مَالَمْ يَعْجَلْ، يَقُولُ: دَعَوْتُ فَلَمْ يُسْتَجَب لِي» (كتاب الدعوات باب يستجاب للعبد مالم يعجل، ۶۳۴۰ حديث). يعني كه تلوار ونه كړئ ستاسي دعاوي قبليږي، خو تاسي واياست: دعا مي وكړه خو قبوله نه سوه.

په صحيحو احاديثو كي راغلي دي چي رسول ج هم د روغتيا پر مهال، كله چي به بيدېدى او هم د ناروغۍ پر مهال د ﴿قُلۡ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ١﴾، ﴿قُلۡ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلۡفَلَقِ ١﴾ او ﴿قُلۡ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ ١﴾ سورې ويلې. او نوري دعاوي يې هم كړي دي.

د يادوني وړ ده چي كتابونو د دعاوو د قبلېدو لپاره دغه شپږ وختونه ډېر ښه وختونه بللي دي: (۱) د شپې وروستۍ درېيمه برخه. (۲) د اذان پر مهال. (۳) د اذان او اقامت په منځ كي. (۴) تر فرضو لمونځونو وروسته. (۵) د جمعې په ورځ كله چي امام منبر ته پورته سي بيا د لمانځه تر پاى ته رسېدو پوري. (۶) د جمعې د ورځي د مازديګر تر لمانځه وروسته د مازديګر تر وروستيو شېبو پوري.

دعاوي بايد د لوى څښتنأ په حمد او ثنا او پر رسول الله ج په درودونو او سلامونو، په توبه او استغفار، پيل سي او د هغه ستر ذات په نومونو او صفاتو په توسل سره تر سره او بيا په حمد او صلاة پاى ته ورسيږي. د دعا د قبلېدو لپاره څه خيرات هم وركړئ. ان شاء الله دغسي دعاوي به هيڅ رد نه سي. په تېره چي بيا د هغو دعاوو سره سمي وي كومي چي رسول ج يې په هكله سپارښتني كړي دي. ځكه چي كېداى سي هغه يا د قبلېدو وړ وي او يا اسم اعظم پكښې وي.

خو د دعاوو د قبلېدو لپاره يوه خبره ډېره مهمه ده او هغه داده چي له ډول ډول معصيتونو او ګناهونو، سركښيو، حرامو، ظلمونو، فسق او فساد، خيانتونو او بدو او ناوړو كارونو څخه مو په خوله نه بلكي د زړه له كومي سمه، صحيح او په اخلاص توبه كښلې وي او د دې ناوړو كړنو سره سره بايدپه نورو دلايلو او وسايلو لكه د خداى په عفو، ځينو نفلي روژو، عبادتونو او ذ كرونو، علم او پوهي، مازي په خوله توبه او داسي نورو ځانونه تېر نه باسو. له يوه ستر عالم څخه يو چا پوښتنه وكړه چي آيا زه تسبيح ووايم كه استغفار؟ هغه ورته وويل: خيرن كالي تر عطرو صابون ته ډېره اړتيا لري.

كه څه ناروغي درپېښه سي په غذا يې درملنه وكړئ:

څنګه چي غذايي مواد (نباتي بوټي، ميوې، سابه، او نور ډول ډول خواړه) هر څوك موندلاى سي او په هغو درملنه هم آسانه، هم ارزانه او هم بې ضرره ده نو د طبيبانو پر دې اتفاق دى چي تر څو په خوړو د درملني امكان وي نور درمل مه خورئ. او تر څو چي په بسيطو او ساده درملو علاج شونى وي مركب (له څو توكو جوړ درمل) هم مه استعمالوئ. د خوړو پېژندونكو طبببانو لارښووني د ناروغۍ د مخنيوي لپاره وي، يعني نه پرېږدي چي مكروب د ناروغ په د ننه وجود كي نفوذ وكړي. په داسي حال كي چي نور ډېر درمل د درد او ناروغۍ د له منځه وړلو لپاره وي او دغسي درمل ډېر لږ د ناروغۍ د مخنيوي لپاره وركول كيږي. بل دا چي زياتره درمل مخدر او مسكن وي چي كېداى سي د ناروغ اعصابو او زړه ته مضر تمام سي. مهمه لا داده چي كه چيري ډاكټر د ناروغۍ په تشخيص كي اشتباه وكړي ښايي ناروغ لا ناروغ كړي او يايې ان د مړيني تر پولي ورسوي. خو كه د خوړو درملګر دغسي اشتباه وكړي كه ناروغ ښه نه سي تر پخوا خو به يې حال نه بتريږي.پوه طبيب هغه دى چي تر څو په آسانه شى علاج كېدونكى وي مشكل كار يا قوي درمل توصيه نه كړي. بايد درملنه په ضعيفو درملو پيل سي بيا كه ناروغي ښه نه سي قوي درمل توصيه سي. اما كه د ناروغ حالت بل ډول وي اوسمدلاسه د قوي درملو ايجاب كوي په هغه صورت كي دي طبيب څنګه چي لازمه وي هغسي وكړي.

تر څو كېداى سي په طبيعي او نباتي بوټو او درملو درملنه وكړئ:

انسانانو په زرګونو كلونو د نباتي بوټو او ميوو د درمليزو خواصو په هكله علم تر لاسه كړى دى او د هغو خواص يې د درملو په توګه د انسانانو پر جسم ازمويلي دي او پوهېدلي دي چي ډول ډول دردونه او ناروغۍ درملوي. له دې امله له ډېرو پخوا زمانو څخه خلكو خپلي ډول ډول ناروغۍ په طبيعي او نباتي درملو درملولې او لوى څښتنأ به د هغو په سبب شفا وركول. په تېره دغه طب د اسلامي طبابت يوه ستره برخه ګرځېدلې وه. خو له كله څخه چي لوېديزيانو د مسلمانانو سره تر تودو صليبي جګړو وروسته د مرئي او نامرئي او علمي صليبي جنګ لار خپله كړه او زموږ ډول ډول علوم يې له موږ څخه زده كړل او بيا يې خپلي تجربې پر ورزياتي كړې او خپل نوم يې پر كښېښود او ډول ډول نوي كېمياوي درمل او لابراتوارونه او داسي نور يې راو ايستل، په طبيعي درملو علاج تر ډېري اندازې لږ سو. په داسي حال كي چي كېمياوي درمل لكه څنګه چي پخپله د هغو جوړوونكي هم وايي جانبي عواقب او عوارض لري. يعني كه يوه ناروغي ښه كوي، بله ناروغي په بدن كي زېږوي. خو طبي بوټي او طبيعي درمل دغه ځانګړني نه لري. له دې امله په دې وروستيو وختونو كي له ګياهي بوټو څخه د ګټي اخيستني ارزښت او اهميت بېرته څرګند سو. د نړۍ په ډېرو برخو كي د طب پوهانو افكار د ګياهي درملني او پخوانيو درملو معجزو ته متوجه سوي دي او اوس بېرته طبابت ګياهي درملني ته سوقوي. اوس په امريكا، اروپا، هندوستان او د نړۍ په ډېرو نورو برخو كي د حكومتونو روغتيايي ادارو د ګياهي طبابت ارزښت منلى او په دې لټه كي دي چي د كېمياوي درملو مصرف هر څه زيات را لږ او منسوخ كړي. په دغو هيوادونو كي د درملو جوړولو په څانګو كي د ګياهي درملو طبيبان او كار پوهان هم د كېمياوي درملو د پوهانو تر څنګ په كار بوخت دي او د درملو په جوړولو كي د هغو له پوهي او مشورو څخه ګټه ترلاسه كوي.

هيله ده زموږ اړوند حكومتي چارواكي هم وهڅيږي چي د هيواد د اسلامي طبابت دغي څانګي ته ارزښت وركړي او كه چيري د درملو جوړولو كار ته اقدام كوي دغي برخي ته هم بشپړه توجه وكړي.

البته زما موخه د كېمياوي درملو د ارزښت نفي نه ده. بلكي كه د كېمياوي او ګياهي درملو په منځ كي د منطقي ارتباط د ايجاد لپاره هڅي وسي او د ناروغيو سره په مبارزه كي له هر ډول درملو څخه چي د بشري علم او پوهي محصول باله سي ګټه واخيستل سي دا به ډېره ښه خبره وي.

د كېمياوي او طبيعي درملو په هكله د ډاكټرانو نظريې: ‏

د «راز سلامتي وطول عمر» چي د اسماعيل اژدري په نامه يوه ايراني طبيب ليكلى دى په لومړيو مخونو كي د لوېديځ د كېمياوي طبابت او د اسلامي طبيعي طبابت د پرتلني په هكله د پوهو ډاكټرانو او طبيبانو نظريې ليكل سوي دي څنګه چي د دې موضوع په روښانتيا كي ګټوري دي نو له هغو څخه مو لاندي څو كرښي را واخيستلې:

كه ووايو چي لوېديز طبابت ناروغ ته ډېر خطرونه لري مبالغه به مو نه وي كړې. ډېرو لويو ډاكټرانو پخوا خپل ناروغان په كېمياوي درملو درملول خو اوس چي د دغو درملو په ضررونو پوه سول خپل ناروغان په طبيعي درملو درملوي.

ډاكټر سر ويليام نومى په دې عقيده دى چي: «په اوسني طبابت كي تقريباً ټول قوي زهر استعماليږي. دغه سموم د بدن په ځينو برخو كي يو ځاى كيږي، په كراره كراره د بدن انساج تخريشوي او له منځه يې وړي او د انسان عمر را كموي».

اوسنى طبابت ځيني ناروغۍ معالجه كوي خو په عين درملنه كي ځيني نوري ناروغۍ هم رامنځته كوي.

كه يو څوك په يوه نسبتاً مهمه ناروغۍ اخته سو او په اوسنيو كېمياوي درملو درمل سو بيا محاله ده چي د ښې ورځي مخ وويني. بيا به يې ټول عمر د درملو او ډاكټرانو سره سروكار وي.

رشتيا هم ډېر ناروغان له اوسنۍ كېمياوي درملني څخه ستړي سوي او خواتوري سوي دي خو له بده مرغه چي بله چاره هم نه ويني.

د كېمياوي درملو د ناسمو كارولو په هكله څرګندوني:

د «صحت بخش عادات» په نامه يو ګټور او معياري كتاب چي ليكونكى يې زبير وحيد نوميږي او د پاكستان يوې معتبري او د معياري كتابونو خپروونكي ادارې«اردو سائنس بورډ، لاهور» خپور كړى دى، د در ملو تر سر ليك لاندي د كېمياوي درملو په هكله ډېر ګټور مطالب لري، له دې امله مو د لوستونكو د زياتو معلوماتو لپاره دغه مطالب دلته وژباړل او ځاى ځاى مو څه اړيني زياتوني هم پر وكړې:

د انساني ژوند د پر مختيا سره سم د درملو استعما ل ورځ تر بلي زياتيږي او پر انساني كړو وړو كنټرول ټينګوي. له زېږېدو څخه تر مړيني پوري زموږ ژوند د كېمياوي كنټرول تابع سوى دى. د درملو له ډېرو اعلانولو او تشهير څخه موخه داده چي د هغه په هكله زموږ يقين پوخ او ټينګ كړي. كه زموږ كولمې د پروګرام سره سم كار نه كوي نو موږ سمدستي ملين (قبض ماتوونكي) درمل اخلو او خورو يې. كه سهار د را ويښېدو پر مهال زموږ پزه بنده وي يا د نزلې څخه ناسم كيفيت احساس كړو نو موږ انټي بيوټيك درمل استعمالوو. يا كه غرمه د تلو پر مهال ناڅاپه زموږ پر ملادرد سي، نو موږ له هغه څخه د ژغورني لپاره په هغو اوبو چي رائي (اوري د شړشمو د دانې غوندي يو ډول نرۍ دانې چي په عربي كي خردل ورته وايي، د اچارو په جوړولو كي هم په كاريږي، طبيبان يې پېژني). په ګډ وي د لمبېدو پر ځاى د عضلاتو مسكن درمل استعمالوو. په برتانيه غوندي پر مختللي هيواد كي هم خلك ډېر درمل خوري. زموږ په هيواد كي هم خلك د كوچنيو كوچنيو ناروغيو د درملني لپاره فوراً درمل استعمالوي چي دا بېخي ناسم كار دى. د يوې دقيقي احصائيې له مخي په برتانيه كي هره ورځ نژدې نيم لوى وګړي او تقريباً هر درېيم كوچنى درمل استعمالوي. په پاكستان غوندي پر مختيايي هيواد كي هم اوس څنګه چي ښوونه او روزنه كرار كرار لوړه ځي خلك له تعويذونو او ټوټكو څخه مخ اړوي او ايلوپيتهك) د كېمياوي يا انګرېزي درملني (Allopathic) درمل استعمالوي. نن سبا درمل داسي لازم ګڼل سوي دي لكه زموږ خواړه. په امريكا غوندي پر مخ تللي هيواد كي خلك د دردونو د كمولو، د خوښيو لټولو، اشتها خلاصولو، ستړ يا ليري كولو او خوب ورتللو لپاره د مليونونو ډالرو په بيه درمل كاروي. دا سمه ده چي درمل په رشتيا سره تكليف كموي او موږ ته آرام خوب راولي، خو په دغو درملو روږدېده هم ښه او سمه خبره نه ده. ځيني نارينه د خپل نارينه توب ځواك د لوړ بېولو لپاره د سټروئيډ (Steroid) په نامه درمل كاروي. بوډۍ ښځي د مياشتنيو وقفو مصنوعي هامونونه زياتوي. د كوچنيانو د آرامولو لپاره مسكن درمل وركوي. ځيني ښځي تر ډېر مهاله د خپلي ځوانۍ د ساتلو لپاره اسټروجن (Estrogen) درمل كاروي. (په دوى كي په طبيعي ډول د حيض بندول په عمر كي زيات والى راولي).

سره د دې چي نړۍ د ډبري له دورې څخه بېخي ډېره ليري سوې ده. خو اوس هم خلك له ذهني پلوه پر كوډو او ټوټكو د زرګونو كلونو وړاندي غوندي يقين لري. اوس نړۍ د ګوليو له استعمال څخه د هماغو مافوق الفطرت ګټو د تر لاسه كولو په لټه كي ده.

ځيني درمل د ژوندانه د ساتلو لپاره مهم دي. خو له بده مرغه نن په بازارونو كي زياتره نااړين او نامناسبه درمل پلور ته وړاندي كيږي. د كينساس د پوهنتون د Pharmaceutical Chemistry ماهر پروفيسر ويناده چي اوسمهال (۹۰) فيصده نا اړين درمل جوړيږي. دغسي درمل ګټه لږ رسوي خو تاوانونه يې زښت زيات دي. د فرانسې د نوبل د جايزې ګټونكي اينډريولوف (Andrew Lwoff) اټكل دى چي په فرانسه كي (۳۰) فيصده ناروغۍ د درملو له ناسم يا بې ځايه استعمال څخه پيدا كيږي.

اوس چي پر روغتيايي موضوعاتو كوم نصابي كتابونه ليكل كيږي ټول د نوو درملو څخه د پيدا كېدونكو ناروغيو په اړه دي. د تېرو كلونو د استعمالېدونكو درملو په نسبت د اوسمهال درمل ډېر اغېزمن دي. دا كه څه هم ناروغ ته ژر ځواك بخښي او سمدستي يې تكليف ورآراموي خو همدغسي يې ناروغه كوي هم.

د برتانيې د Safety Drug د ادارې د مشر وينا ده چي په نړۍ كي داسي درمل نسته چي له ضمني اغېزو (جانبي عوارضو) څخه دي په بشپړه توګه پاك وبلل سي. ډېر درمل د ژوندانه فعاليتونه ښه كوي او يا يې د خرابۍ مخه نيسي. له دې صلاحيته پرته درمل بې ګټي باله سي. خو د دې وو سره سره ضمني عوارض هم را منځته كوي. خلك عموماً د ډېرو معمولي او ساده ناروغيو د درملني لپاره درمل استعمالوي. زيات خلك د درملو په بې ځايه استعمال خپل د هضم نظام په لوى لاس ورانوي. د خوړو د نه هضمېدو له بېري د خپلو خوړو په عادتونو كي په قصده بدلون راولي او د بېخي ډېرو زياتو شفا راوړونكو غذاوو د خوړلو كوښښ كوي. ځيني بيا په خپلو خوړو كي كمښت راولي. د ګېډي د ترشۍ او تېزابو ضد ډېرو شيانو (Antacid) له خوړلو څخه ښايي خواړه هضم سي، خو د هاضمې د خرابۍ اصلي سبب نه سي ليري كېدلاى. پر دې سربېره د انټي اسيډ مادو له ډېر استعمال څخه په ګېډه كي هايډرو كلوريك اسيډ ډېر افرازيږي. د دې مطلب دادى چي د لومړيو انټي اسيډ مادو د عكس العمل څخه د ژغورني لپاره ډېرو انټي اسيډ مادو ته اړتيا رامنځته كيږي چي په دې سطح د دغو مادو له استعمال څخه كېداى سي د وينو كېمياوي تركيب خراب سي.

دغه راز كوم كسان چي له قبض څخه شكايت كوي هغو ته ښايي داسي خواړه وخوري چي د ګېډي فضله مواد يې ډېر كړي، لكه تركارۍ، شنه سابه او داسي نور.پر دې سربېره بندګوبى (كرم) ګازري او د حلوا كډو هم قبض نه لري. د قبض ماتولو دوهمه لار د ملينو (قبض ماتوونكو) درملو استعمال دى. خوپه دې كي شك نسته چي په لومړۍ طريقه، يعني په سبو د قبض علاج غوره دى. دا د كولمو د نظام د ښه كولو لار ده او نور ټول كوښښونه مصنوعي دي، كوم چي له په كار اچولو څخه يې زموږ كولمې د درملو سره عادي كيږي. او بله دا خبره هم ده چي قبض ماتوونكي درمل نور نقصانونه هم رامنځته كوي. (ټول قبض ماتوونكي او د نس ناستي راوړونكي درمل د ګېډي د كار طبيعي طريقه خرابوي او پرله پسې استعمال يې د كولمو تاو هم رامنځته كوي. دغه راز قبض ماتوونكي درمل د مثال په ډول د پيرافينو محلول په غوړزګيو كي د حلېدونكو ويټامينونو په انجذاب كي خنډ اچوي او د ځينو ملينو درملو څخه د ناروغ د جسم اوبه تر دې كچي خارجيږي چي ناروغ بېخي ډېر كمزورى كړي).

جسم د خپلو اړتياوو په پام كي نيولو سره خپل ټول افعال په خپله سرته رسوي. نو ښه داده چي زموږ جسم د خپل كار د ښه نظام لپاره ټولي اړيني ضروري مادې په خپله پيدا كړي. كه نه د نس ناستي يا قبض په صورت كي استعمالېدونكي درمل د كولمو په طبيعي كار كي ګډوډي رامنځته كوي. د ډېرو معمولي ناروغيو لپاره ويل سوى مهم علاج د ساينسي درمليزو اصولو سره سم نه وى. خو لكه چي څرګنده ده بيا هم څه نا څه په كار لوېږي. البته دغسي علاج روغتيا ته ډېر مضر دى. ځكه چي د دغسي درملو حمله د ناروغۍ پر ضد نه، بلكي د هغو نخښو او علامو پر خلاف وي چي د دغي ناروغۍ له امله څرګندي سوي وي. دغه علامات زياتره د جسم د جوړښت په خلاف د ناروغۍ د مرستندوى په توګه كار وركوي.

د اميندوارۍ پر مهال هم د درملو استعمال ضررناكه دى. له څېړنو څخه جوته سوې ده چي د حامله ګۍ په وخت كي د درملو بې ځايه او بې مشورې استعمال ډېر ناوړه حالات رامنځته كوي. د حامله ګۍ په لومړيو ورځو كي د خوب راوړونكي درمل لبريم (Librium) له استعمال څخه په زېږېدونكي ماشوم كي د مورزاده ناروغتيا امكانات زيات وي. دغه راز په يوه بله څېړنه كي د دغسي يوې بلي اندېښنې يادونه هم سوې ده. د څېړونكو په وينا كېداى سي د آسپرين له استعمال څخه هم په ماشوم كي مورزاده ناروغي مونده سي. د دغو څېړنو له مخي د حامله توب له پيله په ۲۸ ورځو كي د دغسي يوې دوا له خوړلو څخه كېداى سي په ماشوم كي مورزاده نقايص مثلاً د زړه عارضه او د جسماني غړو د بدي وضعي غوندي خرابۍ پيدا سي. دغه راز كه دغسي ښځي زيات پنسلين استعمال كړي هم كېداى سي د دوى او د دوى د ماشوم د مزاج پر وضع ناوړي اغېزي وښندي.

زموږ يوشمېر خلك د پنسلينو په هكله په دې اند دي چي دا د هري ناروغۍ درمل دي او له درملتونونو او د درې ګزي د غاړي درمل پلورونكو څخه يې د ډاكټر بې مشوري او بې نسخې رانيسي او خوري يې. درسته ده چي پنسلين ډېر ښه انټي بيوټيك باله سي خو دا د هري ناروغۍ څه چي د ځينو مكروبونو په هكله لا څه اغېزه نه ښندي. نو د هغو پر خپل سر خوړل كېداى سي ستر خطر ولري. ځيني ناروغان د پنسلين سره حساسيت لري. وايي چي په امريكا كي په يوه كال كي په (۹۶) مورده كي ناروغان د پنسلينو د تزريق له امله مړه سول. په يوه بله څېړنه كي څرګنده سوې ده چي په ۱۹۵۷ كال په امريكا كي د پنسلين په وسيله د ناسمي درملني له امله (۱۰۵۰۰) تنو خپل خوږ ژوند له لاسه وركړ. تر دوهمي نړيوالي جګړې وروسته چي پنسلين نوي كشف سول د هغو په هكله يو عجيب شورماشور رامنځته سو او ټولو فكر كاوه چي كېداى سي په دغه معجزه لرونكي درمل د ډېرو مكروبونو نوغۍ وايستل سي. خو اوس چي ډېر كلونه تېر سوي دي دې درمل انسان ته ډېره لږ ګټه ورسول. اوس جوته سوې ده چي د پنسلينو استعمال انسان ضعيفه كوي، عمر يې كموي، د بدن ويټامينونه يې سوځي او د بدن ګټوري باکټرياوي، په تېره هغه باکترياوي چي په ګېډه كي ژوند كوي او ويټامين B توليدوي له منځه وړي.

په امريكا كي د ورځي ۲۵ ټنه آسپرين كاريږي چي په دې حساب هر نارينه، ښځي او كوچني ته دوې نيمي ګولۍ رسيږي. زموږ ډېر خلك هم له درد څخه د خلاصون لپاره آسپرين استعمالوي. د بېلګې په توګه كه د هغو پر غاښ درد وو، د دې پر ځاى چي د غاښو د درملګر سره اړيكي ونيسي د آسپرين د ګوليو خوړلو ته ترجيح وركوي.كه پر چوكۍ له ناسم كښېنستلو يا د يو بل ډول ساده پاړسوب څخه درد ورپېښ سو هم د درد ضد ګولۍ خوري. په داسي حال كي چي په دغو ټولو صورتونو كي ډاكټر ته تلل اړين دي. دردونه د يوې ناروغۍ نخښي څرګندوي چي بايد پام ورته وسي. مسكن درمل د هغو علاج نه بلل كيږي. له دغسي درملو خوړلو څخه سمدستي درد آراميږي، خو د ناروغۍ لاملونه نه ليري كوي. كله كله د ناروغ حالت دونه خراب وي چي د سمدستي توجه اړتيا ورته ليدل كيږي او كله بيا يو معمولي تكليف په ډېره لږ پاملرنه ليري كيږي.

له پورته خبرو څخه اټكل كېداى سي چي ټول درمل خطرناكه دي. تر څو چي د هغو په هكله بشپړه څېړنه نه وي سوې د درملو ډېر استعمال تر ګټي ډېر تاواني دى. خو په راډيو ګانو، ټلوېزيونونو او اخبارونو كي خپرېدونكي اعلانونه زياتره دغسي درمل داسي ښيي چي ګواكي دا د چاكلېټو غوندي بې ضرره دي او هيڅ كومي ضمني بدي اغېزي نه لري. مثلاً كوډين Codeine يا Methylmorphine (د ترياكو جوهر چي د درد د آراموونكي په توګه استعماليږي). قبضيتي دي. فيناسيټين (Phenacetin) پښتورګو ته تاواني دي. دپريسټامول (Paracetamol) زيات استعمال د اينې د خرابۍ لامل كيږي. د آسپرين د لږو خوړلو څخه هم كېداى سي له ګېډي او كولمو څخه ويني راوتل پيل سي. د برتانيې د يوه ډاكټر په وينا د دغه ځاى په آسپرينو د يوه مليون روږدو كسانو له ګېډو څخه ويني بهيږي.

د ستړيا، خواشينۍ، خلق تنګۍ يا د ډېري غم غوسې د ليري كونكو درملو بې ځايه استعمال هم تاواني دى. البته دا هم جوته ده چي د وخت په تېرېدو سره د دغو درملو د خوړلو په كچه كي زياتوب ته اړتيا رامنځته كيږي چي په پايله كي يې موږ عادي كيږو او د هغو له خوړلو پرته زموږ وضعيت نه سميږي. پرېشاني، درد او ستړيا زموږ لپاره تنبيهي علايم دي، هغه بايد په درملو ليري نه سي، بلكي په دغسي صورتونو كي بايد د خپل ځان لپاره د سمو او موافقو حالاتو د رامنځته كولو او زموږ په ورځنيو چارو كي د بدلون راوستلو په لټه كي سو او يا د ډېر درد په صورت كي د معالج ډاكټر سره اړيكي ټينګي كړو.

انساني ژوند له لوړو ژورو ډك دى، كله خوښي، كله غم او كله هم تنهايي پر موږ را چاپېره سي. كه دا بدلونونه نه وي نو انسان خو مازي د يوه ماشين يوه پرزه جوړيږي. او كه موږ خپل حالت په درملو كنټرول كړو نو زموږ ژوند ماشيني غوندي كيږي چي دا د انسان او ماشين په منځ كي د توپير له منځه تلو خبره ده.

درمل بايد د ډاكټر په مشوره او بشپړ وخوړل سي:

لنډه دا چي درمل ګټور هم دي او تاواني هم، نو بايد د روغتيايي اصولو سره سم او د پوهو ډاكټرانو په مشوره استعمال سي. په دې باب له ډېر پخوا څخه زموږ ديني عالمانو لاپه خپلو كتابونو كي توصيې كړي دي چي هيڅ در مل، په تېره هغه درمل چي په طبي كتابونو كي يې په هكله څرګندوني سوي وي د پوه ډاكټر او طبيب له مشورې پرته ونه خوړل سي. په دې هكله ستاسي پام د بېلګې په توګه د امام ابن حجر الهيتمي د الفتاوى الحديثية د (۴۴) مخ دې عبارت ته را اړوم: «ولاينبغي لا حد ان يستعمله الا بعد مشاورة طبيب حاذق وكذا سائر ما يرٰى في كتب الطب، ينبغي لمن يراه ان لا يقدم على استعماله الا بعد مشاورة الطبيب».

ژباړه: درمل بايد د پوه ډاكټر په مشوره وخوړل سي. دغه راز هغه درمل چي په طبي كتابونو كي يې په اړه څرګندوني سوي هم بايد د كتاب د مطالعې له مخي د ډاكټر بې مشورې ونه خوړل سي.

دلته يوه بله خبره هم د يادولو وړ ده او هغه دا چي د روغتيا نړيوالي ادارې څه مهال دمخه خبروركړى دى چي د ستوني د خرابۍ يا غوږونو د انفكشن (Infection)؛ ټپ، ګزك، عفونت (غوندي تكاليف چي به د انټي بيټيك په ذريعه په آساني سره ښه كېدل، ژر به د هغو درملنه ستونزمنه سي، يعني د دغو ناروغيو مكروبونه به په ځينو هيوادونو كي د ملاريا او نري رنځ غوندي د انټي بيټيكو په خلاف مزاحمت ايجاد كړي.

د دغي ادارې په يوه رپوټ كي ويل سوي دي چي پنسلين يانور انټي بيټيك درمل چي پخوا يې ساده انفكشن په آساني سره ليري كاوه، له دې وروسته به بې اغېزي سي.

البته دغي ادارې د دې ستونزي پړه د درملو پر ناسم استعمال اچولې ده او ويلي يې دي څنګه چي د دغسي درملو كم يا ناسم خوراك توصيه سي نو په بدن كي مكروبونه نه وژ ل كيږي او د درملو په وړاندي مزاحمت ايجادوي، تردې چي دغه درمل چي د ژوندانه د ژغورني وړتيا لري په ځينو ناروغانو كي بېخي د يوه چاكلېټ حيثيت غوره كوي. د دې ستونزي بل لامل يې دا بللى دى چي ځيني ناروغان چي څه انټي بيټيك وخوري او لږ څه ښه سي نور درمل خوړل پرېږدي. څنګه چي د درملو خوړلوكورس بشپړ نه سي نو په جسم كي چي كوم جراثيم پاته سي هغه د دغو درملو پر ضد مقاومت پيدا كړي.

په امريكا كي بيا دغه ستونزه برعكس د درملو له ډېر استعمال څخه رامنځته سوې ده. هلته څېړنو جوته كړې ده چي يوشمېر ناروغانو ته په نا اړينه توګه انټي بيټيك وركول كيږي چي په پايله كي په دغسي ناروغانو كي داسي باكټرياوي وده كوي چي د دغو انټي بيټيكو پر ضد زياتي ځواكمني وي. له دې امله د كاله په زرګونو وګړي د درملو د نه اغېزي له امله ناروغه يا مړه كيږي.

د سهيل ختيزي آسيا په بېلو بېلو سيمو كي د پنسلينو پر ضد مزاحمت دونه زيات سوى دى چي لس كاله دمخه د ټايفايډ (Typhoid)؛ لويي تبي علاج په درو ارزانو دواوو كېدى خو اوس دغه درمل په عامه توګه بې اغېزي سوي دي.

له بده مرغه زموږ ځيني هيواد وال رشتيا هم چي لږ درمل وخوري او ځان لږ څه روغ احساس كړي نو نور درمل نه خوري. له دې امله ناروغانو ته په كار ده چي په دغسي او نورو ټولو مواردو كي د ډاكټر لخوا توصيه سوې دوا په بشپړه توګه وخوري.

په هغو درملو چي الكحل او داسي نور ګډ وي درملنه څنګه ده؟

لكه چي پوهيږو په ډېرو درملو يا شربتو او نورو، ان په ځينو ګوليو د «الكحل» (Alcohol) په نامه ماده ګډه وي. محمد زكرياى رازي لومړى سړى وو چي د شرابو له تقطير څخه يې دغه ماده په لاس راوړل او هغه يې الكحل وبلل. الكحل له آره عربي لفظ دى چي په عامه توګه شرابو ته كارول كيږي. وايي پلانى سړى الكحليست دى. يعني شرابي دى. په عامو لغتنامو كي يې هم الكحل شراب بللي دي. په ځينو ډكشينريو كي يې الكحل د شرابو روح او جوهر بللي دي. په المنجد كي ليكلي: «الكحل الاتيليك (Ethylic) يا الايتانول (Ethanol) كوم چي عام خلك يې السبيرتو (Spirituous) بولي، بې رنګه مايع دي چي خوږه لوړى بوى او تېز او سوځونكى خوند لري. د ځينو خوږو، دانو، پټاټو، لرګيو او نورو له تخمير څخه استخراجيږي او په كېمياوي توګه هم جوړيږي. دا په جوهري (له ځينو ميوو، دانو، او نباتاتو څخه خُلاصه سوو) مشروباتو كي راځي او د پاكوونكي او عطرونو او كريمونو د ويلي كوونكي مادې په توګه استعماليږي». په فرهنګ عميد كي ليكي: «الكل (Alcool) فرانسوي لفظ دى چي له عربي څخه ماخوذ دى. د تند او سوځونكي خوند درلودونكى مايع دى او پر دوه ډوله دي: يو اتيليك الكل چي په ټولو خمري چيښاكونو، شرابو، عرقو او د هغو په امثالو كي موجود دي او د انګورو يا كشمشو له شرابو څخه اخيستل كيږي. او بې رنګه مايع دي چي مطبوع بوى او تند خوند لري. په هوا كي د آبي كم رنګي لمبې په كولو سره سوځي. او زياتره د الكلي مشروباتو په توګه مصرفيږي.په داروخانو كي هم كارول كيږي. بل ډول يې ميتاليك الكل دي چي د لرګي له تقطير څخه په لاس راځي او هغه ته د لرګي عرق يا د لرګي الكل يا صنعتي الكل هم وايي. د چيښلو وړ نه دي او په صنعت او طبابت كي په كاريږي».

د «ملټـى نيشنل كمپنيون كى اسلام دشمنى» كتاب په (۱۱۱) مخ كي ليكي: شراب عموماً په خپلو معروفو نومونو په شيانو كي نه ګډوي خو د شرابو مؤثر جز «الكحل» (Alcohol) زياتره په انګريزي درملو ياشربتو او نورو هم ګډوي. د طبي نقطۀ نظره «الكحل» هغه ماده ده چي په شرابو كي اثر ښندي. په كومو شرابو كي چي د «الكحلو» مقدار هرڅونه زيات وي هغونه تېز وي. او هر څونه چي الكحل په شرابو كي لږوي هغو نه كمزوري وي.

ښه نو كه په درملو كي ګډ الكحل يا په نورو مواردو كي د الكحلو په نامه استعمالېدونكي مواد شراب وي، نو د دغسي درملو د خوړلو حكم له شرعي نظره څنګه دى؟

مولانا خالد سيف الله رحماني د «جديد فقهي مسائل» په (۲۰۱) مخ كي د «په الكحلو كي د ګډو درملو استعمال» تر سر ليك لاندي ليكي:

«دا منلى حقيقت دى چي الكحل شراب او يو نشه راوړونكى شى دى او له دې امله حرام دى. شراب چيښل غټه ګناه ده او د سخت عذاب باعث ګرځي. نو د مازي خوند يا د ښكلا د زياتوالي يا د قوت لپاره د هغو مشروباتو استعمال چي الكحل په ګډ وي درست نه دى. البته د درملو او علاج په هكله څنګه چي دا يو ډول ضرورت او مجبوريت دى د فقهاوو د دې عام اصل سره سم چي «ضرورت ناجايزه شيان هم روا كوي» د هغو درملو استعمال به چي الكحل په ګډ وي درست وي. د فقهي په كتابونو كي په دې لړ كي ځيني صراحتونه موجود دي: شرب البنج للتداوي لاباس به (خلاصة الفتاوٰٰى ۴/ ۲۰۴مخ). يعني د درملني لپاره د بنګوپه څكولو كي كوم حرج نسته.

هل يجوز شرب القليل من الخمر للتداوي إذا لم يجد شيئاً يقوم مقامه؟ فيه وجهان (فتاوٰى عالمګيري۴/ ۱۱۲). يعني كله چي د شرابو كوم معادل پيدا نه سي، نو د هغو لږ چيښل د درملني لپاره جواز لري؟ په دې كي د فقهاوو دوې رايي دي ځينو جايز او ځينو ناجايز بللي دي.

البته كه د دغسي درملو كوم بل معادل درمل موجود وي نو له هغو څخه پرهېز په كار دى. شراب يوازي حرام نه، بلكي ناپاك هم دي. او د ناپاكو شيانو نه يوازي د نننى استعمال، خوړل، چيښل او نور ناجايزه دي، بلكي د هغو خارجي استعمال، يعني پر بدن وهل او نور هم جايز نه دي. له دې څخه د سپرټ او ټينكچرو او نورو حكم هم معلوميږي چي بېله اړتيا د هغو لګول هم درست نه دي. ځكه چي په هغو كي هم شراب ګډ دي. البته د علاج په توګه دضرورت له مخي به د هغو لګول هم درست وي».

داسي ښكاري چي په حرامو او ناپاكو شيانو باندي د درملني په هكله ځينو فقهاوو اجازه وركړې، خو په كمزورو دلايلو اوپه ډېر احتياط او د ځينو شرطونو او قيدونو سره. په دې هكله د درالمختار دې عبارت ته پام وكړئ:

اختلف في التداوي بالمحرم وظاهر المذهب المنع كما في رضاع البحر. لكن نقل المصنف ثمة وهنا عن الحاوي وقيل يرخص إذا علم فيه الشفاء ولم يعلم دواء آخر كما رخص للعطشان وعليه الفتوى (د رد المحتار د ۱/ ۱۹۴مخ هامش).

ژباړه: په حرامو د درملني په هكله يې اختلاف كړى دى. او ظاهره مذهب يې د منعي پلوى دى، لكه چي د بحر الرائق كتاب د رضاع په باب كي ويل سوي دي. خو مصنف د حاوي كتاب په حواله وايي چي چا ويلي دي: كه د يو چا علم ورسيږي چي په كومو درملو كي شفا ده او پوه سي چي ناروغي يې بله دوا نه لري نو هغه ته د دغسي درملو استعمالول رخصت دي، لكه چي تږي ته د حرامو (شرابو) د چيښلو په هكله رخصت وركړه سوى دى او پر دې قول فتوٰٰى ده.

په دې هكله علامه شامي/ هم د ردالمحتار په ۱/ ۱۹۴، ۲/ ۵۵۵، ۴/ ۱۵۶، ۴/ ۲۹۸، ۵/ ۳۴۲مخونو كي څرګندوني كړي او د ځينو كتابونو عبارتونه يې نقل كړي دي. خو داسي ښكاري چي هغه هم د دې رايي پلوى نه دى. ځكه د ردالمحتار په ۵/ ۳۴۲مخ كي ليكي چي: «مذهب د دې خبرو خلاف دى».

په دې صورت كي خو په دې د چا علم نه رسيږي چي دا درمل به په رشتيا د دې ناروغۍ لپاره شفا وي كه څنګه؟ ان دا خبره كه د طبيب لخوا وي لا هم د منلو نه ده. ځكه د ډاكټر خبري خو د تجربې له مخي دي چي دا علم يا يقين نه بلكي غالب ظن باله سي.

نو لكه چي څرګنديږي دا خبري د تامل وړ دي.

لاندي خبري ټولي د دې خبرو خلاف ښكاري، نو راځئ ويې لولو:

د قرآن كريم لارښووني:

لوى څښتن په قرآن كريم كي فرمايي:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِنَّمَا ٱلۡخَمۡرُ وَٱلۡمَيۡسِرُ وَٱلۡأَنصَابُ وَٱلۡأَزۡلَٰمُ رِجۡسٞ مِّنۡ عَمَلِ ٱلشَّيۡطَٰنِ فَٱجۡتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ ٩٠﴾ [المائدة: 90].

ژباړه: «اى مومنانو! دا شراب، قمار، بتان او د فال اچولو لپاره غشي ويشتل ټول ناولي او د شيطان كارونه دي نو ځانونه ځني وساتئ څو وژغورل سئ».

بل ځاى فرمايي:

﴿۞يَسۡ‍َٔلُونَكَ عَنِ ٱلۡخَمۡرِ وَٱلۡمَيۡسِرِۖ قُلۡ فِيهِمَآ إِثۡمٞ كَبِيرٞ وَمَنَٰفِعُ لِلنَّاسِ وَإِثۡمُهُمَآ أَكۡبَرُ مِن نَّفۡعِهِمَاۗ﴾ [البقرة: 219].

ژباړه: «ستا څخه د شرابو او قمار په هكله پوښتنه كوي ور ته ووايه په دواړو كي لويه ګناه ده. كه څه هم د خلكو لپاره به څه ګټي هم پكښې وي، خو ګناه يې تر ګټي ډېره زياته ده».

يادونه: ځيني محقق اسلامي طبيبان او عالمان وايي: دا چي لوى څښتن د شرابو په هكله فر مايلي چي: ﴿وَمَنَٰفِعُ لِلنَّاسِ﴾ يعني په شرابو خوړلو كي خلكو ته ګټي دي. له دې څخه مراد د وجود روغتيا او ګټه نه ده، بلكي د هغو له چيښلو څخه ظاهري خوند مراد دى. يا هغه مادي ګټي ځني مراد دي چي د شرابو د تجارت له لاري يې په لاس راوړلې. خو جوته خبره دا ده چي شراب له اصله صحت اوعقل ته مضر او مهلك دي.

بل ځاى لوى څښتن فرمايي:

﴿وَيُحِلُّ لَهُمُ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيۡهِمُ ٱلۡخَبَٰٓئِثَ﴾ [الأعراف: 157].

يعني «هغه امي پېغمبر پاك شيان حلالوي او ناپاكه حراموي».

(د دې آيت په استناد پوهان وايي: هر هغه څه چي روغتياته ګټه رسوي هغه پاك او طيب دي او هر هغه څه چي ضرر ورته رسوي هغه ناپاكه او خبيث دي).

نو لكه چي له دغو آيتونو څخه ښكاري خداى تعالى شراب رجس او ناولي (ام الخبائث) بللي دي.

د احاديثو لارښووني:

بخاري له حضرت ابن مسعود څخه تعليقاً ذ كر كوي: «ان الله لم يجعل شِفاءَ كم فيما حرم عليكم» يعني: لوى څښتنأ تاسي ته په هغو كي چي پر تاسي يې حرام كړي دي شفا نه ده ګرځولې.

(دغه حديث بخاري د كتاب الاشربة، د باب شراب الحلواء والعسل په لومړيو كي ذكر كړى دى او ابوحاتم بن حبان په خپل صحيح كي له رسول ج څخه روايت كړى دى).

دغه راز په صحيح مسلم كي له طارق بن سويد الجعفي څخه روايت دى چي هغه د شرابو په هكله له رسول ج څخه پوښتنه وكړه. رسول ج هغه منع كړ يا يې د شرابو جوړول بد وګڼل. طارق ورته وويل: زه يې د درملو لپاره جوړوم. رسول ج وفرمايل: «إِنَّهُ لَيْسَ بِدَوَاءٍ وَلَكِنَّهُ دَاءٌ» (كتاب الأشربة، باب تحريم التداوي بالخمر (۱۹۸۴) حديث. يعني: شراب درمل نه بلكي ناروغي ده. (چي دا په شرابو سره د درملني په هكله د منعي قطعي نص او دليل دى، او نور ټول محرمات د قياس له مخي همدغسي باله سي).

په ترمذي، ابوداود، ابن ماجه او نورو كي له حضرت ابوهريرهس څخه روايت دى چي: «نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ الدَّوَاءِ الْخَبِيثِ» (مشكوٰة كتاب الطب ۴۵۳۹ حديث). يعني: رسول ج له خبيثو او ناپاكو درملو څخه منع وفرمايل.

ابوداود، نسائي او نورو روايت كړى دى چي يوه درملګر له رسول ج څخه په درملو كي د چونګښي د ګډولو په هكله پوښتنه وكړه رسول ج د هغې له وژلو څخه او په درملو كي د هغې له كارولو څخه منع كړ. (ځكه چي په حرامو له درملني منع راغلې ده). (اشعة اللمعات، ۳/ ۶۰۹). (د چونګښي د وژلو څخه منع د دې د مردار والي او د هغې له خوړلو څخه د خوا ګرځېدو او حراموالي له امه وه). (مرقات، ۸/ ۳۱۴مخ).

عبدالله بن عمر وايي چي ما له رسول ج څخه واورېدل چي: «كه زه ترياق (يوډول درمل) وخورم يا د جاهليت د وختو تعويذونه، مرۍ اوداسي نور په غاړه كړم يا زه له خپله ځانه شعر ووايم، نو زه به له هغو كسانو څخه يم چي د هيڅ ناوړه كار د تر سره كولو پروا نه كوي».

د احاديثو شارحين د دې حديث په تشرېح كي وايي چي څنګه چي د ترياقو په نامه درملو كي د مار غوښي او شراب ګډ وي او له دې امله حرام او نجس دي نو رسول ج له هغو بد وړل.

ديادوني وړ ده چي پورتني ټول حديثونه د محدثينو لخواصحيح بلل سوي دي.

د محدثينو اقوال:

شيخ عبدالحق محدث دهلوي/ د اشعة اللمعات په ۳/ ۶۰۷مخ كي وايي:

«په ځينو فقهي روايتونو كي راغلي دي چي كه پوه طبيبان اتفاق وكړي چي دغي ناروغۍ لره بېله دغو درملو بل درمل نسته، په هغه تداوي جايزه ده. خو بايد وويل سي چي د پوهو طبيبانو وجود او په يوه شي كي د درملني پر انحصار د دوى اتفاق متعذر دى».

پر مشكوٰة باندي د ملاعلي قاري هروي/ د شرحي مرقاة المفاتيح له ۸/ ۳۱۰، ۳۱۱ مخونو څخه جوتيږي چي: په خبيثو، نجسو او حرامو درملنه د امام ابو حنيفه/ په نزد حرامه ده.

امام ابن حجر شافعي/ د فتح الباري په ۱۰/ ۱۰۱ او ۳۰۵ مخونو كي وايي: «په صحيحو احاديثو كي په شرابو له درملني څخه د حراموالي او نجاست او خباثت له امله صريح منع راغلې ده او صحيح مذهب هم همدغه تائيدوي».

د درس ترمذي په ۱/ ۲۹۱ مخ كي ليكي:

«څوك كه د اضطرار په حالت كي وو او ځان يې په خطر كي وو او بېله حرامو درملو په بل څه نه ژغورل كېدى، نو په حرامو درملنه د ضرورت په اندازه په اتفاق جايزه ده او بېله دغه حالته د ناروغۍ د ليري كولو لپاره په حرامو درملنه د امام شافعي، امام اعظم او امام محمد په نزد مطلقاً ناجايزه ده. او د امام ابويوسف په نزد كه كوم پوه (حاذق) طبيب دا پرېكړه وكړي چي له حرامو درملو پرته د ناروغ ژغورنه شونې نه ده نو په دې صورت كي به په حرامو تداوي جايزه وي».

امام ابن قيم جوزيه په الطب النبوي (۱۱۷) مخ او زادالمعاد (۳/ ۱۵۲) مخ كي ليكي:

«په محرماتو معالجه عقلاً او شرعاً بده او قبيح ده. ځكه پر دې امت باندي محرمات د هغو د خبث (ناولتيا) او له هغو څخه د ژغورني او د هغو له خوړو څخه د صيانت او ساتني له امله حرام سوي دي. نو دا مناسبه نه ده چي په هغو له ناروغيو شفا وغوښتل سي. ځكه كه حرام درمل د بدني ناروغۍ په ليري كولو كي اغېز وښندي خو زړه به يې د خباثت له امله په ډېره لويه ناروغي اخته كړي. نو په حرامو تداوي به د زړه د ناروغۍ په بيه د بدن روغتيا وي».

حكيم الامت مولانا اشرف علي تهانوي/ فرمايي: «يوه غلطي دا عامه سوې ده چي د ناروغ په درملنه كي د پاكو او ناپاكو او حلالو او حرامو درملو ته پام نه كوي او بېله څېړني او پوښتني او ګروېږني او بېله شديده ضرورته حرامي اونجسي دواوي وركوي، چي دا سخته لويه غلطي ده». (اغلاط العوام ۲۰۴مخ).

د فقهي احكام:

په درالمختار او د هغه په حاشيه ردالمحتار كي وايي: «د شرابو لږ (يو څاڅكۍ) او ډېر د هغو د مغلظ نجسوالي له امله حرام دي. حلال بلونكى يې كافر كيږي او په درملو او نورو كي له هغو څخه استفاده هم حرامه ده خو كه څوك پر دې وبېرېدى چي له تندي مري او بېله شرابو يې بل څه ونه موندل، د ضرورت په اندازه يې چيښل جواز لري. او په شرابو درملنه هم په معتمد قول حرامه ده». (وګورئ ردالمحتار ۵/ ۳۹۷، ۳۹۸مخونه).

د بحر الرائق په ۳/ ۳۳۹مخ كي ليكي: «په ظاهر المذهب په حرامو درملنه روا نه ده».

د حكيم الامت مولانا اشرف علي تهانوي/ په امداد الفتاوٰٰى كي له ۴/ ۲۰۵تر ۲۱۲مخونو پوري له هغه څخه د حرامو درملو او داسي نورو په هكله سوي پوښتني درج دي چي د ټولو د جوابونو لنډيز دادى: فقهاوو تصرېح كړې ده چي نجس شى سپي ته لا مه اچوئ. محرم الاستعمال شى كفارو ته هم مه وركوئ. متقدمينو د ضرورت په وخت كي د حرامو درملو استعمال هم جايز نه دى بللى، خو متاخرينو د ضرورت په وخت كي اجازه وركړې ده احوط د متقدمينو قول دى. د هغو انګريزي درملو چي په هغو كي د شرابو او نورو حرامو شيانو ګډون يقيني دى خوړل او سر بېره پر بدن وهل كه د اضطرار په حالت كي وي اتفاقاً مباح دي او كه د اختيار په حالت كي وي كه غالب ګومان دا وي چي شفا نه ځي حاصليږي په اتفاق حرام دي. او كه غالب ګومان دا وو چي شفا ځني حاصليږي او د هغه معادل درمل نه وه په دې صورت كي د علماوو تر منځ اختلاف دى ځينو جايز بللي ځكه چي رسول ج د عرينه قبيلې څو وګړو ته د اوښو د متيازو د چيښلو اجازه وركړې وه او ځينو ناجايز ګڼلي دي او وايي چي عرينه قبيلې ته د منسوبو كسانو په هكله حديث منسوخ سوى دى (د تيسير القاري په ۵/ ۲۸۲مخ كي د عرنيين حديث په شرح كي وايي كېداى سي دغه حكم په حرامو د علاج تر منعي دمخه وي). نو امتناع يې تقوا ده او انتفاع يې فتوا. دغه راز په كومو انګريزي درملو چي په يقين سره د شرابو جوهر او داسي نور ګډوي استعمال يې جايز نه دى.

سيد سابق په فقه السنه ۲/ ۱۷ مخ كي ليكي: «په شرابو باندي د درملني په هكله علماوو اختلاف كړى دى، چا منع كړې او چا مباح كړې ده. خو راجح منع ده. ځكه شراب خلكو د جاهليت په زمانه كي د تداوۍ لپاره خوړل. نو كله چي اسلام راغى مسلمانان يې په شرابو له تداوۍ څخه منع كړل او ورته حرام يې كړل».

يادونه:

د فقهي اصولو او احكامو له مخي مفتي بايد پر راجح قول فتوا وركړي. (فتوٰى نويسي كى رهنما اصول ۴۲مخ. دغه كتاب د علامه شامي د نامتو كتاب شرح عقود رسم المفتي په رڼا كي ليكل سوى دى).

د الفقه الاسلامي وادلته په ۳/ ۵۲۲ مخ كي وايي: «د څلورو واړو مذهبونو امامان وايي چي: په راجح قول د درملني لپاره له شرابو او نورو ټولو مسكراتو څخه ګټه اخيستنه حرامه ده. لكه په غوړيو، او خوړو كي د هغو كارول او د درملو په ويلولو او داسي نورو كي د هغو استعمال. ځكه رسول ج فرمايي: «لوى څښتن ستاسي شفا په هغو نه ده ګرځولې چي حرام دي». خو حنفيه وايي: په حرامو درملنه هله رواده چي په يقين سره پوه سي چي په هغې كي شفا ده، او بل معادل درمل يې نه وي. اما په ظن او ګومان سره درملنه نه ده په روا. او د طبيب په قول يقين نه حاصليږي. همدا شان د سركوزي په غوښو هم د درملني رخصت نسته.

دغه راز په الفقه الاسلامي وادلته (۷/ ۵۴۹۳ ـ ۵۴۹۶ مخونو كي د قرآن كريم او احاديثو په استناد د نسبتاً اوږده بحث په ترځ كي وايي: «څنګه چي شراب محرم العين دي د هغو هم لږ او هم ډېر خوړل حرام دي. او د خوړلو رخصت يې هم د تندي او په زوره چيښلو (اكراه) پرمهال د ضرورت د رفعي په كچه ښوول سوى دى او وايي چي د درملني او نورو لپاره له هغو څخه ګټه اخيستنه جايزه نه ده، ځكه چي لوى څښتن زموږ شفا په هغو نه ده ګرځولې چي پر موږ يې حرام كړي دي».

د كتاب الفقه على المذاهب الاربعه په ۲/ ۱۲ مخ كي ليكي: «په شرابو تداوي پر معتمد قول حرامه ده. او د امام محمد/ په قول يې د مسكرو (نشه كوونكو) په لږو او ډېرو درملنه حرامه بللې ده، او دا قول يې معتمد ګڼلى دى». دغه راز د دغه كتاب په ۵/ ۲۶مخ كي ليكي: «احناف وايي چي كله كوم خواړه په ستوني كي بند سي د شرابو خوړل د ستوني د خلاصېدو لپاره يا د شديدي تندي د ماتېدو لپاره كه بل څه مونده نه سي په هغه اندازه چي ضرورت وي جايز دي. ځكه چي په دې سره د روح بقا راځي او دا پر مسلمان واجب باله سي. او دا د اضطرار حالت بلل كيږي. خو په شرابو درملنه صحيح نه ده».

د «د واړو جهانو سردار ارشادات» د كتاب په ۱۱۲ مخ كي د «په حرام او ناپاك څيز علاج مه كوئ» تر سر ليك لاندي په دې هكله د احاديثو تر راوړلو وروسته په حرامو د درملني نه كولو د حكمت په هكله داسي ليكي:

«د حرامو او ناپاكو څيزونو مثلاً شراب، افيم، چرس، بهنګ او داسي نورو څيزونو نه بنده ته هسي هم كركه ورځي د بيمارۍ په حال كښي طبيعت هسي هم نازك شي. ځكه نو كه مريض له داسي دارو ګان وركړى شي چه په هغې كښي دا څيزونه ګډ وي نو مريض ته به سخته كركه ورځي او د فايدې په ځاى به ورته نقصان رسوي. دغه شان ځيني خلك په دارو ګانو كښي د مردارو او ناپاكو ځناورو اعضاء شاملوي، لكه چونګښه، شر مښكۍ، موږك، سپى، پيشو، مچ او شرمښ وغيره او وژلى شي. او هم دغسي يا د ځينو اعضاوود اچولو نه پس دا دارو كښي ګډ كړى شي يا وسوځولى شي او بيا دارو كښي واچولى شي. كه مريض ته دا معلومه شي چي په دې دارو كي څه ګډ كړى شوي دي نو هغه به بې نېټې مړ شي. ځكه حضور ج د حرامو او ناپاكو څيزونو په ذريعه علاج كول منع فرمايلي دي».

سپرټ او ټنكچر:

د سپرټو، ټنكچرو او داسي نورو په هكله د ډاكټرانو څېړنه داده چي دا د «شرابو جوهر» دي. البته په هغو كي د زهرو اجزا هم ګډ دي. كوم څه چي شراب وي په مفتٰٰى به قول د هغو په لږو او ډېرو كي توپير نسته. لږ وي كه ډېر وي حرام به وي او له دې امله به ناپاك هم وي. نو له دې امله د سپرټو او ټنكچرو لګول درست نه دي او كه ولګيږي پرېولل به يې واجب وي. خو كه د درملو په توګه كارول كيږي او په عوض يې كوم بل درمل نه موندل كيږي يايې د ترلاسه كولو توان نه وي يا د هغو د موندلو تر مهاله ناروغي زياتيږي او شدت اختياروي په دې صورت كي به يې استعمال درست وي. د امام ابوحنيفه مسلك دادى چي په حرامو شيانو درملنه نه سي كېدلاى. خو نورواحنافو يې د جواز فتوٰى وركړې ده. حديث هم د دې تائيد كوي. لكه چي رسول ج د عرينه قبيلې وګړوته د اوښو د بولو د چيښلو حكم وفرمايه. (جديد فقهي مسائل ۱/ ۳۷مخ).

يادونه:

د جواز د فتوا او د حديث العرنيين په هكله په څه وړاندي پاڼو (۱۹۱) مخ كي هم خبري وسوې.

د لنډيز په توګه:

د پورتنيو تفصيلاتو تر ليكلو وروسته د محمد عبدالحى لكهنوي/ د مجموعة الفتاوٰى دې حكم ته ستاسو پام را اړوم: «در ودائيكه آميزش شراب اگرچه يك قطره هم باشد، يقيني يا ظني باشد نوشيدن آن دوا حرام است» (وګورئ د خلاصة الفتاوٰى مع مجموعة الفتاوٰى ۴/ ۳۷۲مخ).

هيله:

په درملو ګډ الكحل چي په هر نامه وبلل سي اوله هر شي څخه چي جوړ سوي وي كه نشه كوونكي وي، يعني كه يې څوك يوازي وخوري د معروفو شرابوغوندي يې نشه كړي يا يې روغتيا ته تاوان ورسوي، نو هغه شرعاً خمر (شراب) دي او خوړل يې حرام بلل كيږي. البته كه كوم ډاكټر يا كېميا پوه په درملو يا ځينو نورو شيانو د الكحلو په نامه ګډ توكي هغه شراب نه بولي چي نشه كوونكي، صحت ته مضر او حرام دي نو لطفا دي پر پورتنيو څرګندونو باندي له شفاهي اعتراضونو څخه ډډه وكړي. ځكه دا خبري ټولي د لويو پوهانو او اسلامي عالمانو له ليكنو څخه ليكلي سوي دي. په دې هكله كه د ده خبري واقعاً مستندي وي ځان ته دي لږ تكليف وركړي او د دغو د ده په وينا جايزو الكحلو په هكله دي يوه هر اړخيزه ليكنه وكړي څو نور پوهان پر هغې جر او بحث وكړي او په پايله كي په دې هكله حقايق څرګند او خبره سپينه سي.

ځيني شرعي حكمونه:

امام ابوحنيفه/ ويلي دي: د انسان د مكرم والي له امله د هغه له اجزاوو څخه ګټه اخيستل جايز نه دي. دغه راز امام صاحب وايي: چي د سركوزي له څرمني او نورو څخه دي ګټه نه اخيستل كيږي. خو له ورېښتانو څخه يې ګټه اخيستل پروا نه كوي. خو امام ابويوسف/ وايي له ورېښتانو څخه يې هم ګټه اخيستل مكروه دي اما د امام صاحب خبره غوره ده.

كه پوه طبيب ناروغ ته ووايي چي ستا ناروغي د ځيږګي يا مار له غوښو پرته او يا له هغو درملو پرته چي د مار پوست په ګډوي نه ښه كيږي ناروغ ته يې خوړل روانه دي. (عالمګيري۵/ ۳۵۴، ۳۵۵مخونه بحر ۵/ ۳۳۹مخ).

كه طبيب ناروغ ته ووايي چي ته بايد د سركوزي غوښي وخورې څو ناروغي در څخه ليري سي، ناروغ ته يې خوړل روا نه دي. (بحر الرائق۵/ ۳۳۹مخ).

نيم پيازه او بې سنده ډاكټران:

كه تاسي ته كومه ناروغي پېښه سي در ملنه يې هرو مرو كوئ. كه ډاكټر ته اړتيا پيدا سي تر ټولو ډېر ښه او پوه ډاكټر ته مراجعه كوئ. په دې هكله رسول ج همدغسي لار ښوونه كړې ده. خو هوښ كوئ چي جاهل، نيم پيازه او بې سنده طبيب ته ورنه سئ.زموږ زياتره كارونه همدغسي نيم پيازه ډاكټرانو، نيم پيازه انجنيرانو او نيم پيازه سياستوالو را وران كړي دي. وايي «نيم حكيم خطره د ځان».

له بده مرغه څنګه چي زموږ د هيواد سياسي حالت سم او عادي نه دى، نو له دغي وضعي څخه په استفاده د جاهلو او بې اسنادو نيمچه ډاكټرانو او په اصطلاح يوناني طبيبانو خولۍ په غوړو كي سوې ده او دغسي په اصطلاح ډاكټران او طبيبان څنګه چي په طبابت كي بشپړ تحصيلات او معلومات نه لري د انسانانو په روغتيا لوبي كوي او ناروغانو ته كله نا كله داسي درمل توصيه كوي چي د هغو د ناروغيو د لازياتوب او ان بېخي د هغو د مړيني سبب ګرځي.

اسلامي شريعت دولت مكلفوي او د هغه دنده يې بولي چي دغسي ناپوه طبيبان د طبابت له كاره منع او ګوښه كړي. په دې هكله د فقهي په كتابونو كي څرګند احكام موجود دي او دا د امر بالمعروف او نهي عن المنكر له چارو څخه بولي. زموږ د مذهب امام حضرت امام اعظم ابوحنيفه/ په هماغه خپل مهال كي لا دا موضوع ډېر ه مهمه ګڼلې وه او د عمومي ضرر د دفعي او عامه مصلحت لپاره يې د جاهل طبيب د حجر او منعي حكم وركړى وو. د اسلامي نړۍ نامتو عالم حضرت امام غزالي/ وايي: «اسلامي شريعت د دې لپاره راغلى دى چي د خلكو دين، ځانونه، عقلونه، عزت، شته او ژوند وساتي او هر څه چي دې شيانو ته ضرر وي له منځه وړل يې د امكان تر پولي واجب بولي». رسول ج وايي: «څوك چي نه پوهيږي او د طبابت كار كوي كه يې چاته تاوان ورساوه تاوان به وركوي». وګورئ ابوداود ۴۵۸۶حديث، ابن ماجه ۳۴۶۶حديث، نسايي ۸/ ۵۲ مخ او دغه حديث حسن بلل سوى دى.په دغسي مواردو كي دغسي جاهل طبيب بايد قانوناً تعقيب او محكمې ته معرفي سي. د فقه السنه په ۳/ ۸۲مخ كي وايي: «ټول عالمان بېله اختلافه او په يوه خوله وايي چي كه كوم څوك په طبابت كي نيمګړې پوهه ولري او د ناروغ داسي درملنه وكړي چي ناروغي يې نوره هم زياته سي نو هغه د خپل دې جنايت مسؤول او د تاوان په وركولو مكلف دى».

له بده مرغه زموږ په هيواد كي طبابت ډېر وروسته پاته دى. خلك مو له ډول ډول ناروغيو سره لاس او ګرېوان دي. خو نه سمه درملنه سته، نه سم درمل او د درملني وسايل، نه سم درمل ځايونه سته او نه دې چارو ته لكه څنګه چي ښايي هغسي پاملرنه سوې ده. د طبابت په هكله د نوو پرمختګونو، تجربو او معلوماتو په هكله خپرونو او كتابونو او داسي نورو ته زموږ د ډېرو لږو ډاكټرانو لاس رسيږي.

له بله پلوه چي زموږ بې وزلي ناروغان ډاكټرانو ته ورځي زيات ډاكټران داسي عادت لري چي څنګه چي ناروغ د خپلي ناروغۍ په هكله په توضيح پيل وكړي او چي خبري يې لا خلاصي سوي نه وي ډاكټر د نسخې په ليكلو پيل كوي. په دې صورت كي څنګه كېداى سي د ناروغۍ علت تشخيص كړي؟

ډاكټر نه يوازي بايد ناروغ جسماً معاينه كړي، بلكي روحاً يې هم معاينه او معالجه كړي. ډاكټر بايد د ناروغ سره ډېره ښه وضع وكړي، په مهرباني او ورين تندي خبري ورسره وكړي او په ناروغ كي داسي قوت قلب ايجاد كړي چي د هغه د دننني ځواك او خوښيو په تحريكولو سره د هغه د قطعي درملني موجبات برابر كړي. د ډاكټر لفظ له يوې لاتيني كلمې څخه مشتق سوى دى چي د ښوونكي يا هدايت وركوونكي معنا وركوي. له دې څخه بايد وپوهيږو چي ډاكټر يو حكيم او ښوونكى دى نه يوازي د څو ګوليو، شربتو يا پېچكاريو توصيه كوونكى.

بل چي ډېر مهم دى د ډاكټر درملځى او كتنځى دى. د زياترو ډاكټرانو كتنځي داسي چټل او ناپاكه وي چي د ناروغ يې په ليدو سره د ډاكټر او د هغه له درملني خواتوره سي او كركه يې ځني وسي. په تېره چي بيا ډاكټر ناروغ ته د ده د اړوند درملتون څخه د درملو د رانيولو توصيه وكړي. دا خبره خو نو ناروغ ته د قوت قلب پر ځاى دا تلقين كړي چي دې ډاكټر صاحب چي دا دونه ډېره دوا درته وليكل حتماً يې مطلب د خپل اړوند درملتون درمل خرڅول او تېرول دي، نه زما درملنه. بيا كه كوم ناروغ د دغه ډاكټر صاحب نسخه بل درملتون ته ور هم وړي په داسي مېخي يا هيروغليف ليك يې ليكلې وي چي بېله ده او د ده د اړوند درملتون د كاركوونكي پرته يې بل هيڅوك نه سي لوستلاى. په دې توګه ناروغ له دغه وخته لا د ده پر درملو او درملنه بې باوره سي. نو تاسي فكر وكړئ چي كه ناروغ ته د علاج په هكله دغسي فكر پيدا سي څنګه به روحاً معالجه، تسكين او تسلٰى سي؟

د اوسني دولت له چارواكو څخه خو دا هيله نه سي كېدلاى چي د ډاكټرانو د كتنځيو او درملتونونو اړيكي دي وشلوي. په دې هكله دي خپله ناروغ پام او كوښښ وكړي چي دغسي دوافروشو ډاكټرانو ته ورنه سي.

دا چي د ډاكټرانو، شخصي روغتونونو او نورو روغتيايي خدماتو فيسونه او د درملو بيي نه دي معلومي او وخت په وخت نه كنټروليږي دا بيا د دې ساحې داسي ناروغي ده چي د علاج توقع يې نه كيږي. دغه لامل دى چي په دې وروستيو كي په هيواد كي ځيني داسي شخصي روغتونونه راوتلي دي چي د خلكو غولولو او چورولو ته يې ملا تړلې ده.

زموږ په كورنۍ كي يوه تن ته د حساسيت (د بدن د كا يا خارښت) تكليف پېښ سو. تر زياتي بې ګټي درملني وروسته مو له ټلويزيون څخه واورېدل چي د كابل په خيرخانه مېنه كي د افغان روغتون په نامه شخصي روغتون د حساسيت د واكسينونو په تطبيق سره د دغي ناروغۍ علاج كوي. موږ هم په خپل هيواد كي د دغسي پرمختيا د رامنځته كېدو له امله په ډېره خوښي سره كابل ته د تللو زحمت او لګښت پر ځان ومانه. هلته يې تر څو ډوله ټيسټونو وروسته د نسبتاً زياتو پيسو په بدل كي واكسينونه را كړل او د ډاكټر توصيه سوي درمل مو هم د دغه روغتون له درملتون څخه واخيستل. خو باور وكړئ چي دغو واكسينونو او درملو هيڅ ګټه و نه كړه. بلكي هم بې ځايه سرګرداني را باندي تېره سوه او هم مو لګښت هدر ولاړ.

پاكستاني زښت ګران او هندي بې اغېزي درمل:

په ځينو مواردو كي زموږ ډاكټران هم نه دي ملامت. زموږ په ډاكټرانو كي ډېر ښه او پوه ډاكټران او د ډېرو ښو استعدادونو خاوندان سته. خو څنګه چي زموږ د زياترو خلكو اقتصاد ضعيف دى نو ډاكټران زياتره ناروغانو ته ارزانه درمل ليكي. خو له بده مرغه چي زياتره ارزانه درمل جعلي، بې كيفيته او د لږو مؤثره موادو درلودونكي وي. د بېلګې په توګه اوس زموږ هيواد ته ډېر هندي، چينايي او پاكستاني او نور درمل راځي چي بيه يې خورا ټيټه او بېخي ارزانه ده. دا له دې امله ده چي تقريباً ټول دغسي درمل جعلي او بې کيفيته دي. په دغسي درملنه خو نه داچي ناروغ نه ښه كيږي، بلكي ناروغي يې لا زياتيږي او هغه لږ پيسې يې هم هدر ځي. له بلي خوا هم ډاکټر په بدنامه كيږي او هم د اصلو درملو د واردو نکو او زموږ د هيواد داقتصادپه تاوان تماميږي.

ځيني ډاكټران بيا د خپلو اصولو له مخي ناروغانو ته د معتبرو كمپنيو ډېر بيي درمل تجويزوي. له بده مرغه بهرني درمل بېخي ډېر ګران دي. په دغو درملو كي بايد پاكستاني درمل ارزانه واى ځكه يو خو يې خام مواد په پاكستان كي پيدا كيږي او په پاكستان كي د كارګرانو كار هم ارزانه دى او بل يې افغانستان ته پر راوړلو دونه لګښت نه راځي. خو د پاكستان درمل ان تر ځينو نورو باندنيو درملو لا ګران دي.

زما په ګومان په دې هكله ستونزه بل ځاى ده. پاكستان خو د امريكايانو او لوېديزيانو يو نيمه مستعمره غوندي هيواد دى. لكه موږ چي پوهيږو په لوېديز كي د درملو او روغتيايي سامان آلاتو ستري ستري كمپنۍ راو تلي دي چي په پاكستان او نورو دغسي هيوادونو كي زياترو تجارانو له دغو كمپنيو څخه د امتيازونو په تر لاسه كولو سره د هغو د ايجنټانو او نماينده ګانو حيثيت غوره كړى دى. نو د دې پر ځاى چي پاكستاني سوداګر له خپلو خامو موادو څخه استفاده وكړي، د درملو جوړولو امتيازونه او خام مواد له بهرنيو لوېديزو ملكونو څخه په ګرانه بيه رانيسي، د هغو په بدل كي د ډاكټرانو او درمل پلورونكو پرلاس د خپلو خلكو په مليارډونو پيسې د هغو له جيبونو كاږي او د دغو پردو جيبونو ته يې اچوي.

د لوېديزو هيوادونو د درملو د تحريم په هكله فتوا:

د اسلامي نړۍ ستر نامتو عالم او د ډېرو كتابونو ليكوال ډاكټر يوسف قرضاوي مدظله د لوېديزو هيوادونو درمل جوړوونكي كمپنۍ د يهودو مرستندويي بللي او له دې امله يې ويلي دي چي د اسلامي هيوادونو درمل كه څه هم د لوېديزو هيوادونو د درملو د معيار سره برابر نه وي بيا هم ډاكټرانو ته ښايي چي ناروغانو ته د اسلامي هيوادونو د درملو نسخې وليكي. ځكه چي د لوېديزو هيوادونو د درملو له ګټي څخه يهود حمايه كيږي. د امريكا او نورو لوېديزو هيوادونو د درملو رانيول څنګه چي د يهودو سره مرسته كوي د هغو د ځواكمنۍ لامل كيږي. چي دا ګناه ده او د ظالم سره د مرستي سره مترادفه ده. لوى څښتن فر مايلي دي:

﴿وَتَعَاوَنُواْ عَلَى ٱلۡبِرِّ وَٱلتَّقۡوَىٰۖ وَلَا تَعَاوَنُواْ عَلَى ٱلۡإِثۡمِ وَٱلۡعُدۡوَٰنِۚ وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَۖ إِنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلۡعِقَابِ ٢﴾ [المائدة: 2].

«كوم كارونه چي د نېكۍ او تقوا دي په هغو كي يو له بله مرسته وكړئ او د ګناه او تېري په چارو كي د چا ملاتړ مه كوئ. له لوى څښتن څخه وبېرېږي، ځكه چي د هغه نيونه ډېره سخته ده».

په دې ډول ډاكټر قرضاوي فتوا وركړې ده او په زغرده يې ويلي دي چي د يهودو لخوا د جوړو سوو درملو او نورو شيانو رانيول جايز نه دي.كه بېخي ډېره اړتياوي نو د «الضرورة يقتدر بقدر الضرورة» (يعني د هر هغه كار كول يا پرېښوول چي د اړتيا له مخي رخصت باله سي نو رخصت يا جواز يې د اړتيا په كچه وي او تر هغه زيات جواز نه لري). د قاعدې له مخي دي دغسي شيان هغه مهال له كفري هيوادونو څخه رانيول كيږي چي د اسلامي هيوادونو شيان كفايت نه كوي. (په دې هكله د دې كتاب ۱٢٦ او ۱٢٧مخونه هم وګورئ).

د دې بحث په پاى كي بايد ووايو چي د درملو د توريد، كيفيت او د بيو د مناسبوالي ستونزه دولت اوارولاى سي. كه دولت پخپله درمل او طبي سامان آلات د اسلامي هيوادونو سره د اړيكو ټينګولو او تړونونو لاسليكولو له مخي وارد كړي او په د ننه هيواد كي د درملو جوړولو كارته توجه وكړي، هم به د كفري هيوادونو او بې كيفيتو درملو مخه ونيول سي او هم به د درملو بيي ارزانه او كنترول سي. خو د دې كار هيله له اوسني دولت څخه نه سي كېدلاى. دغه لاملونه دي چي زموږ د ناروغانو ډېري عادي ناروغۍ په سختو او وخيمو ناروغيو بدلي سي او يو شمېر ناروغان د درملني لپاره پاكستان او هند ته سفرونه كوي. چي هلته په تېره په هند كي زيات ناروغان پر داسي كسانو پېښ سي چي هم يې زياتي پيسې مصرف سي، هم خوارۍ او كړاوونه پر تېر سي او هم يې ناروغي يا لازياته سي، يا بېخي ور ځني ومري او بيرته يې كور ته مړ راوړي. خداىأ مو دي وزله وكړي.

د نارينه ډاكټرانو لخوا د ښځو درملنه

سمه خبره خو داده چي په هر لوى او كوچني روغتون كي نارينه ډاكټران او د هغو كتنځي د نارينه وو د درملني لپاره وي او ښځي ډاكټراني او د هغو بېل كتنځي د ښځو د درملني لپاره وي. خو لوى څښتن تهأ په ژړا او شكايت سره بايد ووايو چي د پردو غليمانو د دسيسو او زموږ د هيواد د پرمختيا په مخ كي د دوى د ډول ډول خنډونو د اچولو او د هغو كسانو چي زموږ د مشرانو په نومونو يې پر موږ ظلمونه او حكومتونه كړي دي د ځاني ګټو په فكر كي د لوېدلو او دې چارو ته د لږ پاملرني او زموږ د خلكو د علم او هيوادنۍ پر مختيا سره د نه يا لږي علاقې له امله په دې هكله غرونه غرونه ستونزي رامنځته سوي او پرتې دي. د اوس لپاره خو د دې چارو هيڅ امكانات نسته. نو په ډېرو مواردو كي اړتيا ليدل كيږي چي موږ خپلي ښځي نارينه ډاكټرانو ته د درملني لپاره ورولو.

اما له بده مرغه زموږ ځيني خلك په دغسي مواردو كي د شرعي غيرت او ننګ پر ځاى له جاهلي غيرت او مړاني څخه كار اخلي. چي له دې امله ډېري داسي پېښي سوي دي چي زموږ ناروغي ښځي ان د مړيني تر پولي رسېدلي دي. وايي چي د هيواد په اطرافو كي د يوې ښځي د كوچني تر زېږېدو وروسته د هغې په رحم كي د كوچني د نمونې د پاته كېدو له امله خون ريزي ورته پېښه سوې وه. مېړه يې نارينه ډاكټر نه ورپرېښاوه او نرسه يې په درملنه نه پوهېده. چي پاى بې چارې ښځې د ډاكټرانو پر هماغه كټ ساوركړه.

﴿إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّآ إِلَيۡهِ رَٰجِعُونَ﴾.

زما خپلو افغانو وروڼو ته په ډېر درناوي دا عرض دى چي په دغسي مواردو كي د سرزورۍ او ناپوهۍ پر ځاى د عقل او شريعت لار خپله كړئ او دا فكر و كړئ چي كه ستاسي د ممانعت له امله ستاسي خور يامېرمن له منځه ولاړه سي پر هغه دنيا به د لوى څښتنأ په وړاندي څه جواب واياست؟

د نارينه ډاكټرانو لخوا د ښځو د درملني په هكله شرعي احكام:

اسلام د ستونزو او سختيو دين نه دى، بلكي د اسلامي غرا شريعت بنسټ پر آساني او سهولت ولاړ دى. لكه چي لوى څښتن فرمايي:

﴿يُرِيدُ ٱللَّهُ بِكُمُ ٱلۡيُسۡرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ ٱلۡعُسۡرَ﴾ [البقرة: 185].

ژباړه: «لوى څښتن پر تاسي آسانتيا راوستل غواړي، سختي راوستل نه غواړي».

بل ځاى فرمايي:

﴿وَمَا جَعَلَ عَلَيۡكُمۡ فِي ٱلدِّينِ مِنۡ حَرَجٖۚ﴾ [الحج: 78].

ژباړه: «په دين كي يې پر تاسي باندي كوم حرج او تنګي نه ده راوستلې».

پر همدې بنسټ د فقهي قاعده ده چي: «مشقت د آسانۍ وسايل جلبوي او د تنګۍ پر مهال پراختيا لازميږي». د دې قاعدې له مخي د ښځي د ناروغۍ په دغسي ځانګړو حالاتو او اعذارو كي د نارينه ډاكټر لخوا د هغې كتنه او درملنه رخصت باله سي.

بل په داسي شرايطو كي چي د ښځو د درملني لپاره ښځينه ډاكټره نه وي د نارينه ډاكټر لخوا د هغې درملنه اضطراري ضرورت دى. په دې هكله د لوى څښتن حكم دى:

﴿وَقَدۡ فَصَّلَ لَكُم مَّا حَرَّمَ عَلَيۡكُمۡ إِلَّا مَا ٱضۡطُرِرۡتُمۡ إِلَيۡهِۗ وَإِنَّ كَثِيرٗا لَّيُضِلُّونَ بِأَهۡوَآئِهِم بِغَيۡرِ عِلۡمٍۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعۡلَمُ بِٱلۡمُعۡتَدِينَ ١١٩﴾ [الأنعام: 119].

ژباړه: «د كومو شيانو استعمال چي لوى څښتن له اضطراري حالاتو او سخت ضرورت پرته په نورو ټولو حالتونو كي حرام كړي دي د هغو تفصيل يې تاسي ته درښوولى دى. بېشكه چي زياتره خلك داسي دي چي بېله علمه صرف د خپلو خيالاتو او خواهشاتو پر بنسټ ګمراه كوونكي خبري كوي. ستا رب له حده تېرېدونكي ډېر ښه پېژني».

د لوى څښتن له دغه سپېڅلي ارشاد څخه د فقهي هغه قاعده را وتلې ده چي وايي: «ضرورتونه ممنوع شيان روا كوي». «اضطرار» له سختي اړتيا څخه عبارت دى.

رسول ج فرمايي: «د لوى څښتن په نزد ډېر غوره دين هغه دى چي ډېر آسانه وي». چي هغه عبارت د اسلام له سپېڅلي دين څخه دى.

د الفقه الاسلامي وادلته په ۳/ ۵۶۳ مخ كي وايي: «د درملني لپاره ښځي ته كتل د فقهاوو لخوا استثنايي حاجت ګڼل سوى دى. البته د حاجت په اندازه. د ښځي د درملني پرمهال طبيب ته ښايي چي د هغې د محرم يا مېړه په موجوديت كي د ناروغۍ ځاى ته د ضرورت له مخي وګوري. په دې شرط چي د ښځي د درملني لپاره داسي ښځينه ډاكټره نه وي چي د هغې په معالجه پوه سي. او كه امين ډاكتر وو غير امين ته دي نه ورځي. كه مسلمان ډاكټر وو نامسلمان ته دي نه ورځي او كه مسلمانه ډاكټره وه نامسلماني ته دي نه ورځي».

په هدايه كتاب الكراهية كي وايي: «طبيب لره جايزه ده چي د ضرورت له مخي د اجنبي ښځي د ناروغۍ ځاى ته وګوري البته واجب او غوره داده چي ډاكټر كومه بله ښځه پوه كړي څو د ناروغي ښځي درملنه وكړي. ځكه چي د ښځي كتل ښځي ته آسانه دي. خو كه داسي ښځه پيدا نه سوه نو واجب ده چي د ناروغي ښځي ټول بدن د ناروغه ځاى پرته پټ كړي. بيا ډاكټر ورته وګوري. خو ډاكټر دي چي تر څو يې وس رسيږي له نورو ځايونو څخه دي سترګي پټي وساتي.

دغه راز د ردالمحتار په ۵/ ۳۲۶مخ كي وايي: «كه يې ناروغي بېله شرمځايه په ټول بدن كي خپره وه د درملني پر مهال يې ټول بدن ته كتل روا دي. ځكه چي دا د ضرورت ځاى باله سي. خو كه ناروغي په شرمځاى كي وه واجب ده چي كومه ښځه پوه كړي څو د شرمځاى درملنه وكړي. خو كه داسي ښځه نه سوه پيدا او وبېرېدل چي ناروغه به مړه سي او يا به په داسي درد اخته سي چي نه يې سي سهلاى او تحمل كولاى نو دي د دې د ناروغۍ له ځاى پرته د هغې نور ټول بدن پټ كړي، بيا دي نارينه هغه ځاى تداوي كړي او تر څو كولاى سي سترګي دي د ټپ له ځاى پرته له نورو ځايونو څخه پټي كړي».

د فتاوٰى علماء البلدالحرام په ۴۴۹مخ كي وايي: «اهل علمو ويلي دي چي د ښځينه طبيبي په نه موجوديت كي د حاجت له مخي نارينه طبيب ته د ښځي تلل پروا نه كوي. او طبيب ته د هر هغه ځاى ښكاره كول چي ليدلو ته يې د درملني لپاره ضرورت وي جواز لري. خو د ښځي سره بايد محرم ملګرى وي او په خلوت (په تنهايي كي) بايد طبيب ته ځان ښكاره نه كړي، ځكه چي خلوت حرام دى». دغه راز د دغي فتاوٰى په ۸۷۵ مخ كي وايي: «كه ښځي ته مسلمانه طبيبه پيدا كيږي نو په نارينه مسلمان طبيب يې درملنه جايز نه ده. خو كه ښځه طبيبه نه پيدا كيږي او درملنه اړينه وي جايز ده چي د مېړه يا محرم په حضور كي ځان نارينه طبيب ته ښكاره كړي او هغه يې درملنه وكړي. البته كه مسلمان طبيب نه پيدا كېدى په كافر طبيب هم د ويلو سوو شرطونو سره سم درملنه كولاى سي.

همدا شان د همدغي فتاوٰى په ۴۶۵ مخ كي وايي: د ضرورت په وخت كي كه نارينه ډاكټر نه وي ښځينه ډاكټري ته د نارينه ناروغ تلل پروا نه كوي.

په دې هكله د بخاري، كتاب الجهاد، باب مداواة النساء الجرحى في الغزو په ۲۸۸۲ حديث كي د مُعوِّذ لور رُبيِّع وايي: «موږ د نبي ج په ملګرتيا په جهاد كي ټپيانو ته اوبه وركولې او تداوي كول مو او شهيدان مو مدينې منورې ته لېږدول».

حافظ ابن حجر/ د فتح الباري په ۶/ ۹۸مخ كي وايي: «له دې حديث څخه د ضرورت په وخت كي د اجنبي ښځي لخوا د اجنبي نارينه د معالجې جواز جوتيږي». والله اعلم.

د حرامو شيانو تجارت

تر كومه ځايه چي معلومات دى په دې كتاب كي ويل سوي حرام شيان زياتره زموږ سوداګر له بهره راوړي او يا ځيني په دننه هيواد كي توليديږي اونور هټيوال يې خرڅوي. چي دا كار هم شرعاً ښه نه دى. خو زموږ زياتره خلك په دې خبرو نه پوهيږي يا سر نه په ګرځوي. ځكه نو موږ په دې مضمون كي د «احكام تجارت اور لين دين كے مسائل» كتاب او نورو څخه په استفاده په دې هكله په لنډ ډول څه رڼا اچوو.

تر ټولو دمخه بايد ووايو چي كوم څه چي د حرامو باعث او سبب ګرځي اسلام هغه هم منع كړي دي او په دې ډول يې د حرامو د ذرايعو ور تړلى دى. مثلاً څنګه چي اسلام زنا حرامه كړې ده، نو د هغې پر وسايلو، اسبابو او عللو يې هم بنديزونه لګولي دي. لكه د نارينه او ښځي اختلاط (ګډه ناسته پاسته). د نامحرمي ښځي سره د نارينه يوازي اوسېدل.لڅ تصويرونه. فحش ادبيات، كوم چي نفساني خواهشونه د زنا لور ته وربولي او داسي نور.

بل ډېر ښه مثال يې د شرابو دى. څنګه چي د شرابو خوړل حرام دي، دغه راز د هغو په خوړلو كي مرسته هم حرامه ګڼل سوې ده. لكه د شرابو جوړولو په موخه د ځينو شيانو توليد. د شرابو په كارخانو كي كار كول. د شرابو خرڅول او رانيول او داسي نور.

دغه راز د حرامو د حلالولو لپاره حيلې هم حرامي ګڼلي سوي دي. لكه چي د ځينو حرامو شيانو نومونه بدل كړي او حلال يې وبولي. د مثال په توګه بډي هديه او تحفه وبولي. د شرابو نوم په بيرو او سربيسه واړوي او داسي نور. مطلب د يوه شي د نامه په بدلولو سره حقيقت نه بدليږي او نه يې په ګناه او حرمت كي څه توپير راځي. د داسي خبرو په هكله رسول ج مخكي تر مخكي لا وړاند وينه كړې ده. فرمايلي يې دي: «يَشْرَبُ نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي الْخَمْرَ يُسَمُّونَهَا بِغَيْرِ اسْمِهَا» «زما له امت څخه به ځيني خلك شراب چيښي او په بل نامه به يې نوموي». رواه الحاكم في المستدرك وقال صحيح على شرط البخاري و مسلم.

بله خبره داده چي ځيني خلك د ښه نيت او د خيريه چارو د تر سره كولو په نامه حرام تر لاسه كوي. لكه چي ځيني كسان په دې نيت يا نامه بډي او سود خوري يا قمار وهي يا نور حرام كارونه كوي څو پيسې پيدا كړي او مسجدونه، مدرسې او داسي نور ودان كړي او يا خيراتونه وركړي يا داسي نوري خيريه چاري په تر سره كړي. چي داسي ښه نيتونه او كارونه هيڅكله حرام نه حلالوي.

رسول ج فرمايي: «‏أَيُّهَا النَّاسُ!‏ ‏إِنَّ اللَّهَ طَيِّبٌ لَا يَقْبَلُ إِلَّا طَيِّبًا» (مسلم، كتاب الزكاة، باب قبول الصدقـة ۱۰۱۵حديث).

ژباړه: اى خلكو! لوى څښتن پاك دى بېله پاكۍ (حلالو) بل څه نه قبلوي.

اوس خو له بده مرغه زموږ يو شمېر خلك پر حلالو او حرامو نه دي. مقصد په هر ترتيب چي وي پيسې دي پيدا كړي. او ډېر لږ خلك په حلال رزق قناعت كوي. په دې هكله هم رسول ج وړاند وينه كړې ده: «‏يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يُبَالِي ‏الْمَرْءُ مَا أَخَذَ مِنْهُ أَمِنَ الْحَلَالِ أَمْ مِنْ الْحَرَامِ» (بخاري، كتاب البيوع، باب من لم يبال، ۲۰۵۹ حديث).

ژباړه: داسي وخت به پر خلكو راسي چي سړى به پروا نه كوي چي څه شي يې اخيستي او خوړلي دي. آيا حلال يې اخيستي او خوړلي دي كه حرام. يعني د حرامو او حلالو په منځ كي به توپير نه كوي او څه چي يې په مخه ورځي خوري به يې.

په هرصورت موږ دلته خپلي غاړي خلاصوو او هغه څه چي اسلامي شريعت ويلي دي ورته ليكو، نور دوى پوه سه او كار يې:

اسلام پير او پلور روا بللى دى. خو په دې هكله يې څه بنديزونه هم لګولي دي. مثلاً اسلام خپل پيروان د حرامو شيانو له تجارت يا د ناجايزو لارو د شتو د ګټلو څخه منع كړي دي. نو څوك چي په سودا ګري كي دغسي شرعي بنديزونه په پام كي ونيسي دې ته مبرور تجارت ويل كيږي. له رسول ج څخه چا پوښتنه وكړه چي كوم كسب تر ټولو پاك دى؟ هغه وفرمايل: «عَمَلُ الرَّجُلِ بِيَدِهِ وَكُلُّ بَيْعٍ مَبْرُورٍ» (مسند احمد۴/ ۱۴۱مخ، طبراني، ۴۴۱۱حديث، حاكم ۲/ ۱۰مخ). (د سړي د حپل لاس كار او سم او صحيح تجارت).

اما د حرامخور په هكله يې فرمايلي دي: «لا يد خلُ الجنَّةَ لحمٌ نبَتَ منَ السُّحْتِ. وكلُّ لحمٍ نبَتَ منَ السُّحْتِ كانتِ النَّارُ اوْلى بهِ» (مشكوٰة، كتاب البيوع، ۲۷۷۲ حديث).

ژباړه: هغه غوښي چي له حرامو خوړو څخه يې وده كړې وي جنت ته نه ننوزي. او هري غوښي چي په حرامو وده كړې وي اور يې وړ دى.

د حرام كار وبار په سر كي سود راځي خو تر سود وروسته د شرابو كار وبار ډېر بد دى. رسول ج فرمايي: «إنّ الّذِي حَرَّمَ شُرْبَهَا حَرَّمَ بَيْعَهَا» (اخرجه الطبراني في المعجم الكبير، وذكره الهيتمي في مجمع الزوائد في كتاب البيوع، باب في الخمر وثمنها، ۶۴۱۳حديث). يعني د هر هغه شي چي چيښل حرام دي خرڅول يې هم حرام دي. دغه راز له حضرت انسس څخه روايت دى چي رسول ج د شرابو په هكله پر لسو كسانو لعنت ووايه: (۱) د شرابو پر جوړوونكي، (۲) د شرابو د جوړولو په هكله پر فرمايش وركوونكي، (۳) د هغو پر چيښونكي، (۴) د هغو پر وړونكي، (۵) پر هغه چا چي وروړل كيږي، (۶) د هغو پر ساقي، (۷) د هغو پر خرڅوونكي، (۸) د هغو د بيي پر خوړونكي، (۹) د هغو پر رانيوونكي، (۱۰) او پر هغه چا چي ورته رانيول كيږي.

همداشان څنګه چي چرس، ترياك، هيورئين او داسي نور نشه يي توكي حرام بلل سوي دي نو د هغو خرڅول او رانيول هم حرام دي. دغسي په هغو درملو او نورو شيانو چي الكحل يا حرام توكي ګډوي د هغو هم دغه حكم دى. د سركوزي د غوښو د خرڅولو هم دغه حكم دى.

دغه راز هغه څوك چي د شرابو يا كوم بل حرام شي د خرڅولو او كاروبار لپاره دكان په كرايه وركوي يا ځاى ورته برابروي، هغه هم مجرم دى. او د تعاون على الاثم والعدوان په ضمن كي راځي. پر همدې بنسټ د الفقه الاسلامي وادلته په ۶/ ۲۰۲مخ كي وايي چي د شرابو د خرڅولو ځاى بايد وسوځول سي.

همدا شان د دې اصولو پر بنسټ د هر هغه شي رانيول او خرڅول هم ناجايز بلل سوي دي چي د حرامي يا غلطي موخي لپاره وي. له دې امله د يهودو او داسي نورو د مشروباتو او مصنوعاتو رانيول او خرڅول هم بايد جايز نه وي. په الزواجر عن اقتراف الكبائر ۱/ ۳۳۶مخ كي وايي: څوك چي پوه سي چي رانيوونكى له انګورو او داسي نورو څخه شراب جوړوي يا له پى مخي هلك څخه ناوړه كارونه اخلي يا مينځه بدو چارو ته ګوماري يا له لرګيو او داسي نورو څخه د ناسمو ساتېريو «لهو» آلې جوړوي يا د مسلمانانو سره په جګړه اخته دښمن له وسلې څخه د مسلمانانو د وژلو لپاره كار اخلي يا شراب د چيښلو او چرس د څكولو لپاره رانيسي، نو كه څه هم دغه كارونه لوى ګناهونه (كبائر) نه شمېرل كيږي خو د هغو د ضررونو د سترتوب له امله له لويو ګناهونو څخه ليري نه ګڼل كيږي. ځكه چي قاعده ده چي وسايل د مقاصدو حكم لري او له دغو شيانو څخه موخي او مقاصد ټول ستر ګنهونه دي او ټول د سترو ګنهونو وسايل جوړيږي. چي البته په دې هكله د حراموالي ګومان د علم غوندي دى.

فقهي قاعده هم داده چي د كوم شي څخه معصيت رامنځته كيږي د هغه خرڅول منع دي. وګورئ د حضرت مولانا اشرف علي تهانوي/ د امداد الفتاوٰى ۳/ ۱۱۱مخ. د فقهي له نورو كتابونو څخه هم معلوميږي چي كه څوك پوهيږي چي مسلمان له انګورو څخه شراب جوړوي يا د پى مخي مريي سره بدكاري كوي نو يې پر خرڅول مكروه دي. دغه راز پر فتنه ګرو باندي د وسلو خرڅول هم مكروه دي. ځكه چي دا پر معصيت باندي مرسته ده. اما د شرابو په كارخانو كي كاركول حرام دي. ځكه چي دا بالفعل معصيت دى. وګورئ ردالمحتار۵/ ۳۴۴مخ او الفقه الاسلامي وادلته ۳/ ۵۸۰ مخ.

د مخدراتو د سوادا ګرۍ په هكله د يوه معتبر كتاب څرګندوني:

څنګه چي د شرابو، چرسو، ترياكو، هېروئينو، كوكائينو او داسي نورو له كاروبار څخه په ډېره آساني ستري ګټي تر لاسه كيږي نو يو شمېر مسلمانو قاچاقبرانو په بېله توګه يا د دې كار وبار د نړيوالو مافيايي تاجرانو په مرسته او همكاري دې كار ته لاس اچولى دى. په دې هكله په الفقه على المذاهب الاربعة ۵/ ۳۰ مخ كي په څرګنده توګه وايي چي د مخدراتو، لكه چرسو، ترياكو او كوكايينو كار او له دې دركه عيش او ژوند حرام دى. په دې هكله ډېر احاديث هم وارد سوي دي. دغه تجاران د مسلمانانو او نورو انسانانو د وژني او د هغو د شتو د ضايع كېدو اسباب برابروي. دا له اصله د خلكو د اروحونو د قبضولو او د ځوانانو د فساد او د هغو د اخلاقو د ورانۍ او پر معصيت باندي د مرستي تجارت دى. د دې شيانو قېمت (ثمن) او ګټه كه څه هم د رانيوونكي په قناعت او رضائيت تر سره كيږي د قمار، سود او غلا څخه په لاس راغلي ګټي غوندي ده. لكه چي رسول ج فرمايي: «إِذَا حَرَّمَ عَلَى قَوْمٍ أَكْلَ شَيْءٍ حَرَّمَ عَلَيْهِمْ ثَمَنَهُ». رواه ابن ابي شيبة عن ابن عباس.

دغه راز څنګه چي د دې توكو بيه حرامه ده نو بېله شكه هغه خبيثه باله سي او حج په كول او مسجدونه په جوړول يا يې په خيرات وركول هيڅ مقبول نه بلل كيږي او هيڅ ثواب نه لري. د احنافو په نزد پر حج باندي د حرامو پيسو ښندل نه دا چي ثواب نه لري، بلكي دا هم بل حرام كار بلل سوى دى. لكه چي وړاندي مو د رسول الله ج دا حديث ولوست: «‏أَيُّهَا النَّاسُ!‏ ‏إِنَّ اللَّهَ طَيِّبٌ لَا يَقْبَلُ إِلَّا طَيِّبًا» الخ

د رسول ج بل حديث دى: «په هغه ذات لوړم چي زما نفس يې په واك كي دى، څوك چي حرام شته ترلاسه كړي يا يې په ميراث پرېږدي نه ځني منل كيږي. بلكي دا به د دوږخ لپاره د هغه توښه وي. لوى څښتن بدي په بدي له منځه نه وړي، بلكي بدي په ښو چارو له منځه وړي. حقيقت دادى چي خبيث بل خبيث نه محو كوي».

دغه راز حضرت ابوهريرهس له رسول ج څخه روايت كوي: څوك چي حرام شته ترلاسه كړي او خيرات ځني وركړي هغه ته يې ثواب نه وركول كيږي. او عقوبت او جزايې پر هغه وي.

د چرسو او ترياكو د كښت حراموالى:

څنګه چي ډېر آيتونه او احاديث د مخدرو توكو په تحريم كي وارد سوي دي، او چرس او ترياك هم په آيتونو او احاديثو كي يادو سوو مخدروتوكو ته ورته دي، ځكه نو د الفقه على المذاهب الاربعه په ۵/ ۳۱مخ كي وايي: «اتفق الائمة على تحريم زراعة الحشيش، والخشخاش، لاستخراج المادة المخدرة منهما لتعاطيها اوالاتجار فيها» يعني: اسلامي عالمانو پر دې اتفاق كړى دى چي د چرسو او خشخاشو څخه د مخدري مادې د را ايستلو او د هغو د استعمال او تجارت لپاره د هغو كرل حرام دي.

ورپسې يې په نوموړي كتاب كي د چرسو او خشخاشو د كرلو د حرمت دلايل ذ كر كړي دي. دغه راز سيد سابق د فقه السنه له ۲/ ۵۳۲ مخ څخه تر ۵۴۲مخ پودي د مصر د مفتي شيخ عبدالمجيد سليم اونورو جيدو علماوو د څرګندونو په استناد د خشخاشو، چرسو او نورو ډول ډول مخدراتو د استعمال، سوداګرۍ او كرني په هكله مفصل بحث كړى او د دغو توكو استعمال، تجارت او د هغو بيه او ګټه او له هغو څخه د استعمال او تجارت لپاره د مخدري مادي ايستل يې د قرآن كريم د آيتونو، د حضرت رسول ج د احاديثو او جيدو فقهاوو اوعلماوو د هغو څرګندونو په رڼا كي چي د شريعت د اصولو او مباديو سره موافقي دي له شكه وتلى حرام ثابت كړى دى او په پاى كي يې زياته كړې ده چي په دې هكله مي خبري ځكه اوږدې كړې چي جاهلانو ته څه شك او شبهه پاته نه سي او پوه سي چي د دغو مخدراتو د حلال والي خبري د باطل پالو او لاروركو باطلي او لار وركوونكي خبري دي.

هو، د حضرت شيخ عبدالحق محدث دهلوي/ د اشعة اللمعات په ۳/ ۳۰۰ مخ كي راغلي دي: «زراعت وي (افيون) از براى استعمال واسكار حرام ست وجائزست بغرض تداوى».

نو څنګه چي جوته ده چي د دغو شيانو كښت د درملني لپاره نه، بلكي د مادي ګټو د لاسته راوړلو او تجارت لپاره دى اوپر معصيت باندي مرسته او د هغو د كرونكو لخوا د هغو د استعمال او تجارت په خاطر رضائيت باله سي. له دې امله د هغو كرنه قطعي حرامه ده. په دې هكله زيات دلايل د الفقه على المذاهب الاربعه په ۵/ ۳۱مخ كي وګورئ.

دغه راز د الفقه على المذاهب الاربعه مؤلف هغه كسان چي د دغو توكو د رواوالي فتواوي وركوي جاهلان بللي دي او د هغو فتواوي او خبري يې باطلي او ګمراه كوونكي ګڼلي دي.

تعجب:

عجبه ده چي زموږ د مهال په زياترو هغو ټولنو كي شراب او داسي نور بې كچي زيات استعماليږي چي په ظاهره متمدني ښكاري او علم او فرهنګ هم ډېر پكښي خپور سوى او د شرابو او داسي نورو د روغتيايي، مالي او اجتماعي اضرارو په هكله هم په ډول ډول لارو علمي معلومات پكښي وركول كيږي. او زياتره هغه كسان شراب خوري چي ځانو ته پوهان او عالمان وايي او عجبه يې لا دا چي ډېر ډاكټران دغه د روغتيا ضد ماده د خپلو انډيوالانو سره «دوا» بولي او خوري يې. دلته دى چي پوه وګړي دې پايلي ته رسېدلي دي چي علت په مادي پالو، سراښو پانګوالو ځواكونو او د خلكو د ارادې په ضعف كي دى.

د ځان، كور او چاپېريال خواپاكي

لوى څښتن فر مايي:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلتَّوَّٰبِينَ وَيُحِبُّ ٱلۡمُتَطَهِّرِينَ ٢٢٢﴾ [البقرة: 222].

يعني «لوى څښتن توبه كوونكي او پاكي غوره كوونكي خوښوي».

دغه راز لوى څښتن د قبا د جومات د لمونځ كوونكو د طهارت او پاكۍ تعريف او توصيف په دې الفاظو كړى دى:

﴿لَّمَسۡجِدٌ أُسِّسَ عَلَى ٱلتَّقۡوَىٰ مِنۡ أَوَّلِ يَوۡمٍ أَحَقُّ أَن تَقُومَ فِيهِۚ فِيهِ رِجَالٞ يُحِبُّونَ أَن يَتَطَهَّرُواْۚ وَٱللَّهُ يُحِبُّ ٱلۡمُطَّهِّرِينَ ١٠٨﴾ [التوبة: 108].

يعني «كوم جومات چي له لومړۍ ورځي څخه د تقوا پر بنسټ ودان سوى وو هغه د دې ښه وړ دى چي په هغه كي (د عبادت لپاره) ودرېږې. په هغه كي داسي خلك دي چي پاكي خوښوي او لوى څښتن همدغه پاكي خوښوونكي خوښوي».

رسول ج فرمايي: «الطُّهُورُ شَطْرُ الْإِيمَانِ» (مسلم، كتاب الطهارة، باب فضل الوضوء (۱/ ۲۲۳) حديث. قال النووي «اصل الشطر النصف» شرح النووي ۳/ ۱۰۰ مخ.يعني سپېڅلتيا او پاكي نيم ايمان دى. معنا دا چي نيمى ايمان دادى چي انسان خپله اروا او زړه پا ك او مهذب كړي او نيم ايمان دادى چي انسان خپل بدن پاك او نظيف وساتي. د زړه پاكي داده چي هغه د كفر، ګناه او وركلارۍ له ككړتياوو پا ك كړې او په سمو او سپېڅلو اخلاقو يې روڼ او روښانه كړې او د بدن پاكي او نظافت دادى چي هغه له ظاهري ناپاكيو وساتې او په ښه سليقه او متمدنه او مهذبه طريقه يې د خپلو اسلامي دودونو سره سم سمبال كړي او له ناولتياوو او ناروغتياوو يې وژغوري.

د دغو او داسي ډېرو نورو ارشاداتو پر بنسټ د مسلمان دنده ده چي د ژوند په هره شېبه كي د پشپړتيا او پرمختيا پر لوري وخوځي او پرله پسې د خپل ځان د مادي او معنوي سپېڅلتيا او ارتقا لپاره لازمي هڅي وكړي. ځكه د لوى څښتنأ په نزد د ده راتلونكې د ده په ځانګړنو او خوى او خصلت پوري اړه لري. كه دى د خپل ځان د مادي او معنوي پاكۍ او ستره ګۍ په حال كي ومري د فردوس اعلى جنت څښتن به وي. كه يې ظاهري او باطني پاكي په منځني حال كي وي بيا هم ښايي وژغورل سي. خو كه د مادي او معنوي خواپاكۍ له پلوه په ټيټ حالت كي اوسي او د اسلامي احكامو او لارښوونو سره سم يې د ځان نظافت ته پام نه وي اړولى بېره ده چي سخته جزا وويني.قا ل الله تعالى:

﴿وَمَن كَانَ فِي هَٰذِهِۦٓ أَعۡمَىٰ فَهُوَ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ أَعۡمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلٗا ٧٢﴾ [الإسراء: 72].

يعني «څوك چي په دې دنياكي ړوند پاته سو، هغه به په آخرت كي هم ړوند وي، بلكي په لار موندلو كي به تر ړندو لا هم ناكامه وي».

په دې حساب څوك چي ګنده او مردار خور وي هغه به پر هغه دنيا همدغسي راپاڅيږي.

په دې اړه د رسول ج نوري څرګندوني هم سته. هغه څرګنده كړې ده چي څوك چي د خپل بدن، څېرې او غړوپاكۍ او نظافت ته پاملرنه كوي پر هغه دنيا به همدغسي په سپين مخ، ورين تندي او سپېڅلو اعضاوو را پاڅيږي.

د اسلام مقدس دين د بدن روغتيا، پاكتيا او ښكلا ته زښته زياته پاملرنه كړې ده او دا چاره يې له خپلو سترو او مهمو رسالتونو او دندو څخه ګڼلې ده. تاسي وګورئ چي د فقهي دټولو او د احاديثو د زياتو كتابونو په لومړيو كي د طهارت خبري او د هغو په ترځ كي د اوداسه، تشناب ته د تللو د آدابو، مسواك وهلو، ځان پرېوللو، د اوبو د پاكۍ، د نجاستونو د تطهير او داسي نورو ټولو موضوعاتو په باب مفصلي خبري راغلي دي.

د اسلام له نظره هغه څوك ډېر دروند او د درناوي وړ باله سي چي د ځان او لباس له پلوه نظيف او مهذب وي او په خوراك، چيښاك او كړو وړو كي يې ككړتياوي او د خواګرځېدو او تنفر حالت ونه لېدل سي. اسلام بدني روغتيا او نظافت يوازي مادي ښېګڼه نه بولي، بلكي هغې ته د نفس په تزكيه او سپېڅلتيا كي په ستر قوت او اغېز قايل دى. رشتيا هم انسان هله د ژوندانه د چارو ډېر ښه پر مخ بېولو ته چمتو كيږي چي ډېر ښه صحت او تكړه او پياوړى بدن ولري. دا چي اسلام د ورځي پنځه وخته لمونځ فرض كړى او د هغه لپاره يې اودس او د ځان، كاليو او د لمانځه د ځاى پاكي لازمه ګرځولې ده او د جنابت په صورت كي يې د ټول بدن پرېولل واجب بللي دي په دې توګه يې د انسان پر بدن باندي لويه پېرزوينه كړې ده.

د ځان پرېولل:

عن عبدالله بن عمرب ان رسول الله قال: «اذا جاء احدكم يوم الجمعة فليغتسل» (بخاري، كتاب الجمعة، فضل الغسل يوم الجمعة ۸۷۷ حديث).

يعني كه له تاسي څخه پر كوم چاباندي د جمعې ورځ راسي نو غسل دي وكړي.

د احاديثو په كتابونو كي له رسول ج څخه د ستره ګۍ او نظافت او له ځانه د ناوړه بوى د له منځه وړلو لپاره د سر او بدن پرېوللو او عطر او خوشبويي وهلوپه هكله ډېر احاديث روايت سوي دي

غسل د روغتيا لپاره ډېر اړين بلل سوى دى. د ځان پرېولو له امله په بدن كي چټكتيا، چسپاندي او خوښي او هوسايي پيدا كيږي. د ځان پرېوللو پر مهال د ويني دوران تېز سي، دماغ تازه سي او وروسته اشتها خلاصه سي. پر دې سربېره د ځان پرېولو په پايله كي د بدن كا، خيره او خوَله، سستي او تنده، ګرمي او داسي نور ليري سي. له دې امله دى چي نن مهال طب پوهان وايي كه څوك د خپل ځان نظافت او روغتيا ته زيات پام وكړي او خپل بدن زيات مينځي پنځوس فيصده به له ناروغيو څخه خوندي وي.

د ځان پرېولل د روغتيا ساتني يو مهم اصل دى. د بدن په پرېولو سره د جلد مړې حجرې، له غوړو غدودو څخه راوتلې غوړزګي او خوَله پاكيږي. كه د بدن خوَله او غوړزګي او پر هغو نښتي دوړي پاكي نه سي نو د جلد مسامات (د بدن د پوست هغه كوچني سوري چي خوَله ځني را وزي) بنديږي او پر جلد باندي د مكروبونو د ودي لپاره ډېر ښه چاپېريال رامنځته كيږي. البته د بدن خوَله او خيره د ګريسو غوندي ده چي يوازي په اوبو نه پاكيږي او د صابون كارول ور ته اړين دي. خو له بده مرغه په ډېروصابونونو كي داسي وازګي او نور ګډ وي چي بدن ته ډېر مضر جوتيږي. ځيني صابونونه د جسم مسامات تنګوي او وچوي. په ځينو كي داسي تېز مواد ګډوي چي د جلد هغه ځيني طبيعي تېزاب چي پر جسم باندي مكروبونه نه پرېږدي له منځه وړي. په دې هكله مشوره داده چي لومړي خو د كفري هيوادونو ډېر بيي صابونونه مه رانيسئ. ځكه تر ټولو ډېر ارزان صابون هم بدن ډېر ښه پاكوي. بل هغه صابون رانيسئ چي د كبانو يا كوپړې يا جورويا زيتون يا داسي نورو له غوړو (تېلو) څخه جوړ سوى وي او ښه بوى ولري. په دې هكله كه په ځينو ځانګړو مواردو كي د ډاكټر سره مشوره وسي ډېر به ښه وي.

د يادولو وړ ده چي د اسلامي لارښوونو په رڼاكي پر هر مسلمان لازمه ده چي كله له تشنابه راوزي يا ډوډۍ خوري او چي ډوډۍ وخوري لاسونه په صابون پرېولي.

دغه راز د شپې د بيدېدو د آدابوپه هكله فقيه ابوالليث سمرقندي/ وايي: انسان ته ښايي چي په اوداسه بيده سي. ځكه رسول ج فرماي: «څوك چي په اوداسه بيده سي ملايكه له لوى څښتن څخه د بخښني دعا ورته كوي». همدا شان رسول ج انس بن مالك ته وويل: «كه مرګ در ته درسي او ته په اوداسه يې د شهادت د كلمې ويل به در څخه پاته نه سي». بستان العارفين (۴۳) مخ.

د عطرو وهل:

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كُنْتُ أُطَيِّبُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَطْيَبِ مَا يَجِدُ حَتَّى أَجِدَ وَبِيصَ الطِّيبِ فِي رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ (متفق عليه. مشكوٰة كتاب اللباس، باب الترجل، ۴۴۳۵ حديث). يعني له بي بي عايشېل څخه روايت دى چي ما تر ټولو هغه ښه خوشبويى چي موندل کېدل به په رسول ج باندي وهل. څو چي د هغه په سر او ږيره كي به مي د هغو برېښېده ليدل.

په دې هكله نور احاديث هم روايت سوي دي.عطر وهل له ديني او تهذيبي نظره ډېر ښه كار دى. زموږ د ستر پېغمبر ج د عطرو او خوشبويى وهل ډېر خوښ وه. په تېره د جمعې په ورځ يې موږ ته د عطرو وهلو لارښوونه هم كړې ده نو تاسي هم خوشبويى ډېري وهئ.البته د داسي خوشبويى وهلو څخه چي ناولي شيان په ګډ وي په كلكه ډډه كوئ او هغه خوشبويى رانيسئ چي زموږ د خپل يا كوم مسلمان هيواد جوړ وي

د ځان او څېرې سمون او سمبالښت ته پاملرنه:

د اسلام مقدس دين خپلو پيروانو ته توصيه كوي چي د څېرې له مخي ښكلي او د كړو وړو له كبله مرتب او منلي وي او دا د ادب او وقار له نخښو څخه ګڼي. په دې هكله ستاسو توجه د مالك بن نضرس خبرو ته را اړوم، هغه وايي: په داسي حال كي چي ما خواربوشكي كالي اغوستي وه رسول ج ته ورغلم. نو هغه راته وويل: «آيا ته څه شته لرې؟» ما ور ته وويل: هو. ويې ويل: «څه ډول شته لرې؟» ما ورته وويل: هر ډول؛ لوى څښتن اوښان، غوايي، پسونه، اسان او مريان راكړي دي. ويې ويل: «نو چي تا ته لوى څښتن شته دركړي دي، بايد پر تاباندي د هغه د نعمت او پېرزويني نخښه څرګنده سي». وګورئ مشكوٰة كتاب اللباس، الفصل الثاني، (۴۳۵۲) حديث.

رسول ج مسلمانانو ته لارښوونه كول چي دغو چارو ته زياته پاملرنه وكړي او په خپلو ورځنيو چارو كي يې پر ځانو لازمي وګرځوي، څو مسلمان د كړو وړو، كالو او څېرې له پلوه ښكلى او منلى څرګند سي. لكه چي وايي:

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ كَانَ لَهُ شَعْرٌ فَلْيُكْرِمْهُ» (ابوداود، باب في اصلاح الشعر).

ژباړه: له حضرت ابو هريرهس څخه روايت دى چي رسول الله ج وفرمايل: څوک چي ورېښتان لري، نو د هغو دي په تنظيف او تزئين او غوړو وهلو او ږمونځولو اکرام، ساتنه او پالنه وکړي.

حضرت ابو قتاده انصاريس وايي: ما رسول الله ج ته وويل: زما ورېښتان ډېر ګڼ دي نو آيا زه هغه ږمونځ كړم؟ رسول ج وويل: «نعم. واكرمها» يعني هو. ږمونځ يې كړه او پالنه او اكرام يې وكړه. وايي چي ابو قتاده به د رسول ج د دې لارښووني د درناوي له امله خپل ورېښتان د ورځي دوه واره غوړول. الموطاء، كتاب الشعر، باب اصلاح الشعر، (۶) حديث.

پر دې بنسټ د ورېښتانو ږمونځول او غوړول سنت حسنه باله سي.

عطاء بن يسارس وايي رسول ج په جومات كي وو چي يو ببر سرى او ببر ږيرى سړى ورغى. نو رسول ج په لاس اشاره ورته وكړه چي ووزه. ګواكي له دې اشارې څخه د هغه موخه دا وه چي سر او ږيره دي جوړ او اصلاح كړه. نو هغه وو چي دغه سړي سر او ږيره اصلاح كړل او بيا ورغى. نو رسول ج ورته وفرمايل: «آيا دا تر هغه ببر سر چي شيطان غوندي اېسېدې او راغلې ښه نه دى؟». الموطاء، كتاب الشعر، باب اصلاح الشعر، (۷) حديث.

له دي امله لازمه ده چي سرونه يا وخريو او يا يې ورېښتان په ښه سليقه لنډ كړو. دغه راز د ږيري زياتي ورېښتان هم بايد په غچي برابر كړو.

په دې هكله په ترمذي كي د عمرو بن شعيب د پلار له قوله راوړي چي: «ان النبي صلى الله عليه وسلم كان ياخذ من لحيته من عرضها وطولها». يعني رسول ج د خپلي مباركي ږيري ورېښتان د بره لخوا لږ لږ او د اوږدو لخوا چي د يوې قبضې تر كچي به زيات سول اخيستل او اصلاح كول يې. ډېرو علماوو دا كار سنت مؤكد بللى دى. وكورئ مرقاة (۸/ ۲۲۳مخ).

د بڼـي او سر او صورت ساده او بېله اسرافه سمبالول او ښكلي كول د اسلام له تعاليمو څخه دي. رسول ج وفرمايل: «هغه څوك به جنت ته داخل نه سي چي په زړه كي يې يوه ذره كبر او لويي وي». چا ور ته وويل: يوسړى خوښوي چي كالي او څپلۍ يې ښكلي وي؟ نو رسول ج وويل: «إِنَّ اللَّهَ جَمِيلٌ يُحِبُّ الْجَمَالَ الْكِبْرُ بَطَرُ الْحَقِّ وَغَمْطُ النَّاسِ» مسلم، كتاب الايمان، باب تحريم الكبر (۱۴۷) حديث. يعني لوى څښتنأ ښكلى دى، ښكلا خوښوي، كبر په لويي سره د حق نه منلو او د وګړو سپكاوي ته وايي.

د رسول ج به تل دې ټكو ته پام وو او كله چي به يې يو مسلمان وليد چي د ځان او كړو ړو په سمون كي به يې څه ناسم والى وومتوجه كاوه به يې او امر به يې ور ته كاوه چي سمي جامې واغوندي.

هر څوني چي پر انسان كارونه او تكليفونه زيات هم سي بايد د خپل ځان او لباس سمبالښت او نظافت هېر نه كړي. له بده مرغه ځيني كسان د تدين په نامه سپېدلي او لغوړني ګودړۍ اغوندي او په دې ډول خپل زهد څرګندوي. خو دا د دين او د هغه د تعاليمو په هكله بېله جهله او بېله افترا څخه بل څه نه دي. دوى لكه چي په دې نه دي خبر چي د جاهليت په وختو كي مشركينو ځيني حلال كالي او خواړه خداى ته د تقرب په نامه پر خپلو ځانو حرام كړي وه، نو لوى څښتن د دوى د دې اند د بطلان لپاره دا آيت نازل كړ:

﴿قُلۡ مَنۡ حَرَّمَ زِينَةَ ٱللَّهِ ٱلَّتِيٓ أَخۡرَجَ لِعِبَادِهِۦ وَٱلطَّيِّبَٰتِ مِنَ ٱلرِّزۡقِۚ قُلۡ هِيَ لِلَّذِينَ ءَامَنُواْ فِي ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا خَالِصَةٗ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِۗ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ ٱلۡأٓيَٰتِ لِقَوۡمٖ يَعۡلَمُونَ ٣٢﴾ [الأعراف: 32].

ژباړه: «اى محمده! دوى ته ووايه چي چا د لوى څښتن د ښكلا اسباب حرام كړي چي هغه د خپلو بنده ګانو لپاره را منځته كړي دي؟ او چا د خوراك او چيښاك حلال شيان منع كړي دي؟ ورته ووايه چي دا ټول شيان د دنيا په ژوندانه كي هم د ايمان لرونكو لپاره ځانګړي دي او د قيامت په ورځ خو به ګردسره او يوازي د دوى لپاره وي. په همدې ډول موږ خپلي خبري د هغو خلكو لپاره چي پوهان دي روښانوو».

د بخاري شريف د كتاب اللباس په لومړيو كي راغلي دي: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُوا وَاشْرَبُوا وَالْبَسُوا وَتَصَدَّقُوا فِي غَيْرِ إِسْرَافٍ وَلَا مَخِيلَةٍ».

يعني رسول ج وفرمايل: وخورئ، وچيښئ، وايې غوندئ، اړو ته صدقې وركړئ، خو اسراف او لويي مه كوئ.

كله چي حضرت ابن عباسب د حرورا د سيمي خلكو ته ورغى او د يمن ډېر ښه كالي يې اغوستي وه او هغو ور ته وويل چي دا دى څه ډول كالي اغوستي دي؟ هغه ورته وفرمايل پر ما باندي عيب مه نيسئ ځكه چي ما رسول ج ليدلى دى چي تر ټولو ښه كالي به يې اغوستي وه. دغه راز د صحيح بخاري د كتاب اللباس په لومړيو كي د حضرت ابن عباس دا وينا هم راوړي چي: «هر څه چي دي خوښ وي خوره يې او اغونده يې، خو اسراف او تكبر مه كوه».

كه موږ د رسول ج د احاديثو او سيرت او د اسلام د تاريخ كتابونه په غور ولولو ر ا ته جوته به سي چي رسول ج د مسكنت او زښت زيات مصروفيت سره سره پرته له ورېښمينو او ژړو او ځينو ناوړو كاليو نور ډول ډول يمني، طليساني، رومي او داسي نور ښكلي لباسونه اغوستل چي تر هغو به ښه نه وه.

د كاليو پاك ساتل او د كواړي پرېولل:

په تفاسيرو كي وايي چي پر رسول ج ترټولو لومړى د ﴿العلق﴾ سوره نازله سوه. بيا د وحيو په نزول كي څه ځنډ راغي. بيا د ﴿ٱلۡمُدَّثِّرُ﴾ سوره پر نازله سوه، چي په دې حساب دا دوهمه سوه ده او په دې سوه كي لوى څښتن رسول ج ته لومړى د هغه د قوم ايمان ته د بللو او له خدايه د بېرولو او د لوى څښتن د عبادت كولو او د كاليو د پاك ساتلو حكم كړى دى او ورته فرمايلي يې دي چي: ﴿وَثِيَابَكَ فَطَهِّرۡ ٤﴾ [المدثر: 4] يعني «خپل كالي پاك وساته». دغه راز د فقهي حكم دى چي د ناپاكو كالو سره لمونځ او عبادت نه صحيح كيږي او د جسد او كالو طهارت او پاكي د لمانځه شرط باله سي.

په كتابونو كي راوړي چي د رسول ج له خيرنو كالو څخه بد راتله. لكه چي هغه مبارك يو سړى وليد چي خيرن كالي يې اغوستي وه نو هغه وفرمايل: «ماكان يجد هذا ما يغسل به ثوبه؟» مشكوٰة كتاب اللباس، الفصل الثاني، (۴۳۵۱) حديث. يعني دغه سړى داسي څه نه سي پيدا كولاى چي خپل كالي په پرېولي؟ له دې څخه څرګنده سوه چي د رسول ج پاك كالي ډېر خوښ وه او اسلام د كالو پاكوالي، تجميل او د انسان د كړو وړو سمون د ادب او وقار له نخښو څخه بولي.

بله ډېره اړينه او د يادولو خبره داده چي لكه چي پوهيږو زموږ ځيني خلك ځيني بهرنۍ كواړي جامې، جاكټان، تلتكان او داسي نور استعمالوي. د دغو كاليو په استعمال كي څه شرعي ممانعت نسته. خو كېداى سي دغه كالي د مخه داسي كسانو استعمال كړي وي چي په څه ناروغيو به اخته وه. نو كه يې موږ لومړى ښه پرې نه ولو او وايې غوندو ښايي له صحي نظره تاواني وي. تاسي پوهېږئ چي په بهرنيانو كي د ايډز او نوري ډول ډول خطرناكي ناروغۍ خورا ډېري دي. له دې امله ښه داده چي دغسي كالي لومړى ښه ومينځو او بيا يې استعمال كړو.

د غاښو ساتنه:

پاك، سپين او روغ غاښونه هم روغتيا ته اړين دي او هم د انسان د مخ په ښايست او د شخصيت په درنښت كي ستر اغېز لري. د چا چي د خولې بوى ځي او غاښونه يې ژړ او خيرن وي له خبرو او ورنژدې كېدو څخه يې د خلكو كركه كيږي او كوشش كوي چي ليري ځني وګرځي. يو نامتو ډاكټر ليكي چي د انساني ژوندانه نيم مصيبتونه او ناروغۍ د سمو غاښونو د نه لرلو له امله دي. رشتيا هم كه خپل غاښونه ښه ونه ساتئ هم به د هغو له درده په عذاب ياست، هم به پر ډاكټرانو ګرځئ او هم به د خوړو د ښه نه ژوولو له امله د ګېډي او هاضمې په ډول ډول ناروغيو اخته سئ. ځكه كله چي ستاسي غاښونه خراب وي تاسي خواړه ښه نه سئ ژوولاى او ژوندي يا نيم ژوولي يې تېروئ، چي په دې توګه د غاښو كار ګېډي ته سپارئ او په دې خو پوهېږئ چي غاښونه د هډوكو دي او ګېډه د غوښو څخه جوړه سوې ده.نو غوښي كله د هډوكو كار كولاى سي. بل داچي زموږ ډېر خلك چي ډوډۍ وخوري په خوله اوبه نه لغړوي چي دا كار بالكل د غاښوسره د دښمني غوندي دى. تر ډوډۍ خوړلو وروسته د خوړو كوچنۍ كوچنۍ ټوټې په غاښونو كي بنديږي او بيا ورستيږي، خوله بوينه كړي او په غاښونو كي مكروبونه مونده سي چي بالاخره د «پائيوريا» (PYORRHEA) په نامه په يوه ناوړه ناروغي واوړي. كله چي غاښ په دغه ناروغي اخته سي بېله كښلو بله چاره نه لري. له دې امله تر خورك وروسته خپل غاښونه هرومرو مينځئ. دغه راز كه تر ډوډۍ خوړلو وروسته ستاسي په غاښونو كي د خوړو څخه پاتي شوني پاته وي د رسول ج هدايت دى چي غاښونه خلال كړئ. په دې هكله د ياد ولو وړ ده چي خپل كوچنيان هم هرو مرو تر ډوډۍ خوړلو وروسته په خوله د اوبو په لغړولو عادت كړئ، خو هغوى دي غاښونه نه خلالوي ځكه كېداى سي په دې كار سره خپلي ورۍ ټپي كړي.

د غاښونو تر ټولو مهم د هغو سربېرن پوښونه مينا يا (Enamel) دي چي غاښونه ساتي. په غاښونو كي د بندو شيانو د نه پاكولو، د ډېرو خوږو شيانو او غوښو د خوړلو او تر تودو خوړو وروسته ديخو اوبو چيښلو يا ډېرو توده خوړو يا ډېرو سړو اوبو چيښلو له امله دغو پوښونو ته ستر تاوان رسيږي چي په پايله كي يې غاښونه خرابيږي.

ښه دا ده چي په كال كي دوه واره د غاښو په يوه ښه ډاكټر خپل غاښونه پاك كړئ او د غاښو د نه خرابتيا په صورت كي په كال كي يو يا دوه واره د غاښو يوه پوه ډاكټر ته ورسئ او مشوره ځني اخلئ. خو كه مو غاښونو ته څه تكليف پېښ سوى وي سمدستي او هرومرو د غاښو ډاكټر ته مراجعه وكړئ څو يې د ناروغۍ تر زياتېدو دمخه علاج وسي او كښلو ته يې اړتيا پېښه نه سي.

د مسواك وهل:

لكه چي څرګنده ده له ډېرو لرغونو مهالونو څخه خلكو د خولې او غاښونو د پاكولو لپاره دريښې لرونكو لرګيو څخه كار اخيست. په مسلمانانو كي دغه طريقه تر اوسه دود ده. رسول ج او اصحابو كراموش به مسواكونه بېخي د ځانو سره ګرځول. په صحيح مسلم كي يې راوړي دي چي حضرت شريح بن هانئس له بي بي عايشېل څخه وپوښتل چي رسول ج چي كور ته راسي نو په څه شي پيل كوي؟ هغې ورته وويل: په مسواك وهلو. دغه راز رسول ج فرمايي څلور ستر خصلتونه د رسولانو عليهم السلام له سننو څخه دي: حيا يا سنتېده، عطر وهل، مسواك وهل او نكاح. په بخاري او مسلم كي راوړي چي رسول ج ويل: «كه د دې بېره نه واى چي زما امت په مشقت او تكليف اخته سي ما به دوى ته امر كړى واى او پر فرض كړي به مي واى چي د ماخستن لمونځ د شپې دريمي يا نيمى ته وځنډوي او مسواك د هر لمانځه لپاره ووهي ». د نسايي او نورو لخواپه يوه بل روايت سوي حديث كي راغلي دي چي: «مسواك وهل د خولې د پاكېدو او د لوى څښتن د رضا د حاصلېدو لامل ګرځي».

له دې څخه پر نظافت باندي د اسلام ټينګار او د مسواك ګټي او فضايل څرګنديږي. حضرت ملاعلي قاري/ د مرقاة المفاتيح په ۲/ ۸۹ مخ كي وايي: «په مسواك وهلو كي اويا فايدې دي، ډېره كوچنۍ يې دا ده چي د زكندن پرمهال به يې د وهونكي د شهادت د كلمې ويل په ياديږي. او په ترياكو كي اويا ضررونه دي كوچنى يې دادى چي د مړيني په وخت كي به يې د شهادت كلمه نه په ياديږي. لوى څښتن مو دي عافيت په نصيب كړي». له دې امله اسلامي عالمان په ټينګار سره فرمايي چي هر څوك كور ته ننوزي لومړى دي خوله په مسواك مينځي.

يو شمېر فقهاى كرام مسواك وهل بېخي واجب بولي خو د احنافو په نزد مسواك وهل د اوداسه سنت باله سي.

مسواك كه پلاسټيكي برس؟

وايي چي د غاښو برس نژدې پنځه سوه كاله دمخه تر ټولو لومړى په چين كي وكارول سو. خو په ځانګړې توګه هغه لومړي د وليم ايډس په نامه يوه سړي جوړ كړ. كله چي هغه اړو ډوړ ته د خلكو د پاڅولو په تور د انګلستان په يوه محبس كي بندي سو، څه مهال يې خپل غاښونه په ټوكره پاكول. بيا يې پام سو چي كېداى سي غاښونه په برس پاك سي. نو هغه وو چي د هډوكي يوه ټوټه يې را واخيستل او په برمه يې كوچني كوچني سوري ور كړه. د محبس يوه نرم زړه ساتونكي هغه ته څه ورېښتان راوړل او ايډس د دغه هډوكي په سوريو كي وركړل او خپل غاښونه يې په پرېولل. كله چي هغه له بنده خوشي سو خپل دغه ايجاد ته يې انكشاف وركړ او بازار ته يې وړاندي كړ.

خو سره د دې چي نن مهال د برس استعمال زيات سوى دى يو خو په برس د مسواك په پرتله غاښونه ښه نه پاكيږي. بل په خوله پلاسټيك وهل ښايي له ضرره خالي نه وي او بل هم د برس د تارونوپه بېخونو كي زياتره وختونه مكروبونه ځاى نيسي. مسواك كېداى سي چي سر يې ژر ژر پرې سي خو په برس به څه وسي؟

په لندن كي د غاښو په هكله په يوه غونډه كي يوه پروفيسر رپوټ وركړ چي په سوډان كي د غاښونو د پاكولو د بېلو بېلو سيمه ييزو طريقو د څېړني په ترځ كي جوته سوه چي د غاښو تر ټولو اغېزمنه ذريعه مسواك دى.

له ديني نظره پر ترمذي باندي د پياوړى عالم مولانا محمد تقي عثماني له تقريرونو (د درس ترمذي له ۱/۲۲۶، ۲۲۷مخونو) څخه څرګنديږي چي كه غاښونه په ټوكره، منجن، ګوتو يابرس پرېولل سي په دې شرط چي د برس ريښې پاكي وي د مسواك وهلو سنت چي موخه ځني نظافت او ستره ګي ده ادا كيږي. خو د مسنون مسواك سنت نه په ادا كيږي. د مسنون مسواك فضيلت يوازي د زيتون او د مسواك د ځانګړو ونو په لرګيو كي دى د برس له استعمالولو څخه دغه فضيلت هيڅ نه حاصليږي. په تېره غاښونو او وريو ته د مسواك په سر بل هيڅ شى ګټور نه سي جوتېدلاى.

مسواكونه په كتاب پلورنځيو كي په پېخر موندل كيږي. ان اوس په ځينو اسلامي هيوادونو كي د مسواك جوړولو ځانګړي كمپنۍ راوتلي دي او ډېر ښه مسواكونه په ښكلو پوښونو كي بازارونو ته وړاندي كوي.

د غاښونو د پاكولو توكي:

كه موږ د رسول ج په لار ښوونو عمل وكړو او خپل غاښونه ښه پاك وساتو ښايي د غاښو جوړوونكو دكانونه ګردسره وتړل سي. خو څنګه چي په اوسني ماشيني او لالهانده ژوند كي دغسي نه سي كېدلاى نو لږ تر لږه خو سهار د اوداسه پر وخت او ماخستن د بيدېدو پر مهال بايد خامخا خپل غاښونه په مسواك پرېولو.

اوس لكه چي پوهيږو خلك د غاښونو د پاكولو لپاره ډول ډول كريمونه، منجن (د غاښو پاكولو سفوف)، مالګه او داسي نور كاروي. كريمونه ښايي سم ښايي ناسم وي. منجن بايد استعمال نه سي، ځكه هغه څه مهال وروسته غاښونو ته څه ناڅه تاوان رسوي.

د غاښونو د پاكولو لپاره ساده توكى او ښه شى مالګه ده. كه هر سهار غاښونه په مالګه پرېولل سي د هغو خيره او د وريو غليظ رطوبت به په ډېره ښه توګه ليري سي. دغه راز كه مالګه په تودو اوبو كي واچوئ او غاښونه، خوله او ستونى په پرېولئ هم به مو خوله او غاښونه پاك سي او هم به يې بد بوى ورك سي. كه د چايو نيمه كاچوغه خوږه سوډا او نيمه كاچوغه پاكه ميده مالګه په يوه ګيلاس تودو اوبو كي واچوئ او غاښونه، خوله او ستونى په پرېولئ هم مو دغاښونو خيري او ژړ والى پاكوي. خو كه مو ورۍ كمزوري سوي وي نو مالګه بايد څه لږ وي. همدا شان لسټرين (LISTERINE) يا هايډروجن پر اكسايډ (HYDROGEN PEOXIDE) چي دواړه په نسبتاً كوچنيو بوتلانو كي اوبلن درمل دي او په درملتونونو كي په ډېره لږ بيه پلورل كيږي. كه د هغو پر بوتلانو باندي د ليكلو لارښوونو سېه سم د ورځي دوه واره غرغړه سي او بېرته تو سي او بيا خوله په اوبو پرېولل سي د غاښو، خولې او ستوني د مكروبونو د وژلو او بد بوى د له منځه وړلو لپاره ډېر اغېزمن دي. خو د غاښونو د پاكولو لپاره تر ټولو ښه سكاره دي. دا كورنى منجن هيڅ تاوان نه لري او چي په دې وو غاښونه پاك سي د مرغلرو غوندي به ځليږي. سكاره كاربن لري او د غاښونو لپاره ګتور دي. سكاره ښه ميده كړئ. او يوه ګيلاس ميده سوو سكروته يوه د چايو كاچوغه مالګه او يوه د چايو كاچوغه نوشادر ور واچوئ بيا غاښونه په پاكوئ

ښايي تاسي ته دا په ظاهره كوچنۍ كوچنۍ خبري ښكاره سي. خو كه دغو كوچنيو كوچنيو خبرو ته پام وسي هم به د غاښونو له ناروغيو څخه وژغورل سئ او هم به د ښه صحت او ښوغاښونو درلودونكي ياست.

كه مو غاښونه پاك وساتئ ستاسي د مړيني تر مهاله به خراب نه سي. د غاښونو خرابي په عمر پوري اړه نه لري. په دې كي د طبيعت كمزوري نسته، بلكي زموږ غلطۍ زموږ د غاښونو د خرابۍ لامل ګرځي. تاسي نه دي ليدلي چي د ځينوانسانانو تر مړيني وروسته لا كلونه كلونه د هغو غاښونه روغ پاته وي.

لوى څښتنأ د هر چا غاښونه د هغه د ټول عمر لپاره وركړي دي. په دې هكله موږ ملامت يو چي د خداى دغه نعمت ښه نه سوساتلاى.

د كور پاك ساتل:

موږ ته د ځان تر پاك او مرتب ساتلو وروسته د كور ستره او اوډلى ساتل زيات اړين باله سي. كه په كورونو كي د پاكۍ او ستره ګۍ معقول انتظام نه وي، نو موږ به تل تر تله د ككړو او خرابو خوړو له امله په ډول ډول ناروغيو اخته يو، د ډاكټرانو بازار به ښه تود وي ان د پاكستان، هند او نورو ځايو روغتونونو ته د تللو د ستونزو سره به مخامخ يو او څه چي په خواره خواري او زهره تركي ګټو پر درملو به يې د پردو جېبو ته ور اچوو.

موږ د خپل كور او خوړو د پاكۍ او نظافت ادعاوي ډېري كوو، خو باور ولرئ چي په ډېرو مواردو كي په دې هكله د حفظ الصحې په اصولو نه پوهېږو. يو خودي زموږ ډاكټران هم خداى لري په دې هكله يې ډېر لږ تبليغاتي كار كړى دى او ليكني خو يې په دې برخه كي پر هيڅ حساب دي. بل موږ هم په دې باب څه نه لولو او له دې امله مو د كور، خوړو او نورو چارو د روغتيا ساتني د اصولو په هكله معلومات ډېر لږ دي. د دې خبرو په هكله تر ديد او كج بحثي مه كوئ. په يوه مجله كي وايي چي: «د برتانيې د فوډ سټينډرد اجنسۍ څرګنده كړې ده چي د دې هيواد ډېر هلك د خوړو د روغتياساتلو په چارو نه پوهيږي. د دغه هيواد خلك چي د غلطو يا خرابو خوړو له امله ناروغه كيږي نو هم نه پوهيږي چي د دوى د ناروغۍ سبب ناپاكه خواړه دي. لكه چي په پنځو تنو ناروغانو كي يوازي يو تن ډاكټر ته وايي چي د ده ناروغي د خرابو خوړو له امله ده». نو چي د برتانيې غوندي پر مخ تللي هيواد د خلكو دا حال وي، زموږ به څه حال وي؟

ډول ډول ساري يا خپرېدونكي ناروغۍ په كور كي له هر پراته شي څخه؛ د كور د دروازو له دستګيرونو څخه نيولې د لوښو تر صافو پوري له هر څه څخه خپرېدلاى سي. په كور كي د ډول ډول مكروبونو د خپرېدو خطره تل موجوده وي.

ډېره اندېښنه د غوښو له كبله ده. غوښي د ككړتيا لويه ذريعه باله سي په تېره زموږ د بازارونو دا چي ډېري د ناروغو چرګانو وي او له ليرو ځايونو څخه د راوړلو او د ډېر وخت پر تېرېدلو له امله يې رنګ او خوند دواړه بدل سوي وي. دغسي تاسي فكر وكړئ چي د زړو او عمر خوړلو ګامېښو او مېږو، مينديانو غوښي چي ګرده ورځ زموږ د ككړو بازارونو دوړي پر لوېږي، او مچان او غالبوزي پر بوړيږي، د داسي غوښو په كور كي ايښوول او ساتل او بيا خوړل به څنګه وي؟

ما په يوه مجله كي ولوستل چي: «د اومو غوښو تر كوچنۍ كولو او پرې كولو وروسته لاسونه ښه پرېولئ او چي نه مو وي پرېولي لاسونه په خوله، پزه او سترګو مه وهئ. كه مو لاس څه ټپي يا معمولي غوندي ګرږل سوى وي نو اومو غوښو ته يې مه وروړئ او د دغسي غوښو د كوچني كولو لوښى يا ځاى ښه پرېولئ». د دغو خبرو په لومړي لوستلو سره سړى داسي فكر كوي چي اومې غوښي خو څه مرداري نه دي چي په هغو ككړ لاس به خولې يا پزي ته نه وروړم؟ خو كه زموږ د ورځنيو خوړونكو غوښو څرنګوالي ته ښه ځير سو سمدستي به د دغي مجلې د دغو خبرو په معقوليت وپوهيږو.

پر دې بنسټ بايد تر څو كېداى سي د بازاري شيانو له استعمال څخه ډډه وكړو. ځكه دغسي شيان زياتره په مكروبونو ككړ وي او زموږ روغتياته مضر تماميږي. له لويه سره خو ګردسره غوښي په تېره د غوايي او ګامېښو غوښي مضري دي چي بايد يا ګردسره ونه خوړل سي يا ډېري لږ وخوړل سي. البته ټولي غوښي په تېره د غوايي دا بايد ډېري ښې پخې سي. له هغوغوښو څخه چي ښې نه وي پخې سوي. دغه راز له اوموشيدو، او ككړو اوبو او شربتونو څخه ډېري ناوړي ناروغۍ رامنځته كيږي.

په كوم ځاى كي چي خواړه تياروئ، لومړى به هغه ځاى ډېر ښه پاكوئ. د خوړو تر تيارولو وروسته به هم هغه ځاى په لس پنځلس دقيقې كي بيا پاكوئ. يوه ورځ يا يوه اوونۍ وروسته د دغسي ځايونو پاكول كفايت نه كوي.

په كور كي كه كوم يو د نس په ناسته اخته سوى وي (اسهال سوي وي) نو د هغه ټول كالي په ايشېدلو اوبو ورپرېولئ. بايد وويل سي چي لږ تودې سوي اوبه مكروبونه نه سي وژلاى.

د غاليو فرش د ساري ناروغيو د خپرېدو ډېره ستره ذريعه باله سي. په هر حال د خپل كور فرشونه ډېر ښه پاكوئ. (د پخلنځي د پاك ساتلو او ځينو داسي نورو موضوعاتو په هكله په «پخلي» او«زموږ خواړه او درمليز توكي» كتابونو كي هم ډېر ښه معلومات وركړل سوي دي. تاسي كولاى سئ په دې هكله نور معلومات د دغو دوو كتابونو له لومړيو پاڼو څخه تر لاسه كړئ).

هو! خير دى زموږ د ځينو خلكو د يو ډېر ناوړه دود په هكله به هم څه څرګندوني وكړم ګوندي چي پرې يې ږدي. هغه دادى چي زموږ ځيني كورنۍ چي كله ډوډۍ خوري يا مېلمستيا كوي پر سترخان باندي د شلومبو كاسه كښېږدي او يوه يا څو د شلومبو مخصوصي كاچوغي ور واچوي. بيا هر يو په دغو كاچوغو دغه شلومبې چيښي. كله كله مستې، فرني او ځيني نور شيان هم په څو كسو په يوه كاچوغه خوري. اوبه هم په څو كسو په يوه ګيلاس يا يوه سړوبي كي چيښي. چي دا د روغتيايي اصولو او ډوډۍ خوړلو د آدابو خلاف كار دى. ښايي په دغو كسانو كي يو تن زكام وي. يا ان ښايي په كومه ساري ناروغي اخته وي. هسي خو په موږ كي ډېر داسي انسانان سته چي د خولې او غاښونو د نه پرېوللو او سم نه ساتلو له امله يې په خوله كي د اتياوو په شاوخوا كي ډول ډول جراثيمو ځاى نيولى وي.نو كه دغسي ناروغ او نور روغ كسان په يوه كاچوغه څه وخوري نو ښايي د ناروغ ناروغي نورو ټولو ته انتقال سي. ولي داسي نه كوو چي شلومبې په يوه جك يا بل داسي لوښي كي واچوو او له هغه څخه يې پر ستر خان هر خوړونكي ته په جلا جلا ګيلاسونو كي كښېږدو او كه مستې او فرني او داسي نور هم هر يو په جلا جلا كاچوغو وخور ي او اوبه هم هر يو په جلا جلا ګيلاسونو كي وچيښي ډېر به ښه وي.

د كور لوښي:

په موږ كي داسي خلك ډېر لږ دي چي په خوراك چيښاك كي احتياط كوي او روغتيايي اصول په پام كي نيسي. په نوره دنيا كي پوه ډاكټران د روغتيا او خوړو د ډېر ښه جوړولو او پخولو په هكله هر سهار كله چي د روغتون مخي ته ناروغان او نور وګړي روغتون ته د ننوتلو لپاره ورټول سي او يا د نورو غونډو او اړوندو مجلو او كتابونو له لاري لازمي لارښووني كوي. خو له بده مرغه زموږ په هيواد كي ډاكټران دغسي خبري ډېري لږ كوي.

په لوېديزو هيوادونو كي يې د مسي او پيتلي لوښو استعمال منع كړى دى، ځكه چي دغسي لوښي زنګ كوي او خواړه خرابوي.

د أيگرو فلزي لوشگو خوند او رنـكگ په خوؤو كي د موجودو موادو د تاثير له امله خگه نا خگه خوؤو ته ور وزي يا د لوشگو خوند او په خوؤو كي موجود مواد يو له بله كيگمياوي اغيگزي شگندي. چي دا كله كله أيگر ضرر ناك تماميگإي. د مسو، جستو، اوسپني او تگيگم (تگين) په لوشگو كي دا خبره په حگانـكگؤيگ توكگه ليدل سويگ ده. هغه ميگويگ او سابه چي تيگزاب ولري تر پخولو وروسته بايد تر أيگره وخته په لوشگي كي كشگيگ نه شگوول سي، حگكه چي تيگزاب فلز ويلي كوي او په غذا كي كگأيإي، چي په ديگ أول ضرر ناك كيإي. د ميگوو اوبه هم بايد د جستو په لوشگي كي كشگيگ نه شگوول سي. حگكه چي په اوبو كي موجود تيگزاب د جستو سره يو حگاى كيإي، مالكگه حگني جوؤيإي او د ميگويگ اوبه بد خونده كوي. د مسو مالكگه معده او كولميگ خرابوي او ويگتگامين C له منحگه وؤي. په هغو مسي لوشگو كي چي په قلعي شگه نه وي سپين سوي دغه مالكگه ژر جوؤيإي او د خوؤو سره كگأيإي.

د اوسپني كؤايي هم د تيگزابي خوؤو د پخولو او ساتلو لپاره مناسب نه دى. نوو څېړنو جوته كړې ده چي د المونيمو په لوښو كي د خوړو د پخولو په پايله كي داسي مركبات ګډيږي چي انساني روغتيا ته ډېر مضر او مهلك دي. د جارج ډونلس په نامه يوه نامتو ډاكټر تر ازموينو وروسته جوته كړې ده چي د المونيمو په لوښو كي د خوړو له پخولو څخه په هغو كي ځيني توكي په ډول ډول زهرجنو مركباتو اوړي او په خوړو ګډيږي او پر بېلو بېلو طبايعو باندي ډول ډول مهلك اثرات ښندي. ځيني طبيعتونه د ځينو ځانګړنو له مخي دغه سمي اثرات مني او په لومړيو وختونو كي ډېر معمولي او غير محسوس وي، خو د سبب د نه ايسته كېدو له امله كرار كرار زياتيږي او بالاخره انسان ناروغه كوي. يو بل څېړونكى وايي: «كه يوه پلا د المونيم په لوښي كي د سوډا اوبه واچول سي نو په هغه كي ځګ پيدا كيږي. خو كه دغه اوبه د ښيښې په لوښي كي واچول سي نو هيڅ ځګ به پكښي مونده نه سي». دغه راز كه د المونيم په لوښي كي د نيم ساعت لپاره اوبه وايشول سي په هغو كي د المونيم هايډرو اكسايډ مركب چي يوه زهر ناكه ماده ده ګډيږي كومه چي روغتيا ته ډېره مضره ده. دا هم ويل سوي دي چي د المونيمو مركبات چي ګېډي ته ورسيږي كولمې كمزوري كوي او د ګېډي پر كوچنيو كوچنيو پردو باندي ټپونه پيدا كيږي. دغه راز د المونيم لوشگي بايد د مالكگي په تيگزابو يا سوأا په اوبو پريگ نه ولل سي او تيگزابي خواؤه هم بايد د أيگر وخت لپاره پكښي پر ې نه ښوول سي.

د خوؤو په لوشگو كي تر تگولو شگه د بيگداغه فولاد و يا ستگگـيل (Stain Less Steel) لوشگي دي، چي نن سبا په هر حگاى كي بېخي ډېر پيدا كيإي. خو د بيگداغو لوشگو بيي أيگري جكگي دي. كه دا نه وي د خوؤو ساتلو لپاره چيني يا ناشكن لوشگي مناسب دي، چي دا نسبتًا ارزانه په لاس راحگي. خو اوس داسي لوشگي را وتلي چي د اور تودو شگه ييگ نه خرابوي. نا سوزه يا (Fire Proof Glass) لوشگي د پخلي لپاره أيگر مناسب دي. پر دغو لوشگو تيگزاب يا كوم بل شى هيگخگ كيگمياوي اغيگزه نه كوي او د خوؤو خوشبويي هم نه ضايع كوي. د دغو لوشگو تر پريگوللو وروسته په هغو كي دكوم شي بوى هم نه پاته كيإي. نوكه كيگداى سي دغه لوشگي استعمال كؤئ.

دغه راز لكه چي پوهيږو نن سبا د بخار د ديگكگ استعمال هم أيگر عام سوى دى. په دغسي د ېګونو كي پخلى هيڅ تاوان نه لري خو ګټي يې بېخي ډېري دي. د خوؤو ضروري او مهم اجزا او د هغو خوشبوييگ تر أيگره حده پكشگي پاته كيإي. دغه راز د اكسيگجن د لإ ورسره يو حگاى كيگدو له امله د خوؤو ويتگامينC هم د كگرمة سره سره له ضايع كيگدو خگخه خوندي پاته كيإي. خو كله كله داسي هم كيگداى سي چي كه پام ونه سي، نو د بخار په ديگكگ كي د خوؤو د أيگرو پريگشگوولو له امله هغه زيات پاخه سي او كگتگور مواد ييگ أيگر ضايع سي. نو كه د بخار په ديگكگ كي خواؤه پخوو د وخت پابندي بايد أيگره وسي.

د كور د لوښو پرېولل:

د كور په كارونو كي د لوښو پرېولل يو ډېر مهم كار دى. زموږ خلك په تېره د كور مېرمني د خپلو كورونو لوښي په ډول ډول طريقو مينځي. خو له بده مرغه بيا هم لوښي له مكروبونو څخه نه وي پاك. ځكه د لوښو پرېوللو په صافو او جاليو زښت زيات مكروبونه نښتي وي، په تېره كه دغه صافې بيا څه خيرني هم وي. دغه راز د لوښو د وچولو په ټوكرانو او دسملونو هم مكروبونه نښتي وي. چي له دغو صافو او ټوكرانو څخه مكروبونه هرومرو په لوښو پوري نښلي.

د دې ستونزي ډېره ښه او آسانه چاره داده چي د كور لوښي او د هغو د پاكولو ټوكران تل په ايشېدلو اوبو او د لوښو پاكولو په پوډرو يا شامپو مينځئ، څو د اوبو حرارت د هغو باكټرياوي له منځه يوسي. د لوښو د پرېوللو او وچولو لپاره اسفنج هم مه استعمالوئ. د دې پر ځاى كه له كاغذ څخه كار واخلئ ښه به وي. اسفنج هم د مكروبونو ډېره ښه پناهګاه ده.

كله چي مو لوښي پرېوله په ټوكره يې مه وچوئ، بلكي د لوښو ايښوولو په جالويو كي يې ايږدئ څو په خپله وچ سي. پرېولي لوښي په ټوكرانو هيڅ مه وچوئ. ځكه كېداى سي د ټوكره مكروب پر لوښي ونښلي. له دې امله دا كار ډېر مضر دى.

په پر مخ تللو هيوادونو كي لوښي په ځانګړو ماشينونو مينځي. په دغو ماشينونو كي په تودو اوبو او قوي پوډرو د پرېوللو او د لوښو د څو ټپاله د اړولو را اړولو په پايله كي لوښي ډېر ښه پاك سي. چي دا كار د حفظ الصحې ډېره غوره طريقه ده. خو افسوس چي تر اوسه زموږ په بې وزلي هيواد كي د جګړو ناورين د دغسي شيانو او وسايلو د را رسېدلو مخه ډب كړې ده.

د كورونو او د هغو د شاوخوا پاك ساتل:

دلته به په لنډه توګه ووايو چي يو خو اسلام د مدنيت، ښاريت، ودانۍ، د پرمختيا د دودولو او فرهنګ او تهذيب دين دى. رسول ج په مدينه كي د خپل اسلامي حكومت په پيل كي د نورو ډېرو چارو د پر مخبېولو تر څنګ د مسجد، كورونو او ښار او بازارونو په جوړولو لاس پوري كړ. بل له تاريخي لحاظه مردار خوري، په تېره د كورو نو او د هغو د ننه او شاوخوا ته په هرلوري د خځلو او ناپاكيوغورځول او د هغو نه ټولول د يهودو عادت دى. لكه چي د مدينې يهود په دې كي بېخي ضرب المثل ګرځېدلي وه.

حضرت عمرس پر منبر باندي ويل: چي اى خلكو! تاسي خپل كورونه ترميم او اصلاح كړئ، څو له نقصانونو څخه خوندي سي او په دې ډول تاسي د مارانو او نورو حشرو له شره په امان سئ. الادب المفرد (۲۰۸) مخ.

له دې امله د اسلام مبارك دين د مسلمانانو پام د كورونو ترميم او بيا رغوني او له خځلو او ډول ډول ناپاكيو څخه د هغو د كورونو، كوڅو او بازارونو د پاكولو خوا ته اړولى دى او دوى يې په دې هكله د يهودو سره له مشابهته ډډي كولو ته بللي دي.

په دې باب د جامع الترمذي د ابواب الآداب، باب ما جاء في النظافة۲/ ۱۰۳ مخ كي له حضرت ابن المسيبس څخه روايت كوي چي: «لوى څښتن سپېڅلى دى، سپېڅلتيا خوښوي. پاك دي، پاكي خوښوي. كريم دي، كرم خوښوي. جواد دي، جود او سخا خوښوي. نو چي لوى څښتن نظافت خوښوي تاسي هم خپل هر څه پاك او نظيف وساتئ او د خپلو كورونو غولي، مخونه او شاوخوا پاك كړئ او د يهودو سره كوم چي د كورونو انګړونه او چارچاپېر يې ناپاكه دي او د هغو مخونو ته يې خځلي، ناپاكۍ او خوشايي غورځولي دي ځانونه مه مشابه كوئ». په ترمذي كي وايي چي پورتنۍ خبري ځينو نورو د رسول ج څخه روايت كړي دي.

د اسلام ښكلي دين له لاري څخه لارويو ته د تكليف وركوونكو شيانو ايسته كول، لكه د ډبري، چيخلي، نجاست او داسي نورو د ايمان له څانګو څخه يوه څانګه او صدقه بللې ده. نو موږ ته ښايي چي نه داچي د خپل كور خځلي. پلاسټيكي كڅوړي او قوطۍ چي د ډول ډول مكروبونو جذبوونكي او ډېروونكي دي په لارو، كوڅو كي واچوو، بلكي د يوه رشتياني مسلمان او مهذب او مؤدب افغان په حيث د وس مطابق د خپل كور مخونه او شاوخوا هم پاك او ستره وساتو.

دا خو د كورو نو او د هغو د شاوخوا د پاك ساتلو په هكله اسلامي لارښووني وي كومي چي پكښي څرګنده سوه چي د كورونو او د هغو د شاوخوا ناپاكي پخوا د يهودو عادت وو. خو اوس چي موږ د خپل ښار كوڅو، لښتيو، مكانونو او په هر لوري د خځلو كوټو او ډول ډول ككړتياوو، په تېره په دننه ښار كي د ګندګيو پاتاوونو ته ګورو نو آيا اوس يهودو دغه عادت موږ ته نه دى پرې اېښى؟

د كندهار د ښار وضع

څنګه چي انسانان مدني بالطبع موجودات دي نو ښارونو، مدنيت او ټولنيز ژوند ته د هغو اړتيا يو منلى حقيقت دى. له دې امله دى چي حكمت عملي يې پر درو برخو وېشلى دى چي لومړۍ يې اخلاق، دوهمه يې تدبير منزل (كور اوډل) او درېيمه يې تدبير مدن (د ښار په نظم ونسق كي مشاركت يا حكمت مدني) دى چي د يوه كوچني ښارګوټي په نظم ونسق كي له ګډون څخه نيولې د بشپړ هيواد په نظم و نسق او ډول ډول نورو چارو كي تر ګډون پوري رسيږي. چي دې ته بيا سياست مدن هم وايي.

رشتيا داده چي د ښار جوړول او لكه څنګه چي ښايي د هغه اړوندو چارو ته سمون وركول ډېر ستونزمن او د پرله پسې زيار ګاللو كار دى. په دې كار كي ګډون كوونكي بايد تر ټولو دمخه دا وطن په رشتيا او د زړه له كومي خپل وبولي. بل بايد ډېر ښه او رشتيني مسلمانان وي؛په ډول ډول پوهنو پسوللي وي او د خپل وطن سره بايد په خوله او په منافقت نه، بلكي رشتيانۍ او اورنۍ مينه ولري؛ د تل لپاره پكښي واوسي نه دا چي كورونه او اولادونه يې په بهر كي وي او دلته د ځينو مشخصو موخو لپاره موقتي او څو ورځي راغلى وي. د خپل افغاني تابعيت تذكره يې وركه كړې يا ايسته غورځولې وي او د دين او وطن د دښمنانو د تابعيت كارټونه يې په پوښونو كي په ډېر درناوي او احتياط ساتلي وي، خو بيا هم د افغانيت او هيوادپالني غولوونكي لافي شافي ولي او چي مطلب يې تر سره سي بېرته مخ د خپلو بادارانو پر خوا ور الا كي.

دولتي چارواكي خو يې بايد هر يو په ورسپارلو سوو كارونو كي متخصص او د لازمي او بشپړي وړتيا او تجربي درلودونكي وي. نه دا چي څوك دغسي دندو ته بېله وړتيا، د واسطې، ډول ډول اړيكو، يا ان د پردو په خوښه يا د مصلحت پر بنسټ يا تصادفي او چوټ انداز وټاكل سي. د هيوادنيو چارو په هكله خو يې ويلي دي چي: «امور كشوري را خسروان دانند». يعني د هيوادني سياست لپاره تر ټولو ډېرو پوهو خلكو ته اړتيا ده نه دا چي پردي غليمان هر غوږ راكش كړي، د هيواد د واك پر ګدۍ يې كښېنوي او پاى هيواد داسي په وران ويجاړ كړي لكه افغانستان.

ښه لكه چي خبره ئلي خوا ته را څخه كش سوه. بيرته به خپلو خبرو ته را وګرځو. زموږ خبري د ښار د اوسنۍ وضعي او ستره ګۍ په هكله دي. دا ډېر عمر خو په افغانستان كي جنګ وو. طالبان خو نه چا په رسميت پېژندل او نه د نړۍ كفارو د افغانستان او د افغانانو د يو څه ودانۍ او هوسايۍ لپاره د يوې خاشې قدر كومك ورسره كاوه. بلكي ډول ډول بنديزونه يې لا د پاسه پر لګولي وه او خپل ګوډاګي دولتونه او اشخاص يې نه دا چي د هغو سره له كومكه منع كړي وه، بلكي چي څوك به دلته را تلل د بېلو بېلو موخو او جاسوسيو لپاره به يې را استولي او ګومارلي وه. او پر دې ټولو سر بېره يې ډېر ناروا او زهرجن تبليغات هم پسي كول.

پر هغو دي بيا هم آفرينونه وي چي په تشو لاسو يې د هيواد د كورنيو او بهرنيو دښمنانو د ډېرو ناځوانمردانه دسيسو او خنډ اچونو سره سره يې د افغانستان په تاريخ كي بې سارى امنيت ټينګ كړى وو. اسلامي نظام او عدل يې رامنځته كړى وو. د ظالمانو، پردي پالو، لوېديز خوښو، د وطن د غليمانو، بډي خوړونكو، غلو، حرامخورو، بد اخلاقيو، شر او فسق او فساد مخه يې نيولې وه. پر توپكيانو او ناولو عناصرو يې پر تم او دبدبه پرته وه. دولس ډېركى ځني راضي وه او يوازي او يوازي غله او ناروا پلوي ساكښان او د پردو چوپړيان او ګوډاګيان يا ناپوه او په حقايقو ناخبره انسانان په ناپامۍ او لاشعورې توګه نه وه په خوشاله.

په هر صورت د طالبانو نظام خو د دې اوسنيو په اصطلاح د ناپوهانو يا د هيواد د دښمنانو يا د پاكستان د ګومارلو حكومت وو. اوس چي په اصطلاح قانوني او د امريكا او د نړۍ د تقريباً څلوېښتو هيوادونو له ملاتړه برخمن حكومت دى، ډول ډول پرېمانه مرستي ور كول كيږي، په مليارډونو ډالر ورته راو بهېدل او په اصطلاح د اهل كارو او بيروكراټانو او ټكنوكراټانو واك چليږي او پنځه كاله يې هم تېرسوي دي په هيواد كي څه حال دى؟ امنيتي وضع څنګه ده؟ د چور، تالان، غلاوو، اختلاسونو، بډو، نارواوو، فسق، فساد او فحشاوو، جنګ جګړو، زورونو، تښتونو، شخصي، دولتي او امريكايي زندانونو، د وطن د غليمانو لخوا د ولسي بيګناه خلكو د پرله پسې كشتار او د كلو او بانډو د بمبار ولو، د نرخونو د لوړ والي او د خلكو د بې وزلۍ، بې كارۍاو بېزارۍ او د ادارې د بې كفايتۍ او فساد او... څه حال دى؟

نوري خبري به پرېږدو د همدغه زموږ د كندهار د ښار وضعي ته به يو سر سري كاته وكړو. د دې ولايت د جوړېدو او بيا رغېدو او د دبى سره د سيالېدو لافي څو واليانو، وزيرانو او نورو او ان امريكايانو او نورو بهرنيانو وويشتې؟ نو آيا د دې د ښار د ځينو ناحيو دغه كږې وږې چرۍ او دا څو كاږه واږه او څو نيم خامه او پر نيمى پاته سړكان چي جوړ سول ښار په دبى سو؟ تاسي څه فكر كوئ د كجكي د برېښنا تور بينونه چي دغو خلكو په پنځه كاله كي نه كړه نوي او د دې تورو تيارو د استازو له لاسه د طالبانو د وختو برېښنا لا را باندي ودرېدل دغسي را باندي توره شپه سول، كه چيري طالبانو له كجكي څخه د كندهار او لښكرګاه تر ښارونو پوري د برېښنا مزي نه واى غځولي دوى به عځولي واى؟ د خندا وړ خولا داده چي اوس په دې د مدنيت د اوج او د انټرنيټ په روښان او پر مخ تللي پېر كي د كندهار په بازارونو كي د شپې لخوا هغه د امير كډو د وختو ماردنګۍ (د تېلو څراغونه) لګيږي.

تاسي يو وار د كندهار د ښار بڼي ته ځير سئ تاسي په افريقا كي دغسي سپېره او د دوړو ډك او ګډوډ ښار ليدلى دى؟ تاسي په نورو ځايونو كي داسي ځاى ليدلى چي تقريباً څنګ پر څنګ او سره نژدې دي هم د استوګني كورونه وي، هم دي د تېلو ټانك، هم دي موټر شويي ګاني، او هم دي د مال التجاره ګودامونه او هم د غواوو ډېرۍ، هم تراكتور فروشۍ او هم داسي ډېر نور وي؟ او همدغه راز دي په يوه كنډواله كي هم د تمبكو او نسوارو كارخانه، هم د پلمېټو كارخانه او هم د پوليسو پوسته وي؟

تاسي د بل ښار سړكان، درې ګزيان او لښتيان دغسي چټل او د خځلو ډك ليدلي دي؟ تاسي د چيښاك د اوبو له پلوه بل دغسي نېستمن ښار هم ليدلى دى؟

تاسي پخوانى عمر جامع جومات، دغه د خداى كور ليدلى دى چي څه وضع يې ده؟ شاوخوا يې څه چټلۍ او هر ډول لغوړني هټۍپر را ګرځېدلي او په دننه اُورشو كي يې سپي او پيشياني چكرونه وهي!

تاسي يو وار د اعليحضرت لوى احمدشاه بابا/ زيارت ته ورسئ تاسي به د نورو ولسونو د دغسي ملي لويانو او مفاخرو د قبرو د ودانيو د شاوخوا وضع پر دغه حال ليدلې وي؟

تاسي بل ځاى ليدلي دي چي خلك د خپلو ميندو، پلرونو، خپلوانو او اولياوو پر هديره او قبرونو باندي كورونه او دكانونه جوړوي؟

رشتيا د ښار د كوڅو د مكانونو خبره را ياده سوه عجبه ده يو ويشتمه پېړۍ سوه او په نړۍ كي هر څه بدل سول، خو له بده مرغه زموږ د ښار د كورونو د مكانونو په هكله هيڅ بدلون رانه غى. د ښار په هره كوڅه چي سړى ننوزي زړه يې تر خوله رالوېږي.زه بېچاره به د دې ښار نوري بېخي ډېري ناسمي ټولي څنګه درته بيان كړم.

تاسي وګورئ په دې ښار كي تر نورو ټولو كسبګرو د ډاكټرانو كتنځي او درملتونونه زيات دي. نو چي يو ښار دونه بي نظمه او چټل وي او په دوبي د ورځي له مچانو او د شپې يې له غوماشو څخه خوږ خوب پر سړي حرام سي نو ولي به ډاكټران او درمل پلورونكي دونه نه وي پكښي ډېر؟ او ولي به يې كار نه وي چوك؟

كاشكي داسي واى چي موږ راتلونكي ته څه هيله او اميد درلوداى او ويلاى مو چي دا ټولي ناروغي به كرار كرار سمي او روغي سي. موږ چي اوسنۍ وضعي ته ګورو راتلونكې مو هم د پردو د دې اوسني روان خرلمبيت له امله توره تياره بريښي. نو لوى څښتن مو دي پرده او چاره وكي. والسلام.

د كتاب د مراجعو فهرست

ګڼه د كتاب نوم د ليكوال نوم او نور مشخصات

1. قرآن كريم تنـزيل من رب العلمين.
2. احكام تجارت اور لين دين، مولاناعبدالرحمان كيلاني، مكتبة السلام، لاهور: دوهم چاپ، ۲۰۰۳ع.
3. احکام تجميل النساء، د / ازدهار، داراحياء اللغة العربية، کراچي.
4. اخبار جهان مجله، بېلي بېلي ګڼي او نوري ډول ډول مجلې او ورځپاڼي.
5. الادب المفرد، ابي عبدالله محمد بن اسماعيل البخاري، مكتبۀ رحمانيه لاهور.
6. الاشباه والنظائر، علامه زين الدين بن ابراهيم بن نجيم.قديمي كتب خانه، كراچي.
7. اشعة اللمعات، شيخ عبدالحق محدث دهلوي، تيج كمار مطبعه، نهم چاپ، لكهنو: ۱۹۶۳ع.
8. السر كا علاج، علي اعجاز، فيصل پبليكيشنز، نوى ډيلى: ۱۹۸۹ع.
9. امداد الفتاوٰى، مولانا اشرف علي تهانوي، مكتبۀ دارالعلوم، كراچي.
10. انسايكلوپيډيا بريټانيكا، سي ډي.
11. بحرالرائق، امام ابو البركات عبداله بن احمد بن محمد نسفي، مكتبة الحبيبية، كوټه: ۱۴۱۸س.
12. بستان العارفين، فقيه ابو الليث نصر بن محمد بن احمد سمر قندي، مكتبة الكتاب والسنة، پېښور.
13. بهيج طبي سيند، دوكتور عبدالحميد بهيج، دانش خپرندويه ټولنه، پېښور: ۱۳۸۵ل.
14. التفسير الكبير، اما فخرالرازي، دار احياء التراث العربية، بيروت: ۱۴۲۰س
15. التفسير المظهري، قاضي محمد ثناء الله پاني پتي، المكتبة العربية، كوټه: ۱۴۱۵س.
16. تمباكو او اسلام، مولانا حفظ الرحمان اعظمي ندوي، بيت العلم ټرسټ، كراچي: ۲۰۰۶ع.
17. تمباكو نوشى مضر صحت، محمد بن ابراهيم آل شيخ، اردو ژباړه   
    د ابويحيٰى محمد زكريا زاهد، حديبيه پبليكيشنز، لاهور: ۲۰۰۳ع.
18. جامع الترمذي، ابو عيسٰى محمد بن عيسٰى بن سورة بن مسٰى الترمذي، كتب خانۀ رشيديه، ډيلى.
19. حسن وصحت، حبيب اشعر، نهال كتاب ګهر، ډيلى: ۱۹۷۶ع.
20. حلال وحرام در اسلام، ډاكټر يوسف قرضاوي، فارسي ژباړه د ابوبكر حسن زاده، كتب خانۀ اكرميه، پېښور: ۱۳۷۸ل.
21. خلاصة الفتاوٰى، طاهر بن عبدالرشيد البخاري، امجد اكيډيمي، لاهور: لومړى چاپ.
22. خُلق المسلم، محمد الغزالي، دار القلم، دمشق: پنځلسم چاپ، ۱۴۲۱س.
23. خواتين کے لئے جديد مسائل، مولانا مفتي احسان الله شائق، دار الاشاعت، کراچي، ٢٠٠٧ع.
24. د د واړو جهانو سردار ارشادات، طالب هاشمي، پښتو ژباړه د اعجاز احمد زاهد، دعوت اكېديمي، بين الاقوامي اسلامي يونيورسټي، اسلام آباد: ۱۹۹۱ع.
25. درس ترمذي، مولانا محمد تقي عثماني، مكتبۀ دار العلوم، كراچي: ۱۳۹۹س.
26. درمختار، محمد علاء الدين الحصكفي، على هامش ردالمحتار.
27. راز سلامتى وطول عمر، د اسماعيل اژدرى، اقبال، تهران: درېيم چاپ، ۱۳۷۳ل.
28. ردالمحتار، سيد محمد امين ابن عابدين، مطبعۀ عثمانية، تركيه: ۱۳۲۴ س.
29. روائع البيان، محمد علي الصابوني، مكتبة الغزالي، دمشق: دوهم چاپ، ۱۳۹۷س.
30. زموږ خواړه او درمليز توكي، جميله همت، صحاف نشراتي مؤسسه، كوټه: لومړى چاپ، ۱۳۸۳ل.
31. الزواجر عن اقتراف الكبائر، ابوالعباس احمد بن محمد بن علي بن حجر الهيتمي، مكتبۀ فاروقيه، پېښور.
32. سنن ابن ماجه، ابو عبدالله محمد بن يزيد بن ماجه، مكتبۀ اكرميه،   
    پېښور: ۱۴۰۷س.
33. سنن ابوداود، امام سليمان بن الاشعث ابي داود السجستاني، كتب خانۀ رشيديه، ډيلى.: ۱۴۰۰س.
34. سنن النسائي، ابو عبدالرحمان محمدبن شعيب بن علي النسائي، قديمي كتب خانه، كراچي.
35. شرح المجلة، علامه محمد خالد الاتاسي، مكتبۀ رشيديه، كوټه.
36. شهد، محمد اسلم صديقي، تخليقات، لاهور: ۲۰۰۰ع.
37. صحت بخش عادات، زبير وحيد، اردو ساينس بورډلاهور: لومړى چاپ، ۱۹۹۷ع.
38. صحت وزندګى، خوشتر ګرامى، بيسوين صدى بكډپو، نوى ډيلى: نولسم چاپ، ۱۹۸۰ع.
39. صحيح البخاري، ابي عبدالله محمد بن اسماعيل البخاري، دار الاحياء التراث العربي، بيروت: لومړى چاپ، ۱۴۲۲س.
40. صحيح مسلم، امام ابوالحسين مسلم بن الحجاج القشيري، المكتبة الاسلامية، استانبول: لومړى چاپ، ۱۳۷۴س.
41. الطب النبوي، امام ابن قيم الجوزية، دار الفجر للتراث، قاهره: ۱۴۲۶س.
42. عورت کى اسلامى زندګى اور جديد سائنسى تحقيقات، محمد انور بن اختر، ادارۀ اشاعت اسلام، کراچي، ٢٠٠٣ع.
43. غذاكى كهانى، علي ناصر زيدي، مكتبۀ پيام تعليم، نوى ډيلى: لومړى چاپ، ۱۹۸۹ع.
44. غلات براى سلامتى شما، ژان لوك داريګل، فارسي ژباړه د ساعد زمان، انتشارات ققنوس، تهران: ۱۳۷۱ل.
45. الفتاوٰى الحديثية، احمد بن محمد بن علي بن حجر الهيتمي، قديمي كتب خانه، كراچي.
46. الفتاوٰى العالمګيريه، مولانا شيخ نظام او د هند د سترو عالمانو يوه ډله، مكتبه رشيديه، كوټه: ۱۴۰۳س.
47. فتاوٰى عزيزي، شاه عبدالعزيز محدث دهلوي، دارالاشاعة العربة، كوټه.
48. فتاوٰى علماء البلد الحرام، شيخ سعد بن عبدالله البريك، دار الكتاب والسنة، رياض: ۱۴۰۵س.
49. فتاوٰى واحدى، مخدوم عبدالواحد سيوستانى، دارالاشاعة العربية،   
     كوټه: ۱۴۱۸س.
50. فتح الباري، حافظ احمد بن علي بن حجر العسقلاني، دارالسلام، رياض: لومړى چاپ، ۱۴۲۱س.
51. فتح القدير، امام كمال الدين محمد بن عبدالواحد، مكتبه رشيديه، كوټه.
52. فتوٰى نويسي كے رهنما اصول، مفتي محمد سلمان منصورپوري، مكتبۀ نعمانيه، كراچي: ۱۴۲۱س.
53. فرهنګ عميد، حسن عميد، انتشارات امير كبير، تهران: ۱۳۸۱ل.
54. الفقه الاسلامي وادلته، دكتور وهبة الزهيلي، دارالفكر، دمشق: درېيم چاپ، ۱۴۰۹س.
55. فقه السنة، سيد سابق، شركة المنار الدوليه، قاهره: ۱۴۱۷س.
56. الفقه على المذاهب الاربعة، عبدالرحمان الجزيري، دار الفكر، بيروت: ۱۳۲۴س.
57. فقهي مسائل، مولانا خالد سيف الله رحماني، مكتبة الايمان، لاهور.
58. قرآني آيات اور ساينسى حقائق، ډاكټر نورباقي تركي، اردو ژباړه د سيد محمد فيروزشاه، انډس پبلشنګ كارپوريشن، كراچي: پنځم چاپ، ۲۰۰۰ع.
59. الكليات في الطب، ابن رشدالقرطبي، دارالكتب العلمية، بيروت: لومړى چاپ، ۲۰۰۵ع.
60. مجموعة الفتاوٰى، محمد عبدالحى لكنوي، امجد اكېډيمي لاهور: ۱۳۹۷س.
61. مرقاة المفاتيح، علامه ملاعلي قاري، مكتبۀ رشيديه، كوټه.
62. مشكوٰة المصابيح، خطيب عمري تبريزي، مطبع نظامي، ډيلى.
63. معدے كا السر، ډاكټر فنبارګارټن او ډاكټر ډينيل سټيل، اردو ژباړه   
    د آصف نواز، سميع پبليكيشنز، نوى ډيلى: ۱۹۸۹ع.
64. مقدمۀ رسالۀ جوديه، دكتر محمود نجم آبادي، دانشګاه بوعلي سينا، همدان: ۱۳۸۳ل.
65. ملټى نيشنل كمپنيون كى اسلام دشمنى، مسعود مفتي، علم وعرفان پبلشرز، لاهور: ۲۰۰۳ع.
66. منهيات در اسلام، دوكتور نظام الدين نافع، مركز نشراتى ميوند، پېښور: درېيم چاپ، ۱۳۷۸ل.
67. الموطاء، امام مالك بن انس، دار احياء التراث العربية، بيردت: ۱۴۰۶س.
68. همارى غذا، شكيل احمد، ترقى اردو بيورو، نوى ډيلى: دوهم چاپ، ۱۹۸۸ع.

د ليکوال لنډه پېژندنه

عبد المالك (همت)

د پلار نوم يې مولوي عبدالرزاق.

د كندهار په سوزني كي زېږېدلى دى.

د زېږېدو كال يې ١٣٣٢لمريز.

په اسلامي او ټولنيزو علومو كي يې خصوصي زده كړي كړي دي.

د نجيب د واكمن كېدو په لومړيو كي له هيواده مهاجر سو، لومړي پاكستان او بيا هند ته كډه سو.

كله چي لا طالبان پر كابل نه وه واكمن سوي تر اوږدې كډوالۍ وروسته هيواد ته راستون سو او اوس په کابل كي استوګن دى.

اوس په كور كي د كتابونو په ليكلو بوخت دى.

تر اوسه يې لاندي آثار ليكلي دي:

1. د همت چيغه (شعري ټولګه) په ١٣٨٠ل.كال خپره سوې ده.
2. سيد جمال الدين افغاني اند او ژوند (ژباړه) په ١٣٨١ل.كال خپره سوې ده. په ١٣٨٩ا.کال دوهم ځل خپره سوه.
3. زموږ د قبلې تاريخ (دمکې مکرمې تاريخ) په١٣٨٥ل.كال دوهم ځل خپور سو. په ١٣٨٩کال دريم ځل خپور سو.
4. زموږ د نبي مېنه (د مدينې منورې تاريخ) په ١٣٨٥ل.كال خپور سو. په ١٣٨٩کال دوهم ځل خپور سو.
5. ادب او ادبي كره كتنه په ١٣٨٥ل.كال خپور سو.
6. د مقالې ليكلو اصول په ١٣٨٥ل.كال خپور سو. په١٣٨٨ل.كال دوهم ځل خپور سو.
7. پښتو معلم الحجاج (ژباړه) په ١٣٨٦ل.كال خپره سوه.
8. پوپنا سوي ولسونه (ژباړه). په ١٣٨٦ل.كال خپره سوه.
9. زموږ د دښمنانو تور تاريخ او شومي موخي په نامه كتاب په ١٣٨٧ل.کال خپور سو.
10. د آسيا نن او سبا په نامه (ژباړه) په ١٣٨٧ل.كال خپره سوه.
11. غرور او د هغه علاج (ژباړه) په ١٣٨٨ل.كال خپره سوه.
12. د کلمې شريـفي حقيقت (ژباړه) په ١٣٨٨ل.كال خپره سوه.
13. د ښځو د حج او عمرې لارښود په ١٣٨٨ل.كال خپور سو.
14. اسلام د دوه لاري پر سر (ژباړه) په ١٣٨٨ل.كال خپره سوه.
15. د حق او باطل جګړې، په ١٣٨٨ل.كال خپور سو.
16. د لوېديځ مشران وايي: اسلام او مسلمانان له منځه يوسئ.په ١٣٨٩ل.كال خپور سو.
17. د حق او باطل د جګړې په هکله (٢٥) مقالې. په ١٣٨٩ل.كال خپور سو.
18. د حق او باطل په جګړه کي الهي سنت (ژباړه) په ١٣٨٩ل.كال خپره سوه.
19. راځي توبه وکاږو، چاپ ته لېږل سوى دى.
20. زموږ صحت او آخرت ته تاواني توكي په ١٣٨٦ل.كال خپور سو. او اوس دادى دوهم ځل خپور سو او ستاسي په لاس کس دى.

پر دې سربېره يې د هيواد په دننه او دباندي كي بېلي بېلي مقالې هم خپرې سوي دي.

د ليكوال د ګرځنده تليفون لمبر: 0093 700300167

د ليكوال د برېښناليك يا ايمېل آدرس:

**himmat\_ afg@yahoo.com**

1. - مشهوره داده چي امريكا كولمبس وموندل. خو ځينو مسلمانو او غير مسلمانو پوهانو د لاسوندونو (اسنادو) په رڼا كي جوته كړې ده چي مسلمانانو تر كولمبس سوونه كلونه دمخه پر دغه مځكه ګامونه ايښي دي. پر دې موضوع باندي تقريباً له نيمي پېړۍ څخه بحث روان دى. منار الاسلام مجله د ۱۴۰۸د جمادي الآخر ګڼه. [↑](#footnote-ref-1)